''वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता''
(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

"Globalization: Social, Occupational Mobility and Political Awareness in Tribal Society"
(A Sociological Study)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की पीएच.डी (समाजशास्त्र) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

(सामाजिक विज्ञान संकाय)

शोधार्थी

बद्रीलाल मीणा

पर्यवेक्षक

डॉ. रामफूल जाट

सहायक आचार्य

समाजशास्त्र विभाग,

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज0)

2018

CERTIFICATE

I feel great pleasure in certifying that the thesis entitled **'Globalization : Social, Occupational Mobility and Political Awareness in Tribal Society' a sociological study 'वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता, एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'** by Badri Lal Meena Under my guidance. He has completed the following requirements as per Ph.D. regulations of the University.

(a) Course work as per the university rules.

(b) Residential requirements of the university (200 days)

(c) Regularly submitted annual progress report.

(d) Presented her work in the departmental committee.

(e) Published/accepted two research papers in the referred research journals, I recommend the submission of thesis.

Date: **Dr. Ramfhoul Jat**

(Supervisor)

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that Ph. D. Thesis Titled **“Globalization: Social, Occupational Mobility and Political Awareness in Tribal Society” (A Sociological Study)** by Badri Lal Meena has been examined by us with the following anti-plagiarism tools. We undertake the follows:

a. Thesis has significant new work/knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

b. The work presented is original and own work of the author (i.e. there is no plagiarism). No ideas, processes, results or words of others have been presented as author’s own work.

c. There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.

d. There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.

c. The thesis has been checked AntiPlagiarist 2.7. Copyright(C) 2003-2012ACNP Software and found within limits as per HEC plagiarism Policy and instructions issued from time to time.

(Badri Lal Meena)
Research Scholar
Place: Kota
Date:

(Ramfhoul Jat)
Research Supervisor
Place: Kota
Date:

शोध सार

वैश्वीकरण वर्तमान आधुनिक समय की पहचान है, जिसके कारण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक वैश्विक गांव बन गया है। वैश्वीकरण एक बहुलवादी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसका प्रभाव सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारत का प्रत्येक क्षेत्र अपनी स्वयं की एक अलग संस्कृति एवं कला रखता है। ऐसा ही जनजातीय समाज में भी देखा जाता है, क्योंकि प्रत्येक जनजाति की अपनी एक अलग संस्कृति एवं कला होती है। जिसके कारण उस जनजाति को पहचाना जाता है, ऐसा ही मीणा जनजाति या जनजातीय समाज में देखा गया है। इस सभ्यता एवं संस्कृति पर वर्तमान सन्दर्भ में जो वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पडे हैं, उन्हीं को शोध ग्रन्थ के रूप में समाहित किया गया है।

इस अध्ययन विषय के अन्तर्गत बारां जिले की अन्ता तहसील के उन मीणा बाहुल्य क्षेत्रों पर वैश्वीकरण के कारण पड़ने वाले व्यापक प्रभावों का अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तर्गत मीणा जनजातीय समाज की संरचना, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आदि क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों का भी अध्ययन किया गया। जिसके निम्न **उद्देश्य** है – 1. वैश्वीकरण एवं जनजातीय समाज के बारे में जानकारी प्राप्त कर मीणा जनजाति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना। 2. मीणा जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना। 3. वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति के जीवन स्तर में परिवर्तन का अध्ययन करना। 4. मीणा जनजाति की समाजिक संस्थाओं में परिवर्तन का अध्ययन करना। 5. मीणा जनजाति की मीणा महिलाओं की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना। 6. जनजाति के बदलते हुए व्यावसायिक प्रकारों तथा उनके उद्देश्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करना। 7. मीणा जनजाति की तीन पीढ़ियों का वैयक्तिक अध्ययन करना। 8. मीणा जनजाति में राजनीतिक जागरूकता एवं राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ती सहभागिता के बारे में जानना।

शोध कार्य को ध्यान में रखते हुए **अध्ययन पद्धति** का प्रयोग किया गया। जिसमें प्राक्कल्पना एवं अवलोकन का कार्य करते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से तथ्यों का संग्रह किया गया। साक्षात्कार अनुसूची, निदर्शन की उद्देश्यपूर्ण पद्धति का प्रयोग किया गया

और 300 पुरूष व महिला उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से सर्वेक्षण के कार्य को पूर्ण किया गया। अनुसंधान की सीमाओं को भी ध्यान में रखा गया और अन्त में शोध प्रबन्ध का **निष्कर्ष** दिया गया। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यह अध्ययन जनजातीय समाज पर पड़ने वाले व्यापक प्रभावों के लिए महत्त्वपूर्ण होगा, साथ ही आने वाली युवा पीढ़ी का मार्गदर्शक बनेगा।

Candidate’s Declaration

I, **Badri Lal Meena**, Department of Sociology hereby declare that the work that is being embodied in the Ph. D. thesis entitled.

“वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता”, एक समाजशास्त्रीय अध्ययन ‘Globalization : Social, Occupational Mobility and Political Awareness in Tribal Society : A Sociological Study’ is by own bonafied work carried out by me under the Supervision of **Dr. Ramfhoul Jat,** Department of Sociology, Govt. College, Dausa (Raj.). The matter embodied in this thesis has not been submitted for the award of any other Degree.

I declare that I have faithfully acknowledged given Credit to and referred to the research workers wherever their works have been cited in the text and body of thesis. I further Certify that I have not willfully lifted up some other’s work, para, text, data, result, etc. reported in the journals, books, magazines, reports, dissertation, thesis etc, or available at websites and included them in this Ph.D. thesis and cited as my own work.

Date………………. **BADRI LAL MEENA**

(Research Scholar)

This is to certify that the above statement made by Badri Lal Meena (Registration No- Rs/824/11) is correct to the best of my Knowledge.

DR. RAMFHOUL JAT

Date ………………. (Research supervisor)

प्राक्कथन

जनजाति समुदाय भारत में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश आदि के विस्तृत भू–भाग तक फैला हुआ है, जिसकी अपनी एक संस्कृति एवं कला है। राजस्थान की प्राचीनतम जातियों में से मीणा जनजाति भी एक है। राजस्थान के अन्य जिलों की तरह ही बारां जिले की अन्ता तहसील में भी भील, मीणा आदि जनजातियाँ निवास करती है, जिन्होंने वैदिक काल से लेकर आज तक अनेक उतार–चढ़ाव देखे हैं। प्राचीनकाल में यह मीणा जनजाति अन्य समुदायों के साथ अनवरत् संघर्षरत रही है। पूर्वकाल में यह जनजाति शासक वर्ग में से थी, मध्यकाल में वक्त के थपेड़ों ने इस जनजाति को अपनी जमीन से काट कर पहाड़ों एवं जंगलों में धकेल दिया था। अतः अपने समस्त वैभव से वंचित यह जनजाति भारत की आदिम जनजातियों में से एक है।

मैं, स्वयं मीणा जनजाति से सम्बन्धित हूँ। अतः मीणा जनजाति की संस्कृति और कला से पूर्ण रूप से परिचित हूँ। वैश्वीकरण, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण एवं कम्प्यूटरीकरण के कारण मीणा जनजाति पर अनेक प्रभाव पडे। वैश्वीकरण का सर्वाधिक प्रभाव मीणा जनजाति पर पड़ा है। अतः मीणा जनजाति की व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक समस्याओं की और मेरा ध्यान आकर्षित हुआ। अतः मैंने ''वैश्वीकरणः जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता, एक समाजशास्त्रीय अध्ययन पर शोध कार्य करने का निश्चय किया। इस कार्य हेतु समाजशास्त्र विभाग राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा से मुझे सदैव प्रेरणा मिलती रही है। अतः मैं विभाग के सभी सदस्यों का अभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मीणा जनजाति के ऊपर पड़े वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को विभिन्न परिप्रेक्ष्यों यथा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है। इस शोध कार्य के लिए मैंने बारां जिले की अन्ता तहसील के चार मीणा बाहुल्य क्षेणी के गांवों का चयन करके साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से सूचनाएँ प्राप्त की गई हैं तथा वैश्वीकरण के प्राभावों को जाना गया है।

यद्यपि सामग्री संकलन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, परन्तु मन में कार्य करने की लगन के सम्मुख यह सभी समस्याएँ गौण बनकर रह गई। अब तक मेरी जानकारी में बारां जिले की मीणा जनजाति के ऊपर पड़े वैश्वीकरण के प्रभावों पर कोई कार्य नहीं हुआ है। अतः यह कहा जा सकता है कि यह कार्य अपने क्षेत्र में पहला मौलिक एवं नूतन कार्य है।

यह शोध प्रबन्ध सात अध्यायों में विभक्त है। शोध ग्रंथ के प्रथम अध्याय ''**अध्ययन विषय का परिचय, निरूपण एवं पूर्व साहित्य का अवलोकन**'' में वैश्वीकरण के प्रादुर्भाव से लेकर उसकी विभिन्न अवधारणाओं के बारे में विवेचना करने के अतिरिक्त वैश्वीकरण एवं भारतीय समाज, भारतीय समाज की चुनौतियाँ, वैश्वीकरण एवं महिलाओं से जुड़े मुद्दे, जनजाति की अवधारणा, जनजातीय समाज एवं वैश्वीकरण का विवेचन करने के अतिरिक्त राजस्थान के आदिवासियों के रूप में विख्यात मीणा जनजाति की उत्पत्ति तथा उसकी अवधारणाओं की विवेचना भी की गई है। साथ ही विभिन्न आयोगों का गठन, संवैधानिक प्रावधान, मीणा जनजाति का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर का बदलता ढांचा। इस हेतु पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन का भी इस में समावेश किया गया है।

द्वितीय अध्याय ''**अध्ययन क्षेत्र का परिचय एवं अनुसंधान प्रविधि**'' में अध्ययन क्षेत्र के बारे में विस्तृत जानकारी के साथ ही अध्ययन के उद्देश्य, अनुसंधान पद्धति जिसमें निदर्शन प्रारूप, समग्र, अध्ययन के मुख्य चर, प्राक्कल्पनाएँ, अध्ययन के उपकरण एवं विश्लेषण तथा व्याख्या अध्ययन की सीमाएँ आदि की विस्तृत विवचेना भी की गई है।

अध्याय तृतीय ''**उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि**'' में अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं की सामान्य पृष्ठभूमि देने के साथ ही वर्तमान स्थिति का विवेचन किया गया है। जिसमें वैश्वीकरण से अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं की सामान्य पृष्ठभूमि में क्या बदलाव आया। मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में विभिन्न तालिकाओं के माध्यम से विवेचना की गई है।

चतुर्थ अध्याय ''**वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति के जीवन स्तर में परिवर्तन**'' के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के चार मीणा बाहुल्य श्रेणी के गांवों की मीणा जनजाति के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों को वैश्वीकरण के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पक्षों को देखा गया है।

अध्याय पंचम् ''**मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति**'' के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति को वैश्वीकरण के सन्दर्भ में देखा गया है, जिसमें मीणा जनजाति की महिलाओ ंकी स्थिति में आये परिवर्तनों की विवेचना की गई है।

अध्याय षष्टम् ''**वैयक्तिक अध्ययन**'' में अनुसंधान की वैयक्तिक अध्ययन पद्धति को शामिल करते हुए चार व्यक्तियों के वैयक्तिक अध्ययन को शामिल कर वैश्वीकरण के प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है जिसमें मीणा जनजाति के प्रतिष्ठित पुरूष व महिला उत्तरदाताओं की तीन पीढ़ियों का अध्ययन किया गया है।

अन्त में सप्तम् अध्याय में ''**निष्कर्ष एवं सुझाव**'' दिये गये हैं। प्राकल्पनाओं की सत्यता का विवरण तथा सन्दर्भ ग्रन्थ सूची और साक्षात्कार अनुसूची संलग्न की गई है तथा साथ ही प्रकाशित शोध पेपर भी जोड़े गये हैं।

मैं, बारां जिले के सांख्यिकी विभाग एवं अन्ता तहसील के अधिकारी व कर्मचारियों का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने समय–समय पर आकड़ें उपलब्ध कराने में मेरा पूर्ण सहयोग किया।

मैरे शोध ग्रन्थ को समृद्ध करने में मेरी पत्नी श्रीमती रीना मीणा तथा मेरे पुत्र चिराग मीणा का अत्यन्त योगदान रहा है। जिन्होंने मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया एवं मेरे सभी परिवारजनों ने भी इसमें अपना भरपूर सहयोग देकर मेरी समस्याओं का समाधान करने में मेरी सहायता की। मेरे पिताजी श्री मदन लाल जी मीणा और मेरी माता श्रीमती पुष्पादेवी मीणा तथा मेरी सासू माँ कलावती देवी के शुभाशीष से शोध का यह कलेवर प्राप्त हुआ। इस महत् कार्य को सम्पादित करने में मेरे भ्राता और भाभी का भी सहरानीय योगदान रहा तथा मैं अपने देवी–देवताओं का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके आशीर्वाद से अपने शोध कार्य में परिपूर्ण हुआ।

मैं महात्मा गोपालराम महाविद्यालय के निर्देशक कमल शर्मा और समिति के महासचिव संजीव शर्मा एवं समस्त व्याख्यातागण तथा अन्य कर्मचारियों का भी आभार व्यक्त करता हूँ।

अन्त में मैं, परम् आदरणीय शोधनिर्देशक डॉ. रामफूल जाट सहायक आचार्य (समाजशास्त्र विभाग), राजकीय कला महाविद्यालय, दौसा, (राजस्थान) का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने सर्वदा मुझे आशीर्वाद व स्नेह छाया में रखकर अपना अमूल्य समय देकर मेरा मार्गदर्शन किया। अन्त में टंकण कार्य हेतु मैं, गौत्तम कम्प्यूटर के निदेशक का भी हृदय से आभारी हूँ।

बद्रीलाल मीणा

(शोधार्थी)

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	''अध्ययन विषय का परिचय, निरूपण एवं पूर्व साहित्य का अवलोकन''	1–42
द्वितीय अध्याय	''अध्ययन क्षेत्र का परिचय एवं अनुसंधान प्रविधि''	43–59
तृतीय अध्याय	''उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि''	60–90
चतुर्थ अध्याय	''वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति के जीवन स्तर में परिवर्तन''	91–165
पंचम् अध्याय	''मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति''	166–206
षष्टम् अध्याय	''वैयक्तिक अध्ययन''	207–218
सप्तम् अध्याय	''निष्कर्ष एवं सुझाव''	219–249
	शोध सार	250–270
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	271–280
	साक्षात्कार अनुसूची	281–288
	शोध प्रपत्र	–

तालिका सूची

पृष्ठ संख्या

2.1	बारां जिले कि प्रशासनिक संरचना	45
2.2	अन्ता तहसील की जनसंख्यात्मक स्थिति (2011)	50
2.3	अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या	51
2.4	साक्षरता (2011 की जनगणनानुसार)	51
3.1	उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर वर्गीकरण	61
3.2	उत्तरदाताओं की पारिवारिक संरचना	62
3.3	उत्तरदाताओं की आयु संरचना	63
3.4	उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति	64
3.5	उत्तरदाताओं की शिक्षा का स्तर	65
3.6	उत्तरदाताओं के ख़ान–पान का स्तर	66
3.7	उत्तरदाताओं के मकान का स्वरूप	67
3.8	उत्तरदाताओं की वार्षिक आय का स्तर	68
3.9	उत्तरदाताओं के व्यवसाय का स्तर	69
3.10	उत्तरदाताओं की आय के स्रोत	70
3.11	उत्तरदाताओं के सिंचाई के साधन	71
3.12	कुल सिंचित भूमि का भाग(बीघा में)	72
3.13	निजी क्षेत्र में आरक्षण के समर्थक	73
3.13(अ)	निजी क्षेत्र में आरक्षण के समर्थक के कारण	74
3.14	उत्तरदाताओं की आधुनिक सुविधाएँ	75
3.15	उत्तरदाताओं ने किसका चुनाव लड़ा	76
3.16	चुनाव प्रचार में किसने भूमिका निभाई	77

3.17	उत्तरदाताओं के चुनाव में प्रेरणा स्रोत	78
3.18	उत्तरदाताओं के चुने जाने पर प्रतिष्ठा बढ़ी / बढ़ना	79
3.19	चुनाव से पूर्व या बाद में किस पद में सक्रियता बढ़ी	80
3.20	राजनीति में आरक्षण व्यवस्था कैसी है	81
3.20(अ)	राजनीति में आरक्षण व्यवस्था उचित होने के कारण	82
3.21	राजनीति में धन व संख्या बल का महत्त्व	83
3.22	राजनीतिक दलों से सम्बद्धता	83
3.23	उत्तरदाताओं का राजनीतिक बोध स्तर	84
4.1	क्या आपने वैश्वीकरण के बारे में सुना है?	92
4.1(अ)	वैश्वीकरण के बारे में आप क्या जानते हैं?	92
4.2	वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन पर प्रभाव	94
4.2(अ)	मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन को प्रभावित करने के कारण (पूर्ण सहमत)	94
4.3	वैश्वीकरण ने परिवार की संरचना को किस प्रकार प्रभावित किया	96
4.4	वैश्वीकरण से सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ	97
4.4(अ)	सामाजिक सम्बन्धों में क्या परिवर्तन हुआ	97
4.5	वैश्वीकरण के कारण द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला	98
4.5(अ)	द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला के कारण	99
4.6	वैश्वीकरण से मीणा जनजाति में सामाजिक गतिशीलता बढ़ी	100
4.6(अ)	मीणा जनजाति की सामाजिक गतिशीलता बढ़ी के कारण (सहमत)	101
4.7	मीणा जनजाति के सामाजिक रीति–रिवाजों पर वैश्वीकरण का प्रभाव	102
4.8(अ)	मीणा जनजाति के परम्परागत खान–पान पर प्रभाव	103

4.8(ब)	मीणा जनजाति के परम्परागत वेशभूषा पर प्रभाव	104
4.8(स)	मीणा जनजाति के परम्परागत आभूषणों पर प्रभाव	106
4.9(अ)	मीणा जनजाति के परम्परागत पूजा–पाठ पर प्रभाव	107
4.9(ब)	मीणा जनजाति के परम्परागत अन्धविश्वासों पर प्रभाव	108
4.9(स)	मीणा जनजाति की बहुविवाह प्रथा पर प्रभाव	110
4.9(द)	मीणा जनजाति की पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव	111
4.9(ड़)	मीणा जनजाति के अन्तर्जातीय विवाह पर प्रभाव	112
4.10	परिवार के सदस्यों के विवाह की आयु में परिवर्तन	114
4.10(अ)	उत्तरदाताओं (स्वयं) के विवाह की आयु में परिवर्तन	115
4.11	वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के लोकगीत/नृत्यों पर प्रभाव	116
4.11(अ)	मीणा जनजाति के लोकगीत/नृत्यों को किस प्रकार प्रभावित किया	116
4.12	वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई	118
4.12(अ)	मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई के कारण	118
4.13	वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की तलाक प्रथा पर प्रभाव पड़ा	120
4.13(अ)	मीणा जनजाति की तलाक प्रथा पर किस प्रकार प्रभाव पड़ा	120
4.14	वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया	122
4.14(अ)	किस प्रकार मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया	122
4.15	वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति की सामाजिक सेवाओं को प्रभावित किया	124
4.16	वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के चिकित्सा सेवाओं पर प्रभाव	125

4.16(अ)	मीणा जनजाति के चिकित्सा सेवाओं को किस प्रकार प्रभावित किया	125
4.17	वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ	127
4.17(अ)	किस प्रकार मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ	127
4.18	वैश्वीकरण से मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी	128
4.18(अ)	मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ने के कारण	129
4.19	व्यावसायिक गतिशीलता ने मीणा जनजाति को किस प्रकार प्रभावित किया	130
4.20	वैश्वीकरण से ग्रामीण प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा	130
4.20(अ)	ग्रामीण प्रतिभाओं के पलायन बढ़ने के कारण	131
4.21	वैश्वीकरण से कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी	132
4.21(अ)	कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ने के कारण	132
4.22	वैश्वीकरण का कृषि व्यवसाय पर (नकारात्मक) प्रभाव	133
4.22(अ)	वैश्वीकरण का कृषि व्यवसाय पर (सकारात्मक) प्रभाव	134
4.23	वैश्वीकरण के कारण लघु एवं कुटीर उद्योग धन्धों का नष्ट होना	135
4.24	वैश्वीकरण का गरीब एवं निम्न आय वर्ग पर सकारात्मक प्रभाव	135
4.24(अ)	वैश्वीकरण का गरीब एवं निम्न आय वर्ग पर नकारात्मक प्रभाव	136
4.25	वैश्वीकरण ने आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया	136
4.25(अ)	आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया के सहमत के कारण	137
4.26	वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति के कृषकों की दयनीय स्थिति हुई	138
4.26(अ)	मीणा जनजाति के कृषकों की दयनीय स्थिति हुई के कारण	138

4.27	वैश्वीकरण से परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया	140
4.27(अ)	परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन के कारण	140
4.28	वैश्वीकरण के कारण राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई	142
4.28(अ)	राजनीतिक जागरूकता में किस प्रकार वृद्धि हुई	142
4.28(ब)	राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि नहीं हुई के कारण	143
4.29	वैश्वीकरण के प्रभाव से युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई	144
4.29(अ)	युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में किस प्रकार वृद्धि हुई	144
4.30	वैश्वीकरण से मतदान के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई	145
4.31	वैश्वीकरण ने जातिगत राजनीति व्यवस्था को प्रभावित किया	145
4.31(अ)	जातिगत राजनीति व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया	146
4.31(ब)	जातिगत राजनीति व्यवस्था को प्रभावित नहीं किया	147
4.32	वैश्वीकरण ने राजनीतिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया	147
4.33	वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव	148
4.34	वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर नकारात्मक प्रभाव	149
5.1	मीणा समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति	168
5.2	महिला शिक्षा से मीणा समाज पर प्रभाव	169
5.3	वैश्वीकरण से महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी	170
5.3(अ)	पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की सहभागित बढ़ी के कारण	171
5.4	वैश्वीकरण से महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला	172
5.4(अ)	महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला के कारण	172

5.5	वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं के पहनावें पर प्रभाव पड़ा	173
5.5(अ)	किस प्रकार मीणा महिलाओं के पहनावें को प्रभावित किया	174
5.6	वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं की सामाजिक कुरीतियों को प्रभावित किया।	175
5.6(अ)	मीणा महिलाओं की सामाजिक कुरीतियों को प्रभावित किया के कारण	176
5.7	वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह पर प्रभाव पड़ा	177
5.7(अ)	मीणा महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह पर प्रभाव के कारण	177
5.8	मीणा महिलाओं के विवाह की आयु में परिवर्तन	179
5.9	वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव पड़ा	180
5.9(अ)	मीणा महिलाओं की दहेज प्रथा को प्रभावित करने के कारण	180
5.10	वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव पड़ा	181
5.10(अ)	मीणा महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव के कारण	182
5.11	वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं के विवाह–विच्छेद की प्रथा पर प्रभाव पड़ा	183
5.11(अ)	मीणा महिलाओं के विवाह–विच्छेद की प्रथा पर प्रभाव के कारण	184
5.12	वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं के लैंगिक भेदभाव पर प्रभाव पड़ा	185
5.12(अ)	मीणा महिलाओं के लैंगिक भेदभाव पर प्रभाव के कारण	185
5.13	मीणा महिलाओं के परम्परागत व्यवसाय	187
5.14	मीणा महिलाओं के नवीन व्यवसाय	188
5.15	वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं का नौकरी की तरफ रूझान बढ़ा	188
5.15(अ)	मीणा महिलाओं का नौकरी की तरफ रूझान बढ़ने के कारण	189

5.16	मीणा महिलाओं को रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलना चाहिए	190
5.16(अ)	मीणा महिलाओं को रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलने के कारण	190
5.17	वैश्वीकरण से मीणा महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई	191
5.17(अ)	मीणा महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई के कारण	191
5.18	वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित किया	193
5.18(अ)	मीणा महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने के उचित कारण	194
5.19	वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई	195
5.19(अ)	किस प्रकार मीणा महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई	195
5.20	राजनीति में आरक्षण व्यवस्था से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया	196
5.20(अ)	मीणा महिलाओं की स्थिति में किस प्रकार परिवर्तन आया	197

प्रथम अध्याय

''अध्ययन विषय का परिचय, निरूपण एवं पूर्व साहित्य का अवलोकन''

प्रथम अध्याय

अध्ययन विषय का परिचय, निरूपण एवं पूर्व साहित्य का अवलोकन

वैश्वीकरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ कब से हुआ, यह निश्चित नहीं है। वैज्ञानिकों के मतानुसार वैश्वीकरण का प्रारम्भ यूरोप से अन्य देशों की खोज यात्राओं के समय ही हो चुका था। इतिहास से भी यह परिलक्षित होता है कि इन खोज यात्राओं का उद्देश्य नवीन बाज़ारों की खोज कर यूरोपीय देशों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति करना था। वेलरस्टेन के मतानुसार आज भले ही वैश्वीकरण शब्द को नवीन माना जाता रहा है, परन्तु विश्व में पूँजीवादी संरचना की आधारशिला सोलहवीं शताब्दी में ही हो चुकी थी।

अस्सी के दशक में प्रचलित वैश्वीकरण शब्द ने लगभग सम्पूर्ण विश्व को ही अपने आगोश में ले लिया है। जिसने आधुनिकता को ही नहीं, बल्कि उत्तर आधुनिकता को भी मात् दे दी है। ''प्रारम्भ में आर्थिक सन्दर्भ में प्रयुक्त वैश्वीकरण की अवधारणा एल.पी.जी. अर्थात् उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण का अन्तिम तथा महत्त्वपूर्ण भाग बनी थी।''[1] किन्तु कालान्तर में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने अपना एक स्वायत्त रूप धारण कर राजनीति, संस्कृति, समाज, सूचना–तकनीकी तथा धार्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया। इस प्रकार वैश्वीकरण की प्रक्रिया का प्रादुर्भाव हुआ।

वैश्वीकरण शब्द की उत्पत्तिः–

वैश्वीकरण शब्द के पहले उत्तर आधुनिकता का विश्लेषण प्रारम्भ हुआ था। इसकी दार्शनिकता का स्तर ऊँचा था तथा वैज्ञानिक कसौटी पर उसका स्थान खरा था। किन्तु यह इतना अधिक लोकप्रिय तथा खरा नहीं उतरा, जितना उत्तर आधुनिकता के गुण न होते हुए भी वैश्वीकरण शब्द अधिक प्रचलित हो गया। इसके उपरान्त ''बहुत सी नई अवधारणाएँ और पर्याय इस शब्द के साथ जुड़ते गये। यद्यपि ये अलग–अलग अवधारणाएँ हैं, पर इन्हें जोड़ा वैश्वीकरण के साथ ही जाता है जैसे– एकीकरण, विभेदीकरण, संकरीकरण, बहुलता, स्थानीयतावाद, तुलनात्मकता और वैश्वीस्थानीयकरण, वैश्विक शब्द के साथ अन्य अवधारणाओं का मिश्रण आम प्रचलनों में है।''[2] जिसके कारण वैश्वीकरण को पहचाना जाता है।

ग्लोबलाइज़ेशन शब्द की उत्पत्ति ग्लोबलाइज़ से हुई है, जिसका सम्बन्ध सामाजिक तथा आर्थिक तंत्र के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से है। 1980 के बाद से वैश्वीकरण पर

नव–उदारवाद का प्रभाव पड़ा तथा 1990 में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा विश्व बैंक की नीतियाँ भी वैश्वीकरण के इस रूप को बढ़ावा देती रही है। इसके अतिरिक्त शीत युद्ध की समाप्ति, सोवियत रूस का अंत, राज्यीय समाजवाद का बिखराव जैसी राजनीतिक घटनाएँ तथा पश्चिमी एवं आर्थिक उदारवादी विचारों का भी प्रारम्भ हुआ था। नवीन बाज़ारों की उत्पत्ति, उत्पादन तथा उपभोक्ताओं के नवीन स्वरूप, जिनके कारण उपभोग के बहुत से प्रतिमान विश्वदायी हो गये। पूर्व में अधिकांश कार्यों पर राज्य तथा सरकारों का नियंत्रण था।

परन्तु अस्सी के दशक में गैर सरकारी क्षेत्रीय संगठन तथा नीति समन्वयक समूहों जी–7, जी–10, जी–22 तथा ओ. एफ. डी. जैसे संगठनों का निर्माण होने के साथ ही सस्ते संचार के संसाधनों का विकास हुआ। जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के नए नियम एवं आचरण संहिता का भी निर्माण हुआ। वैश्वीकरण विविध समूहों के मध्य सांस्कृतिक अन्तः क्रिया के तीव्र होने की प्रक्रिया भी है। यह सांस्कृतिक उत्पादों के मार्केटिंग तथा संचार माध्यमों के सम्पर्क के द्वारा होता है। इसे तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक कि इसे सम्पूर्णतावादी दृष्टिकोण से न देखा जाये।

वैश्वीकरण की अवधारणाः–

वैश्वीकरण के सैद्धान्तिकरण में एन्थोनी गिडेन्स का महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है। इन्होंने अपनी पुस्तक ''द कोंसेकुएंसेस ऑफ मॉडर्निटी'', 1990 में वैश्वीकरण की परिभाषा दी है। ''विभिन्न लोगों और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के बीच बढ़ती हुई अन्योन्श्रतता या पारस्परिकता ही वैश्वीकरण है। यह पारस्परिकता, सामाजिक और आर्थिक सम्बन्धों में होती है। इसमें समय और स्थान सिमिट जाते हैं।''[3]

आर. रॉबर्ट्सन के अनुसार, ''वैश्वीकरण प्रक्रिया की जटिलता को देखते हुए मानते हैं कि वैश्वीकरण लादने का दबाव तेजी से बड़ा है, किन्तु इसने अन्तरात्मक शक्ति प्रदान की है।'' रॉबर्ट्सन ने वैश्वीकरण को एक ऐसी अवधारणा के रूप में परिभाषित किया है, जो दुनिया के दबाव और दुनिया की चेतना के तीव्रीकरण दोनों से संयुक्त रूप से सम्बन्धित है।''[4]

समाजशास्त्री वेलरस्टेन की पुस्तक ''हिस्टोरिकल केपिटेलिज़्म'' (1983) के अनुसार ''वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके कारण पूँजीवाद का विस्तार और उसकी समृद्धि है।''[5]

यूरोपियन कमीशन के अनुसार ''यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विभिन्न देशों के बाज़ार और उत्पादन पारस्परिक रूप से एक दूसरे पर अधिक से अधिक निर्भर रहते हैं।

इस निर्भरता का कारण व्यापार तथा वस्तुओं की गतिशीलता, पूंजी तथा तकनीकी तंत्र का प्रवाहित होना है।''[6]

मेलकॉम वाटर्स के अनुसार ''वैश्वीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें भूगोल द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को दबाया जाता है। जिससे लोग इस बात के लिए जागरूक होने लगते हैं कि उनका प्रश्चप्रवण हो रहा है।''[7]

रवि प्रकाश पाण्डेय के अनुसार ''वैश्वीकरण, अन्तर्वेशन और बहिष्करण की एक जटिल प्रक्रिया है। इसमें विश्व बाज़ार, विभिन्न आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं, मल्टीमीडिया, प्रौद्योगिकी तथा संस्कृति आदि के एकीकरण का अन्तर्वेशन हो रहा है, जबकि राष्ट्र–राज्य की प्रभुसत्ता और स्वदेशीयता आदि का बहिष्कार हो रहा है।''[8]

थॉमस फ्राइडमैन के अनुसार, ''वैश्वीकरण वास्तव में बाज़ारों, अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकियों का एकीकरण है। इसमें विश्व का मध्यम से छोटे रूप में ऐसा संकुचन हो रहा है, जिससे हम दुनिया के हर कोने में इतनी जल्दी और सस्ते में पहुँच जाते हैं, जितने में पहले कभी सम्भव नहीं था। पूर्व की सभी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओं की भाँति यह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में घरेलू राजनीतियों, आर्थिक नीतियों तथा सभी देशों के विदेशी सम्बन्धों को स्वरूप प्रदान कर रहा है।''[9]

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि विश्व के समस्त देश वर्तमान में एक–दूसरे पर आश्रित हो चुके हैं। विश्व इतिहास में प्रथम बार स्थानीय तथा वैश्वीय लोग अब एक ही कड़ी सूत्र में बंध गये हैं। इसके अतिरिक्त एक और कारण संचार के साधनों में वृद्धि, सूचना–तकनीकी, यातायात एवं आवागमन के साधनों की सुलभता भी है। इन सभी के कारण समस्त विश्व के सम्बन्धों की घनिष्ठता का परिणाम ही वैश्वीकरण है।

अवधारणात्मक विवेचनः–

यद्यपि वैश्वीकरण की अवधारणा दस वर्ष पुरानी है, किन्तु इसकी लोकप्रियता उत्तर आधुनिकता से भी अधिक है। यह एक जटिल प्रक्रिया है, जो प्रौद्योगिकी के उच्च्य प्रौद्योगिकी में रूपान्तरण के साथ आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में व्यापक एवं द्रुतगामी परिवर्तनों के रूप में परिलक्षित होती है।

''सर्वप्रथम समाजशास्त्रीय अवधारणा के रूप में वैश्वीकरण का उपयोग करने का श्रेय पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय के रोलैण्ड रॉबर्टसन को जाता है। रॉबर्टसन मुख्य रूप से विरोधाभासों की उपस्थिति, प्रतिरोध और उसके बराबर की शक्तियों, अस्वीकार किये गये नियमों व प्रवृतियों के एक द्वन्द्व की उपस्थिति, स्थानीय और वैश्विक, विशेष रूप से

सार्वभौमिक, एकता और विभेदीकरण के रूप में वैश्वीकरण को स्वीकार करने पर बल देते हैं।''[10]

एन्थोनी गिडिन्स इसे ''समय–स्थान दूरीकरण कहते हैं।'' अपनी इस अवधारणा के स्पष्टीकरण में वह कहते हैं कि आज की दुनिया में संचार और उत्पादन तथा विनिमय की जो जटिल व्यवस्था बनी है। उसने सम्पूर्ण स्थानियता को कमजोर कर दिया है।''[11] इसके अनुसार लोगों के सम्बन्ध अधिकाधिक एक–दूसरे के निकट आ गये हैं।

डी. हार्वे ने अपनी पुस्तक 'दी कन्डीशन्स ऑफ मोडरनिटी', 1989 में वैश्वीकरण की व्याख्या नवीन रूप में करते हुये गिडिन्स की समय और स्थान की अवधारणा को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि ''वैश्वीकरण समय और स्थान की गति और गहनता से जुड़ा हुआ है। आपका हमारा बाज़ार, ब्याज़ दर, भौगोलिक गतिशीलता आदि समय और स्थान उतार–चढ़ाव के साथ जुड़े हुए हैं, यह जुड़ाव सहज नहीं है।''[12]

समाजशास्त्री वेलरस्टेन, रोजेनाऊ तथा गिलपीन आदि वैश्वीकरण के तीन तत्वों पूँजीवाद, तकनीकी तंत्र तथा शक्ति की राजनीति की व्याख्या करते हैं। वेलरस्टेन अपनी पुस्तक 'हिस्टोरिकल कैपिटेलिज़्म' में लिखते हैं ''पूँजीवाद में एक ख़ास प्रकार की ऐतिहासिकता है, जिसमें यह अपने उत्पादन को समय और स्थान के साथ बांध लेता है।'' वे कहते हैं कि ''पूँजीवाद अनिवार्य रूप से वैश्वीय है।''[13] वर्तमान समय में यदि दूरी तथा स्थान का दूरीकरण होने का कारण भी पूँजीवाद की विश्व अर्थव्यवस्था है। अतः पूँजीवाद का जनक वैश्वीकरण है।

वेलरस्टेन (1983) ने भी वैश्वीकरण को पूँजीवाद के विस्तार एवं उसकी समृद्धि के कारण उत्पन्न हुई प्रक्रिया माना है। वर्तमान में विश्व गांव, विश्व शहर, विश्व दृष्टि, विश्व दिवस, विश्व बाज़ार आदि अनेक ऐसे सन्दर्भ हैं, जिनमें विश्व विश्लेषण लगाने से वैश्वीकरण की प्रक्रिया का परिणाम परिलक्षित होता है। इसी कारण आज समस्त संसार ही उत्पादक एवं उपभोक्ता बनता हुआ प्रतीत होता है। विश्व गांव की अवधारणा के प्रणेता कनाडा के लेखक मार्शल मेक्लूहान के अनुसार ''मीडिया ने सम्पूर्ण दुनिया को एक छोटा सा गांव बना दिया है।''[14]

विश्व नगर अवधारणात्मक रूप से वह नगर है, जो नई वैश्वीय अर्थव्यवस्था का संगठनात्मक केन्द्र है। ससकिया ससेन, 1998 के अनुसार वैश्वीकरण की प्रक्रिया यद्यपि राज्यों के बीच होती है, पर वास्तव में यह बड़े–बड़े नगरों के बीच में भी होती है। इस तथ्य को उन्होंने अपनी पुस्तक 'दि ग्लोबल सिटी' में उल्लेखित करते हुए लिखा है कि वैश्वीकरण बड़े नगरों और महानगरों में होता है। उनके अनुसार, ''विश्व नगरों से तात्पर्य,

उन नगरों से है जो बहुराष्ट्रीय निगमों, वित्तीय संगठनों, परामर्शदाताओं के मुख्यालय हैं।''[15] इन्हीं नगरों के मध्य अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होता है तथा यही नगर पूँजीवाद के विकास के केन्द्र भी होते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ विकास कार्यक्रम 2000 में प्रकाशित मानव संसाधन रिर्पोट के अनुसार आधुनिक युग वस्तुतः वैश्वीकरण का युग है। रिर्पोट में वैश्वीकरण के नवीन रूप को अधिक स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि ''वैश्वीय बाज़ार, वैश्वीय तकनीकी तंत्र, वैश्वीय विचार और वैश्वीय सुदृढ़ता, यह आशा की जा सकती है कि संसार भर के लोगों को समृद्धि देंगे। लोगों के बीच की पारस्परिकता और अन्तर्निभरता से आशा की जाती है कि लोग साझा मूल्यों में विश्वास स्थापित करेंगे, जिससे दुनिया भर के लोगों का विकास होगा।''[16]

समाजशास्त्री रोजेनाऊ ने अपनी पुस्तक 'टरब्यूलेन्स इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स', 1990 में वैश्वीकरण की व्याख्या तकनीकी तंत्र के सन्दर्भ में की। उनका तर्क है कि ''विश्व में जो पारस्परिकता व अन्तर्निभरता है, इसका कारण तकनीकी तंत्र है।''[17] वह तकनीकी तंत्र को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जोड़ते हुए कहते हैं कि औद्योगीकरण के बाद जो उत्तर औद्योगीकरण का युग आया है, इसके पीछे बहुत बड़ी धारणा दुनिया के लोगों के काम करने की दशाओं में सुधार लाना था। सुधार की इस बलवती धारणा ने उत्तर–अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को जन्म दिया।

वैश्वीकरण की व्याख्या गिलपीन अपनी पुस्तक 'दि पोलिटिकल इकोनोमी ऑफ इन्टरनेशनल रिलेशन्स' में बहुत स्पष्ट रूप से करते हुए वे कहते हैं कि ''वैश्वीकरण राजनीतिक कारकों की उपज एवं पैदाइश है।''[18] वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय माहौल में प्रत्येक राष्ट्र–राज्य अपने स्थायित्व तथा सुरक्षा के लिए किसी अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर आने के लिए तैयार है साथ ही यह प्रक्रिया एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है।

कार्ल मार्क्स के साम्यवाद के प्रसार में वैश्विक प्रसार बहुत बड़ा आधार था। उन्होंने साम्यवाद के बारे में विचार करने के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद के प्रसार के बारे में भी सोचा था। स्केलेयर''[19] ने आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक प्रभुता से उत्पन्न होने वाली देश भर की वैश्विक प्रकृति को वैश्वीकरण का नाम दिया था। उनके मतानुसार वैश्विक पूँजीवादी व्यवस्था तथा उसका प्रसार वैश्वीकरण का प्रधान मूल है। कैसल्स के अनुसार वैश्विक अर्थव्यवस्था, जिसमें विश्व स्तर पर तय किये गये पैमाने के अनुसार सही समय पर कार्य विकसित करने की क्षमता है तथा उदारवादी नीतियाँ वैश्वीकरण के पृष्ठभूमि की महत्त्वपूर्ण इकाई है।

मेलकॉम वाटर्स ने 1998 में वैश्वीकरण की अवधारणा बहुत खुलासे से करने का प्रयास किया है। ''इस प्रक्रिया में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अन्तःक्रियाओं का पर्याप्त समावेश होता है। इस प्रक्रिया में भूगोल तथा राष्ट्रीय सीमाओं के जो दबाव और बन्धन होते हैं, वह धूमिल हो जाते हैं।''[20]

इटली के मार्टिनेली ने लिखा है कि ''वैश्वीकरण व्यक्तियों, समूहों, समुदायों, बाज़ारों, निगमों एवं अन्तर्राष्ट्रीय, सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों को सामाजिक सम्बन्धों के जटिल जाल से अन्तः सम्बन्धित करता है।''[21]

बलदेवराज नायर ने अपने एक निबन्ध ''इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली'', 1997 में विश्वव्यापीकरण की राष्ट्रीय अर्थ नीति के सम्बन्ध में स्पष्ट व्याख्या की। उनके तर्क के अनुसार ''विकासशील देशों में बदली हुई व्यवस्था के परिणामस्वरूप आने वाले बदलाव का प्रभाव बराबर देखने को मिलता है। दुनिया का यही बदलाव आर्थिक विश्वव्यापीकरण पर अत्यधिक ज़ोर देता है, जो मुख्यतया एक आर्थिक प्रक्रिया है।''[22]

भारतीय समाज एवं वैश्वीकरणः—

''भारत में वैश्वीकरण का प्रादुर्भाव 1991 में नरसिम्हाराव के समय हुआ, यह आर्थिक युग का सूत्रपात था। इस अर्थव्यवस्था की विशेषता यह है कि यह अपने नए अवतार में संघीय बाजार अर्थव्यवस्था बन गई। जिसके कारण यह व्यवस्था नियंत्रित अर्थव्यवस्था से संघीय अर्थव्यवस्था में बदल गई है।''[23] भारत में आर्थिक तथा राजनीतिक वैश्वीकरण के साथ ही सांस्कृतिक वैश्वीकरण की प्रक्रिया की भी शुरूआत हुई। आधुनिक काल से पूर्व धर्म का वैश्वीकरण अधिक था। बौद्ध, कन्फ्यूशियस, इसाई तथा हिन्दू धर्म विश्व के अग्रणी धर्मों की श्रेणी में आते थे। बौद्ध धर्म का उद्‌गम स्थल भारत होने के बावजूद भी इसकी व्यापकता भारत के स्थान पर एशिया के विभिन्न देशों में थी। आधुनिक युग के आगमन के साथ ही प्रजातंत्र तथा पूँजीवाद का भी आगमन हुआ। जिसके कारण शिक्षा एवं विज्ञान ने धर्म के वैश्वीकरण को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया था। अतः पूँजीवाद का बहुत अधिक प्रभाव संस्कृति पर भी पड़ा।

वैश्वीकरण के कारण विशेष रूप से संचार के क्षेत्र में आये क्रांतिकारी परिवर्तनों ने संस्कृति को भी बहुत अधिक प्रभावित किया है। भारत में बढ़ती दूर संचार सुविधाएँ यथा ई—मेल, इन्टरनेट, मोबाइल इत्यादि समाज के आवश्यक अंग बन गये हैं। दूर संचार सुविधाओं के कारण ही आर्थिक विकास, व्यापार एवं बैंकिग क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आये और भारतीय समाज स्थानीय समाज की मुख्य धारा से जुड़ गया। अब उपभोग की वस्तुयें भी एक समान हो गई है जैसे टूथपेस्ट, कपड़ों के ब्रांड, डिब्बा बन्द खाद्य पदार्थ

आदि। इस प्रकार से वैश्वीकरण ने स्थानीय सांस्कृतिक पदार्थों को विश्व के अन्य भागों तक पहुँचाया है। यही नहीं वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय जीवन शैली के कई सांस्कृतिक पहलुओं को भी प्रभावित किया है। इस प्रकार से भारत में भी एक नवीन लोकप्रिय संस्कृति का विकास हुआ है, जिसमें उपभोगवादी संस्कृति के प्रभुत्त्व में वृद्धि होने लगी है।

भारत में अब सांस्कृतिक वैश्वीकरण के प्रभाव से वर्ण–संकर संस्कृति का जन्म हुआ। यह संस्कृति का सतही रूप है, जिसमें न तो ऐसे लोग अपनी संस्कृति से पूर्ण रूप से जुड़ पाते हैं और न ही पूर्णरूपेण दूसरी संस्कृति को ही अपना पाते हैं। वैश्वीकरण के कारण ही पलायन सामाजिक जीवन की धुरी बन चुका है। वर्तमान जगत में एक ज़गह से दूसरी ज़गह निर्वासन, स्थानान्तरण, शरणार्थी समस्या, घुमंतू पर्यटक इत्यादि इस तथ्य के प्रमाण है। इसी प्रकार से स्थानीय मीडिया के स्थान पर ग्लोबल मीडिया के प्रयोग में वृद्धि हुई।

वैश्वीकरण के कारण स्थानीय संस्कृति भी प्रभावित हुई साथ ही वैश्विकता ने सांस्कृतिक क्षेत्रों को अपना बाज़ार बना लिया। आज कोई भी सांस्कृतिक उत्पाद तैयार होते ही बिक्री हेतु क्षेत्रीय बाज़ारों में आ जाता है। इस प्रकार से बाज़ारवाद तथा स्थानीय सांस्कृतिक उत्पाद एक–दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं, यह सभी वैश्वीकरण के कारण ही होता है। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय भाषा, तीज़–त्यौहार एवं रीति–रिवाज़ भी ओझल हो जाते हैं। इनके स्थान पर कुछ ऐसे नवीन सांस्कृतिक प्रतिमान जिनका उद्गम अन्य देशों से होता है, स्थानीय स्तर पर प्रभुत्त्वशाली हो जाते हैं। वैश्वीकरण की अनेक विशेषताओं के बावजूद भी इस प्रक्रिया में स्थानीय कारणों से चुनौतियाँ देखने को मिलती हैं।

वैश्वीकरण एवं भारतीय समाज की चुनौतियाँः–

विश्व आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के प्रभुत्त्व को देखते हुए वैश्वीकरण के प्रभाव एवं चुनौतियाँ वर्तमान समय में सामने आई, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज पर निम्न प्रभाव देखने को मिलते हैं –

1. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का आगमनः–

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के शुरूआती दौर में विदेशी शीतल पेय पदार्थों जैसे कोकाकोला, पेप्सी, खाद्य पदार्थ जैसे डोनाल्ड, के.एफ.सी., अंकल चिप्स आदि बेचने वाली कम्पनियों का प्रभुत्व रहा। धीरे–धीरे करके हुण्डई, होण्डा, फोर्ड ड्राइव जैसी कार बेचने वाली कम्पनियाँ हिटाची, एल.जी, सोनी, पैनासोनिक विद्युत आदि कम्पनियों ने भारत में

प्रवेश करके भारतीय बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी में वृद्धि की। इससे औद्योगिक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला।

2. पारम्परिक उद्योगों पर ख़तरा:–

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आगमन से पारम्परिक उद्योग–धन्धें चौपट हो गये। जिसके कारण कई श्रमिकों को अपनी नौकरियों से हाथ धोना पड़ा। भारत ने खुली अर्थव्यवस्था की जिम्मेदारी ओढ़ ली तथा भारतीय कृषकों, लघु उद्योगों तथा असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा।

3. वैश्वीकरण और असमानता:–

वैश्वीकरण की प्रक्रिया जहाँ एक ओर लोगों के लिए अवसरों में वृद्धि करती हैं, वहीं दूसरी ओर कई लोगों के रोज़गार के साधन भी खत्म हो जाते हैं। वैश्वीकरण एवं सूचना तकनीकी क्रान्ति के कारण देश के शहरी एवं मध्यम वर्ग के युवाओं हेतु नवीन व्यवसाय के अवसर मुहैया कराये हैं। एक ओर जहाँ भारत की चमचमाती हुई तस्वीर दिखाई देती है, वहीं दूसरी ओर आब़ादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपनी रोजी–रोटी के लिए भी तरस रहा है।

4. जीवन शैली व आकांक्षाओं की बढ़ती हुई सजातीयता:–

जन–संचार के साधनों में वृद्धि के परिणामस्वरूप नवीन जीवन शैली तथा आकांक्षाओं का भी उद्भव हुआ है। गत दो वर्षों में वैश्वीकरण के कारण पहनावें तथा खाद्य उपभोग के मूल्यों में आधारभूत परिवर्तन आया है। जिसके कारण महिलाओं के पहनावें, कार्य क्षेत्र एवं ख़ान–पान में भी परिवर्तन आ गया है। जिसके कारण भारतीय समाज में असमानता बढ़ी।

5. शिक्षा के क्षेत्र में:–

विदेशी विश्वविद्यालय आमदनी की दृष्टि से अपने परिसर, अविकसित देशों में खोलने लगे हैं। विशेष रूप से अविकसित देशों में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र शिक्षा की सम्पूर्णता को विभाजित कर गये हैं। वैश्विक स्तर पर शिक्षा का पदार्थीकरण, व्यापारीकरण एवं निजीकरण हुआ है। ये सभी आर्थिक प्रक्रियाएँ हैं। उदारीकरण एवं निजीकरण की नीति अपनाने के कारण ही भारत सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र से भी हाथ खींच लिए हैं। जिसके कारण शिक्षा का भी व्यावसायिकरण हो गया है।

6. कृषि के क्षेत्र में :–

वैश्वीकरण की नीतियों ने भारतीय कृषि एवं ग्रामीण समुदाय पर भी अत्यधिक गहरा प्रभाव डाला है। कई दशकों के राज्य समर्थन की प्राप्ति एवं संरक्षित बाज़ार व्यवस्था के

उपरान्त किसानों को वैश्विक बाज़ारों की गला काट प्रतिस्पर्धा से भी सामना करना पड़ा है। वर्तमान समय में भारतीय सब्ज़ी तथा फलमण्ड़ी में भारतीय सब्जियों तथा फलों के अतिरिक्त आयातित फल–सब्जियाँ भी मिलने लगी हैं। जिसके कारण रिलायंस फ्रेश स्टोर विक्रेताओं में आक्रोश उत्पन्न हो गया है।

7. सांस्कृतिक क्षेत्र में:–

वैश्वीकरण ने सर्वाधिक रूप से सांस्कृतिक क्षेत्र पर भी अपना प्रभाव डाला है। अतः यह समाजशास्त्रियों एवं समाज वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय बन गया है। कुछ वैज्ञानिकों ने माना कि भारतीय समाज संस्कृति के ग्लोबलाइज़ेशन की ओर अग्रसर हो रहा है तथा ग्लोबलाइज़ेशन का अर्थ स्थानीय के साथ वैश्विक का मिश्रण है।

8. वैश्वीकरण एवं मीडिया:–

1970 के दशक तक मीडिया राष्ट्रीय सरकारों के नियमों के अनुसार कार्य करता था। परन्तु गत् तीन दशकों से मीडिया का रूपान्तरण हो गया है। दूरदर्शन के एकाधिकार को निजी उपग्रह चैनलों द्वारा चुनौतियाँ देने के कारण वर्तमान युवाओं पर इसका प्रभाव पड़ने लगा है। वैश्वीकरण से समाज पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण यह अत्यन्त ही चिन्ता का कारण भी बनने लगा है।

वैश्वीकरण एवं महिलाओं से जुड़े मुद्दे:–

सदियों से ही नारी अनेक विडम्बनाओं एवं विसंगतियों के मध्य जीवन जीती आई है। विश्व की लगभग 50 फीसदी आबादी महिलाओं की होने के बावजूद भी वह आय का मात्र दसवाँ हिस्सा ही प्राप्त कर पाती है। सम्पत्ति में भी वह मात्र एक प्रतिशत की ही स्वामिनी मानी जाती है। भारतीय समाज पितृसत्तात्मक होने के कारण तथा पुत्र को ही उत्तराधिकारी बनाने के कारण वह सदैव से ही पुरूषों पर निर्भर रहती आई है। जिसके कारण उसे व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा सामाजिक अधिकारों में बराबरी की हिस्सेदार नहीं माना जाता है। इन सभी कारणों से समाज में सामाजिक असमानता सदैव से ही विद्यमान रही है।

वैश्वीकरण के द्वारा ही समाज में महिलाओं को शोषण, असमानता, उत्पीड़न से मुक्ति दिलाने की पुरज़ोर वकालत की जा रही है। वैश्वीकरण का यह प्रयास काफी हद तक सराहनीय भी रहा है। वैश्वीकरण के कारण ही वर्तमान में महिलाएँ घर की चार–दीवारी से बाहर निकलकर पुरूषों की बराबरी में खड़ी होकर उनके साथ कन्धें से कन्धा मिला कर चलने योग्य हो सकी है। अब वह न सिर्फ घर की चार–दीवारी के पीछे वरन् घर के बाहर भी अपने दायित्वों का निर्वाह पूर्णरूप से कर रही है। इसके कारण

उनके आत्मविश्वास में भी बढ़ोत्तरी हुई है, जिसके कारण वह जीवन के हर क्षेत्र में अपनी योग्यता तथा क्षमता के आधार पर अग्रसर हो रही हैं। लगभग सभी क्षेत्रों में वह अब अपनी योग्यता के द्वारा परचम फहरा रही है। इस प्रकार से वैश्वीकरण ने उसे ''अबला से सबला'', ''कमज़ोर से समर्थ'' बना दिया है। राष्ट्र के विकास में उसकी भागीदारी भी सराहनीय रही है। आज आधुनिक महिलाओं के रोल मॉडल के रूप में इन्दिरा गाँधी, मदर टेरेसा, किरण बेदी, कल्पना चाँवला तथा हिलेरी क्लिंटन जैसी महिलाएँ हैं। वैश्वीकरण का महिलाओं के प्रभाव के सन्दर्भ में दो विचारधाराएँ सामने आई है। प्रथम विचारधारा के अनुसार वैश्वीकरण ने महिलाओं को ग्लोबल सिटीज़न के रूप में आत्मनिर्भर बनाकर शोषण एवं असमानता के ख़िलाफ़ संघर्ष हेतु सशक्त किया है। दूसरी विचारधारा के अनुसार वैश्वीकरण ने महिलाओं को सोची–समझी साज़िश के तहत् विज्ञापनों के माध्यम से उसकी देह प्रदर्शन के द्वारा उनका इस्तेमाल किया है। इस प्रकार से वैश्वीकरण ने महिलाओं को रोज़गार के नवीन अवसर तो प्रदान किये, किन्तु कार्य स्थल पर बेहतर दशाओं के अभाव में वे पूर्णरूपेण सफलता प्राप्त नहीं कर सकी है। वैश्वीकरण के इस दौर में महिलाओं को प्रत्यक्ष रूप से बाज़ार से जोड़कर उसकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन की बात तो कही जा रही है। परन्तु यह मिथकता तब तक बनी रहेगी जब तक कि उनकी घरेलू भूमिकाओं को नहीं बदला जाये। जहाँ एक ओर वैश्वीकरण ने महिलाओं के समक्ष कुछ नई सम्भावनाओं के द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर उनके लिए एक नवीन प्रकार की गुलामियत को भी उनके सामने ला कर खड़ा किया है। किन्तु इसका समाधान भी महिलाओं के हाथों में ही है। इसके लिए आवश्यक है कि उन्हें वैश्वीकरण के द्वारा प्रदान नवीन लाभों को उठाते हुए सबल होना आवश्यक है, तभी वे पूर्णरूपेण लाभान्वित हो सकेंगी।

जनजाति की अवधारणाः–

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जनजातियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत में इन्हें वन्यजाति, आदिवासी, वनवासी, गिरिजन आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। इन्हें आदिवासी कहने का एक कारण इनका भारत के प्राचीनतम निवासी होना है। **वेरियर एल्विन** ने इन्हें 'आदिवासी' तथा **जी.एसं. घुरिये** ने इन्हें 'पिछड़े हिन्दुओं' के नाम से सम्बोधित किया है। भारतीय संविधान के अनुसार इन्हें अनुसूचित जनजाति कहा जाता है।

''**मजूमदार** ने अपनी पुस्तक ''रेसेस ऑफ कल्चर इन इण्डिया'' में एक जनजाति की सभी विशेषताओं को स्पष्ट करते हूये अग्र प्रकार से परिभाषित किया है ''एक जनजाति परिवारों या परिवार के समूह का संकलन होता है, जिसका एक सामान्य नाम होता है। जिसके सदस्य एक निश्चित भू–भाग पर रहते हैं, सामान्य भाषा बोलते हैं और विवाह,

व्यवसाय, उद्योग के विषय में कुछ निषेधों का पालन करते हैं और एक निश्चित एवं उपयोगी परस्पर आदान–प्रदान की व्यवस्था का विकास करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि एक जनजाति वह क्षेत्रीय मानव–समूह है, जो भू–भाग, भाषा, सामाजिक नियम और आर्थिक कार्य आदि विषयों में एक सामान्य सूत्र में बंधा होता है।''[24]

इम्पीरियल गजेटियर के अनुसार–''जनजाति, परिवार या परिवारों का एक ऐसा समुदाय है जिसका एक सामान्य नाम होता है, इसमें रहने वाले लोग एक समन्य भाषा बोलते हैं, जो एक सामान्य भू–भाग पर रहने का दावा करते हों अथवा जो हमेशा अन्तर्विवाह नहीं करते हैं, भले ही प्रारम्भकर्ता रहे हो।''[25]

जनजातीय समाज :–

जनजातीय समाज से अभिप्राय समाज के उस समुदाय से है, जिसे आदिवासी के नाम से भी जाना जाता है। इस समाज की एक स्पष्ट भाषायी सीमा भी होती है, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक जनजाति एक परम्परागत पोशाक, गहनें, चिन्न, प्रतीक तथा पहचान से दूसरी जनजाति के बीच पृथक्कता उत्पन्न करती हैं। भारतीय जनजातियाँ अनेक विविधतायुक्त विशेषताएँ एवं सांस्कृतिक पहचान रखती हैं। जनजातीय समाज के कतिपय विशिष्ट लक्षण इस प्रकार है –

1. जनजातीय समाज की सरंचना समानता की संकल्पना पर आधारित है। इस समाज में स्तरीकरण नहीं पाया जाता है। जन्मजात रूप से जनजाति का कोई भी सदस्य ऊँचा अथवा नीचा नहीं होता। यदि उनमें किसी प्रकार की कोई असमानता भी होती है, तो वह अत्यल्प ही होती है। इनके आर्थिक असमानता के स्तर में भी कोई ज़मीन–आसमान का अन्तर नहीं होता है। प्रत्येक जनजाति समूह अपने आप में स्वायत्त तथा पृथक होता है।

2. सामान्यतः एक जनजाति के लोग एक ही भू–भाग पर निवास करने वाले होते हैं।

3. जनजातीय समाज का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण इनकी नातेदारी की प्रथा है। यहाँ सामाजिक सम्बन्ध परस्परता तथा एकरूपता पर आधारित होते हैं।

4. जनजातीय समाज के समस्त सदस्यों को उत्पादन के साधनों का भी समान रूप से ही दोहन करने का पूर्ण अधिकार होता है। इस कारण जनजातीय समाज में शोषित तथा शोषक वर्ग नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि उनका सम्पत्ति पर सामूहिक एवं संयुक्त नियंत्रण होता है।

5. किसी भी जनजातीय समाज के सदस्य एक ही संस्कृति के वारिस होते हैं। इनकी संस्कृति से तात्पर्य उन पारम्परिक मान्यताओं, प्रथाओं व जीवन जीने के तरीकों से है।

जिसे वे उस समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करते हैं तथा यही संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती है।

6. जनजातीय समाज की एक और विशेषता इस समाज में प्रचलित धर्म, जादू, टोटम आदि प्रथायें भी हैं।

7. जनजातीय समाज की एक स्पष्ट तथा भाषायी सीमा भी होती है, जो उन्हें अन्य जनजातीय समाजों से अलग करती हैं।

8. जनजातीय समाज की अपनी एक अलग पहचान तथा पहनावा भी होता है। प्रत्येक जनजाति की अपनी एक परम्परागत पोशाक, गहने, चिन्ह तथा प्रतीक होते हैं। जिसके द्वारा वे एक जनजाति से दूसरी जनजाति के बीच पृथकता उत्पन्न करते हैं।

जनजातीय समाज एवं वैश्वीकरणः—

प्राचीन काल से ही भारत की अपनी एक अलग ही पहचान रही है। इसका एक बहुत बड़ा कारण यहाँ प्रचलित विभिन्न प्रकार के धर्म, मत, सम्प्रदाय, संस्कृति एवं जातियाँ हैं। परन्तु इन सभी समुदायों में एक समुदाय ऐसा भी है, जो यहाँ का मूल निवासी भी है। यद्यपि वह रहन—सहन, ख़ान—पान, जीवन शैली, विशिष्ट विचारधारा, अकेलेपन व गरीबी से त्रस्त है। इसी समुदाय को जनजातीय या आदिवासी के नाम से जाना जाता है। भारत में कुल आबादी का लगभग 8 प्रतिशत जनजाति समूह का है। इसमें भी अलग—अलग जातियों की संख्या 635 से भी अधिक हैं, जिसमें मात्र 426 जनजातियाँ ही सरकारी आंकड़ों के हिसाब से मान्य हैं तथा शेष 200 से अधिक डी—नोटिफाइड आदिवासी है।

90 के दशक में भारत में वैश्वीकरण की अवधारणा आई, तब केवल भारतीय समाज ही नहीं बल्कि जनजातीय समाज भी प्रभावित हुआ। वैश्वीकरण ने जनजातीय समाज की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना को सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों तरीकों से प्रभावित किया। ''वैश्वीकरण की जनसंचार क्रांति, मोबाईल फोन, सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के अवसरों ने जनजातीय समाज को अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को बदलने के नये आधार प्रदान किये। जिसके परिणामस्वरूप इसमें सामाजिक गतिशीलता का उर्ध्वमुखी स्वरूप देखने को मिलता है। इनकी सामाजिक प्रस्थिति एवं भूमिकाएँ, जो पहले निम्न स्तर की होती थी। अब मध्यम एवं उच्च स्तर की प्रतिष्ठा एवं शक्ति क्षमता से युक्त हो गई।''[26] वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव भी जनजातीय समाज पर देखे गये हैं। जनजातीय समाज के लोग अपनी मूल संस्कृति से दूर हो गये, रोजगार के अवसरों का लाभ मिला, पर एक उच्च वर्ग का जन्म हुआ। जिसके कारण गरीब वंचित

हो गये साथ ही आर्थिक असमानता में वृद्धि हुई, रक्त सम्बन्ध कमजोर हुए, तो परिवार टूटे आदि प्रभाव जनजातीय समाज पर पड़े हैं।

मीणा जनजाति की उत्पत्ति की अवधारणाः—

मीणा जनजाति की उत्पत्ति का कोई क्रमबद्ध और प्रमाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है। लेकिन यह माना जाता रहा कि ''मीणा'' शब्द की उत्पत्ति संभवतः ''मीन'' शब्द से हुई, जिसका अर्थ मछली से है। जिस प्रकार भील लोगों का सम्बन्ध तीर—कमान से जोड़ा गया। ठीक उसी प्रकार मीणाओं का सम्बन्ध मत्स्य (मछली) से माना गया है। अनेक धार्मिक ग्रन्थों में भी मत्स्य जाति का उल्लेख आया है। ऋग्वेद में बताया गया है कि मत्स्य लोगों का स्थान इन्द्रप्रस्थ के दक्षिण या दक्षिण—पश्चिम तथा सूरसेन या मथुरा के दक्षिण में था। मत्स्य पुराण के अनुसार ''मीणा शब्द मत्स्य शब्द से उत्पन्न हुआ है। यद्यपि यह माना जाता है कि मीणा की उत्पत्ति मत्स्य के उदर से हुई है। इसी कारण इसका नाम मीन पड़ा, जो समय के साथ—साथ वर्तमान संबोधन में मीणा तक आ गया है। मीणा लोगों की धारणा है कि उनका सम्बन्ध भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार से है। अतः यह कहा जाता है कि मीन भगवान के वंशज ही मीना लोग है।

'मीना' (मीणा) शब्द का बहुत से धार्मिक ग्रन्थों में अनेकों बार उल्लेख हुआ। ये उल्लेख मीणा जाति की उत्पत्ति ज्ञात करने में सबल प्रमाणों के रूप में अति उपयोगी हैं। क्योंकि मीणों की उत्पत्ति को इस प्रकार के कई धार्मिक मिथकों, आख्यानों एवं घटनाओं द्वारा सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है।''[27]

''मीणा जाति के बहीभाट जिन्हें जागा कहते हैं। इस जाति की 12 पाल, बत्तीस तड़ तथा 5200 गोत्र बताते हैं कि क्षत्रियों से मीणों की उत्पत्ति के सिद्धान्त का प्रचार करने की दृष्टि से मीणों के जागाओं ने इनकी 12 पालों को अग्रलिखित क्षत्रिय जातियाँ माना। यह निम्न है— 1 चौहान 2. परमार 3 गहलोत 4 चन्देल 5 कछावा 6 यादव 7 तंवर 8 पड़िहार 9 निर्वाण 10 गौड़ 11 बड़गूजर 12 सोलंकी। राजस्थान में किसी न किसी समय राज्य करने वाली प्रायः प्रत्येक राजपूत जाति को पालों की इस गिनती में सम्मिलित करने का प्रयत्न किया गया है।

जब कल्पना से ही नामकरण होने लगे, तो एक ओर जागा ने पालों के नामकरण में एक और नई कल्पना की तथा अग्र प्रकार पालों की गिनती की—

1 देसपाल (देसवाली) 2 चौयतपाल (चौकायत) 3. खेतपाल (खेतड़ा) 4 प्राचीनपाल (पुराणावासी) 5. नवपाल (नवावासी) 6. पारपाल (पार मीणा) 7. मेरपाल (मेर मीणा)

8. मालापाल (माली मीणा) 9. पड़ियार पाल (पड़ियार मीणा) 10. मैलापाल (मैला मीणा) 11 चिमरपाल (चमरिया मीणा) 12 रावतपाल (रावत मीणा) 13 मेवपाल (मेव मीणा)।

12 पालों की यह गिनती 13 तक ले जाते हुए, काल्पनिक जागा ने लोक प्रचलित 12 पालों का उत्तर देने के लिए की कल्पना गढ़ी है। इसमें जमींदार–चौकीदार, पुरानावासी–नयावासी, उजला मीणा, मैला मीणा, चौकीदार मीणा आदि विभेदों को गणना कर बारह की गिनती पूरी करने की चेष्ठा की है। कर्नल टॉड ने अपने राजस्थान के इतिहास में 'पाल' शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है कि यह शब्द पहाड़ी आदिवासियों की जाति के लिए प्रयुक्त होता है। इसका आशय वह घाटी है, जो खेती तथा रक्षा के काम आती है। पाल की इसी अर्थ से मेल खाती हुई मीणों की बारह पालें कभी रही होंगी। कर्नल टॉड ने भी पालों का ज़िक्र करते हुए राजपूत वंशों के नाम से ही गिना दिया है। मीणाओं के जागाओं ने 80 गोत्र होने की बात लिखी है। प्रचलित होने के कारण किवंदतियों का उल्लेख भी पोथियों में प्रायः है–

मारणपुर मीना बसे, असी गोत्र परिवार।
पृथ्वी नग्र विभाग के, कियो राज विस्तार।।

भारतीय लोक विश्वास के अनुसार पांच, बारह, बावन, छप्पन, अस्सी, चौरासी, बहत्तर आदि की संख्याओं को अनेक प्रसंगों के साथ जोड़ा गया है। बारह गांव, बारह कोस, बारह कोटड़ी आदि के वर्णन भी कई स्थानों पर प्रायः हैं। इसी प्रकार 5200, 5600 आदि शब्दो ं का भी प्रचलन है। पालों, तड़ों तथा गोत्रों के अतिरिक्त मीणा जाति के अन्य कई सामाजिक विभाग भी लोक प्रचलित हैं। इनमें से प्रमुख अग्र प्रकार है''[28]–

''जमींदार–चौकीदार मीणाः–

चौकीदार मीणा जयपुर के आसपास वाले स्थानों में रहते हैं। वे अपने आपको ठाकुर मानते हैं और क्षत्रिय होने का दावा भी करते हैं। यह विश्वास किया जाता है कि पारम्परिक रूप में ये खेतों की रक्षा किया करते थे, इसलिए इनका नाम चौकीदार मीणा पड़ा, ये मांसाहारी भी है। इनका समुदाय अनेक गांव व गोत्रों के अनुसार छोटे–छोटे समूह में बंटा हुआ है। इनके परिवार का आकार बड़ा होता है। अधिकांश महिलाएँ खेतों पर भी काम करने जाती है और साथ ही पारिवारिक आय की वृद्धि में भी सहायक होती हैं। उन्नत कृषि तथा विकास कार्यक्रमों के प्रति इनको सम्पूर्ण जानकारी है। राज्य में सबसे अधिक संख्या जमींदार मीणाओं की है। इनके पास कृषि योग्य भूमि प्रचुर मात्रा में है। राजपूतों के आने से पहले ये जमींदार मीणा इस क्षेत्र के स्वामी थे। भोजन की दृष्टि से ये शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों ही है। जमींदार मीणा पारम्परिक रूप में किसान है और किसानी

सभ्यता उनके साथ जुड़ी हुई है। जमींदार मीणा हिन्दू धर्म को स्वीकार कर चुके हैं और कभी–कभी हिन्दू से सम्बन्धित जाति के लोगों तथा जमींदार मीणाओं में कोई अंतर नजर नहीं आता। विकास कार्यों का सबसे अधिक लाभ मीणाओं के इसी वर्ग ने प्राप्त किया है। मीणा जनजाति में जमींदार मीणाओं का स्थान चौकीदार मीणाओं से ऊँचा है।

1. पुराणाबासी–नयाबासी मीणाः–

पुरानाबासी वह मीणा है जो पहले से बसे हुए हैं और नयाबासी मीणा बाद में आकर बसे हैं। एक मान्यतानुसार पुराणाबासी मीणा जमींदार मीणाओं एवं नयाबासी मीणा चौकीदारों को कहा जाता है। नीम का थाना के पास नयाबास नामक स्थान चौकीदार मीणाओं का प्रमुख स्थान है। संभवतः नयाबास गांव के नाम से ही चौकीदार मीणाओं को नयाबासी कहा जाने लगा।

2. उजला–मैला मीणाः–

गहलोत के अनुसार मीणों की दो जातियाँ है – उजले तथा मैले। उजले मीणा गाय–बैल का माँस नहीं खाते, किन्तु मैले मीणें खाते हैं। ओझा पड़िहार मीणाओं को उजले मीणा बताते हैं। एक अन्य धारणा यह भी है कि ढूंढाड़ के मीणा उजले मीणा माने जाते हैं और बाकी मैले मीणा।

3. पड़िहार मीणाः–

यह मीणा टोंक, भीलवाड़ा और बूंदी जिले में बहुतायत से निवास करते हैं। लोक प्रचलित मान्यतानुसार पाडे (भैंसे) का मांस खाने के कारण इन्हें पड़िहार मीणा कहा जाता है। पड़िहार और चौकीदार में अंतर स्पष्ट करते हुए एक विद्वान ने सन् 1874 में लिखा कि ''पड़िहार मीणा भी लूटमार करते हैं, किन्तु वे चौकीदार मीणाओं की बराबरी के नहीं होते। पड़िहार मीणा भोले और अन्धविश्वासी होते हैं, लेकिन चौकीदार मीणा चतुर होते हैं।

4. रावत मीणाः–

रावत शब्द सामंतों में राव, रावल और राजा आदि की श्रेणी में एक प्रतिष्ठित पदवी मानी जाती थी। खण्डेलवाल वैश्यों में रावत और ढोलियों में भी रावत गोत्र मिलता है, यह अपनी उत्पत्ति राजपूतों से मानते हैं।

5. चमरिया मीणाः–

आगरा की तरफ यह मीणा पाये जाते हैं। संभवतः चमड़े का काम करने के कारण इन्हें चमरिया मीणा कहा जाने लगा। सामाजिक कार्यकर्ताओं के अनुसार चमारों और मीणाओं की अनेक सामाजिक मान्यताओं व रीति–रिवाजों में साम्य देखने को मिलता है।

6. भील मीणाः—

यह अधिकांशतः अजमेर—मेरवाड़ा, मेवाड़ और बागड़ क्षेत्रों में निवास करते हैं। भीलों तथा मीणाओं के साहचर्य के कारण यह नई जाति है, जो दोनों का ही लाभ प्राप्त करती है। ओझाजी के अनुसार इनमें रीति—रिवाजों आदि में अन्तर पाया जाता है साथ ही इनमें परस्पर विवाह सम्बन्ध भी नहीं होते है।

7. असली या आदू मीणाः—

कर्नल टॉड के अनुसार ऊषाहारा वंश के मीणाओं को ठेठ, असली और अमिश्रित मीणा वंश माना जाता है। मैना या मेना से आशय है असल या अमिश्रित जाति का जिसमें अब केवल ऊषाहारा ही हैं, जबकि मीना मिश्रित जाति के लिए प्रयुक्त होता है। इनकी 12 पाल या 12 जातियॉ चौहान, जादूण, पड़िहार, कछवाहा, सोलंकी, साँखला, गहलोत आदि राजपूत जातियों से निकली मानी जाती है।

8. ढेढिया मीणाः—

गोड़वाड़ तथा जालौर क्षेत्र के मीणाओं को ढेढिया मीणा कहा जाता है। ये लोग गौ मांस भक्षण से भी घृणा नहीं करते थे।

9. सूरेतवाल मीणाः—

जब मीणा जाति के पुरूष और मालिन जाति या अन्य ऐसी जाति की स्त्री से कोई संतान उत्पन्न करता है, तो वह सूरेतवाल मीणा कहलाते हैं। शुद्ध मीणाओं से इनका बेटी—व्यवहार भी नहीं होता है।

10. चौथिया मीणाः—

मारवाड़ के कई गांवों में मेणों, भीलों तथा बावरियों को चौथ लगती थी। गांवों में ऐसे मेणों तथा राजपूतों को भी चौथ मुकर्रर हुई, जिनका थोक अधिक था। यह तभी से चौथिया मीणा कहलाने लगे।

अन्य जातियों के मीणाः—

मीणों में दस्सा और बीसा भी होते हैं। दस्सा पापाचारी और बीसा मेहनत—मजदूरी करते हैं। सम्पूर्ण प्रदेश में बसे मीणाओं को मैणसल मीणा कहते हैं। इनके अलावा भी मीनोत, मारण, रावत, क्षत्रिय, देशवाली, देशी, परदेशी, मेवासी, मीना ठाकुर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। मारण या म्यारण शब्द सम्पूर्ण मीणा समाज के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इनके 80 गोत्र, अंतप्रवर, अथर्वणवेद, कोमथि शाखा हैं। मुनि मगनसागर ने दुष्टों को मारने के कारण इन्हें मारण लिखा है। मुनि मगनसागर ने मेवास में निवास करने वालों को मेवासी कहा। यह वर्तमान में मेवात या गुड़गांव तथा अलवर जिलों का प्रदेश है।"[29]

मीणा जनजाति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

आदिवासियों के किसी भी अध्ययन के लिए जानना अति आवश्यक है साथ ही राज्य की आदिवासी संरचना क्या है? ऐतिहासिक दृष्टि से देखे तो मीणा जनजाति देश की अति प्राचीन जनजाति मानी जाती है। जो पहाड़ी एवं जंगलीय क्षेत्रों में निवास करती है। कहा जाता है कि यह जनजाति आर्यों के आगमन से पूर्व ही भारत में निवास करती थी। आर्यों के भारत आगमन के पश्चात मीणों ने आरावली श्रेणियों, ढूढाड़, बागड,, हाड़ौती व मत्स्य क्षेत्रों में अपने गणराज्य स्थापित किये।''[30] यह भी कहा जाता है कि वैदिक काल में यह जनजाति प्रजावत्सल एवं प्रतापी जाति मानी जाती थी, जिसकी वीरता व धीरता का सभी लोहा मानते थे। इतिहास गवाह है कि इस जनजाति के लोगों ने कई आन्दोलनों में भाग लिया। राजस्थान में जमींदार व चौकीदार मीणाओं का वर्चस्व अधिक रहा है, क्योंकि यह दोनों मीणा वीर व साहसी थे। लेकिन मीणा जनजाति के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान ब्रिटिश प्रशासकों तथा मानवशास्त्रियों के माध्यम से कम है।

जनसंख्यात्मक दृष्टि से यह जनजाति राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति है। राजस्थान के उदयपुर, अलवर, जयपुर, करौली, कोटा, बारां, भरतपुर एवं सवाईमाधोपुर जिलों में इस जनजाति का बाहुल्य है। राजस्थान के पूर्वी जिलों और दक्षिणी जिलों के मीणाओं में एक अन्तर है। दक्षिण राजस्थान के मीणा भील–मीणा कहलाते हैं, जो भील जनजाति की एक उपशाखा है। पूर्वी जिलों के मीणा अपने आपको भीलों के साथ नहीं जोड़ते। इन क्षेत्रों के मीणा, मीणा शब्द को जाति की तरह जोड़ते हैं। राजस्थान के अतिरिक्त उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा एवं पंजाब में भी इस जनजाति के लोग निवास करते हैं, लेकिन इन्हें वहां अनुसूचित जनजाति का दर्जा नहीं दिया गया है। ऐतिहासिक तथ्य भी इस बात को प्रमाणित करते हैं कि अन्य प्रदेशों में बसे मीणा लोगों का मूल निवास स्थान पहले राजस्थान ही था। यद्यपि मीणा जनजाति के ये लोग राजपूतों के विभिन्न आक्रमणों के कारण पड़ौसी राज्यों में जाकर बस गये थे। राजपूतों के आगमन से पूर्व राजस्थान की धरती पर मीणाओं के छोटे–छोटे राज्य थे। ऐसा कहा जाता है कि मीणाओं का एक उपभाग चौकीदार मीणा है, जिनका सम्बन्ध इन राजवंशों से था। जिसके कारण इनकी एक अपनी पहचान थी। राजस्थान के विभिन्न जिलों में बसी इस जनजाति को मीणा, मेणा एवं मैणा आदि नामों से पुकारा जाता है, लेकिन राज्य से बाहर यह ''मीना'' के नाम से सम्बोधित की जाती रही है।

मीणा जनजाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में बहुत सी मिथक कथायें एवं मौखिक वार्तायें जुडी हुई है। ऐसा माना जाता है कि अन्य जनजातियों की अपेक्षा मीणा जनजाति

का इतिहास बहुत पुराना है। क्योंकि इस जनजाति के बारे में जितना कहा जाये उतना ही कम है। जिनके आधार पर मीणा जनजाति की उत्पत्ति का ऐतिहासिक बखान स्पष्ट हुआ है।

''श्री मुनि मगनसागर जिन्होंने 'मीन पुराण' नामक पुराण की रचना की है उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि मीणा जाति मत्स्यावतार से सम्बन्धित है। उन्होंने 'मीन' क्षत्रियों की एक पौराणिक जाति की कल्पना भी की है। मुनियों ने 'अभिधान चिन्तामणि कोष, शब्दस्तोम महानिधि तथा सिद्धान्त कौमुदी आदि कोष व्याकरण के ग्रन्थों से मीन शब्द की व्याख्या उद्धृत करते हुए, मीन को दुष्टों का संहार करने वाली जाति बताया गया है।''[31] मीन का प्रचलित शाब्दिक अर्थ मछली के रूप में लिया जाता है। जिसके कारण मीना जाति राजस्थान में 'मीणा' कहकर पुकारी जाती है। अतः यह भी देखना होगा कि क्या मीन का राजस्थानी रूपांतर 'मीण' हो सकता है। नकार का णकार में परिवर्तन राजस्थानी के ध्वनि परिवर्तन की सीमा में आता तो है, लेकिन मीन शब्द का उच्चारण कहीं भी 'मीण' नहीं होता। ऐसे में अगर 'मीना' का सम्बन्ध 'मीन' से मान भी लिया जाये तो 'मीणा' की व्युत्पत्ति संदेहास्पद ही रहेगी।

''लोकविश्वास के अनुसार मीणा जाति की उत्पत्ति की अन्य कई कल्पनायें मिलती है–

1. जब परशुराम ने क्षत्रियों का संहार करना प्रारम्भ किया तो अनेक क्षत्रिय 'मैं ना'–'मैं ना' (मै नहीं) कहते हुए प्राणों की भिक्षा माँगने लगे। वही लोग आज मैणा–मीणा है।
2. मैणा–मयण शब्द का मूल मदन (कामदेव) है और शारीरिक सौंदर्य के कारण ये 'मयणा' कहलाने लगे। इस मान्यता के अनुसार ये यादव प्रद्युम्न के वंशधर माने जाते हैं।
3. श्रीमद्भगवद्गीता में मीना एकादशैवतु तथा मीना एकादशाक्षितिम् कहकर जिस वंश के राज्य करने का उल्लेख है वह आजकल की मीणा जाति का ही है।
4. अग्निपुराण में कश्यपजी को ब्याही गई उषा की पांच कन्याओं में से मीना, मैना, मामक की संतान मीना–मैना कहलाई।
5. स्कंदपुराण में भगवान शिव को मीन, मीननाथ आदि कहा है, अतः शिव के भक्त लोग 'मीना' कहलाये।
6. शिवपुराण में दक्ष प्रजापति की 67 कन्याओं में से मैना कन्या तथा कलावती का श्रापग्रस्त होकर मानवी रूप में अवतरित होना वर्णित है। इनमें से 'मैना' राजा हिमालय की रानी बनी जिसके गर्भ से पार्वती तथा अन्य सौ पुत्र हुए, जो मैनाक कहलाये और इन्हीं मैनाक राजकुमारों की संतति मैना–मीना कहलाई।

7. जैन मतावलम्बियों के अनुसार भगवान ऋषभदेव के एक सौ पुत्रों में से एक नाम मत्स्यदेव था। इसी के नाम से मत्स्यदेश और उसमें बसने वाली जाति मीना कहलाई।''[32]

भारत से बाहर भी ''मैना'' मीना नामक जातियों के उल्लेख विश्वकोषों में पाये जाते हैं। ये जातियाँ अधिकतर कबीलों के रूप में जंगलों में रहने वाली हैं। स्पार्टा से 'मताहन' टापू तक फैली हुई टैगेटस पहाड़ी की शृंखला में बसे हुए, प्रदेश को 'मैना' और वहाँ के निवासियों को 'मैनोत' कहते हैं। इस प्रदेश को वर्तमान में मोरिया के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार 'मैनान' नामक एक स्वतंत्र भाषा–समुदाय दक्षिण अमेरिका में बसने वाले इण्डियन लोगों का है, जिसका नामकरण मैना नामक एक महत्त्वपूर्ण जाति के नाम पर हुआ है। उत्तर–पश्चिम पेरू में इस जाति के लोगों ने काफी बड़ा भू–भाग घेर रखा है। दक्षिणी अरब में भी मीनैन नामक एक बोली है, जो 'मैनी' नामक प्रदेश में प्रचलित है तथा जिसके बोलने वालों को यूनानी भूगोलवेत्ताओं ने मिनेई कहा है। डॉ मथुरालाल शर्मा ने मीणों को सीथियन या हूणों के वंशज ही माना है।''[33] उपर्युक्त सभी तथ्यों व प्रमाणों के होते हुए भी हम निश्चयपूर्वक कहने की स्थिति में नहीं हैं कि मीणों का वास्तविक उद्गम कहाँ से हुआ है। इतना ही नहीं यह एक अनोखा सादृश्य है, क्योंकि मीणा जनजाति का ऐतिहासिक अध्ययन तो यही बखान करता है कि प्रत्येक काल में मीणा जनजाति का उल्लेख पाया गया है। यद्यपि सैंधव काल से लेकर राजपूत काल तक मीणा जनजाति के ऐतिहासिक कार्यों का उल्लेख मिलता है। मीणा जनजाति के लोग सहासी व वीर थे, जिसके कारण भारत में इनकी अपनी एक पहचान है।

हाड़ौती में मीणाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः–

हाड़ौती के बूंदी राज्य में स्थित अरावली पर्वतमाला की तलहटी में आदिम सभ्यता के चिन्ह् पाये गये हैं। महाभारत के अनुसार इस क्षेत्र में मत्स्य जाति का निवास स्थान रहा है। वैदिक काल के राजा सुदास ने जिन दश राजाओं को युद्ध में परास्त किया था, उनमें मत्स्य राजा भी सम्मिलित थे। मत्स्यों की मुख्य राजधानी तब बैराठ थी। मौर्यकाल में मत्स्यों की राजनीतिक पहचान बनी हुई थी। मत्स्यों को अर्जुनायनों ने परास्त कर इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था। तत्पश्चात् इस क्षेत्र पर समुद्रगुप्त ने भी अधिकार किया। बूंदी का उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र उस काल में शूरसेन राज्य में आता था, जो अलवर, भरतपुर, धौलपुर एवं करौली तक फैला हुआ था। ईसा से 75 वर्ष पूर्व तक यह क्षेत्र शकों के अधीन लगभग 250 वर्षों तक रहा है।

बूंदी का दक्षिणी–पूर्वी भाग बावन बयालीसवां कहलाता है। धार (मालवा) के परमारों के पतन के पश्चात् इस क्षेत्र पर मीणा जाति का बाहुल्य रहा तथा उन्होंने स्थान–स्थान पर

अपने समूह स्थापित कर लिए। जिसके कारण उन्होंने अपने ठिकाने बनाकर सरदारों का चयन किया तथा वहाँ निवास करना आरम्भ कर दिया। इस क्षेत्र में बूंदा मीणा ने बूंदी व कोटिया भील ने कोटा में अपने ठिकाने स्थापित किये।

चम्बल किनारे पर अकेलगढ़ नामक मीणों का केन्द्रीय स्थान था। इसे राजधानी बनाकर भील मीणाओं ने कई वर्षों तक यहां शासन किया। विक्रम संवत् 1300 में राव देवा के पुत्र समरसी और उसके पुत्र जैत्रसिंह ने भीलों के सरदार कोटिया भील पर आक्रमण कर उसे परास्त कर दिया। उसके बाद अकेलगढ़ के पूर्व–दक्षिण में स्थित मुकुन्द पर्वत श्रेणियों के भील मीणाओं पर भी आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया और उसे बूंदी के राज्य में मिला लिया। मीणा इतिहासकारों का मत है कि कोटिया भील से जैत्रसिंह का युद्ध वर्तमान कोटा गढ़ पैलेस के समीप चारभुजा मंदिर के सामने हुआ था। अकेलगढ़ की ओर जाने वाले रास्ते का नामकरण भी भीलपोड़ी किया गया है। कोटिया भील की राजधानी अकेलगढ़ के पूर्वी–दक्षिणी कोण पर गागरोन और घाटौली प्रदेश था। चम्बल नदी के इस पार नान्ता के घने जंगल थे। वर्तमान कोटा भी जंगली स्थान था, जहाँ भील अपने पराक्रम के कारण वनच्छादित इस क्षेत्र में निवास करते थे। अतः यह कहा जा सकता है कि समस्त भील मीणाओं ने सम्पूर्ण कोटा और झालावाड़ जिले की, कैथून और खींचीपुर परिक्षेत्र को छोड़कर लगभग सब स्थानों पर अपने ठिकाने स्थापित किये। अकेलगढ़ भील मीणों की मुख्य राजधानी थी। मीणों के हाड़ाओं से परास्त होने के उपरान्त वह मुकुन्दरा से मनोहरथाना के बीच की पहाड़ियों में बस गये थे। बाद में कोटा महाराव मुकुन्दसिंह जब शिकार करने मुकुन्दरा की पहाड़ियों में गये, तब वह अबली मीणा पर आसक्त हो गये''[34] और उसे अपनी रानी घोषित कर दिया। तभी से भील और मीणाओं के कोटा बूंदी दोनों शासकों से समझौते हुए, जिसके कारण वे हाड़ाओं के दोनों राज्यों में ही निवास करने लगे। सम्पूर्ण हाड़ौती पर मीणा सरदारों के काल निर्धारण हेतु कोई संकेत इसलिए भी प्राप्त नहीं हो सके हैं। क्योंकि विजेता क्षत्रियों ने उनके ऐतिहासिक ब्यौरे तत्काल नष्ट कर दिये, ताकि यह जाति अपना सिर न उठा पाये। मीणा जाति भारत में ही नहीं, वरन् विश्व की प्राचीन जातियों में से एक प्रमुख जनजाति मानी गई है।

मीणा जनजाति के विकास हेतु आयोगों का गठनः–

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश के लिए नवीन संविधान का निर्माण किया गया। 26 नवम्बर, 1949 को भारतीय संविधान सभा में सामाजिक न्याय की लड़ाई के महान् योद्धा डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने अपने अंतिम भाषण में कहा था''[35] कि हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को एक सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना चाहिए। सामाजिक लोकतंत्र एक ऐसी जीवन पद्धति

है, जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे को जीवन के सिद्धान्त मानती हैं।'[36] इस प्रकार जनजाति के विकास एवं कल्याण हेतु केन्द्र एवं प्रान्तीय सरकारों के द्वारा कई दायित्व निर्धारित किये गये। संविधान का 46वाँ अनुच्छेद जनजातियों, अनुसूचित जातियों व पिछड़े वर्गों के शैक्षणिक हितों की अभिवृद्धि के दायित्व से जुड़ा है। उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने एवं सुझाव देने हेतु विभिन्न आयोगों का गठन किया गया –

1. ठक्कर आयोगः–

अमृत लाल बिट्ठल दास ठक्कर ने अपना सम्पूर्ण जीवन ही आदिवासियों के सम्पूर्ण विकास में लगाया था। गाँधी जी द्वारा इन्हें हरिजन सेवक संघ का मंत्री पद देने पर इन्होंने अपनेपन तथा त्याग की भावना से आदिवासियों एवं हरिजनों की सेवा की, तभी से इन्हें ठक्कर बप्पा के नाम से जाने जाना लगा। बप्पा की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। उनके सुझावों के आधार पर ही 24 अक्टूबर, 1948 को **भारतीय आदिम जाति सेवा संघ** की स्थापना की गई।''[37] इस संघ के अध्यक्ष के रूप में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को मनोनीत किया गया। इस संस्था का उद्देश्य भारत में जनजातियों का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विकास करना था। ताकि वे राष्ट्र की मुख्य धारा में सम्मिलित हो सकें।''[38]

2. आयंगर आयोगः–

1949 में गोपाल स्वामी आयंगर की अध्यक्षता में केन्द्र सरकार ने गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल के प्रयत्न स्वरूप एक आयोग का गठन अपराधी जनजाति अधिनियम, 1924 के निरस्त होने के बाद आदिम जनजातियों को समाज की मुख्य धारा में शामिल करने हेतु सुझाव प्रस्तुत किया। किन्तु दुर्भाग्यवश सरदार पटेल के आकस्मिक निधन के कारण प्रतिवेदन पर प्रभावी अमल नहीं हो सका। इस आयोग की अनुशंषा पर केन्द्र सरकार ने 1952 में अपराधी जनजाति अधिनियम, 1924 को निरस्त कर दिया।[39] इस आयोग के प्रतिवेदन की अनुशंषा की समीक्षा हेतु समय–समय पर अन्य आयोगों का गठन किया गया।

3. काका कालेलकर आयोगः–

इस आयोग की स्थापना संविधान की धारा 340 के अन्तर्गत की गई। इस आयोग द्वारा केवल उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और चित्तौड़ की आदिवासी जातियों को ही मान्यता दी गई। झूथालाल नाढ़ला ने 11 जून 1952 में बगरू में सम्मेलन का आयोजन कर प्रस्ताव पारित किया कि मत्स्य मीणाओं को भी मेवाड़ क्षेत्रों के मीणों की भांति ही सभी सुविधाएँ प्रदान की जायें। राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास ने अभिशंसा की, कि राजस्थान में 12 लाख मीणाओं को भी अनुसूचित जनजाति में रखा जाये। सन् 1954 में

पिछड़ी जाति कल्याण विभाग के निदेशक जगन्नाथ सिंह मेहता ने लक्ष्मीनारायण झरवाल को सूचित किया की वे संघर्ष करें। उन्होंने काका कालेलकर से भेंट कर अपनी समस्याओं से उन्हें अवगत कराया। पिछड़ी जाति कल्याण विभाग राजस्थान सरकार के निदेशक पी. सी. दवे ने अचरोल का दौरा किया और आंकलन कर अभिशंसा प्रस्तुत की। उनकी अभिशंसा पर ही 1955–56 में मीणाओं को अनुसूचित जनजाति की सूची में सम्मिलित करने के आदेश दिये गये। 1970–80 में वी.पी. मण्डल आयोग का गठन हुआ। इस आयोग ने कंजर, सांसी, बावरिया आदि को भी अनुसूचित जनजाति सूची में रखने की अनुशंसाएँ की। मीणा समाज के नेतागणों ने इस समाज की सेवाएँ कीं, जेल गये तथा शहीद भी हुए। उनकी समितियों, सत्याग्रहों और सम्मेलनों के कारण ही मीणा समाज को आरक्षण मिला। जिसके बाद केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों के प्रयासों से जनजातियों के लिए संविधान में अनेक प्रावधान किये गये ।

मीणा जनजाति के लिए संवैधानिक प्रावधान एवं संरक्षण :–

भारतीय संविधान बहुत ही विशाल और व्यापक है। संविधान में नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समान न्याय, उन्नति के समान अवसर आदि प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद जनजाति के उत्थान व कल्याण के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। मुख्य प्रावधान एवं संरक्षण इस प्रकार हैं –

1. अनुच्छेद 19 के तहत किसी भी अनुसूचित जनजाति के हित में सभी नागरिकों के स्वतन्त्रता पूर्वक आने–जाने, बसने और सम्पत्ति अर्जित करने के सामान्य अधिकारों में विधि द्वारा कटौती करने की व्यवस्था है।
2. अनुच्छेद 16 एवं 335 के तहत सरकारी सेवाओं में जहाँ इनका प्रतिनिधित्व अपर्याप्त हैं, वहीं आरक्षण तथा सरकारी सेवाओं में नियुक्तियों को ध्यान में रखना होगा।
3. अनुच्छेद 330, 332 और 334 के अनुसार 25 जनवरी 1990 तक नया तथा 25 जनवरी, 2000 तक लोकसभा तथा विधानसभा में विशेष प्रतिनिधित्व देने की व्यवस्था की गई, जिसे अब बढ़ा दिया गया है।
4. अनुच्छेद 29(2) के तहत राज्य द्वारा पोषित अथवा राज्य विधि से सहायता प्राप्त करने वाली किसी शिक्षा संस्था में प्रवेश पर किसी भी तरह के प्रतिबन्ध का निषेध है।
5. अनुच्छेद 164 और 338 पंचम अनुसूची के अनुसार जनजातीय कल्याण के लिए जनजातीय सलाहकार परिषद का प्रथक विभाग स्थापित करने की व्यवस्था की गई है।
6. अनुच्छेद 244 और तथा षष्ठम अनुसूची के तहत जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन और नियन्त्रण के लिए विशेष व्यवस्था की गई है।

7. अनुच्छेद 164 के तहत असम के अतिरिक्त बिहार, मध्यप्रदेश और उड़ीसा में जनजातीय कल्याण मंत्रालय स्थापित करने का विधान है।

8. अनुच्छेद 16(4) के तहत भारत सरकार के द्वारा अपने नियंत्रण के अधीन आने वाली सेवाओं में अनुसूचित जनजातीयों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई।

9. अनुच्छेद 46 के तहत राज्य, जनता के दुर्लभ वर्गों के, विशिष्टतया, अनुसूचित जातियों और जनजातियों के शिक्षा और अर्थ–सम्बन्धी हितों की विशेष सावधानी से अभिवृद्धि करेगा साथ ही सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार के शोषण से उनकी सुरक्षा करेगा।

10. अनुच्छेद 15 के तहत अनुसूचित जनजातियों के साथ किसी भी प्रकार के भेदभाव को वर्जित किया गया है।

11. अनुच्छेद 23 के तहत बेगार प्रथा और बलपूर्वक श्रम करवाने का निषेध किया गया है।

12. अनुच्छेद 342 के तहत महामहिम राष्ट्रपति द्वारा अनुसूचित जनजातियों के सम्बन्ध में सूची बनाने का उपबन्ध है।

13. अनुच्छेद 399 के तहत राष्ट्रपति जनजातीय प्रशासन की देख–रेख व निगरानी करने लिए जनजाति आयोग का गठन कर सकते हैं।''[40]

संरक्षण एवं विकास योजनाएँ :–

स्वतन्त्रता के पश्चात केन्द्र सरकार के द्वारा जनजातियों के कल्याण एवं विकास के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम शुरू किये गये हैं। संवैधानिक प्रावधानों के अतिरक्त इन्हें निम्नांकित सुविधाएँ उपलब्ध करवाई गई हैं।

1. विधानमण्डलों में प्रतिनिधित्वः–

''संविधान के अनुच्छेद 330 के तहत जनजातियों की जनसंख्या के अनुपात में इनके लिए लोकसभा तथा विधानसभाओं में स्थान आरक्षित किये गये हैं। आरम्भ में आरक्षण की अवधि 10 वर्ष के लिए थी। किन्तु 10–10 वर्ष करके आगे बढ़ाया गया और अब यह 2020 तक सम्भावित है।''[41]

2. पंचायतों तथा स्थानीय निकायों में प्रतिनिधित्वः–

''पंचायती राज लागू होने पर अनुसूचित जनजातियों के लिए ग्राम पंचायतों तथा अन्य स्थानीय निकायों में स्थान आरक्षित करने की व्यवस्था संविधान में रखी गई। ताकि इनमें उनको समुचित प्रतिनिधित्व मिल सके।''[42]

3. सरकारी सेवाओं में आरक्षणः—

''संविधान के अनुच्छेद 335 में यह व्यवस्था की गई है कि अनुसूचित जनजातियों के कार्य व पदों के लिए कुछ स्थान आरक्षित रखे गये हैं। अखिल भारतीय स्तर पर खुली प्रतियोगिता के द्वारा जिन पदों पर भर्ती की जाति हैं। उसमें अनुसूचित जातियों के लिए 15 प्रतिशत रिक्तियां आरक्षित की गई है। अखिल भारतीय स्तर की किसी अन्य तरीके से की जाने वाली भर्ती के मामले में 5 प्रतिशत रिक्त स्थान आरक्षित हैं। दोनों मामलों में अनुसूचित जनजातियों के लिए 7.50 प्रतिशत स्थान आरक्षित किये गये।

4. जनजाति के छात्रों के लिए मैट्रिक के बाद छात्रवृत्तिः—

इस योजना के तहत जनजाति के छात्र व छात्राओं को विभिन्न प्रकार की सहायता दी जाती है जैसे अध्ययन के लिए वित्तीय सहायता, अध्ययन यात्रा खर्च, शोध प्रबंध, टंकण, पुस्तक अनुदान आदि। इस छात्रवृत्ति की पात्रता के लिए आय सीमा बढाकर एक लाख रूपये वार्षिक कर दी गई है।

5. राजीव गांधी राष्ट्रीय फेलोशिप योजनाः—

वित्तीय वर्ष 2005—06 के दौरान अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों के लिए यह योजना चलाई गई। इसमें अनुसंधान से सम्बन्धित उच्च शैक्षिक डिग्रियों के लिए फेलोशिप दी जाती है।

6. विदेश में उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति तथा यात्रा अनुदानः—

वे प्रतिभाशाली जनजाति के छात्र व छात्राएं, जो विदेशों में इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और विज्ञान में अनुसंधान से सम्बन्धित उच्च शैक्षिक डिग्रियां प्राप्त करना चाहते हैं। उन्हें सरकार के द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

7. कोचिंग एवं छात्रावास की सुविधा—

इसके तहत जनजाति के छात्र व छात्राओं को विशेष कोचिंग की सुविधा प्रदान की जाती है, जिसके अन्तर्गत राजस्थान लेक सेवा आयोग एवं अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है। इस तरह अनुसूचित जनजाति के छात्र व छात्राओं के लिए छात्रावास की सुविधाएँ भी दी जाती हैं।''[43]

मीणा जनजाति का बदलता सामाजिक ढांचाः—

''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह अपने वर्चस्व को स्थापित करने हेतु कई जातियों में संगठित हो गया है। लगभग सभी जातियों ने अपने भारतीय एवं प्रादेशिक संगठन कायम कर लिए और निरन्तर एकजुट होने का सभी जातियाँ प्रयास कर रही है। आज मीणा जाति के इतिहास को देखें तो ज्ञात होता है कि मीणा जाति आदिकाल से ही

एकता और संगठन के बलबूते पर आगे बढ पाई है।''[44] मीणा जाति का सामाजिक आंकलन करे तो ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में यह समाज मातृसत्तात्मक था, जिसने कालान्तर में पितृसत्तात्मक रूप धारण कर लिया है। इस समाज में पिता ही परिवार का मुखिया होता है, जो परिवार के सदस्यों का पालन पोषण करता है। उनकी सुरक्षा एवं विकास आदि के लिए वही पूर्णरूप से उत्तरदायी भी है अर्थात मीणा समाज में संयुक्त परिवार की प्रथा थी। मीणा समाज के लोगों ने ''अपने वर्चस्व को अक्षुणय बनाये रखने हेतु आर्यों, यवन, शिवि, अर्जननायन, मालव, शक, हूण, गुर्जर, राजपूतों आदि जातियों से निरन्तर उनके आक्रमणों के विरूद्ध युद्ध किये। परन्तु इस समाज ने अपने शासित परगनों और राज्यों से पराजित होकर भी जनसाधारण की श्रेणी में अपना वर्चस्व बनाये रखा है। पूर्व में मीणा जनजाति की वैवाहिक स्थिति जिसमें रस्मों–रिवाज अन्य जातियों के समान ही थे। मीणा जनजाति में नाता प्रथा, बाल–विवाह, तलाक प्रथा, विधवा–विवाह आदि प्रथायें विद्यमान थी। मीणा जनजाति की वैवाहिक व्यवस्थाएँ आर्य एवं क्षेत्रियों से मिलती जुलती थी साथ ही मीणा जाति में सती प्रथा का भी प्रचलन था। ''महाभारत काल में विराट राजा के साले भाई कीचक के परिवार की स्त्रियों के भी कई स्थानों पर सती होने के भी प्रमाण मिलते हैं। ऐसा माना जाता है कि मध्यकाल में खोह के महाराजा आलण सिंह की रानी उसके साथ सती हुई थी।''[45]

पूर्व में मीणा जनजाति के पुरूष व ''महिलाएँ सामान्यतः वस्त्र व आभूषणों में पुरूष धोती, उवपसत्र, अंगरखी, दुपट्‌टा और पगड़ी पहनते थे। वस्त्रों के साथ ही पुरूष कानों और हाथों में पिण्ड़ली पर सोने या चाँदी के आभूषण धारण करते थे। इसी प्रकार महिलाएँ भी लूगडी, कंचूकी, कुर्ती और घाघरा धारण करती थी साथ ही आभूषणों में सोने–चाँदी और पीतल या कथीर के आभूषण धारण करती थी।''[46] हसली व करधनी पहनने व पैरों में झांझर, कड़े या रमझोल धारण करने की भी प्रथा थी।

मीणा समाज के लोग अत्यन्त परिश्रमी भावी होते थे। वे कृषि कार्य के लिए काफी जीवट के लोग माने जाते थे, उन्हें कड़ी मेहनत के साथ तीन–चार बार भोजन करना पड़ता था। प्रातः कलेवा, दोपहर करडी रोटी का भोजन और दोपहर का नास्ता व रात को जी भर रोचक भोजन करना होता था। मीणा जाति के लोग दुध, छाछ, घी, राबडी, दूध–दलिया, ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ आदि इनकी मुख्य भोजन सामग्री थी। मीणा समाज के लोग मध्यकाल में शाकाहारी एवं मांसाहारी हुआ करते थे और साथ ही ये लोग मदिरापान का सेवन भी करते थे।

प्राचीन समय में मीणा समाज के लोग उत्सव प्रिय रहे हैं। इनको मनोरंजन, लोकगीत, नृत्य, मेले आदि का शोक था। इनके तीज त्यौहारों में पुरूष व महिलाएँ बडी संख्या में भाग लेते थे जैसे गणगौर, दशहरा, होली, दीपावली आदि। इसी प्रकार मीणा समाज के ''ऋषि गौत्तम नाथ का मेला मारवाड़ प्रदेश में तथा ऋषभ देव एवं मातृ कुण्ड़ियाँ के मेले भी इनके पसंद के दर्शनीय मेले थे।''[47] पूर्व मे मीणा समाज के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के थे, जिसके कारण ''इनके ईष्ठदेव भगवान शिव थे। मीणा समाज के द्वारा कई स्थानों पर मन्दिर भी बनवाये गये जैसे– टोड, बिलोत, मैगी, बूंदी, कमारा, राजोर, खोह, आमेर, मांची आदि स्थानों पर निर्मित कई भव्य शिव मन्दिर विद्यमान है।''[48]

स्वतन्त्रता के बाद मीणा जनजाति के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों के प्रयासों से कई कार्यक्रम संचालित किये गये। इनको आरक्षण मिला तो शिक्षा के स्तर में थोडा सुधार भी हुआ पर नाम मात्र में, क्योंकि उस समय इनमें जागरूकता का अभाव था। तथाकथित सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण इनके सामाजिक परिवेश जैसा कि इनके रहन–सहन, खान–पान, विवाह संस्कार, वेश–भूषा, आभूषण, तीज–त्यौहारों आदि में न्यूनाधिक परिवर्तन हुआ।

भारत में 90 के दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा आई, तो तथाकथित सभ्य जातियों की तरह ही मीणा जनजाति के सामाजिक परिवेश में बदलाव आया। वैश्वीकरण से शिक्षा के स्तर में वृद्धि, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, सामाजिक नियम कानूनों में खुलापन आया। इस आधुनिकता की दौड़ में मीणा जनजातीय समाज भी पीछे नहीं रहा, क्योंकि शिक्षा के स्तर में वृद्धि होने से जागरूकता आई। जिसके कारण समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं एवं परम्परागत सामाजिक कुप्रथाओं का त्याग हुआ। इनके खान–पान में परिवर्तन हुआ अर्थात् आधुनिक खान–पान का प्रचलन बढ़ा जैसे – पिज्जा, बर्गर, होटलों में जाकर भोजन करना, रेस्टोरेन्टों में जाना आदि। वहीं इनके पहनावें में भी बदलाव आया जैसे – पुरूष पेन्ट–शर्ट, कोट, टाई, महंगे जूते आदि धारण करने लगे। इसी प्रकार महिलाएँ भी इस आधुनिकता की दौड़ में पीछे नहीं रही है। इनके भी पहनावें में परिवर्तन हुआ जैसे – साड़ी, ब्लाउज, टोप, पेटिकोट, सिलवार–कुर्ता आदि। वेशभूषा के साथ ही इनके आभूषणों में भी परिवर्तन आया। परम्पपरागत आभूषणों को त्यागकर नई डिजाईन के आभूषणों को धारण करने लगी जैसे – हार, टिकला, टॉप्स, कडे, पायजेब आदि। जिससे कृत्रिम आभूषणों के प्रचलन में भी वृद्धि हुई है।

मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन में भी वैश्वीकरण के कारण बदलाव आया है। वर्तमान में मीणा जनजाति की सामाजिक स्थिति अन्य जनजातियों से काफी अच्छी है, क्योंकि ये सब परिणाम वैश्वीकरण का ही है। अतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति के सामाजिक परिवेश में बदलाव आ गया है।

मीणा जनजाति का बदलता आर्थिक ढांचाः–

प्रत्येक समाज की अपनी एक प्रकृति है, उसका अपना पर्यावरण है। उसके विकास और प्रकृति के संसाधन है, इन सबसे भी अधिक आवश्यक है कि अमुख समाज का बुनियादी ढांचा किस प्रकार का है। क्योंकि एक मजबूत अर्थव्यवस्था के लिए मजबूत आधारभूत ढांचें की आवश्यकता है।"[49] ''प्राचीन काल से लेकर आज तक इस जनजाति का इतिहास भी क्षत्रियों की भाँति गौरवपूर्ण रहा है। पूर्व में मीणा जनजाति बीहड़ जंगलों और चारों ओर पर्वतों से घिरे सुरक्षित ग्रामों में रहने की अभ्यस्त थी। मध्यकालीन सत्तायें मीणा समाज के हाथों में थी, जो अधिकतर पूर्व काल से ही चली आ रही थी। किन्तु काल के दौर में वे सभी सत्तायें इनके हाथों से निकल गई। कहीं–कहीं पहाड़ों पर रहकर भी इस जनजाति ने अदभुत शौर्य दिखाया। ये अधिकतर गुफाओं, कन्दराओं और कच्चे मकानों में रहा करते थे। आर्थिक दृष्टि से यह समाज दो वर्गों में विभाजित था– जमींदार मीणें और चौकीदार मीणें इन दोनों ही वर्गों में आर्थिक परिस्थितियाँ काफी भिन्न थी। जमींदार मीणें राजसी ठाट से जीवन यापन करते थे और चौकीदार मीणों की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी।''[50]

''इस समाज के मीणों के पास कृषि भूमि हुआ करती थी, कुछ जमींदार थे और कुछ हाली। यह जाति अधिकतर कृषि भूमि पर निर्भर थी और पशु भी पालती थी। खेती बैलों से की जाती थी साथ ही वे अपनी सवारी के लिए घोड़े, गाड़ियाँ और ऊँट भी रखते थे। स्वतन्त्रता के बाद मीणा जनजाति के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों के प्रयासों से कई योजनाएँ संचालित की गई। आरक्षण के कारण समाज के लोगों की आर्थिक स्थिति में बदलाव आया, कृषि के संसाधनों में परिवर्तन हुआ, परन्तु मीणा जनजाति का विकास कम हुआ। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण आज जमींदार व चौकीदार मीणों में फर्क समाप्त हो गया है।''[51]

वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो आर्थिक विकास में प्रगति हुई, लोगों को रोजगार मिला, शिक्षा का स्तर बढ़ा, उच्च पदों पर पहुँच आसान हुई अर्थात् मीणा समाज के स्त्री व पुरूषों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता मिली। आज मीणा समाज आर्थिक रूप से सुदृढ़ अवस्था में है, क्योंकि वैश्वीकरण के कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि होने से रोजगार के क्षेत्रों

में तीव्रगति से परिवर्तन हुआ। मीणा समाज में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी, व्यक्ति अर्थात् पुरूष व महिलाएँ रोजगार के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन करने लगे। ''विभिन्न हिस्सों में तात्कालिक पूंजी के प्रवाह को आर्थिक वैश्वीकरण के रूप में देखा जा सकता है। साथ ही व्यवसाय वित्तीय बाजारों की दुनिया अर्थात् आर्थिक क्षेत्रों में एकीकरण हो गया हैं।''[52] मीणा जनजातीय समाज के पुरूष व महिलाएँ रोजगार व नौकरी के लिए अपने ग्रामीण स्तर से बाहर निकल रहे हैं और ''अपना कार्य क्षेत्र तथा निवास स्थान परिवर्तित कर रहे हैं। जिसके कारण अपने आप को एक नये सांस्कृतिक परिवेश में समायोजित करने लगे हैं।''[53] जिसके कारण व्यावसायिक गतिशीलता भी बढ़ रही है साथ ही लोग उच्च पदों पर पहुँच रहे हैं। यद्यपि मीणा जनजाति का इस वैश्वीकरण की अवधारण में आर्थिक विकास तीव्रगति से हुआ, जिसके कारण परम्परागत आर्थिक परिवेश में बदलाव आया है।

मीणा जनजाति का बदलता राजनीतिक ढांचाः–

''प्राचीन इतिहास में मीणा मत्स्य कुल के शासक हुआ करते थे। मीणों के कई स्थानों पर गणराज्य भी स्थापित होने के कारण उनकी सत्तायें कुल परम्परा वाली तथा जनत्रंतात्मक थी। ढूँढ़ाड़ क्षेत्र में इनके अनेक राज्य थे जैसे–खोंह, मोंच, गेटोर, आमेर आदि राज्यों की शासन प्रणाली जनतांत्रिक ही थी। आमेर इनका संग राज्य था और गांव के चुने हुए प्रतिष्ठित व्यक्तियों के पास राज कार्य थे। भारत में जाति पंचायती व्यवस्था बहुत प्राचीन होने के कारण मीणा समाज में यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। विशेष कर ब्याह, तलाक, चरित्रहीनता, मौसर, ऋण, संघर्ष आदि प्रश्नों को मिल बैठकर पंच लोग तय करते आये हैं। दण्ड स्वरूप ब्राह्मण भोजन, गोदान, कबूतरों को अनाज डालना, गंगा स्नान करना, पंचों की जूतियाँ सिर पर रखना, धूप में खड़े रहना, रूपये जमा कराना आदि देय थे। जिसके कारण मीणा जनजाति का राजनीतिक कार्य पूर्ण रूप से प्राचीन समय में पंचायतों के माध्यम से सम्पन्न हुआ करता था।''[54]

स्वतन्त्रता के बाद मीणा जनजाति को आरक्षण मिला, तो इनके परम्परागत राजनीतिक परिवेश में बदलाव आया पर नाममात्र का। क्योंकि शिक्षित होने के बाद भी मीणा जनजाति के लोग ग्रामीण स्तर के निर्णय जाति पंचायतों के माध्यम से निपटा लेते थे। परन्तु 90 के दशक में जब भारत में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो जिस प्रकार इसका प्रभाव देखा गया, वैसा ही प्रभाव मीणा जनजाति पर भी पड़ा। क्योंकि आरक्षण मिलने से कुछ तो सुधार हुआ, पर राजनीतिक क्षेत्र में इनका वर्चस्व कम था। आज मीणा जनजाति आर्थिक रूप से सुदृढ है और राजनीतिक रूप से आगे बढ़ रही है। वैश्वीकरण के

कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों को बढ़वा मिला, जाति पंचायतों का ह्रास हुआ, सामाजिक नियमों में खुलापन आया, सहभागिता बढ़ी, मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ी, कानूनों के ज्ञान में वृद्धि हुई आदि पक्षों के कारण मीणा जनजाति का राजनीतिक परिवेश बदला अर्थात् परम्परागत राजनीतिक ढांचे में वैश्वीकरण के कारण बदलाव आया है।

पूर्व साहित्य का पुनरावलोकनः–

वर्तमान में वैश्वीकरण का बोलबाला सम्पूर्ण विश्व में छाया हुआ है। विभिन्न समाजशास्त्रियों के द्वारा वैश्वीकरण के प्रभावों का गहनता से अध्ययन किया गया। इस अध्ययन विषय के सम्बन्ध में सम्बन्धित विद्वानों की पाठ्य सामग्री का संकलन करते हुए, साहित्य के पुनरावलोकन में इन विद्वानों के विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। जो अग्र प्रकार से हैं –

एल्विन (1943)[55] (पृ.सं. 7–11) आदिवासियों को जहाँ तक सम्भव हो बाहरी जगत के साथ सम्पर्क से वंचित रखना चाहते थे। आमतौर पर मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण जनजातियों के बाहरी जगत के सम्पर्क के विरूद्ध थे।

मजूमदार (1955)[56] (पृ.सं. 30) ने जनजातीय संक्रमण के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत के राष्ट्रीय प्रजातान्त्रिक ढांचे में जनजातीय समूह का एकीकरण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि उन्हें उनकी परम्परागत संस्कृति से एकदम ही अलग नहीं कर दिया जाये, जिससे कि उन्हें अपूर्व भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक क्षति पहुँचे। यह सुझाव गैर–जनजातियों की ओर संकेत करता है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि जनजातियों को उनकी परम्परागत संस्कृतियों से अलग कौन करता है। यदि इस बात पर विचार किया जाये तो यही उत्तर मिलेगा कि उनका पिछड़ापन, अज्ञानता एवं सम्पर्क के परिणामस्वरूप उनमें उत्पन्न हीनता की भावना इसके लिए उत्तरदायी है।

बोस (1955)[57] (पृ.सं. 121) ने छोटा नागपुर तथा उड़ीसा के वीर होर लोगों का अध्ययन कर यह स्पष्ट किया। वे अपने परम्परागत व्यवसाय में विशेष कुशलता प्राप्त है।

श्रीवास्तव (1958)[58] (पृ.सं. 292) ने थारों जनजाति का अध्ययन कर यह स्पष्ट किया कि थारों लोगों का हिन्दू, मुसलमानों व सिक्खों के साथ सम्पर्क उनके जीवन में भौतिक, आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में एक मौलिक परिवर्तन लाया है। थारों लोगों ने अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल बाहरी संस्कृति के लक्षणों का चयन किया तथा उन्हें अपनाया है। कुछ सीमा तक उन्होंने अपनी आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था को दायित्वों के पारस्परिक आदान–प्रदान जैसे जन्म विवाह तथा मूल्य से सम्बन्धित कुछ पुरानी परम्पराओं को कायम

रखा। साथ ही उन्होंने अधिक सभ्य लोगों के सामाजिक तत्वों को अपनी संस्कृति में विलीन कर लिया है।

घुरिये (1963)[59] (पृ.सं.144) ने अपनी कृति "एबोरीजिन्स सॉ कॉल्ड देअर फ्यूचर" में भारतीय जनजातियों को पिछड़े हुए हिन्दुओं के रूप में उल्लेखित किया। उनका यह मानना था कि पिछले कुछ वर्षों से जनजातियाँ हिन्दू समाज से सर्वाधिक प्रभावित हुई है। अतः इन्हें हिन्दू समाज के अंग के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

आन्द्रे बेतई (1967)[60] ने अपने एक शोध लेख में राजस्थान में बांसवाड़ा जिले की पीपलखन्तु के मीणाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि अब ये लोग अपनी आदिवासी वंश परम्परा का खण्डन करने के लिए राजपूतों के नामों का अनुकरण करने लग गये हैं। जिसके परिणामस्वरूप उनकी वेशभूषा, पूजा–पाठ करने की विधि, विवाह के रीति–रिवाज़ आदि में परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा है।

विनोद मिश्र (1973)[61] ने आदिवासी ऋणग्रस्ता पर आधारित अपने अध्ययन में बताया है कि कृषि आय की न्यूनता, अकृषि कार्यों से प्राप्त सीमित आय, अशिक्षा, अज्ञानता तथा आदिवासी समुदाय में साहुकारों के प्रति आदर भावना ऐसे प्रमुख कारण है, जो ऋणग्रस्ता को बढावा देते हैं।

पी.के.भौमिक (1976)[62] ने कानूनी व्यवस्था द्वारा आदिवासी लोगों का साहुकारों, बनियों तथा उच्च वर्ग के शोषण से बचने की व्यवस्था की। अपने अध्ययन में आदिवासी समुदाय की सामान्य वर्ग से तुलना करके बताया कि यह सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक रूप से सामान्य वर्ग द्वारा शोषित है। यह समाज का सबसे कमजोर वर्ग है।

के. एफ. बहादुर (1977)[63] ने भारत में जनजातियों, जातियों एवं संस्कृति का आन्ध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के संदर्भ में विशेष अध्ययन किया।

आर. गिलपीन (1987)[64] "वैश्वीकरण राजनीतिक कारकों की उपज है, पैदायश है। आज भी अन्तर्राष्ट्रीय जगत में यह धारणा बनी हुई है कि कुछ राष्ट्रीय राज्य प्रभुत्वशाली होते हैं। यह राज्य वैश्वीकरण के कारण आर्थिक और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की स्थापना करते हैं।

नदीम–हसनेन (1990)[65] के अनुसार वैश्वीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं को हाशिये पर लाने की प्रक्रिया पितृसत्तात्मक मूल्य तथा महिलाओं का वस्तुकरण तेज़ी से बढ़ा है। आदिवासी समाज में टेलिविजन व मोबाइल संस्कृति के कारण इस क्षेत्र की महिलाओं में इस ओर आकर्षण में वृद्धि हुई है। वैश्विक बाज़ार फिल्में कुछ हद तक टी.वी. सिरियल छोटी स्कूली बच्चियों को प्रोत्साहित कर रहा है कि वे स्वयं को सैक्सी महसूस करें। बाज़ार

में ऐसे परिधानों की भरमार है, जो मूल रूप से लटके–झटके के साथ आइटम नम्बर्स के लिए ही डिज़ाइन की गई है। वस्तुस्थिति यह है कि वैश्वीकरण के इस दौर में स्त्रियाँ अपना बौद्धिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास करने की अपेक्षा सस्ते कामुक उपभोक्तावादी जाल में फंसकर गुलामी की ओर कदम बढ़ा रही हैं।

एन्थोनी गिडेन्स (1990)[66] "आधुनिकता का बहुत बड़ा परिणाम वैश्वीकरण है। यह इसलिए कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया में समय और स्थान सिमट जाते हैं।'' इसके कारण राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में पारस्परिकता या आत्मनिर्भरता आ जाती है।

अल्रिच बेक (1992)[67] ने अपनी पुस्तक ''रिस्क सोसायटी : टूवार्ड्स न्यू मोर्डनिटी'' में यह धारणा प्रतिपादित की है कि वैश्वीकरण एवं जोख़िम की अवस्थाओं के मध्य जो सम्बन्ध है, उससे विश्व जोख़िम समाज की रचना हो रही है। ये जोख़िमें पर्यावरणीय असन्तुलन, स्वास्थ्य, नौकरी–धंधा प्राप्त करने में, जीवन साथी ढूंढने में, अपनी पहचान बनाने में यहाँ तक कि ईमानदारी से कार्य करने में भी जोख़िमें हैं। सभी लोग इन ख़तरों के उत्थान के लिए मज़बूर हैं।

सिंह (1998)[68] (पृ.647–50) के अनुसार वैश्वीकरण के कारण जनजातीय क्षेत्रों में स्थित संसाधनों का अतिक्रमण बढ़ा है। देश में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, विशेष आर्थिक ज़ोन आदि ने वन क्षेत्रों में अपना प्रसार प्रारम्भ किया है। ये सभी खे़ती की भी अच्छी भूमि का अधिग्रहण करते हैं। ख़नन करने, उद्योग लगाने, लीज़ पर कृषि भूमि लेने, सेज़ आदि के नाम पर हजारों हेक्टर भूमि का अधिग्रहण कर किसानों को बेदख़ल कर दिया जाता है तथा उस क्षेत्र के लोग बेरोज़गार हो जाते हैं। हाल ही में टाटा, वेदान्त आदि के इन्हीं प्रयासों का विरोध हुआ है। नक्सलवाद ऐसी ही घटनाओं से आक्रोशित आदिवासियों के आन्दोंलनों पर खड़ा हो रहा है।

नागेश (2000)[69] (पृ.806) वैश्वीकरण के इस युग में वैश्विक बाज़ारी अर्थव्यवस्था में देह व्यापार को सेवा क्षेत्र की एक जायज़ प्रणाली बना दिया गया है। क्योंकि आज की मुक्त बाज़ार व्यवस्था में स्त्री देह और उनका सौन्दर्य विज्ञापनदाताओं के लिए अत्यधिक आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। इसलिए इन्होंने इसे बाज़ार की वस्तु बनाकर उपभोग की एक वस्तु के रूप में प्रयुक्त किया है। इस दृष्टि से आदिवासी भोली–भाली लड़कियों को बहला–फुसला कर सहज ही अपने स्वार्थ के लिए प्रयोग किया जा रहा है। इस विषय पर अत्यधिक गम्भीर होने की आवश्यकता है। वैश्वीकरण के इस युग में कच्ची उम्र की मासूम बच्चियों को मोहज़ाल में जकड़कर उसे एक 'सैक्सी गुड़िया'' ही बना दिया है।

हरीशचन्द्र उप्रेती (2000)[70] ने जनजातीय समाजों की सरंचना एवं विकास के पहलुओं का विशद् वर्णन किया है। जनजाति सामाजिक संरचना में घटित परिवर्तनों की समीक्षा के अतिरिक्त इन्होंने जनजातीय समाजों में व्याप्त राजनीतिक एवं धार्मिक आन्दोलनों, कतिपय विशेष जनजातियों का विजातीय विवरण, ख़ानाबदोश एवं लुप्त प्रायः जनजातीय महिलाओं के बदलते परिवेश में तथा जनजातीय विकास कार्यक्रम आदि का विवरण प्रस्तुत किया है।

रमेशचन्द्र मंगल (2002)[71] ने राजस्थान की मीणा जनजाति में उभरते मध्यम वर्ग के प्रतिमान विषय पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया। शोध से स्पष्ट हुआ कि राजस्थान के अन्य आदिवासी समूहों की अपेक्षा मीणा जनजाति के लोग नये आधुनिक व्यवसाय की ओर अग्रसर है। मीणाओं का परम्परागत व्यवसाय कृषि होते हुए भी रूझान नये व्यवसायों की ओर बढ़ा है। ये आधुनिक मूल्यों की स्वीकारोक्ति के साथ ही परम्परागत मूल्यों को बनाये रखने पर भी जोर देते हैं।

सुरेश सिंह (2002)[72] ने अपने संकलन 'द ट्राइबल सिचुएशन इंडिया' में विभिन भारतीय आदिवासी समुदायों की दशा, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान, राजनीतिक एवं प्रशासनिक समस्याओं, विकास से जुड़े मुद्दों इत्यादि से सम्बन्धित लेखों को संकलित किया है।

नरेश कुमार वैद्य (2003)[73] ने सम्पूर्ण जनजातीय विकास मशीनरी के साथ अगड़े आदिवासियों पर संदेह व्यक्त किया है तथा क्षेत्र के विकास की मांग ज्यों कि त्यों बनी हुई है। इस प्रकार से आदिवासियों पर शोध कार्य किया।

चौहान (2004)[74] के अनुसार वैश्वीकरण एक उपभोक्तावादी संस्कृति पर सवार होकर आगे बढ़ रहा है। शिक्षा तथा जनसंचार माध्यमों के द्वारा युवा पीढ़ी को पाश्चात्य संस्कृति में रंगने का प्रयास किया जा रहा है। बचपन से सेवानिवृत्ति तक बच्चा समाज और सामाजिक रीति–रिवाज़ों से दूर रहता है। वह परिवार में वृद्ध, भाई–बहिन, रिश्तेदारों से जब भी मिलता है तो सहज़ नहीं होता है। उसकी बुद्धि में कैरियर, प्रतियोगिता और सफलता की सीढ़ियाँ भरी रहती है। उसके लिए परिवार, समुदाय, समाज मानवीय मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं है। यही सब आदिवासी समाज की युवा पीढ़ियों में भी छोटे स्तर पर आ रहा है। अब सामुदायिक सद्भावना भी कम होती जा रही है।

तिवारी (2004)[75] आदिवासी समाज अपनी गरीबी की स्थिति में भी बचत करने का आदि रहा है, परन्तु वैश्वीकरण के प्रभाव से अब नई पीढ़ी अनावश्यक कार्यों पर व्यय करती रही है जैसे ठण्डा पेय, चाय, मोबाइल, वस्त्र इत्यादि। जब अचानक कोई पारिवारिक कार्य

करना पड़ जाये, तो उन्हें ऋण लेने के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं बचता। धीरे–धीरे ऋणग्रस्तता ओर तेजी से बढ़ रही है। आज बाज़ार छोटे–छोटे खर्चों के माध्यम से तेज तराशने का कार्य कर रहा है जैसे 10 रूपये मोबाइल रिचार्ज करवाइये, 2 रूपये में शैम्पू, तेल, रिन आदि की धुलाई आदि।

मैन प्रेड बी. स्टेज़र (2004)[76] ने अपनी पुस्तक में 21 वीं सदी की नवीन बाज़ार नीति के साथ भारतीय बाज़ार नीति पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है। इसके बारे में भी विवरण प्रस्तुत किया है साथ ही भारतीय बाजार नीति पर वैश्वीकरण के प्रभाव दर्शाय गये हैं।

जी. एसं. नरवानी (2004)[77] ने अपनी पुस्तक में जनजातीय समाजों की परम्परागत पंचायत और विधि सम्बन्धी नवीन परिवर्तनों का उल्लेख किया है। जनजातियों के लिए कौन–कौन से कानूनी प्रावधान हैं, उनके बारे में भी इस पुस्तक में विवेचन किया गया है।

दुबे (2006)[78] वैश्वीकरण भारत के संविधान में समाजवाद एवं लोक कल्याण को स्थापित करने की विपरित दिशा में कार्य कर रहा है। भारत के नीति निर्देशक तत्त्वों में राज्य को जन–कल्याण एवं पिछड़ों के लिए विशेष रूप से कार्य करने के लिए निर्देश दिये गये हैं। वैश्वीकरण के दबाव में निजीकरण के माध्यम से पूँजीवाद और सेवा की बज़ाय लाभ कमाने की छूट दी जा रही है। आदिवासी समाज को दिया गया सामाजिक आश्वासन भी अब निरर्थक होता जा रहा है।

मैथ्यू अरथायिल (2008)[79] ने केरल के सन्दर्भ में अपनी पुस्तक प्रकाशित की तथा स्पष्ट किया कि आदिवासियों पर वैश्वीकरण के क्या प्रभाव पड़ रहे हैं। वैश्वीकरण के कारण आदिवासियों की सामाजिक संरचना में कैसे परिवर्तन हुआ। इससे सम्बन्धित विभिन्न आयामों का भी इस पुस्तक में उल्लेख किया गया है।

एसं. एल. दोषी एवं पी. सी. जैन (2009)[80] (पृ.सं. 449) ने अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार और स्थानीय बाज़ार के सन्दर्भ में वैश्वीकरण से सम्बन्धित उन विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की, जिसके कारण भारतीय संस्कृति में परिवर्तन आ रहे हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है, इसके बारे में भी पुस्तक में विवरण प्रस्तुत किया गया है।

सिंह (2009)[81] ने वैश्विक बाज़ार का स्त्रियों पर प्रभाव का अध्ययन कर स्पष्ट किया कि विकास प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका हास्य प्रदान कर रही हैं। स्त्रियों को सस्ते श्रम में लगाकर वैश्वीकरण प्रजनन और लालन–पालन करने की प्रकृति प्रदत्त नारी सुलभ क्षमता को नुकसान पहुँचाया है। वैश्वीकरण बाज़ारों की इन ज़रूरतों को पूरा करने वाले सभी अर्थ तंत्रों में आज के बाज़ारों की अधिक संख्या स्त्रियों की है। इन बेरोज़गार औरतों के सामने

घरों की दुनियाँ में लौटने के अलावा कोई भी चारा नहीं है। सब्सिडी के बिना जीवन महँगा हो गया है, इसका सर्वाधिक बोझ स्त्रियाँ ही उठा रही हैं और भविष्य में भी उठायेंगी।

मेहला (2010)[82] (पृ.सं. 70) वैश्वीकरण के इस युग में हमारे पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं से दोहरा काम लिया जाता है। जबकि महिलाएँ परिवार के सभी सदस्यों को भोजन कराने के बाद अक्सर बचा–कुचा भोजन खाकर ही सन्तोष कर लेती हैं। इसलिए वे थकावट, कमज़ोरी के साथ जल्दी–जल्दी बीमारियों की भी शिकार होती है। इतना ही नहीं वे कुपोषण और ''रक्ताल्पता'' से भी ग्रसित रहती है। आदिवासी क्षेत्रों की लगभग 90 प्रतिशत से भी अधिक गर्भवती महिलाएँ खून की कमी की शिकार है। वर्ल्ड इकोनामी फोरम की रैकिंग के अनुसार महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के सम्बन्ध में भारत का 115वाँ स्थान है। इस दृष्टि से वैश्वीकरण के इस युग में अभी हमें महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए अत्यधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। वैश्वीकरण ने वर्तमान युग के लोगों को अत्यधिक लालची तथा भौतिकतावादी प्रवृत्ति का बना दिया है। इसी कारण आज समाज में दहेज़ जैसा दानव अपने पैर पसार रहा है। इस कारण कुछ माता–पिता अपनी बेटी की पढ़ाई को बीच में ही छुड़ा देते हैं, क्योंकि उन्हें अधिक पढ़ाने पर उनके लिए वर भी अधिक पढ़–लिखा ही ढूँढ़ना पड़ेगा और उसके साथ ही दहेज़ भी अधिक मात्रा में देना होगा। इन सबके परिणामस्वरूप कुछ लड़कियॉ अपराध और मानसिक असन्तुलन का भी शिकार हो जाती है।

भीमसेन होरेस्ट (2011)[83] ने सामाजिक परिवर्तन और विकास में वैश्वीकरण की प्रक्रिया से सम्बन्धित आयामों को प्रस्तुत किया और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, सामाजिक और सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला है।

सुभाष मल्हौत्रा (2011)[84] ने अपनी पुस्तक में भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में चित्रण प्रस्तुत करने के अतिरिक्त भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने के उपायों का भी उल्लेख किया है।

रिषपाल मीणा (2011)[85] वैश्वीकरण के कारण जनजातीय समाज में आये विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन यथा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों के बारे में वर्णन किया है।

श्याम एस. कुमावत (2017)[86] ने अपनी पुस्तक आदिवासी समाज में प्राधिकार संरचना में आदिवासियों की सामाजिक संरचना का उल्लेख किया। जिसमें आदिवासियों की सामाजिक संरचना को आर्थिक विकास के साथ जोड़कर देखा गया। जिसके कारण आदिवासियों की सामाजिक संरचना में परिवर्तन देखा जा रहा है।

वर्तमान अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्त्वः—

प्रस्तुत शोध ''वैश्वीकरण जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता'' का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है साथ ही वैश्विक अध्ययन का कार्य करने की आवश्यकता और महत्त्व है। वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय विद्वान, गत एक दशक से सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में वैश्वीकरण की अवधारणा को अध्ययन का एक केन्द्र बिन्दु मानकर चिन्तन कर रहे हैं। वैश्वीकरण ने समाज को एक नई पहचान दी है। वैश्वीकरण के प्रभाव से लगभग सभी सामाजिक संस्थाएँ प्रभावित हुई और इनके गहन अध्ययन के कारण सामाजिक एवं व्यक्तिगत संस्थाओं में जटिलता कम हुई।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया है। समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य से देखा जाये तो मीणा जनजातीय समाज की संरचना, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों से जुड़ी हुई है। जिन पर वैश्वीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ा है और प्रत्येक की गतिशीलता में वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजातीय समाज की सामाजिक संस्थाओं में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं और साथ ही राजनीतिक जागरूकता पैदा हो रही है। यह अध्ययन की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया जनसंचार क्रांति, मोबाईल, इलैक्ट्रोनिक मीड़िया एवं प्रिंट मीडिया से जुड़ी हुई है। इसने मीणा जनजातीय समाज की परम्परागत संस्कृति तथा सामाजिक व्यवस्था को नये आयाम प्रदान किये हैं। जिसके कारण सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है।

जनजातीय समाज में लोगों की परम्परागत प्रस्थिति एवं भूमिकाओं में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा है। मीणा जनजाति के लोग अपने परम्परागत व्यवसायों को त्याग कर नये रोज़गार एवं व्यवसायों की तलाश में शहरों की ओर उन्मुख हुए हैं। वैश्वीकरण की आर्थिक नीतियों ने मीणा जनजाति को सर्वाधिक प्रभावित किया है अर्थात् व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है। जिसके कारण उनका जीवन अधिक सुविधापूर्ण व सुगम हुआ है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के वैचारिक एवं व्यावसायिक रूप से अखिल भारतीय स्तर पर सम्बन्धों को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। जिसके कारण मीणा जनजाति की समाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन किया। जिससे मीणा जनजातीय समाज की राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया और परम्परागत

जाति पंचायतों का ह्रास हुआ। लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति जागरूकता बढ़ी, अर्थात् वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने मीणा जनजाति के राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि की है। जिसके कारण मीणा समाज के लोग राजनीति में अपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और साथ ही अन्य जनजातियों की अपेक्षा अपनी एक अलग पहचान बना रहे हैं। वैश्वीकरण के कारण मतदान के प्रति जागरूकता आई, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने महिलाओं को भी प्रभावित किया है, चाहे वह सभ्य समाज की महिला हो या जनजातीय समाज की। किन्तु वैश्वीकरण के कारण प्रभावित हुई है। इस संदर्भ में मीणा जनजाति की महिलाओं पर भी वैश्वीकरण का प्रभाव देखा गया है। वैश्वीकरण के कारण महिला शिक्षा में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, सामाजिक बन्धनों में खुलापन आया, राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई, मतदान के प्रति जागरूकता आई आदि सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। वहीं नकारात्मक प्रभाव भी मीणा समाज की महिलाओं पर देखे गये जैसे महिलाओं के नौकरी करने से बच्चों के पालन–पोषण में कमी, संयुक्त परिवार का ह्रास, मूल संस्कृति से दूरियाँ बढ़ी, पाश्चात्य पहनावें की तरफ झुकाव बढ़ा आदि। अतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का मीणा समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। नकारात्मक प्रभावों की अपेक्षा सकारात्मक प्रभावों की संख्या अधिक हैं।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने मीणा जनजाति को अन्य जनजातियों की अपेक्षा एक नई पहचान प्रदान की। क्योंकि वैश्वीकरण के कारण सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है। परन्तु आज भी इस जनजाति का एक वर्ग सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से पिछड़ा हुआ है। जिसको समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास जरूरी है, जिसके कारण समाज में समानता पैदा होगी। इसलिए यह अध्ययन वर्तमान परिपेक्ष्य में महत्वपूर्ण साबित हुआ साथ ही यह अध्ययन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण साबित होगा। यह अध्ययन वैश्वीकरण एवं जनजातीय समाज के समाजिक सम्बन्धों को उजागर करने में मील का पत्थर साबित होगा साथ ही वर्तमान परिपेक्ष्य एवं आने वाली युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक बनेगा।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, सी. एल. : ''समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008, पृ.सं. 253
2. भार्गव, नरेश : ''वैश्वीकरण : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2015, पृ.सं. 11–12
3. गिडिंग्स ऐथोनी : ''द कोंसेकुएंसेस ऑफ मॉडर्निटी'' स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1990, दोषी, एसं. एल., ''आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002, पृ.सं. 316
4. यादव : डॉ. पूरणमल एवं भट्ट, दिनेश चन्द्र, ''वैश्वीकरण – एक समाजशास्त्रीय अवधारणा'' गौतम बुक कम्पनी, जयपुर, 2013 पृ.सं. 9
5. दोषी, एसं. एल. : ''आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002, पृ.सं. 318
6. वही : 2002 पृ. सं. 321
7. यादव, डॉ. पूरणमल एवं भट्ट, दिनेश चन्द्र : ''वैश्वीकरण – एक समाजशास्त्रीय अवधारणा'' गौतम बुक कम्पनी, जयपुर, 2013 पृ.सं. 9
8. दोषी, एसं. एल. : ''आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002, पृ.सं. 9
9. वही, 2013, पृ.सं. 9
10. यादव, डॉ. पूरणमल एवं भट्ट, दिनेश चन्द्र, वैश्वीकरण : ''एक समाजशास्त्रीय अवधारणा'' गौतम बुक कम्पनी, जयपुर, 2013 पृ.सं. 10
11. दोषी, एसं. एल. : ''आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002, पृ.सं. 316
12. वही, 2002 पृ.सं. 317
13. वही, 2002 पृ.सं. 317

14. वही, 2002 पृ.सं. 322

15. दोषी, एसं. एल. : ''आधुनिक समाजशास्त्रीय विचारक'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, नई दिल्ली, बैंगलोर, हैदराबाद, गुवाहाटी, 2010, पृ.सं. 388–389

16. वही, 2010, पृ.सं. 390

17. दोषी, एसं. एल. : ''आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002, पृ.सं. 318

18. वही, 2002 पृ.सं. 318

19. भार्गव, नरेश : ''वैश्वीकरण, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2015, पृ.सं. 50

20. दोषी, एसं. एल. : ''आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' पृ. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 200, पृ.सं. 321–22

21. सिंह, शिवबहाल, ''विकास का समाजशास्त्र'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010, पृ. सं. 177

22. दोषी, एसं.एल. एवं जैन, पी.सी. : ''समाजशास्त्र की नई दिशाऐं'' नेशनल पब्लिकेशन्स हाऊस, नई दिल्ली 2009, पृ.सं. 452

23. दोषी, एसं. एल. : ''आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' पृ. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 200, पृ.सं. 352

24. महाजन, डॉ. धर्मवीर व महाजन, डॉ. कमलेश : ''जनजातीय समाज का समाजशास्त्र'' विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, नई दिल्ली, 2009, पृ.सं. 30

25. राजपूत, उदयसिंह : ''आदिवासी विकास एवं गैर–सरकारी संगठन'' रावत पब्लिकेशन जयपुर, 2010, पृ.सं. 3

26. मीणा, रिषपाल : ''राजस्थान समाजशास्त्रीय परिषद जनरल'' जयपुर, 2011, वोल्यूम 3, पृ.सं. 110

27. मीना, डॉ. रामगोपाल व मीना हर्ष : ''मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज'' राज पब्लिशिंग हाउस जयपुर, 2014, पृ.सं. 5

28. सारस्वत, रावत : ''मीणा इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार'' जोधपुर, 2012 पृ. 18–22

29. वही, 2012 पृ.सं. 22–26

30. मीना गोपाल डॉ राम, मीना हर्ष : ''मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज'' राज पब्लिशिंग हाउस जयपुर 2014, पृ.सं. 30

31. सारस्वत, रावत : ''मीणा इतिहास'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं. 1

32. वही, 2012, पृ.सं. 11

33. वही, 2012, पृ.सं. 15

34. वही, 2012 पृ.सं. 48

35. ''संविधान सभा भाषण, खण्ड 7, पृ. 701–02, 1948–49 ; राष्ट्रीय अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति आयोग, पॉचवी रिर्पोट, 1998–99, खण्ड 2, पृ. 1–02, आगे 'आयोग रिर्पोट' लिखा जायेगा''।

36. मीना, डॉ. रामगोपाल व मीना, हर्ष : ''मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज'' राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2014 पृ.सं. 195

37. मीना, डॉ. रामगोपाल व मीना, हर्ष : ''मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज'' राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2014 पृ.सं. 196, ''भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय'', वार्षिक रिर्पोट 2004–05, पृसं.. 75

38. उप्रेती हरिशचन्द्र : ''भारतीय जनजातियॉ, संरचना एवं विकास'' राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000, पृ.सं. 384 मीना, डॉ. रामगोपाल व मीना, हर्ष, ''मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज'' राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2014 पृ.सं. 195,

39. मीना, डॉ. रामगोपाल व मीना, हर्ष : ''मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज'', राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2014 पृ.सं. 197

40. सिंह, एन. वी. व सिंह, जनमेजय : ''अधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010, पृ.सं. 307–308

41. वही, 2010, पृ.सं. 309

42. महाजन, डॉ. धर्मवीर व महाजन डॉ. कमलेश : ''जनजातीय समाज का समाजशास्त्र'' विवेक प्रकाशन जवाहर नगर , नई दिल्ली–7,2009 पृ.सं.253।

43. सिंह, एन. वी. व सिंह जनमेजय : ''अधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010 पृ.सं. 309–310।

44. माथुर, दुर्गा प्रसाद : ''मीणा जाति का सतत् विकास एवं संस्कृति'' साहित्यगार, जयपुर, 2014 पृ.सं. 35

45. वही, 2010 पृ.सं.38–39

46. वही, 2010 पृ.सं. 39.

47. वही, 2010 पृ.सं. 41

48. वही, 2010 पृ.सं. 43

49. सिंह, एन. वी. व सिंह जनमेजय : ''अधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010 पृ.सं. 303।

50. माथुर, दुर्गा प्रसाद : ''मीणा जाति का सतत् विकास एवं संस्कृति'' साहित्यगार, जयपुर, 2014 पृ.सं. 41–42

51. वही, 2010 पृ.सं. 42

52. यादव, डॉ. पूरणमल व डॉ. भट्ट दिनेश चन्द्र : ''वैश्वीकरण एक समाजशास्त्रीय अवधारणा'' पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, 2010 पृ.सं. 3

53. वही, 2010 पृ.सं. 4

54. माथुर, दुर्गा प्रसाद : ''मीणा जाति का सतत् विकास एवं संस्कृति'', साहित्यगार, जयपुर, 2014 पृ.सं. 42–43

55. एल्विन, : ''दि एबोरिजीनल्स'' ऑक्सफॉर्ड यूनिवरसिटी प्रेस, बॉम्बे, 1993

56. मजूमदार, डी.एन. : ''दि ट्राईबल प्रॉल दि आदिवासी'' 1955, पृ.सं 30

57. बॉस, कुमार निर्मल, ट्राईबल इकॉनॉमी ऑफ आदिवासी'' 1955, पृ.सं 121

58. श्री वास्तव एसं.के. : ''दि थॉरोस, ए स्टडी इन कल्चर डायनामिक्स'' आगरा यूनिवर्सिटी प्रेस, 1598 पृ.सं. 292

59. धुरिये, जी.एस. : ''द शेड्यूल्स ट्राइब्स'' पोपुलर प्रकाशन 1963, पृ.सं. 144

60. बेतई, आंद्रे : ''द फ्यूचर ऑफ द बैकवर्ड क्लासेज'' यूनिवर्सिटी ऑफ डाईवरसिटी इण्डिया एण्ड सिलोन, सिलोन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस, 1967

61. मिश्र, विनोद कुमार : ''आदिवासी ऋणग्रस्तताः समस्या एवं समाधान'' वन्यजाति, वर्ष 21, संख्या 1 जनवरी–मार्च 1973, पृष्ठ 14–21

62. भौमिक, पी. के. : ''एप्रोच टू ट्राइबल डवलपमेंट'' इन्टर इण्डिया पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, 1976

63. बहादुर, के. फ. : ''कास्ट ट्राइबल एण्ड कल्चर ऑफ इण्डिया'' आन्ध्रप्रदेश, म.प्र. महाराष्ट्र, भाग–।।, नई दिल्ली, 1977

64. गिलपिन आर, : ''द पालिटिक्ल इकॉनोमी ऑफ इन्टरनेशनल रिलेक्शनस् 1987

65. हसनेन, नदीम : ''जनजातीय भारत'' जवाहर पब्लिकेशन्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली, 1990

66. गिडेन्स एन्थोनी : ''द कोंसेकुएंसेस ऑफ मॉडर्निटी'' केम्बरीन पॉलिटि. प्रेस, 1990

67. बेक, अलरिक, ''रिस्क सोसाइटी : टूवार्ड्स ए न्यू मॉडर्निटी'', लंदन : सेज पब्लिकेशन, 1992

68. सिंह, : ''पिपुल ऑफ इण्डिया, राजस्थान पॉपुलर पब्लिकेशन'' प्राईवेट लिमिटेड, मुम्बई पार्ट 2 वॉल्यूम 38, 1968 पृ. सं. 647–50

69. कुमार, नागेश : ''इकोनॉमिक एण्ड पालिटिक्ल विकली'' वॉल्यूम 10, मुम्बई, 2000 पृ.सं. 806

70. उप्रेती, हरिशचन्द्र : ''भारतीय जनजातियॉ : संरचना एवं विकास'' राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000

71. मंगल, रमेशचन्द्र : ''मीणा जनजाति के उभरते मध्यम वर्ग के प्रतिमान'' क्लासिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2002

72. सिंह, सुरेश : ''द ट्राइबल सिचुयेशन इन इण्डिया'' (संपा.) इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज शिमला, 2002

73. वेद्य, नरेश कुमार : ''जनजातिय विकास : मिथक एवं यथार्थ'' रावत पब्लिकेषन जयपुर, 2003

74. चौहान, डॉ. आई एस : ''भारत में सामाजिक परिवर्तन'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2004

75. तिवारी, डॉ. एवं शर्मा : ''भील जनजीवन और संस्कृति'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2004

76. मैन, प्रेड. बी, स्टेजर : ''भूमण्डलीकरण'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2004

77. नरवानी, जी, एस : ''भारत में जनजातीय विधि'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2004

78. दुबे, अभय : ''भारत का भूमण्डलीकरण'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

79. अरथायिल, मैथ्यू : ''भूमण्डलीकरण के आदिवासियों पर प्रभाव'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2008

80. दोषी, एसं. एल., जैन, पी. सी. : ''समाजशास्त्र, नई दिशाऐं'' नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2009, पृ.सं. 449

81. सिंह, नरेन्द्र कुमार : ''बिहार में निजी सेनाओं का उद्भव और विकास'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

82. मेहला, अरविन्द्र कुमार : ''भारतीय ससमाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव'' सुरेन्द्र कटारिया द्वारा सम्पादित, ''वैश्वीकृत भारत : प्रभाव एवं बाधायें'' नेशनल पब्लिशिंग हाउऊस, जयपुर एवं दिल्ली, 2010, पृ.सं. 70

83. होरेस्ट, भीमसेन : ''सामाजिक परिवर्तन और विकास'' रावत पब्लिकेशनस, जयपुर, 2011

84. मल्होत्रा, सुभाष : ''वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था'' रितु पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011

85. मीणा, रिषपाल : ''राजस्थान समाजशास्त्रीय परिषद'' जयपुर, जनरल, वोल्यूम 3, 2011, पृ.सं. 107–111

86. कुमावत, श्याम एस. : ''राजस्थान समाजशास्त्री परिषद'' जयपुर, जनरल, वोल्यूम 9, 2017, अक्टूम्बर, पृ.सं. 165

द्वितीय अध्याय

''अध्ययन क्षेत्र का परिचय एवं अनुसंधान प्रविधि''

द्वितीय अध्याय

अध्ययन क्षेत्र का परिचय एवं अनुसंधान प्रविधि

मानव नवीन ज्ञान की खोज तथा उससे अपनी समृद्धि हेतु सदैव ही तत्पर रहता है। मनुष्य में कुछ नवीन जानने की इच्छा उसकी आधारभूत विशिष्टता है। ज्ञान की खोज में वह सदैव वस्तुओं एवं उपलब्ध संरचनात्मक संवाहकों का अवलोकन एवं विश्लेषण अपनी तर्क शक्ति द्वारा करता है। अपने अवलोकनों एवं विश्लेषणों को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने और नवीन प्रतिस्थापनाओं की सृष्टि हेतु मानव प्रविधियों एवं विश्लेषणात्मक तथ्यों को प्रयोग में लाता है। साथ ही साथ इन प्रविधियों व अनुसंधान तथ्यों के सत्यापन हेतु पुनः अध्ययन करता है। इस सन्दर्भ में मनुष्य, अनुसंधानकर्ता तथा वैज्ञानिक पृष्ठभूमि का संयुक्त आवरण धारण करता है साथ ही शोध की सत्यता के लिए वह निरन्तर अनुसंधान करता है। जिससे विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवेश में नई उपकल्पनाओं व प्रतिस्थापनाओं का परीक्षण एवं ज्ञान के नये आयामों को विकसित करने में सहायक होता है।

वर्तमान अध्ययन भी इस परिदृष्टि की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ है, जो वैश्वीकरण का जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। इस अध्ययन में अनुसंधान पद्धति एवं अध्ययन क्षेत्र के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है। वैश्वीकरण के प्रभावों पर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों पर कई समाज वैज्ञानिकों एवं बुद्धिजीवियों ने शोध कार्य किये हैं। परन्तु वैश्वीकरण का जनजातीय समाज के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों पर अब तक किसी भी अनुसंधानकर्ता ने समग्र रूप से व्यवस्थित अनुसंधान नहीं किया है। अतः यह अध्ययन इसी पक्ष को ध्यान में रखकर किया जा रहा है, जिसमें जनजातीय समाज की मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण के पढ़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को विस्तार से प्रस्तुत किया जायेगा। इस अध्याय में अध्ययन क्षेत्र के रुप में बारां जिले का सामान्य परिचय, अन्ता तहसील का परिचय, मीणा बाहुल्य क्षेत्र के गांवों का परिचय एवं गांवों में रहने वाली मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, जनसंख्यात्मक स्थिति, साक्षरता दर आदि स्थितियों से जुड़े हुए तथ्यों का विस्तार से उल्लेख किया जा रहा है। इसके साथ ही अध्ययन के उद्देश्य, प्राक्कल्पनाएँ, मुख्य चर, समग्र, निदर्शन, अनुसंधान प्रविधि, तथ्यों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या तथा सीमाएँ आदि का विस्तार से वर्णन किया जा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

प्रस्तुत अध्याय में राजस्थान राज्य के बारां जिले की अन्ता तहसील के उन मीणा बाहुल्य गांव जैसे– काचरी, पलसावा, सिन्धपुरी एवं पचेलकला आदि गांवों की मीणा जनजाति का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा रहा है। जिसमें अध्ययन क्षेत्र, अध्ययन के उद्देश्य एवं अनुसंधान प्रविधि को भी शामिल किया गया है।

बारां जिला – एक परिचयः–

बारां के सन्दर्भ में एक कहावत प्रचलित है। ऐसा माना जाता है कि चौदहवीं शताब्दी में सोलंकी राजपूतों के अन्तर्गत बारह गांव आते थे, इस कारण से बारां शब्द के नाम का उद्‌भव हुआ। स्वतन्त्रता के पश्चात् बारां कोटा रियासत का एक भाग था, परन्तु कोटा रियासत 1948 में राजस्थान संघ में शामिल हो गई थी। इसके पश्चात् बारां भी राजस्थान संघ का हिस्सा बन गया। बारां हाड़ौती क्षेत्र के चार जिलों में से एक जिला है, जो 10 अप्रैल 1991 को जिले के रुप में सर्वप्रथम अस्तित्व में आया। कोटा संभाग के अन्तर्गत कोटा, बून्दी, झालावाड़ एवं बारां जिले शामिल हैं।

भौगोलिक स्थितिः–

बारां जिला राजस्थान में दक्षिण–पूर्वी भू–भाग में 24^0 24′ से 25^0 26′ उत्तरी अक्षांश तथा 76^0 12′ से 77^0 26′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। मध्यप्रदेश के मुरैना, शिवपुरी व गुना जिलों की सीमाएँ, पूर्व में मंदसौर जिले की सीमाएँ, दक्षिण में कोटा जिले की सीमाएँ तथा उत्तर–पश्चिम में झालावाड़ जिले की सीमाएँ लगती है। बारां जिले का क्षेत्रफल 6,992 वर्गकिलोमीटर है। कुल निवास करने वाली जनसंख्या 1,222,755 है, जिसमें पुरूषों की संख्या 6.33 लाख तथा महिलाओं की संख्या 5.88 लाख है। बारां जिले का लिंगानुपात 2011 की जनगणना के अनुसार 929 है। 2001 से 2011 की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 19.70 प्रतिशत है। कुल जनसंख्या घनत्व 175 प्रतिवर्ग किलोमीटर है। बारां जिले की कुल साक्षरता 56.70 प्रतिशत है, जिसमें पुरूष साक्षरता 68.24 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 44.27 प्रतिशत है।

प्रशासनिक संरचनाः–

बारां जिला कोटा संभाग के अन्तर्गत आता है जिसमें आठ उपखण्ड, आठ तहसीले, सात पंचायत समितियाँ एवं एक नगर परिषद व तीन नगरपालिका है। लगभग 1244 गांव आते हैं। बारां जिले में एक लोकसभा क्षेत्र है, जिसमें झालावाड़ एवं बारां जिले शामिल हैं तथा कुल विधानसभा क्षेत्र 4 है। जिसमें क्रमशः बारां–अटरू, किशनगंज–शाहबाद, छबड़ा–छीपाबड़ौद एवं अन्ता–मांगरोल शामिल हैं।[1]

तालिका संख्या–2.1

बारां जिले की प्रशासनिक संरचना[2]

उपखण्ड	तहसील	पंचायत समिति	नगर परिषद् / नगरपालिका	ग्राम पंचायतों की संख्या	ग्रामों की कुल संख्या
बारां	बारां	बारां	बारां नगर परिषद्	26	106
अन्ता	अन्ता	अन्ता	नगरपालिका	21	84
मांगरोल	मांगरोल	–	नगरपालिका	17	80
अटरू	अटरू	अटरू	–	34	146
छबड़ा	छबड़ा	छबड़ा	नगरपालिका	27	196
छीपाबड़ौद	छीपाबड़ौद	छीपाबड़ौद	–	30	183
किशनगंज	किशनगंज	किशनगंज	–	32	213
शाहबाद	शाहबाद	शाहबाद		27	236
8	**8**	**7**	**1 + 3 = 4**	**214**	**1244**

स्रोतः–कार्यालय जिला सांखिकी,बारां जिला एक दृष्टि में 2011

उपर्युक्त तालिका संख्या 2.1 में बारां जिले कि प्रशासनिक संरचना का विवरण दिया गया है। जिसमें आठ उपखण्ड़ और आठ तहसीलें, सात पंचायत समितियाँ एवं एक नगर परिषद् व तीन नगरपालिका है। बारां जिले में 214 ग्राम पंचायतें तथा 1244 गांव आते हैं। अतः तालिका से स्पष्ट होता है कि बारां जिले की प्रशासनिक संरचना ठीक है।

बारां जिले के प्रसिद्ध मेलेः–

बारां जिले के प्रसिद्ध मेलों के प्रति ग्रामीण व नगरीय समुदाय के लोगों का विशेष आकर्षण रहा है। जिनमें दोनों समुदायों के लोग पूरी भागीदारी निभाते हैं, यहाँ के प्रसिद्ध मेले निम्नानुसार हैं–

सीताबाड़ी का मेलाः–

यह मेला सीताबाड़ी नामक स्थान पर वैशाख सुदी पूर्णिमा से ज्येष्ठ बुदी अमावस्या तक प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। इसमें बारां जिले के ही नहीं अपितु पड़ौसी राज्य मध्यप्रदेश के लोग भी यहाँ आकर पवित्र कुण्डों में डुबकी लगाते हैं और लक्ष्मण, शिव तथा हनुमान की प्रतिमाओं के दर्शन करते हैं। जिनके समक्ष ग्रामवासी नकदी, अनाज, पतासे तथा नारियल आदि चढ़ाते हैं। यह मेला विशेष रूप से सहरिया जनजाति के लोगों के लिए महाकुम्भ के समान होता है।

डोल यात्रा पर मेलाः–

यह मेला बारां जिले का प्रसिद्ध मेला है। जिसका आयोजन भाद्रपद की शुक्ल एकादशी/जलझूलनी/डोल ग्यारस के दिन किया जाता है और यह एक माह तक भरता है अर्थात् इस मेले का अयोजन एक महिनें तक किया जाता है। जिसमें ग्यारस वाले दिन देव मन्दिरों की शोभा यात्रा निकाली जाती है, जो यहाँ के डोल तालाब पर देव आरती के साथ ही सम्पन्न होती है। इसके पश्चात् देव विमान पुनः मन्दिरों पर लौट जाते हैं।

तेजाजी का मेलाः–

इस मेले का आयोजन भाद्रपद शुक्ला दशमी डोल ग्यारस से एक दिन पूर्व लोक देवता तेजाजी के साहसिक कार्यों की स्मृति में किया जाता है। बारां जिले के अन्तर्गत गजनपुरा, भूलोन, फूलबड़ौदा, भंवरगढ़, खण्डक, छीनोद, अन्ता, माल बमोरी, मूण्डला, बोहत, रायथल, तिसाया, जलोदा, कलोनी आदि गांवों में इसका आयोजन किया जाता है।

बालाजी का मेलाः–

अन्ता तहसील के महू में लगने वाले इस धार्मिक मेले में लगभग 5 हज़ार लोगों के द्वारा भाग लिया जाता है। जिसके अन्तर्गत दूर –दूर के व्यक्ति बालाजी के दर्शन करने के लिए यहाँ आते है और मेले में ग्रामीण व शहरी व्यक्ति मनोरंजन का लाभ उठाते हैं।

बाह्मणी माता का मेलाः–

सोरसन नामक गांव से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर बाह्मणी माता का प्रचीन मंदिर स्थित है, जिसमें पिछले चार सौ सालों से अखण्ड ज्योति जल रही है। यहाँ पर माता के पीठ की पूजा अर्चना की जाती है और भोग लगाया जाता है। जो पूरे भारत में ही नहीं विश्व में भी एक मात्र ऐसी देवी माता का मंदिर है, जिसकी पीठ की पूजा–अर्चना की जाती है। यहाँ पर फाल्गुन के शुक्ल पक्ष की चौदस को महाशिवरात्रि के दिन विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। जिसमें पशुओं में गधों की बिक्री विशेष रूप से होती है, ऐसा माना जाता है कि सोरसन में गधों का मेला लगता है। यह मेला हाड़ौती क्षेत्र का प्रसिद्ध मेला है।

उर्स (पीर) का मेलाः–

अन्ता तहसील के बालाखेड़ा गांव में फरवरी के महिने में उर्स (पीर) के मेले का अयोजन किया जाता है। इस मेले में जिले के लगभग 10 हज़ार मुस्लिम लोग एकत्रित होकर संत की दरगाह पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के अतिरिक्त चादर आदि भी चढ़ाते हैं। यह मुस्लिम समाज के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक आस्था का केन्द्र है, जहाँ पर प्रतिवर्ष मेला लगता है। जिसमें सभी धर्मों के लोग भाग लेते है और मेले में मनोरंजन का आनन्द उठाते हैं।

क्रिसमस का मेलाः—

इस मेले का आयोजन अटरू से 8 किलोमीटर दूर स्थित पिपलोद नामक गांव में 25 दिसम्बर अर्थात् क्रिसमिस के दिन किया जाता है। मेले में ईसाईयों के साथ—साथ अन्य समुदाय के लोगों द्वारा भी भाग लिया जाता है। यह मेला ईसाई समुदाय के लिए धार्मिक आस्था का केन्द्र है। जिसको देखने के लिए बहुत बड़ी संख्या में लोग इकठ्ठे होते हैं और मेले में मनोरंजन का लाभ उठाते हैं।

इन प्रसिद्ध मेलों के अतिरिक्त विभिन्न अवसरों पर मनाये जाने वाले धार्मिक त्यौहारों को भी यहाँ के निवासी अत्यन्त ही श्रद्धा के साथ मनाते हैं। इनमें श्रीराम की स्मृति में रामनवमी, रक्षाबन्धन, दशहरा, दीपावली, होली, आख़तीज, गणगौर तीज, मकर संक्रान्ति का पर्व आदि शामिल है। इसके साथ ही बारां जिले में मुस्लिम धार्मिक उत्सव जैसे शब—ए—बारात, रमज़ान, ईदुल—फितर, ईदुल जुहा तथा जैनों के भाद्रपद माह से शुरू चातुर्मास एवं पर्युषण पर्व आदि शामिल हैं।

बारां जिले के पर्यटक स्थल :—

जिले के प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों के प्रति लोगों का विशेष आकर्षण रहा है। जिनको देखने के लिए दूर—दराज के पर्यटक यहाँ आते हैं। यह पर्यटक स्थल निम्न प्रकार के हैं —

कन्यादहः—

इस स्थान को पूर्व में कृष्णविलास या विलासगढ़ के नाम से जाना जाता था। एक स्थानीय किवदंती के अनुसार विलासगढ़ पर एक मुस्लिम आक्रान्ता के द्वारा पारसमणि को पाने के लिए आक्रमण किया गया था। यहाँ की चार राजकुमारियाँ (कन्यायें) पारसमणि को लेकर विलास नदी में कूद गई थी। अतः इस स्थान का नाम कन्यादह पड़ा। नैंसर्गिक सौन्दर्य से भरपूर इस स्थल पर लोग पिकनिक मनाने भी आते हैं। इसके निकट ही 1962 में स्थापित ग्रामसेवा विद्यापीठ भी स्थित है, जो धार्मिक आस्था का केन्द्र है।

कपिलधाराः—

भंरवरगढ़—नाहरगढ़ रोड पर किशनगंज तहसील में बरनी नदी पर कपिलधारा नामक एक प्रसिद्ध झरना है। जो अपनी विशिष्ट प्राकृतिक सुन्दरता के लिए जाना जाता है। जिसको देखने व पिकनीक मनाने के लिए यहाँ पर दूर — दराज से पर्यटक लोग आते हैं। यह बारां जिले का एक महत्त्वपूर्ण पर्यटक स्थल है।

किशनगंजः—

जिला मुख्यालय से पूर्व की ओर 16 किलोमीटर की दूरी पर देवनारायण का प्राचीन मन्दिर स्थित है। यहाँ पर दो मेले लगते हैं, जिनमें भाद्रपद शुक्ल दशमी को तेजाजी का

मेला तथा फाल्गुन पूर्णिमा पर होली उत्सव के बाद धूलण्डी के दिन फूलडोल मेले का आयोजन किया जाता है।

रामगढ़ः—

जिला मुख्यालय से 35 किलोमीटर उत्तर की ओर पार्वती तथा कुनू नदियों के तट पर स्थित रामगढ़ गांव में अन्नपूर्णा माता का मन्दिर एक पहाड़ी पर स्थित है। इस मन्दिर में माताजी की दो प्रतिमाएँ हैं, जिन्हें बहिनें कहा जाता है। इसी पहाड़ी क्षेत्र पर 'भण्डदेवरा' नामक शिव मन्दिर भी भग्नावस्था में स्थित है। इसकी कुराई तथा मूर्ति निर्माण कला प्रशंसनीय है। यहाँ की मिथुन मूर्तियों के कारण इसे राजस्थान का खजुराहो भी कहा जाता है।

शाहबादः—

शाहबाद में पुरानी जामा मस्ज़िद तथा हिन्दू एवं जैन मन्दिरों के अतिरिक्त दो पुरानी सीढ़ीदार बावड़ियाँ भी हैं। इसके अतिरिक्त वास्तुकला व पच्चीकारी की दृष्टि से प्राचीन बादल महल भी दर्शनीय स्थल है। शहर की सीमा पर एक प्राचीन किला भी है, जिसकी दीवारें व प्राचीरें सुदृढ़ है। ऐसा माना जाता है कि मुग़ल काल में बादशाह औरंगज़ेब ने अपने दक्षिण अभियान के समय यहाँ पर पड़ाव डाला था।

शेरगढ़ का किलाः—

यह किला जिला मुख्यालय से 55 किलोमीटर दक्षिण—पश्चिम दिशा में परवन नदी के तट पर स्थित है। जो एक मान्यता के अनुसार शेरशाह सूरी ने इस स्थान को अधिकृत करके इसका नाम शेरगढ़ रखा था। इससे पूर्व इसका प्राचीन नाम कोषवर्धन था, जो परमार राजाओं की राजधानी थी। यहाँ से ग्यारहवीं सदी का एक शिलालेख भी प्राप्त हुआ है और यहाँ पर जैन व बौद्ध धर्म उन्नत अवस्था में थे। शैव तथा वैष्णव धर्म भी यहाँ पर प्रचलित थे। यहाँ पर 10वीं व 11वीं शताब्दी का सोमनाथ मन्दिर भी मुख्य धार्मिक स्थल है। किले से सुरक्षित शेरगढ़ हिन्दू युग का सबसे सुदृढ़ तथा सुरक्षित स्थान माना जाता था।

सीताबाड़ीः—

बारां जिला मुख्यालय से 45 किलोमीटर दूरी पर प्राकृतिक छटा से भरपूर सीताबाड़ी नामक स्थान, जो केलवाड़ा से 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और साथ ही यह स्थल नैसर्गिक सौन्दर्य से भरपूर है। यहाँ लगने वाले मेले को सहरिया जनजाति का महाकुम्भ भी कहा जाता है, जो सहरिया जनजाति की धार्मिक आस्था का केन्द्र है। जनश्रुति

के अनुसार राम से दूर होने के बाद सीता माता इसी स्थान पर रही थी। यहाँ पर वाल्मिकी, लक्ष्मण तथा सूर्य मन्दिर भी दर्शनीय हैं।

सोरसनः—

यह स्थान राजस्थान के राज्यपक्षी गोडावण के लिए प्रसिद्ध है, परन्तु इस शिकार निषिद्ध क्षेत्र में अब गोडावण पूर्णरूप से लुप्त हो चुके हैं। यहाँ पर हिरणों की संख्या बहुत अधिक मात्रा में पायी जाती है। सोरसन गांव के पास स्थित ब्रह्माणी माता का बहुत प्राचीन मंदिर है। समूचे विश्व में यह एकमात्र ऐसा मंदिर है, जहाँ देवी की पीठ का श्रृंगार एवं पूजा—अर्चना की जाती है तथा भक्तगण भी पीठ के ही दर्शन करते हैं।

अन्ता का परिचयः—

अन्ता तहसील राजस्थान राज्य के अन्तर्गत बारां जिले में स्थित है, जो एक उपखण्ड भी है। सन् 1995 में अन्ता तहसील का आविर्भाव हुआ। अन्ता शहर के दक्षिण से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 27 निकल रहा है साथ ही शहर के मध्य से कोटा—बीना रेलवे लाइन भी निकल रही है। जिसके कारण अन्ता शहर (कस्बा) देश के विभिन्न शहरों से जुड़ा हुआ है। अन्ता तहसील में राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम लिमिटेड गैस संयन्त्र (एन.टी.पी.सी) स्थित है। अन्ता में विधान सभा क्षेत्र और पंचायत समिति मुख्यालय भी है। इससे पूर्व यह मांगरोल तहसील में सम्मिलित था। अन्ता तहसील राजस्थान राज्य के बारां जिले के पश्चिम दिशा में स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 543.45 वर्ग किलोमीटर तथा विस्तार उत्तर से दक्षिण तक 32 किलो मीटर और पूर्व से पश्चिम 18 किलोमीटर है।

अन्ता तहसील में कुल गांवों की संख्या 79 है और अन्ता तहसील मुख्यालय के रूप में अन्ता कस्बा प्रमुख है, जो सभी मुख्य प्रशासनिक सुविधाओं से युक्त है। अन्ता कस्बा कोटा नगर से पूर्व में लगभग 50 किलो मीटर व बारां से पश्चिम में लगभग 23 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो दोनों जिला मुख्यालयों से सड़क व रेलमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। अन्ता तहसील के पश्चिम में दीगोद, दक्षिण व दक्षिण—पश्चिम में सांगोद, पूर्व में बारां, उत्तर—पूर्व में मांगरोल तहसील स्थित है। भू—प्राकृतिक रूप से अन्ता तहसील मालवा पठार के उत्तरी भाग पर स्थित है साथ ही धरातल का ढाल उत्तर की ओर है। यह क्षेत्र प्रायः समतल है, लेकिन कालीसिंध नदी के सहारे कुछ घाटियाँ भी दिखाई देती हैं। अन्ता तहसील की प्रमुख नदी कालीसिंध नदी है, जो इस क्षेत्र में लगभग 20 किलोमीटर दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है।

सामान्य रूप से यहाँ की जलवायु शुष्क है। शीत ऋतु मध्य नवम्बर से फरवरी के अन्त तक साढ़े तीन माह तक रहती है। मार्च से जून के मध्य का समय ग्रीष्म ऋतु का

रहता है। दक्षिण–पश्चिम मानसून आने के बाद ही तापमान में गिरावट आती है। किन्तु अक्टूबर माह में मानसून की समाप्ति के बाद तापमान में बढ़ोत्तरी प्रारम्भ हो जाती है।

अन्ता तहसील के दक्षिण में लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर राजस्थान का प्रसिद्ध अभ्यारण्य गोडावन(सोरसन) स्थित है। गोडावन अभ्यारण्य में गोडावन पक्षियों के अतिरिक्त अनेक जंगली जानवर तथा हिरण आदि भी दृष्टव्य हैं। अन्ता तहसील की अधिकतर भूमि मालवा का पठार होने के कारण काली मिट्टी द्वारा निर्मित है। नदियों के किनारे कहीं–कहीं पीली मिट्टी भी पाई जाती है। दक्षिण का भाग कुछ पथरीला होने के कारण यहाँ लाल मिट्टी भी पायी जाती है।

अन्ता तहसील का शैक्षिक स्तर भी अच्छा है, यहाँ पर सरकारी और गैर सरकारी महविद्यालय भी है। यहाँ पर सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों की संख्या भी पर्याप्त मात्रा में है। जिसके कारण अन्ता तहसील एवं कस्बे का बारां जिले में शैक्षणिक स्तर ठीक है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार अन्ता तहसील की कुल जनसंख्या 120,038 है, जिसमें पुरूषों की संख्या 62,258 तथा स्त्रियों की संख्या 57,780 है। तहसील में ग्रामीण जनसंख्या 87,661 है, जिसमें कुल पुरुष 45,440 तथा स्त्रियाँ 42,221 हैं। तहसील की कुल नगरीय जनसंख्या 32,377 है, जिसमें से पुरूषों की संख्या 16,818 तथा स्त्रियों की संख्या 15,559 हैं। साक्षरता के अनुसार अन्ता तहसील में 73,580 व्यक्ति साक्षर है, जिसमें पुरूष 45,331 तथा महिलाएँ 28,249 साक्षर हैं।[3]

तालिका संख्या–2.2

अन्ता तहसील की जनसंख्यात्मक स्थिति (2011)

क्र.सं.	क्षेत्र	परिवारों की संख्या	कुल जनसंख्या	कुल पुरूष	कुल महिला
1	ग्रामीण	16906	87661	45440	42221
2	शहरी	6312	32,377	16818	15559
	कुल	23218	120038	62258	57780

स्रोत– डाइरेक्टरेट ऑफ सेन्सस् डिपार्टमेन्ट ऑफ राजस्थान, डिस्ट्रिक्ट बारां तहसील अन्ता, जनगणना 2011

उपरोक्त तालिका संख्या 2.2 से स्पष्ट है कि 2011 की जनगणना के अनुसार अन्ता तहसील के ग्रामीण व शहरी तथा पुरूष व महिलाओं की स्थिति और संख्या निम्न प्रकार हैं – अन्ता तहसील में कुल परिवारों की संख्या 23,218 है, जिनमें ग्रामीण परिवार 16,906 है

तथा शहरी परिवार 6,312 शामिल हैं। वहीं कुल जनसंख्या 120,038 है, जिनमें ग्रामीण 87,661 तथा शहरी 32,377 जनसंख्या शामिल हैं।

तालिका संख्या–2.3

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या

क्र.सं.	**क्षेत्र**	**पुरूष**	**महिला**	**कुल**
1	अनुसूचित जाति (SC)	13406	12073	25479
2	अनुसूचित जनजाति(ST)	5637	5315	10952

स्रोत– डाइरेक्टरेट ऑफ सेन्सस् डिपार्टमेन्ट ऑफ राजस्थान, डिस्ट्रिक्ट बारां तहसील अन्ता, जनगणना 2011

तालिका संख्या 2.3 से स्पष्ट है कि 2011 की जनगणना के अनुसार अन्ता तहसील की अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 25,479 है, जिनमें 13,406 पुरूष व 12,073 महिलाएँ शामिल हैं। वहीं अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 10,952 है, जिसमें 5,637 पुरूष तथा 5,315 महिलाएँ शामिल है। अतः, तालिका से स्पष्ट होता है कि अन्ता तहसील में अनुसूचित जाति की अपेक्षा अनुसूचित जनजातियों की संख्या कम है।

तालिका संख्या–2.4

साक्षरता (2011 की जनगणनानुसार)[4]

क्र.सं.	**क्षेत्र**	**पुरुष(प्रतिशत)**	**महिला(प्रतिशत)**	**कुल(प्रतिशत)**
1	ग्रामीण	32364(71.39)	19224(68.05)	51588(70.11)
2	शहरी	12967(28.61)	9025(31.95)	21992(29.89)
	कुल	**45331(100)**	**28249(100)**	**73580**(100)

स्रोत– डाइरेक्टरेट ऑफ सेन्सस् डिपार्टमेन्ट ऑफ राजस्थान, डिस्ट्रिक्ट बारां तहसील अन्ता, जनगणना 2011

तालिका संख्या 2.4 से स्पष्ट है अन्ता तहसील कि 2011 की जनगणना के अनुसार साक्षरता दर निम्न प्रकार है– कुल साक्षर 73,580 जिसमें 51,588 पुरूष व महिला ग्रामीण क्षेत्र के साक्षर है, जिनका प्रतिशत 70.11 प्रतिशत है। वहीं 21,992 शहरी क्षेत्र के पुरूष व महिला साक्षर है, जिनका प्रतिशत 29.89 प्रतिशत है। अतः तालिका से स्पष्ट होता है कि अन्ता तहसील की ग्रामीण स्तर पर साक्षरता दर अधिक है।

मीणा बाहुल्य गांवों का परिचयः–

अन्ता तहसील में कुल गांवों की संख्या लगभग 79 है, जिनमें से उन गांवों को अध्ययन के लिए चुना गया। जो मीणा बाहुल्य श्रेणी के गांव है जैसे– काचरी, पचेलकला, फलसावा, सिन्धपुरी आदि गांव शामिल हैं। जिनकी विवेचना निम्न प्रकार से यहाँ प्रस्तुत है–

1. पचेलकलाः–

अन्ता तहसील मुख्यालय से पचेलकला गांव लगभग 11 किलोमीटर पूर्व की दिशा में स्थित है। यहाँ ग्राम पंचायत मुख्यालय भी है, जिसके अन्तर्गत सरकन्या तथा पचेलकला गांव आते हैं। गांव में ग्राम पंचायत मुख्यालय होने के कारण सरकार द्वारा संचालित सभी योजनाओं का ग्रामीण व्यक्ति लाभ उठाते हैं। यहाँ सरकारी सेवा के अन्तर्गत अटल सेवा केन्द्र, सहकारी समिति, उच्च माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र आदि स्थित हैं।

पचेलकला गांव 1800 ईसी पूर्व में बसाया गया था, इसलिए इस गांव में मीणाओं की संख्या अधिक है। यहाँ माताजी का एक भव्य मन्दिर भी है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इस गांव की कुल जनसंख्या 2112 है, जिसमें मीणा जनजाति की संख्या सर्वाधिक 501 है। पचेलकला में मीणा जनजाति के परिवारों की संख्या लगभग 96 है, जिसमें संयुक्त व एकांकी दोनों परिवार शामिल हैं। यहाँ की मीणा जनजाति के व्यक्तियों का सामाजिक जीवन मध्यम दर्जे का है साथ ही यहाँ की मीणा जनजाति आधुनिक परिवेश में जीवन व्यतीत करना सीख रही है। बच्चे प्राथमिक से माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यहाँ के निवासी अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के अध्ययन हेतु गांव से बाहर भेज रहे हैं, जिससे शिक्षा के स्तर में भी वृद्धि हुई है। अतः यहाँ की मीणा जनजाति का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवेश ठीक है।

2. काचरीः–

यह गांव तहसील मुख्यालय से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में ग्राम पंचायत मुख्यालय है, जिसके अन्तर्गत पचेल खुर्द, बमूलिया, जोगियान आदि गांव आते हैं। यहाँ के सरपंच का नाम बालमुकुन्द यादव है। इस गांव में सरकारी सेवा के अन्तर्गत अटल सेवा केन्द्र, आंगनबाड़ी केन्द्र, सहकारी समिति, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र उच्च माध्यमिक विद्यालय आदि स्थित हैं।

इस गांव में एक बड़ा तालाब भी है, जिसके किनारे ब्रह्माणी माता का मन्दिर है। इस मन्दिर के समीप ही नवरात्रों में मेला लगता है साथ ही इस मेले में सभी जातियों के

लोग भाग लेते हैं। इस गांव में शिक्षा की भी अच्छी सुविधा है। यहाँ स्थित प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालय में गांव के बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु वे गांव से बाहर भी जाते हैं।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इस गांव की कुल जनसंख्या 1226 है, जिसमें मीणा जनजाति की संख्या 456 तथा कुल मीणा परिवारों की संख्या लगभग 70 है। यहाँ पर संयुक्त व एकांकी दोनों ही प्रकार के परिवार विद्यमान हैं। काचरी गांव की मीणा जनजाति के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। यहाँ के व्यक्ति कुलदेवता की पूजा एवं आराधना करते हैं। इस गांव के मीणाओं का सामाजिक तथा आर्थिक जीवन सामान्य है। यहाँ के व्यक्ति नौकरी, मज़दूरी तथा कृषि कार्य करते हैं साथ ही इनमें राजनीतिक जागरूकता भी पाई जाती है।

3. पलसावाः—

यह गांव अन्ता तहसील मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर पूर्व दिशा में स्थित है। यहाँ पंचायत मुख्यालय है, जिसके अन्तर्गत डाबरी काकाजी, तामखेड़ा, खुजुरणा खुर्द आदि गांव आते हैं। सरकारी सेवान्तर्गत इस गांव में अटल सेवा केन्द्र, आंगनबाड़ी केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सहकारी समिति, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालय आदि सुविधाओं से युक्त हैं।

इस गांव को बाबूलाल मीणा ने बसाया था, जिसने एक कुँआ खुदवाया था। यह कुँआ अमृत कुँआ के नाम से प्रसिद्ध है। गांव के दूर—दूर से लोग इस कुएं का पानी पीने के लिए आते हैं। क्योंकि ऐसी मान्यता है कि जो भी व्यक्ति इस कुएं का पानी पीता है, उसके सभी रोग दूर हो जाते हैं।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इस गांव की कुल जनसंख्या 932 है, जिसमें से मीणाओं की संख्या 506 है तथा मीणा परिवारों की कुल संख्या लगभग 120 है। अतः इस गांव में मीणाओं का बाहुल्य है। यहाँ शिक्षा का स्तर सामान्य है साथ ही यहाँ के व्यक्ति धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। इनका सामाजिक तथा आर्थिक जीवन सामान्य है साथ ही यहाँ के व्यक्ति कृषि, मज़दूरी तथा नौकरी आदि का कार्य करते हैं।

पलसावा गांव में सभी देवी—देवताओं की पूजा—अर्चना की जाती है। जिसके कारण यह गांव धार्मिक आस्था का केन्द्र बना हुआ है। इस गांव की मीणा जनजाति के लोग राजनीति में भी सामान्य रूप से अपनी भागीदारी निभाते हैं। इस गांव के लोग पचेलकला तथा काचरी गांव के समान ही अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिये गांव के बाहर

भेजते हैं। क्योंकि अन्ता तहसील मुख्यालय पर सरकारी व निजी महाविद्यालय होने के कारण गांव से अन्ता में पढ़ने आते हैं। जिसके कारण गांव की शिक्षा का स्तर भी ठीक है।

4. सिंधपुरी:—

यह गांव अन्ता तहसील मुख्यालय से लगभग 10 किलोमीटर उत्तर दिशा में स्थित है। यह गांव बालदड़ा ग्राम पंचायत के अन्तर्गत आता है, जिसके सरपंच पुरूषोत्तम मीणा है। इस गांव के सम्बन्ध में पुरानी मान्यता है कि इस गांव को सिंधु महाराजा ने बसाया था और इन्हीं के नाम से इसका नाम सिंधपुरी रखा गया। किन्तु इस गांव के समीप से ही कालीसिन्ध नदी भी गुजर रही है, इस कारण भी इस गांव का नाम सिंधपुरी रखा गया है। इस प्रकार से इस गांव के बारे में भी दो प्रकार की मान्यताएँ है, जिनके आधार पर इस गांव का नाम सिंधपुरी रखा गया। क्योंकि सिंधपुरी गांव भी पुरानी मान्यताओं के अनुसार धार्मिक आस्था का केन्द्र है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इस गांव की कुल जनसंख्या 267 है, जिसमें मीणाओं की संख्या 143 है। यह मीणा बाहुल्य श्रेणी का गांव है। यहाँ मीणा परिवारों की कुल संख्या लगभग 30 है, जिसमें संयुक्त तथा एकांकी दोनों ही प्रकार के परिवार शामिल हैं। यहाँ की मीणा जनजाति की शिक्षा का स्तर भी उपर्युक्त गांवों के समकक्ष ही सामान्य है। सिंधपुरी गांव में ग्राम पंचायत मुख्यालय नहीं होने के कारण यहाँ पर उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित है। जिसमें गांव मे बच्चे अध्ययन का कार्य करते है। आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए गांव के लड़के व लड़कियाँ गांव के पास ही रातड़िया गांव होने के कारण वहाँ पर शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं। यहाँ के व्यक्ति उच्च शिक्षा हेतु बच्चों को बड़े शहरों में भेजते हैं। यहाँ के मीणाओं की आर्थिक स्थिति मध्यम दर्जे की है तथा इनका सामाजिक जीवन भी सामान्य प्रकार का है। सिंधपुरी के मीणाओं का राजनीतिक इतिहास भी अच्छा रहा है। पूर्व में यहाँ की एक महिला प्रधान रह चुकी है, जो ग्रामीण मीणा जनजाति की एक महिला थी। यहाँ के निवासी कृषि, मज़दूरी तथा नौकरी पेशे से सम्बन्धित है। अतः यहाँ की मीणा जनजाति का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर ठीक है साथ ही राजनीतिक क्षेत्र में इस गांव की अपनी एक पहचान है।

अध्ययन के उद्देश्यः—

1. वैश्वीकरण एवं जनजातीय समाज के बारे में जानकारी प्राप्त कर मीणा जनजाति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
2. मीणा जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना।
3. वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति के जीवन स्तर में परिवर्तन का अध्ययन करना।

4. मीणा जनजाति की सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन का अध्ययन करना।
5. मीणा जनजाति की महिलाओं की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
6. जनजाति के बदलते हुए व्यावसायिक प्रकारों तथा उनके उद्देश्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
7. मीणा जनजाति की तीन पीढियों का वैयक्तिक अध्ययन करना।
8. मीणा जनजाति में राजनीतिक जागरूकता एवं राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ती सहभागिता के बारे में जानना।

प्राक्कल्पनाः—

प्रस्तुत अध्ययन की प्राक्कल्पनाएँ निम्न प्रकार से हैं —

1. वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ा।
2. मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभाव महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों पर अधिक पड़ा।
3. वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति में प्राथमिक सम्बन्धों की अपेक्षा द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला।
4. वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन किया।
5. वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति में राजनीतिक जागरूकता को बढ़ावा दिया।
6. वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है।

मुख्य चरः—

अध्ययन के मुख्य चर इस प्रकार है — 1. आयु 2. शिक्षा 3. परिवार के स्वरूप 4. परिवार का आकार 5. आय का स्रोत 6. कृषि भूमि 7. वैश्वीकरण एवं परिवार 8. वैश्वीकरण एवं विवाह 9. वैश्वीकरण एवं सामाजिक सम्बन्ध 10. वैश्वीकरण एवं महिला प्रस्थिति 11. वैश्वीकरण एवं गतिशीलता 12. वैश्वीकरण एवं सामाजिक रीति—रिवाज़ 13. वैश्वीकरण एवं परम्परा 14. वैश्वीकरण एवं राजनीतिक जागरूकता 15. वैश्वीकरण एवं युवा 16. वैश्वीकरण एवं जनजाति

समग्रः—

समग्र उस पूरे समूह या क्षेत्र को कहते हैं, जिसके विषय में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। वर्ग विशेष के सदस्यों से जानकारी प्राप्त करने के लिए समग्र का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए समग्र के रूप में बारां जिले की अन्ता तहसील के चार गांवों यथा पचेलकला, पलसावा, सिंधपुरी तथा काचरी की मीणा जनजाति के सभी महिला एवं पुरूष सदस्यों को समग्र के रूप में लिया गया है।

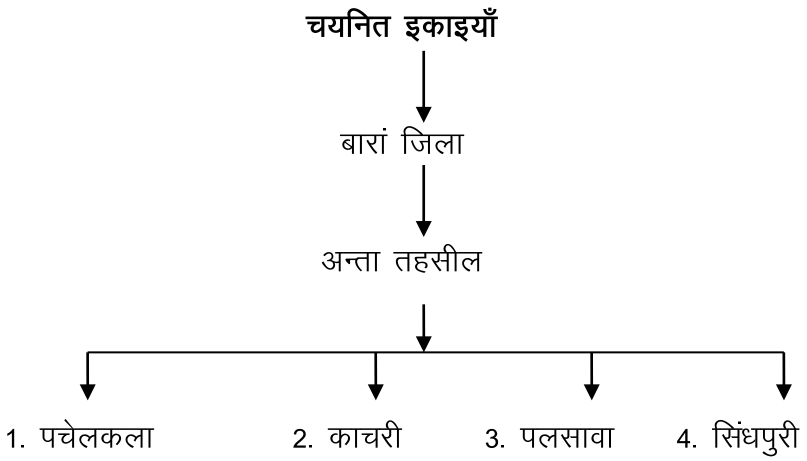

निदर्शनः—

निदर्शन किसी विशाल समूल समग्र का एक अंश है, जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए समग्र में से चार गांवों यथा पचेलकला (जनसंख्या 501), पलसावा (जनसंख्या 506), सिंधपुरी (जनसंख्या 143), काचरी (जनसंख्या 456) का चयन किया गया। जिनकी कुल मीणा जनजाति की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 1606 है। जिसमें से मैंने उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया, जो परिवार के मुख्य उत्तरदायी व्यक्ति है। जिसमें पुरूष एवं महिला उत्तरदाता शामिल हैं।

अनुसंधान की प्रविधिः—

प्रस्तुत अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग करते हुऐ समग्र में से कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। जिनमें 150 महिला एवं 150 पुरूष उत्तरदाता शामिल है। जिनसे प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग करते हुए, क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान अवलोकन विधि का भी प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य, सरकारी एवं गैर–सरकारी आंकड़े, उपयोगी पुस्तकें एवं वेबसाइट का प्रयोग किया गया। साथ ही केस स्टडी के माध्यम से चार उत्तरदाताओं का वैयक्तिक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन प्रविधियों का पूर्ण परीक्षणः—

अध्ययन के अन्तर्गत प्रयोग में ली गई साक्षात्कार अनुसूची का 30 व्यक्तियों अर्थात् पुरूष व महिला उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची का पूर्व परीक्षण किया गया। जिसके कारण साक्षात्कार अनुसूची में वांछित सुधार भी किया गया है, जिससे अध्ययन सुगम एवं पारदर्शिय बन सके।

तथ्यों का विश्लेषणः–

साक्षात्कार अनुसूची द्वारा संग्रहित तथ्यों को सांख्यिकी की प्राथमिक आवश्यकताओं के अनुरूप सारणीबद्ध किया गया है। तद्न्तर विषय के केन्द्र बिन्दु से प्रभावित एवं उस पर प्रभाव डालने वाली प्रतिस्थापनाओं से सम्बन्धित समंकों को विश्लेषण हेतु चयनित किया गया है। मीणा जनजाति के सन्दर्भ में प्राथमिक स्तर की सूचनाओं के लिए सम्बन्धित गांवों के परिवार के मुखिया, जिसमें पुरूष व महिला का साक्षात्कार लिया गया। अध्ययन में कुछ विशिष्ट पक्षों को विश्लेषित करने हेतु अवलोकन विधि से चयनित उत्तरदाताओं के वैयक्तिक इतिहास के सम्बन्ध में सूचनाएँ संकलित की गई हैं। जिन्हें यथावत् उपर्युक्त अध्यायों में समाविष्ट किया गया है। उपर्युक्त गुणात्मक एवं वैयक्तिक विश्लेषणों के अतिरिक्त वर्तमान शोध के अन्तर्गत तथ्यों के सातत्य को बनाये रखने के लिए सांख्यिकी विश्लेषण के वर्तमान उपलब्ध आधुनिक साधनों का भी उपयोग किया गया है। शोध में सांख्यिकी माध्य और बहुलक द्वारा सारणीयन करके विश्लेषण किया गया है।

उत्तरदाताओं से प्राप्त सूचनाओं को यांत्रिक एवं मानवीय पद्धतियों से विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। वस्तुतः अध्ययन क्षेत्र में सूचनाओं के संकलन के पश्चात् साक्षात्कार अनुसूची में दिये गये विषयों की कोड़िंग करने के उपरान्त संगणक संचालक को सांख्यिकी एवं प्रस्तुतीकरण हेतु दिया गया था जहाँ पर इसकी शुद्धता उपर्युक्त तथ्यों के चयन एवं उसकी सत्यता से सम्बन्धित पक्षों का निर्धारण करते हुए विश्लेषण को उपर्युक्त बनाया गया है। समय और विश्लेषण की सुविधा के दृष्टिकोण से संगणक की सहायता से प्राप्त की गई। कुछ अन्य सम्बन्धित समंक जिनका प्रस्तुतिकरण अध्ययन पर प्रकाश डालने के लिए अत्यावश्यक है, को भी सारणीबद्ध किया गया है। व्यक्तिगत सीमाओं को ध्यान में रखते हुए प्राप्त तथ्यों की सत्यता को परखने के लिए यथासंभव तुलनात्मक दृष्टान्त भी दिये गये हैं। वर्तमान अध्ययन मूलतः विवरणमूलक है तथा निष्कर्ष और सामान्यीकरण उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त सूचनाओं तक ही सीमित है। किसी विशिष्ट सैद्धान्तिक प्रतिस्थापनाओं के विकास के लिए इस अध्ययन में प्रयास नहीं किया गया है। अतः यह अध्ययन एक उपयोगी अध्ययन होगा।

तथ्यों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्याः–

वर्तमान अध्ययन के तथ्यों को सात अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है। विषय से सम्बन्धित सैद्धान्तिक पक्ष को प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया गया, जिसके अन्तर्गत विभिन्न अवधारणाओं का विश्लेषण एवं अनुसंधान साहित्य का सर्वेक्षण मुख्य सन्दर्भ रहा है। द्वितीय

अध्याय में अध्ययन क्षेत्र का परिचय, अध्ययन के उद्देश्य, अनुसंधान प्रारूप, शोध की समस्याओं एवं सीमाओं का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि के अध्ययन से सम्बन्धित हैं। अध्याय चतुर्थ में वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन पर विभिन्न प्रभावों एवं परिवर्तनों का विस्तृत वर्णन किया गया है। पंचम अध्याय में मीणा जनजाति में महिलाओं की स्थिति की विवेचना की गई हैं। इसमें परम्परागत स्थिति एवं वैश्वीकरण के प्रभावों से महिलाओं की स्थिति में आये बदलाव को आधुनिक स्थिति के रूप में विश्लेषित किया गया है। अध्याय षष्ट्म में उन प्रतिष्ठित पुरूष व महिलाओं का वैयक्तिक अध्ययन है, जो सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त है। अन्तिम अध्याय के अन्तर्गत विश्लेषित तथ्यों से प्राप्त निष्कर्षों को संकलित किया गया और साथ ही तुलनात्मक निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए सुझाव भी दिये गये हैं। अन्त में प्राक्कल्पनाओं की सत्यता को भी दर्शाया गया है।

अनुसंधान की सीमाएँः—

वर्तमान अध्ययन वैश्वीकरण के जनजातीय समाज पर पड़ने वाले प्रभावों से सम्बन्धित हैं। जिसमें वैश्वीकरण की प्रक्रिया से सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता एवं राजनीतिक जागरूकता का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन मुख्य रूप से वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक सामग्री से संकलित सूचनाओं को विश्लेषित किया गया है। जनजातीय समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों एवं बाह्य समाज के लोगों से अलग रहने की प्रवृत्ति ने शोध के लिए तथ्य संकलन की विविध समस्याओं को जन्म दिया है। जनजातीय समुदाय के प्राचीन एवं वर्तमान सामाजिक, व्यावसायिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों को जानने हेतु लोगों को बार—बार सचेत कर सूचना संकलित की गई हैं। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त सूचनाओं को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार किया गया है। यद्यपि वैश्वीकरण के प्रभावों पर कतिपय उत्तरदाताओं ने अनभिज्ञता प्रकट की, जिससे अध्ययन के कुछ पक्षों की गहनता सीमित हुई। अध्ययन से प्राप्त परिणामों को देश के अन्य भागों में निवास करने वाली जनजातियों पर यथावत लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवेश अपनी विविधता के साथ—साथ मानव जीवन के अन्य पक्षों को भी प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। तात्पर्य यह है कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आर्थिक संसाधनों पर विकसित होती है। वे अपनी शक्ति संरचना के मानवीय पक्ष के संतुलन हेतु अपना विशेष उपागम भी विकसित कर लेती है। अतः यह स्पष्ट है कि निदान के उपकरण व व्यवस्था का संचालन सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का एक अंग है। अध्ययनकर्ता का अल्प समय, ज्ञान एवं अनुभव की कमी अनुसंधान के कार्य में मुख्य सीमा रही है।

निष्कर्षः—

प्रस्तुत अध्याय में बारां जिले के सामन्य परिचय में भौगोलिक स्थिति, जनसंख्यात्मक स्थिति, साक्षरता दर, प्रशासनीय स्थिति, प्रसिद्ध मेले एवं दर्शनीय स्थल आदि का संक्षिप्त वर्णन किया गया। आगे इसी क्रम में अन्ता तहसील का परिचय जनसंख्यात्मक स्थिति जिसमें शहरी, ग्रामीण एवं अनुसूचित जाति तथा जनजाति, साक्षरता दर एवं मीणा जनजाति के गांव काचरी, पचेलकला, पलसावा, सिन्धपुरी आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। इसके साथ ही अध्ययन पद्धति में अध्ययन के उद्देश्य, समग्र, निदर्शन, मुख्य चर, प्राक्कल्पना, अनुसंधान की प्रविधि, प्रविधियों का पूर्व परिक्षण, तथ्यों का विश्लेषण, तथ्यों का प्रस्तुतिकरण एवं व्याख्या, अनुसंधान की सीमाएँ आदि का अध्ययन किया गया, जिसके कारण यह अध्ययन अति महत्वपूर्ण हुआ है। अतः यह अध्ययन वर्तमान परिपेक्ष्य में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से एक मार्ग दर्शक अध्ययन साबित होगा।

सन्दर्भ सूची

1. ''जिला जनगणना पुस्तिका'' बारां, 2011
2. ''कार्यालय जिला सांख्यिकी अधिकारी'' बारां जिला एक दृष्टि में, 2011
3. "Directorate of Census, Department of Rajasthan, District Baran" Tahsil Anta, Population Census, 2011
4. ''कार्यालय नगर परिषद'', बारां, 2012
5. मुखजी, आर. एन. : ''सामजिक शोध तथा सांख्यिकी'' सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 1987
6. सिंह सुरेन्द्र : ''सामजिक सर्वेक्षण'' हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, (उ.प्र.), 1982
7. Adolf Johnson : "Social Research" Urnold Publication, 1963
8. Goode and Hatt : "Method's in Social Research" Leading Publishing, 1952

तृतीय अध्याय

‘‘उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि’’

तृतीय अध्याय

उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि

मानव एक सामाजिक प्राणी है और पर्यावरण से सम्बन्धित एक समुदाय में वह निवास करता है। जिसके कारण उसकी अपनी एक पृष्ठभूमि होती है। प्रस्तुत शोध ''वैश्वीकरण का जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता'' से जुडा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के व्यक्तियों अर्थात् चयनित उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। क्योंकि जनजातीय समुदाय में पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का अपना एक महत्त्व होता है। जिसके कारण उस समुदाय विशेष के व्यक्तियों को पहचाना जाता है।

इस शोध विषय के अन्तर्गत चयनित उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के बारे में संकलित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। जिसमें मुख्य रूप से उनकी आयु, लिंग, शिक्षा, परिवार की प्रकृति अर्थात् पारिवारिक संरचना, व्यवसाय के स्वरूप, वैवाहिक स्थिति, वार्षिक आय जिसमें स्वयं व पारिवारिक आय, आय के स्रोत, मकान के स्वरूप, खान–पान का स्तर, सिंचाई के साधन, कुल सिंचित भूमि का भाग, निजी क्षेत्र में आरक्षण व्यवस्था अर्थात् कारणों का उल्लेख, आधुनिक सुख–सुविधाएँ आदि के बारे में जानने का प्रयास किया गया है।

राजनीतिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं की राजनीतिक क्षेत्र से सम्बन्धित सामान्य एवं विशिष्ठ क्रियाओं का भी इस अध्याय में अध्ययन किया गया है। जिसमें मुख्य रूप से चुनाव लड़ना, चुनाव में भाग लेना, चुनाव में प्रेरणा स्रोत, राजनीतिक दलों से जुड़ाव, उत्तरदाताओं का बोध स्तर, राजनीति में आरक्षण व्यवस्था, आरक्षण व्यवस्था के उचित कारण, राजनीति में धन व संख्या बल का महत्त्व आदि पक्षों का अध्ययन किया जा रहा है। इसलिए यह अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से एक विश्लेषणात्मक एवं उपयोगी अध्ययन होगा। जिसमें अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के बारे में गहनता से जानकारी प्राप्त होगी। यह अध्ययन एक मार्गदर्शक अध्ययन बन जायेगा, साथ ही आने वाली युवा पीढ़ी के लिए मील का पत्थर साबित होगा। जो अपने आप में एक पूर्ण समाजशास्त्रीय अध्ययन होगा।

लिंग के आधार पर :–

लिगों (पुरूष अथवा स्त्री) के बीच शारीरिक एवं जैविक अन्तर सार्वभौमिक है और मूलभूत अन्तर जननांगों की बनावट में होता है। जननांगों के बीच अन्तर के अलावा नर–नारी में लम्बाई–चौडाई, आकार–प्रकार, वक्ष स्थलों में अन्तर, शरीर में बालों की भिन्नता इत्यादि भी होते हैं। जो कि सार्वभौमिक एवं उद्‌विकास की वर्तमान स्थिति तक सार्वकालिक रहे हैं।''[1]

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के पुरूष व महिला उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। जिनसे उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि के बारे में साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। जिनका वर्गीकरण निम्न तालिका में दर्शाया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.1

उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर वर्गीकरण

क्रम संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
	पुरूष	महिला	
1	150	150	**300**
योग	150	150	**300**

नोट – तलिका संख्या 3.1 में चयनित उत्तरदाताओं को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 3.1 में अध्ययन के लिए चयनित उत्तरदाताओं को दर्शाया गया है। इस हेतु 300 उत्तरदाताओं में से 150 पुरूष तथा 150 महिलाओं का चयन किया गया है। जिनसे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि के साथ ही शोध विषय से सम्बन्धित अनेक पक्षों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है।

पारिवारिक संरचनाः–

पारिवारिक संरचना के तहत स्त्री तथा पुरूष को संयुक्त जैविकीय इकाई के रूप में माना जाता है साथ ही यौन सम्बन्धों के द्वारा संतान उत्पन्न करने हेतु सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। समाजिक इकाई के रूप में परिवार स्त्री–पुरूष का वह समूह है, जो विवाह या रक्त अथवा गोद सम्बन्धों के आधार पर निर्मित होता है। **बर्गेस एवं लॉक के अनुसार,** ''परिवार व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो विवाह, रक्त अथवा दत्तक बंधनों से बंधा होता है। इसके द्वारा एक अकेले घर की रचना होती है। इसके सदस्य पति–पत्नि, माता–पिता, भाई–बहिन की सामाजिक भूमिका में एक–दूसरे से अन्तःक्रिया तथा अंतः सम्प्रेषण करते हुए सामान्य संस्कृति की रचना करते हैं।''[2]

संयुक्त परिवारः–

''संयुक्त परिवार का तात्पर्य ऐसे परिवार से है, जिसमें कई पीढ़ियों के सदस्य एक साथ रहते हैं। यह सदस्य पारिवारिक कर्त्तव्य–परायणता के आधार पर बंधे रहते हैं। संयुक्त परिवार का अर्थ स्पष्ट करते हुए **डॉ. एसं.सी.दुबे** ने लिखा है ''यदि कई मूल परिवार एक साथ रहते हों और इनमें निकट का नाता हों, यदि वे एक स्थान पर भोजन करते हों और एक ही आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करते हों, तो उन्हें उनके सम्मिलित रूप में, संयुक्त परिवार कहा जा सकता है।''[3]

एकांकी परिवारः–

''इस प्रकार के परिवार में सदस्यों की संख्या कम होती है, परिवार के सदस्यों में पति–पत्नि तथा उनकी अविवाहित संतानें ही होती है। **एम.एन श्रीनिवास** के अनुसार ''व्यक्ति उसकी पत्नी और अविवाहित बच्चों के ग्रहस्थ समूह को प्रारम्भिक अथवा एकांकी परिवार कहते है।''[4] **मरडॉक** के अनुसार ''एकांकी परिवार विवाहित पुरूष तथा स्त्री व उनकी संतानों से बनता है, यद्यपि कुछ व्यक्तिगत स्वरूपों में इसमें एक या अधिक व्यक्ति रह सकते हैं।''[5]

अन्य परिवारः–

अध्ययन क्षेत्र में संयुक्त तथा एकांकी परिवारों के अलावा एकल परिवार, परित्यक्ता परिवार, विधुर परिवार भी पाये गये। इसलिए इनका विवरण भी अन्य के रूप में तालिका के माध्यम से दिया जा रहा है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं से सामाजिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उनकी पारिवारिक संरचना की जानकारी प्राप्त की गई। पारिवारिक संरचना के सम्बन्ध में प्राप्त तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.2

उत्तरदाताओं की पारिवारिक संरचना

क्र.सं.	पारिवारिक संरचना	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	संयुक्त	60(40.00)	56(36.67)	116(38.67)
2	एकांकी	75(50.00)	78(52.67)	153(51.00)
3	अन्य	15(10.00)	16(10.66)	31(10.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.2 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी के अनुसार पारिवारिक संरचना में संयुक्त परिवार का कुल 38.67 प्रतिशत है, जिसमें 60 पुरूष

तथा 56 महिला उत्तरदाता शामिल है। एकांकी परिवार कुल प्रतिशत का 51.00 प्रतिशत है जो सर्वाधिक है, जिसमें 75 पुरूष तथा 78 महिला उत्तरदाता शामिल है। वहीं अन्य में उन परिवारों को शामिल किया गया है, जो विधुर/ विधवा/परित्यक्ता से सम्बन्धित है। जिनका प्रतिशत 10.33 प्रतिशत है, जिसमें 15 पुरूष तथा 16 महिला उत्तरदाता शामिल हैं। अतः तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में एकांकी परिवारों की संख्या सर्वाधिक है।

आयु संरचनाः–

भारतीय समाज में प्राचीन समय से ही ग्रामीण नेतृत्त्व में आयु का विशेष महत्त्व रहा है। अधिक आयु वर्ग के व्यक्ति ही ग्राम व परिवार का प्रतिनिधित्व करते थे। आज भी ग्रामीण स्तर पर आयु नेतृत्त्व को अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यहाँ पर ''वैश्वीकरण का जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता'' से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत उत्तरदाताओं की आयु संरचना के वर्गान्तराल में ग्रामीण नेतृत्त्व की प्रकृति को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से जानने का प्रयास किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.3

उत्तरदाताओं की आयु संरचना

क्र.सं.	आयु वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	21–30	20(13.33)	15(10.00)	35(11.67)
2	31–40	40(26.67)	45(30.00)	85(28.33)
3	41–50	54(36.00)	60(40.00)	114(38.00)
4	51–60	25(16.67)	21(14.00)	46(15.33)
5	61 – ऊपर	11(07.33)	09(06.00)	20(06.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.3 से स्पष्ट है कि 21–30 वर्ष आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 11.67 प्रतिशत है, जिसमें 20 पुरूष व 15 महिला शामिल हैं। 31–40 वर्ष के आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 28.33 प्रतिशत है, जिनमें 40 पुरूष व 45 महिला उत्तरदाता शामिल हैं। वहीं 41–50 उत्तरदाताओं का कुल प्रतिशत 38.00 प्रतिशत है, जिनमें 54 पुरूष व 60 महिला शामिल हैं। 51–60 आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का कुल योग 46 है, जिनमें 25 पुरूष व 26 महिलाएँ शामिल हैं, जिनका प्रतिशत 15.33 प्रतिशत है। 61 से ऊपर

आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 06.67 प्रतिशत है, जिसमें 11 पुरूष व 09 महिला उत्तरदाता शामिल हैं। अतः तालिका से स्पष्ट होता है कि इस अध्ययन में सर्वाधिक संख्या 41–50 वर्ष आयु वर्ग के उत्तरदाताओं की रही, जो कुल संख्या का 114 (38.00) योग प्रतिशत सर्वाधिक है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि 41 से 50 वर्ष के आयु वर्ग के उत्तरदाताओं की इस अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं।

वैवाहिक स्थितिः–

प्रस्तुत शोध ''वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता'' से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत सामाजिक पृष्ठभूमि के लिए वैवाहिक स्थिति को जानने का प्रयास किया गया, क्योंकि वैवाहिक स्थिति भी अध्ययन में महत्त्वपूर्ण होती है।

मजूमदार (1944–78) के अनुसार, यद्यपि नियमित तथा सामाजिक मान्यता प्राप्त यौन संतुष्टि विवाह का मूल कारण है, फिर भी यह एक मात्र अन्तिम कारण नहीं है, विवाह का उद्देश्य है, यौन संतुष्टि, बच्चों के लालन–पालन में विश्वसनीय सामाजिक तरीका, संस्कृति का संक्रमण, आर्थिक आवश्यकताएँ तथा सम्पत्ति का उत्तराधिकार है।''[6]

प्रस्तुत शोध में उत्तरदाताओं को विवाहित, अविवाहित, विधुर/विधवा एवं तलाकशुदा, परित्यक्ता श्रेणियों में विभक्त किया गया है। उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति के आधार पर निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.4

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

क्र.सं.	वैवाहिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	विवाहित	138(92.00)	142(94.67)	180(93.33)
2	अविवाहित	05(3.33)	–	05(01.67)
3	विधुर/विधवा	05(3.33)	08(5.33)	13(04.33)
4	तलाकशुदा	02(1.34)	–	02(00.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.4 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 93.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का प्रतिशत सर्वाधिक है, जो विवाहित हैं, जिसमें 138 पुरूष तथा 142 महिला

उत्तरदाता शामिल हैं। अविवाहित उत्तरदाताओं का प्रतिशत 01.67 प्रतिशत हैं, जिसमें पुरूषों को शामिल किया गया है, जिनकी संख्या 5 है। महिला उत्तरदाता अध्ययन में अविवाहित नहीं पाये गये हैं। वहीं 13 उत्तरदाता ऐसे हैं, जो विधुर व विधवा है। जिनमें 5 पुरूष व 8 महिला उत्तरदाता शामिल हैं, जिनका प्रतिशत 04.33 प्रतिशत है। वैवाहिक स्थिति में तलाकशुदा/परित्यक्ता उत्तरदाताओं की संख्या 2 है, जिसमें पुरूषों को शामिल किया गया। अध्ययन में महिला नहीं पाई गई, जिनका प्रतिशत 00.67 प्रतिशत है अर्थात् नाममात्र है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक उत्तरदाताओं का प्रतिशत वैवाहिक स्थिति का है।

शिक्षा का स्तरः—

शैक्षणिक स्थिति किसी भी परिवार, समाज, जाति एवं जनजाति के व्यक्तियों का मानसिक व बौद्धिक क्षमता का ज्ञान कराती है और शिक्षा ही व्यक्ति को सर्वगुण सम्पन्न बनाती है। प्रस्तुत शोध विषय ''वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता'' के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से शिक्षा के स्तर को जानने का प्रयास किया गया है। सर्वे के दौरान उत्तरदाताओं से उनके शैक्षणिक स्तर के बारे मे सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की गई। जिसके सम्बन्ध में निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.5

उत्तरदाताओं की शिक्षा का स्तर

क्र. सं.	शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	उच्च प्राथमिक (6–8)	—	10(06.67)	10(03.33)
2	माध्यमिक (9–10)	20(13.33)	25(16.67)	45(15.00)
3	उच्च माध्यमिक (11–12)	34(22.67)	44(29.33)	78(26.00)
4	स्नातक	47(31.33)	38(25.33)	85(28.33)
5	स्नात्कोत्तर	31(20.67)	19(12.67)	50(16.67)
6	व्यावसायिक/ डिग्री–शिक्षा	18(12.00)	14(09.33)	32(10.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.5 से स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि 150 में से मात्र 03.33 प्रतिशत महिलाओं ने ही उच्च–प्राथमिक स्तर अर्थात् छठी से आठवीं कक्षा तक की शिक्षा

प्राप्त की हुई हैं। माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त पुरूषों का प्रतिशत मात्र 13.33 प्रतिशत है जबकि महिलाओं का प्रतिशत 16.67 प्रतिशत है। इस वर्ग के कुल शिक्षा प्राप्त महिला–पुरूषों का प्रतिशत 45(15.00) योग प्रतिशत है। जबकि उच्च माध्यमिक स्तर (11–12) की शिक्षा प्राप्त 78(26.00) योग प्रतिशत लोगों में महिला उत्तरदाता 44 और पुरूष उत्तरदाता 34 हैं। स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं का प्रतिशत सर्वाधिक है जो 85(28.33) योग प्रतिशत है, जिसमें 47 पुरूष और 38 महिलाएँ शामिल हैं। स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाता जो 50(16.67) योग प्रतिशत, जिसमें 31 पुरूष और 19 महिलाएँ शामिल हैं। व्यावसायिक डिग्री/शिक्षा प्राप्त पुरूष उत्तरदाता 18 है। वहीं मात्र 14 महिला उत्तरदाता व्यावसायिक डिग्री प्राप्त है, जिनका कुल 32(10.67) योग प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा की लहर हो रही है, जिसमें यहाँ मात्र 03.33 उत्तरदाता ही उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त है, जो वैश्वीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ होने के बहुत पूर्व ही जन्में हुए हैं। उत्तरदाताओं का एक बड़ा समूह 28.33 प्रतिशत स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त है, जो सर्वाधिक संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

खान–पान का स्तरः–

प्रस्तुत शोध ''वैश्वीकरण का जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरुकता'' से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के उत्तरदाताओं से सामाजिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उनके ख़ान–पान के स्तर के बारे में सूचना प्राप्त की गई। जिसको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.6

उत्तरदाताओं के ख़ान–पान का स्तर

क्र. सं.	खान–पान का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	सर्वाहारी	28(18.67)	25(16.67)	53(17.67)
2	शाकाहारी	122(81.33)	125(83.33)	247(82.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.6 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 247 (82.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनमें 122 पुरूष व 125 महिला शामिल हैं। जिनका खान–पान (भोजन) शाकाहारी है, जो सर्वाधिक है। वहीं 53 उत्तरदाता, जिनमें 28 पुरूष व 25 महिला उत्तरदाता शामिल हैं, जिनका प्रतिशत 17.67 प्रतिशत है। जिनके खान–पान का स्तर

सर्वाहारी है, जो सर्वाधिक से कम है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से शाकाहारी भोजन का प्रयोग किया जाता है। जबकि कुछ उत्तरदाता ऐसे भी है, जो भोजन के साथ–साथ ओर वस्तुओं का प्रयोग भी करते हैं।

मकान का स्वरूपः–

भूमि का वह भाग जो मानव बसावट के लिए प्रयुक्त किया जाता है, उसे मानवीय आवास या मकान कहा जाता है। जहाँ पर मानव अपनी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक क्रियाओं का संचालन करता है। अध्ययन क्षेत्र के मीणा जनजाति के उत्तरदाताओं से उनकी आवासीय व्यवस्था या मकान के स्वरूपों के बारे में सूचना प्राप्त की गई। जिसको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.7

उत्तरदाताओं के मकान का स्वरूप

क्र. सं.	मकान का स्वरूप	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	कच्चे मकान	40(26.67)	35(23.33)	75(25.00)
2	पक्के मकान	60(40.00)	55(36.67)	115(38.33)
3	मिश्रित मकान	35(23.33)	45(30.00)	80(26.67)
4	किराये के मकान	15(10.00)	15(10.00)	30(10.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.7 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में कच्चे मकानों का प्रतिशत 25.00 प्रतिशत है, जिसमें कुल 300 उत्तरदाताओं में से 40 पुरूष व 35 महिला उत्तरदाता शामिल है। यद्यपि इन गांवों में पक्के मकानों का प्रतिशत कच्चे मकानों से ज्यादा अर्थात् 38.33 प्रतिशत है। जिनमें 60 पुरूष तथा 55 महिला निवास करने वाले उत्तरदाताओं के पक्के मकान शामिल है। वहीं अध्ययन क्षेत्र में मिश्रित मकान भी पाये गये, जिनका कुल प्रतिशत 80(26.67) योग प्रतिशत है। जबकि अध्ययन क्षेत्र में कुछ उत्तरदाता जो किराये के मकान में निवास करने वाले हैं, जिनका कुल प्रतिशत 30(10.00) योग प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि पक्के मकानों में रहने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सर्वाधिक है। परन्तु अभी भी इन गांवों में रहने वाले मीणा जनजाति के लोग आर्थिक रूप से कमजोर व पिछड़े हुए है, जिन्हें वास्तव में ऊपर उठाने की आवश्यकता है।

वार्षिक आयः–

प्रस्तुत शोध ''वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता'' से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के उत्तरदाताओं से आर्थिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत पारिवारिक एवं स्वयं की आय के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है। क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाता, कृषि व्यवसाय के साथ–साथ सरकारी व अर्द्ध–सरकारी नौकरियों के व्यवसायों में संलग्न हैं। जिनकी पारिवारिक एवं स्वयं की अपनी आय होती है। वार्षिक आय के सम्बन्ध में निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.8
उत्तरदाताओं की वार्षिक आय का स्तर

क्र. सं.	आय का वर्गान्तराल	उत्तरदाताओं की संख्या					योग (प्रतिशत)
		स्वयं की आय		योग (प्रतिशत)	पारिवारिक आय		
		पुरूष %	महिला%		पुरूष %	महिला %	
1	10,000 – 30,000	10 (06.67)	15 (10.00)	25 (08.33)	10 (06.67)	15 (12.00)	25 (08.34)
2	30001 – 50000	25 (16.67)	25 (16.67)	50 (16.67)	19 (12.67)	30 (20.00)	49 (16.33)
3	50001–1,00,000	56 (37.33)	60 (40.00)	116 (38.67)	60 (40.00)	55 (36.67)	115 (38.33)
4	1,00,001–5,00,000	47 (31.33)	40 (26.66)	87 (29.00)	50 (33.33)	40 (26.66)	90 (30.00)
5	5,00,001–10,00,000	12 (08.00)	10 (06.67)	22 (07.33)	11 (07.33)	10 (06.67)	21 (07.00)
	योग	150 (100.00)	150 (100.00)	300 (100.00)	150 (100.00)	150 (100.00)	300 (100.00)

तालिका संख्या 3.8 से स्पष्ट है कि 10,000 से 30,000 स्वयं आय वाले उत्तरदाताओं (महिला–पुरूष) की संख्या 10 व 15 हैं, जिनका प्रतिशत 08.33 प्रतिशत है। जबकि पारिवारिक आय का प्रतिशत 08.34 प्रतिशत है, जिनकी कुल संख्या 25 है। 30,001 से 50,000 तक की आय वाले स्वयं उत्तरदाताओं की कुल संख्या 50 है, जिनका प्रतिशत 16.67 प्रतिशत है। जबकि पारिवारिक आय में यह 16.33 प्रतिशत लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। 50,001 से एक लाख रूपये स्वयं आय वर्ग में 116 उत्तरदाताओं की संख्या का

प्रतिशत 38.67 प्रतिशत है। वहीं पारिवारिक आय वाले उत्तरदाताओं की कुल संख्या 115 है, जिनका प्रतिशत 38.33 प्रतिशत है। जो कि 30,001 से 50,000 तक के आय वर्ग से समानता दर्शाता है। 30.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की पारिवारिक आय एक लाख से 5 लाख रूपये के मध्य है, जिनमें स्वयं अपनी आय रखने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 87(29.00) योग प्रतिशत है। जबकि 5 लाख से दस लाख रूपये वर्ग वाले स्वयं उत्तरदाताओं का मात्र 22(07.33) योग प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि पारिवारिक आय में यह 21(07.00) योग प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में 30.00 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक आय में एक लाख एक से 5 लाख तक आय वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। जबकि सर्वाधिक 38.67 प्रतिशत स्वयं उत्तरदाता 50,000 से एक लाख वार्षिक आय का प्रतिनिधित्व करते हैं।

व्यवसायः—

व्यवसाय आय की प्राप्ति तथा एक निश्चित सामाजिक स्तर को बनाये रखने के उद्देश्य से व्यक्ति द्वारा अपनाई गई सतत् (अविराम) क्रिया है। जिससे कोई भी व्यक्ति अपनी जीविका (आय) अर्जित करता है। अतः आर्थिक क्रियाएँ व्यवसाय का अंग होती है। इस प्रकार व्यवसाय व्यक्ति के आर्थिक आय का सामान्यतः स्थायी स्रोत होता है, जिसके कारण व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण होता है।''[7] अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं से आर्थिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उनके व्यवसाय के स्तर या स्वरूपों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है। सूचना के आधार पर निम्नलिखित तालिका में तथ्यों का प्रदर्शन।

तालिका संख्या 3.9

उत्तरदाताओं के व्यवसाय का स्तर

क्र. सं.	व्यवसाय	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	कृषि	55(36.67)	40(26.67)	95(31.67)
2	निजी दुकान	10(06.67)	18(12.00)	28(09.33)
3	उद्योग	05(03.33)	22(14.67)	27(09.00)
4	सरकारी नौकरी	50(33.33)	35(23.33)	85(28.33)
5	अर्द्ध सरकारी	17(11.33)	20(13.33)	37(12.34)
6	कृषि तथा मजदूरी	13(08.67)	15(10.00)	28(09.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.9 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 31.67(95) प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्य में सलंग्न है, जिनमें पुरूषों की संख्या 55 तथा महिलाओं की संख्या 40 है। निजी दुकान करने वाले उत्तरदाताओं का भाग मात्र 28(9.33) योग प्रतिशत है, जबकि 27(09.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता उद्योग में सलंग्न है, जिनमें महिलाओं की संख्या 22 तथा पुरूषों की संख्या 05 है। सरकारी नौकरी करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सर्वाधिक से कम है, जो कुल 85(28.33) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरी ओर अर्द्ध–सरकारी क्षेत्रों में कार्यरत उत्तरदाता 37(12.34) योग प्रतिशत मात्र है। इसी प्रकार से कृषि तथा मजदूरी के रूप में कार्यरत उत्तरदाताओं का प्रतिशत 09. 33 प्रतिशत जिसमें उत्तरदाताओं की संख्या 28 है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में कृषि कार्य करने वालों की संख्या सर्वाधिक है तथा दूसरे नम्बर पर वे सरकारी नौकरी करते हैं। जिसमें महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों का प्रतिशत व संख्या सर्वाधिक है।

आय के स्रोतः–

आय के स्रोत का अर्थ है जीवन–यापन के साधनों से, जिनसे व्यक्ति स्वयं व अपने परिवार के सदस्यों का पालन–पोषण करता है। प्रस्तुत शोध ''वैश्वीकरणः जनजातीय समाज में सामाजिक व्यावसायिक, गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकताः'' से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, उत्तरदाताओं से आय के स्रोतों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.10
उत्तरदाताओं की आय के स्रोत

क्र. सं.	आय के स्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	कृषि भूमि	55(36.67)	40(26.67)	95(31.67)
2	दुकान	10(0.67)	18(12.00)	28(09.33)
3	नौकरी	50(33.33)	35(23.33)	85(28.33)
4	मकान किराया	12(08.00)	15(10.00)	27(09.00)
5	उद्योग	05(03.33)	22(14.67)	27(09.00)
6	एक से अधिक आय के स्रोत	18(12.00)	20(13.33)	38(12.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.10 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 95 (31.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता कृषि भूमि से आय प्राप्त करते हैं, जो सर्वाधिक है। दुकान से प्राप्त आय का प्रतिशत 09.33 प्रतिशत है, जिनमें महिला–पुरूष की कुल संख्या 28 है। 85 (28.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिनकी आय का स्रोत नौकरी के व्यवसाय से है। 09.00 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिन्हें मकान के किराये से आय प्राप्त होती है। जिनमें 12 पुरूष व 15 महिला उत्तरदाता शामिल हैं। वहीं 27(09.00) योग प्रतिशत पुरूष व महिला उत्तरदाता ऐसे हैं, जो उद्योगों से आय प्राप्त करते हैं। 38(12.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जो एक से अधिक आय के स्रोतों से आय प्राप्त करते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 31.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास कृषि भूमि है। जिससे उन्हें सर्वाधिक रूप से आय की प्राप्ति होती है। परन्तु कुछ उत्तरदाता ऐसे भी पाये गये, जिनकी आय नौकरी के व्यवसाय से भी प्राप्त होती है। जिसमें पुरूषों का प्रतिशत महिलाओं से अधिक है।

सिंचाई के साधनः–

प्रस्तुत शोध ''वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता'' से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं से सिंचाई के साधनों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। उत्तरदाताओं की आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, सिंचाई के साधनों के बारे में जानना चाहा है। क्योंकि भारत कृषि प्रधान देश है और अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता भी अधिक मात्रा में कृषि व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। इसलिए कृषि कार्य में सिंचाई के संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। सिंचाई के संसाधनों का विवरण उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 3.11

उत्तरदाताओं के सिंचाई के साधन

क्र. सं.	सिंचाई के साधन	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	कुँआ	22(14.67)	20(13.33)	42(14.00)
2	तलाब	20(13.33)	19(12.67)	39(13.00)
3	नहर	81(54.00)	85(56.67)	166(55.33)
4	नलकूप	27(18.00)	26(17.33)	53(17.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.11 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 42 उत्तरदाताओं के द्वारा कुँओं से सिंचाई की जाती है, जिनका प्रतिशत 14.00 प्रतिशत है। जो सर्वाधिक से कम है। जबकि मात्र 39(13.00) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा ही तालाब से सिंचाई की जाती है। नहरों से सिंचाई करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 166(55.33) योग प्रतिशत है, जिनमें 81 पुरूष व 85 महिला उत्तरदाता शामिल हैं। नलकूपों से सिंचाई करने वाले उत्तरदाता 53(17.67) योग प्रतिशत है, जिनमें 27 पुरूष व 26 महिला उत्तरदाता शामिल हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से नहरों के द्वारा सिंचाई की जाती है। जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

कुल सिंचित भूमि का भाग(बीघा में):–

प्रस्तुत शोध "वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता" से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं से उनके पास रखने वाली कुल सिंचित भूमि के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.12

कुल सिंचित भूमि का भाग (बीघा में)

क्र. सं.	वर्गान्तराल	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	01–20	–	08(05.33)	08(02.67)
2	21–30	12(08.00)	11(07.33)	23(07.67)
3	31–40	15(15.33)	25(16.67)	48(16.00)
4	41–50	34(22.67)	52(34.67)	86(28.66)
5	51–60	60(40.00)	39(16.00)	99(33.00)
6	61 – ऊपर	21(14.00)	15(10.00)	36(12.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.12 से स्पष्ट है कि कुल सिंचित भूमि का भाग 01–20 बीघा रखने वाले उत्तरदाताओं का समूह मात्र 02.67 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं का ही प्रतिनिधित्व करता है, जबकि 21–30 बीघा सिंचित कृषि भूमि रखने वाले उत्तरदाताओं में

23(07.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता शामिल है। 31–40 बीघा सिंचित कृषि भूमि रखने वाले उत्तरदाताओं में से 48(16.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता शामिल हैं। 86(28.66) योग प्रतिशत उत्तरदाता 41–50 बीघा सिंचित भूमि स्वयं के पास रखते हैं, जिनमें 34 पुरूष तथा 52 महिला उत्तरदाता शामिल हैं। 51–60 बीघा सिंचित कृषि भूमि रखने वाले उत्तरदाता 99(33.00) योग प्रतिशत, जो सर्वाधिक है। मात्र 36(12.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता 61 बीघा से ऊपर सिंचित कृषि भूमि स्वयं के पास रखते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि आज भी मीणा जनजाति के अधिकांश उत्तरदाता कुल सिंचित भूमि का भाग अपने पास रखने की परम्परा रखते हैं। जो सर्वाधिक संख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं।

निजी क्षेत्र में आरक्षणः–

प्रस्तुत शोध ''वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशिलता और राजनीतिक जागरूकता'' से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत उत्तरदाताओं से निजी क्षेत्र में आरक्षण मिलने के पक्ष में विचार जानने की कोशिश की गई। जिसमें कृषि व्यवसाय के साथ ही साथ निजी क्षेत्र में आरक्षण व्यवस्था से क्या लाभ है। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.13

निजी क्षेत्र में आरक्षण के समर्थक

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला (प्रतिशत)	
1	हाँ	127(84.67)	121(80.67)	248(82.67)
2	नहीं	23(15.33)	29(19.33)	52(17.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.13 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 248 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनमें 127 पुरूष व 121 महिला शामिल है। जिनका प्रतिशत 82.67 प्रतिशत है। वहीं 52(17.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जो नहीं के पक्ष में मत व्यक्त करते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता निजी क्षेत्र में आरक्षण के समर्थक है, जो सर्वाधिक संख्या का योग प्रतिशत है। परन्तु कुछ उत्तरदाता नहीं के पक्ष में भी रहे हैं, जिनमें शिक्षा का अभाव है।

तालिका संख्या 3.13(अ)

निजी क्षेत्र में आरक्षण के समर्थक के कारण

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरुष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	रोजगार के अवसरों में समानता	92(72.44)	89(73.55)	181(72.98)
2	उचित प्रतिनिधित्व मिलना	87(68.50)	81(66.94)	168(67.74)
3	आय की विषमता को कम करना	79(62.21)	69(57.03)	148(59.68)
4	जीवन स्तर में सुधार	62(48.82)	59(48.67)	121(48.67)
5	उच्च व तकनीकी शिक्षा में वृद्धि	71(55.91)	67(55.37)	138(55.65)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 248 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 127 व 121 तथा 248 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 3.13(अ) से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में से 181(72.98) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि निजी क्षेत्र में आरक्षण से रोजगार के अवसरों में समानता आएगी। जबकि 168(67.74) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि निजी क्षेत्र में आरक्षण से उचित प्रतिनिधित्व मिलेगा। वहीं 148(59.68) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि निजी क्षेत्र में आरक्षण से आय की विषमता में कमी होगी। जबकि 121(48.79) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि निजी क्षेत्र में आरक्षण से जीवन स्तर में सुधार होगा। वहीं 138(55.65) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उच्च व तकनीकी शिक्षा में वृद्धि को कारण माना है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता निजी क्षेत्र में आरक्षण की समर्थता को दर्शाते हैं। इसलिए कारणों में सर्वाधिक कारण रोजगार के अवसरों में समानता का रहा है।

आधुनिक सुविधाएँः–

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के पुरूष व महिला उत्तरदाताओं के पास कौन–कौन सी आधुनिक सुख–सुविधाएँ वर्तमान में हैं। क्योंकि वर्तमान अध्ययन वैश्वीकरण के संदर्भ में किया गया है। जिसके आधार पर निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.14

उत्तरदाताओं की आधुनिक सुविधाएँ

क्र. सं.	आधुनिक सुविधाएँ	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	बिजली	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)
2	पंखा	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)
3	रेडियो	10(06.67)	07(04.67)	17(05.67)
4	टी.वी.	135(90.00)	125(83.33)	260(86.67)
5	एल.ई.डी. टी.वी.	40(26.67)	30(20.00)	70(23.33)
6	फ्रिज़	35(23.33)	25(16.67)	60(20.00)
7	मोबाइल	145(96.67)	130(86.67)	275(91.67)
8	दुपहिया वाहन	125(83.33)	70(46.67)	195(65.00)
9	चार पहिया वाहन	70(46.67)	20(13.33)	90(30.00)
10	प्रेस	120(80.00)	135(90.00)	255(85.00)
11	इनवेटर	57(38.00)	35(23.33)	92(30.67)
12	सी.डी. / वी.सी.डी.	19(12.67)	10(06.67)	29(09.67)
13	ट्रेक्टर	06(43.33)	05(03.33)	70(23.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 3.14 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में बिजली व पंखे की पूर्णरूपेण सुविधा है। रेडियों की सुविधा 5.67 उत्तरदाताओं के पास है। 86.67 प्रतिशत लोगों के पास टी.वी की सुविधा है। वहीं 70 (23.33) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास एल.ई.डी. टी.वी. की सुविधा है। फ्रिज रखने वाले लोगो का प्रतिशत 20.00 प्रतिशत है तथा मोबाइल रखने वालो का 91.67 प्रतिशत है। 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास दुपहिया वाहन की सुविधा है। वहीं चार पहिया वाहन की सुविधा भी पाई गई, जिनका प्रतिशत 85.00 है। जबकि अध्ययन क्षेत्र में इनवेटर की सुविधा भी देखी गई, जिसका प्रतिशत 95 (30.67) योग प्रतिशत है। 27 (09.67) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास सी.डी. / वी.सी.डी. की सुविधा भी उपलब्ध है। 23.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास ट्रेक्टर की सुविधा है, जिनमें से 65 पुरूष व 5 महिला है। इसलिए इस सुविधा का महत्त्व पुरूष उत्तरदाता ज्यादा समझते हैं, महिलाएँ नहीं। क्योंकि पुरूष अधिकतर कृषि + नौकरी का कार्य करते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि इस आधुनिक युग में अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता आधुनिक सुविधाओं के बारे में जानकारी रखते है। यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है। जिसके

कारण मीणा जनजाति के उत्तरदाताओं के पास पर्याप्त रूप से आधुनिक सुख सुविधाएँ उपलब्ध है।

राजनीतिक पृष्ठभूमिः–

प्रस्तुत शोध विषय ''वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता'' से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं (पुरूष व महिला) से उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि के बारे में जानने की कोशिश की गई, जिसमें मीणा जनजाति के पुरूष व महिला उत्तरदाताओं की वर्तमान राजनीतिक परिवेश में क्या भूमिका रही है। उत्तरदाताओं ने किस प्रकार के चुनाव लडे और भाग लिया, आदि पक्षों के लिए सर्वे किया गया। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं से राजनीतिक पृष्ठभूमि के पक्ष में तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 3.15

उत्तरदाताओं ने किसका चुनाव लड़ा

क्र. सं.	चुनाव लड़ा	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	वार्ड पंच	16(10.67)	24(16.00)	40(13.33)
2	सरपंच	36(24.00)	40(26.67)	76(25.33)
3	पंचायत समिति सदस्य	18(12.00)	14(09.33)	32(10.67)
4	प्रधान	15(10.00)	09(06.00)	24(08.00)
5	जिला प्रमुख	10(06.67)	07(04.67)	17(05.67)
6.	एक से अधिक	05(03.33)	03(02.00)	08(02.67)
7.	चुनाव नहीं लड़ा	50(33.33)	53(35.33)	103(34.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका 3.15 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 40 उत्तरदाता, जिन्होंने वार्ड पंच का चुनाव लड़ा। जिनका प्रतिशत 13.33 प्रतिशत है। जबकि 76(25.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने ने सरपंच का चुनाव लड़ा, जो सर्वाधिक है। पंचायत समिति के सदस्य का चुनाव लड़ने वाले उत्तरदाता कुल का 32(10.67) योग प्रतिशत का नेतृत्व करते हैं। वहीं 24(08.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने प्रधान का चुनाव लड़ा। जबकि जिला

प्रमुख का चुनाव लड़ने वाले उत्तरदाता 17(05.67) योग प्रतिशत है। जबकि 08(02.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने एक से अधिक पदों पर चुनाव लड़ा है। वहीं 103(34.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने किसी भी प्रकार का चुनाव नहीं लड़ा। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि चुनाव न लड़ने वाले उत्तरदाताओं का योग प्रतिशत चुनाव लड़ने वाले उत्तरदाताओं से सर्वाधिक है। अतः अध्ययन क्षेत्र में सरपंच का चुनाव अधिक संख्या में लड़ा गया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में राजनीति का वर्चस्व क्षेत्रीय स्तर के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर भी कमजोर रहा है।

तालिका संख्या 3.16

चुनाव प्रचार में किसने भूमिका निभाई

क्र. सं.	चुनाव में भूमिका	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	परिवार के सदस्य	70(46.67)	80(53.33)	150(50.00)
2	मुखिया	48(32.00)	51(34.00)	99(33.00)
2	जाति समाज	47(31.33)	54(36.00)	101(33.67)
3	जनजाति समाज	53(35.33)	57(38.00)	110(36.67)
4	पार्टी कार्यकर्ता	31(20.67)	32(21.33)	63(21.00)
5	एक से अधिक	25(16.67)	27(18.00)	52(17.33)
6	चुनाव नहीं लड़ा (नौकरीपेशा वर्ग)	50(33.33)	53(35.33)	103(34.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 3.16 से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में से 150(50.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने चुनाव प्रचार में परिवार के सदस्यों की भूमिका को अग्रणी माना। वहीं 99(33.00) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने चुनाव प्रचार में मुखिया की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। जबकि 101(33.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने चुनाव प्रचार में जाति समाज के सदस्यों को भी शामिल किया है। वहीं 110(36.67) योग प्रतिशत

उत्तरदाताओं ने जनजाति समाज के सदस्यों की चुनाव प्रचार में भूमिका का होना बताया है। जबकि 21.00 प्रतिशत ने चुनाव प्रचार में पार्टी कार्यकर्ता की भूमिका को मुख्य बताया, जिनमें कुल उत्तरदाताओं की संख्या 63 है। वहीं 52(17.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि एक से अधिक सदस्यों ने चुनाव प्रचार में भूमिका निभाई। जबकि 103(34.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने किसी भी प्रकार का चुनाव नहीं लड़ा है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि 50.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने चुनाव प्रचार में परिवार के सदस्यों को अग्रणी बताया। परन्तु कुछ उत्तरदाता, जिन्होंने न तो चुनाव लड़ा और न हीं चुनाव प्रचार में कोई भूमिका निभाई। अतः अध्ययन क्षेत्र में चुनाव न लड़ने वालों से चुनाव प्रचार एवं भूमिका निभाने वालों का प्रतिशत सर्वाधिक रहा है।

तालिका संख्या 3.17

उत्तरदाताओं के चुनाव में प्रेरणा स्रोत

क्र.सं.	प्रेरणा स्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला (प्रतिशत)	
1	दादा–दादी	18(12.00)	29(19.33)	37(12.33)
2	माता–पिता	70(46.67)	74(49.33)	144(48.00)
3	पति –पत्नी	29(19.33)	35(23.33)	64(21.33)
4.	सास–ससुर	30(20.00)	49(32.67)	79(26.33)
5	क्षेत्रीय कार्यकर्ता	31(20.67)	34(22.67)	65(21.67)
6	आरक्षण	77(51.33)	91(60.67)	168(56.00)
7	स्वप्रेरित	19(12.67)	22(14.67)	41(13.67)
8.	चुनाव नहीं लड़ा	50(33.33)	53(35.33)	103(34.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 3.17 से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में से 37(12.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनके दादा–दादी ने चुनाव लड़ने में प्रेरणा स्रोत का कार्य किया है। जबकि 144(48.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनके चुनाव लड़ने में माता–पिता की भूमिका अग्रणी रही है। वहीं 64(21.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने पति–पत्नी की भूमिका को भी महत्त्वपूर्ण माना। जबकि 79(26.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने चुनाव लड़ने में सास–ससुर की भूमिका को भी महत्वपूर्ण माना है। वहीं 65(21.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता,

जिन्होंने चुनाव लड़ने में क्षेत्रीय कार्यकर्ता को भी शामिल किया है। सर्वाधिक 168(56.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि आरक्षण व्यवस्था ही चुनाव लड़ने में महत्त्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत रही है। जबकि 41(13.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता अपने स्वविवेक के आधार पर चुनाव लड़ने का निर्णय लेते हैं, वहीं 103(34.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने किसी भी प्रकार का चुनाव नहीं लडा। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से आरक्षण व्यवस्था प्रेरणा स्रोत रही है। परन्तु कुछ उत्तरदाता, जिन्होंने चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र में चुनाव न लड़ने वालों से चुनाव लड़ने वालों के लिए आरक्षण व्यवस्था सर्वाधिक रूप से प्रेरणा स्रोत रही है।

तालिका संख्या 3.18

उत्तरदाताओं के चुने जाने पर प्रतिष्ठा बढ़ना/बढ़ी

क्र.सं.	प्रतिष्ठा बढ़ी	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरुष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	परिवार में	75(50.00)	85(56.67)	160(53.33)
2	जातीय समाज में	63(42.00)	74(49.33)	137(45.67)
3	जनजातीय समाज में	81(54.00)	92(61.33)	173(57.67)
4	आर्थिक क्षेत्र में	42(28.00)	38(25.33)	80(26.67)
5	राजनीतिक क्षेत्र में	67(44.67)	59(39.33)	126(42.00)
6	चुनाव नहीं लड़ा	50(33.33)	53(35.33)	103(34.33)
7	एक से अधिक में	27(18.00)	19(12.67)	46(15.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 3.18 से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं से 160(53.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने चुनाव में निर्वाचित होने पर परिवार में प्रतिष्ठा बढ़ी को माना। वहीं 173(45.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि जातीय समाज में प्रतिष्ठा

बढ़ी है। जबकि जनजातीय समाज में प्रतिष्ठा बढ़ने का विचार रखने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 173 है, जिनका सर्वाधिक प्रतिशत 57.67 प्रतिशत है। 80(26.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने आर्थिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ी के पक्ष में विचार प्रकट किया। वहीं 126(42.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ी के पक्ष में मत प्रकट किया। जबकि 103 उत्तरदाता, जिन्होंने चुनाव नहीं लड़ा। जिनका प्रतिशत 34.33 प्रतिशत है। वहीं 46(15.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने एक से अधिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठा बढ़ी के पक्ष में मत व्यक्त किया है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता चुनाव में निर्वाचित होने के बाद सर्वाधिक रूप से जनजातीय समाज में प्रतिष्ठा बढ़ी के पक्ष में हैं। परन्तु कुछ उत्तरदाता ऐसे भी पाये गये, जिन्होंने कोई चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र में चुनाव न लड़ने वालों से चुनाव लड़ने वालों की प्रतिष्ठा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में सर्वाधिक बढ़ी है।

तालिका संख्या 3.19

चुनाव से पूर्व या बाद में किस पद में सक्रियता बढ़ी

क्र. सं.	सक्रियता बढ़ी	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	जनजाति पंच	13(08.67)	10(06.67)	23(07.67)
2	पारिवारिक मुखिया	44(29.33)	40(26.67)	84(28.00)
3	ग्रामीण पदाधिकारी	12(08.00)	13(08.67)	25(08.33)
4	प्रचारक के रूप में	15(10.00)	17(11.33)	32(10.67)
5	राजनीतिक दल की सदस्यता	07(04.67)	06(04.00)	13(04.33)
6	एक से अधिक में	09(06.00)	11(07.33)	20(06.67)
7	चुनाव नहीं लड़ा	50(33.33)	53(35.33)	103(34.34)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.19 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 23(07.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव से पहले जनजाति पंच के कार्य में संलग्न थे, 84(28.00) योग

प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक मुखिया के रूप में संलग्न है। ग्रामीण पदाधिकारी के रूप में 25(08.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव से पूर्व कार्य करते थे, वहीं 32(11.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता प्रचारक के रूप में शामिल थे। जबकि 13(04.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता राजनीतिक दल की सदस्यता के रूप में शामिल है। वहीं 20(06.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जो एक से अधिक कार्य व पद के रूप में संलग्न है। जबकि 103 उत्तरदाता ऐसे हैं, जिन्होंने चुनाव नहीं लड़ा। जिनका प्रतिशत 34.33 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में मीणा जनजाति के व्यक्ति चुनाव से पूर्व या बाद में किसी न किसी सामाजिक पद से जुड़े हुए थे। परन्तु अध्ययन क्षेत्र में ऐसे उत्तरदाता भी पाये गये, जिन्होंने चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से उत्तरदाता नौकरीपेशा वर्ग एवं घरेलू व्यवसायों में संलग्न रहे हैं।

तालिका संख्या 3.20

राजनीति में आरक्षण व्यवस्था कैसी है

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरुष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	उचित	105(70.00.)	111(74.00.)	216(72.00.)
2	अनुचित	19(12.67)	16(10.67)	35(11.67)
3	तटस्थ	26(17.33)	23(15.33)	49(16.33)
	योग	150(100.00)	105(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.20 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 216(72.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने राजनीति में आरक्षण व्यवस्था को उचित माना। वहीं 35(11.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने आरक्षण व्यवस्था को अनुचित माना है। जबकि आरक्षण व्यवस्था पर तटस्थ विचार रखने वालो में 49(16.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता शामिल है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि राजनीति में आरक्षण व्यवस्था उचित है, जो सर्वाधिक है। परन्तु कुछ उत्तरदाता अनुचित एवं तटस्थता के पक्ष में भी रहे हैं, जो सर्वाधिक से कम है।

तालिका संख्या 3.20 (अ)

राजनीति में आरक्षण व्यवस्था उचित होने के कारण

क्र.सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	राजनीति में उचित प्रतिनिधित्व	69(65.72)	74(66.67)	143(66.20)
2	राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि	79(75.24)	83(74.78)	162(75.00)
3	जनजातियों का राजनीतिक विकास	48(45.72)	54(48.65)	102(47.22)
4	पिछनेपन को दूर करने के लिए	49(46.67)	54(48.65)	103(47.69)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 216 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 105 व 111 तथा 216 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 3.20 (अ) से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में से 143 (66.20) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि राजनीति में आरक्षण से उचित प्रतिनिधित्व मिलेगा। जबकि 162(75.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि को माना। वहीं 102(47.22) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि आरक्षण व्यवस्था से जनजातियों का राजनीतिक विकास (उत्थान) होगा। जबकि 103(47.69) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि आरक्षण से पिछड़ापन दूर होगा। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि राजनीति मे आरक्षण व्यवस्था उचित होने के कारणों में सर्वाधिक कारण उचित प्रतिनिधित्व मिलने का रहा है। अतः अध्ययन क्षेत्र में राजनीति के लिए आरक्षण की मांग बढ़ रही है।

तालिका संख्या 3.21

राजनीति में धन व संख्या बल का महत्त्व

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	पद / सम्मान	60(40.00)	57(38.00)	117(39.00)
2	अपराधिक	22(14.67)	25(16.67)	47(15.67)
3	चुनाव जीतने के लिए	29(19.33)	27(18.00)	56(18.67)
4	वर्चस्व बढ़ाने में	39(26.00)	41(27.33)	80(26.66)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.21 से यह स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 117 (39.00) योग प्रतिशत ने राजनीति में धन व संख्या बल का महत्त्व पद / सम्मान बढ़ाने के लिए माना है। जबकि 47(15.67) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपराधिकरण के पक्ष में अपने विचार प्रकट किये हैं। वहीं 56 (18.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जो धन व संख्या बल का महत्त्व चुनाव जितने में महत्त्वपूर्ण मानते हैं। जबकि 80(26.66) योग प्रतिशत उत्तरदाता राजनीति में धन व संख्या बल के महत्त्व को समाज में वर्चस्व बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण मानते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता राजनीति में धन व संख्या बल का सर्वाधिक महत्त्व पद / सम्मान बढ़ाने में रखते हैं।

तालिका संख्या 3.22

राजनीतिक दलों से सम्बद्धता

क्र.सं.	राजनीतिक दल	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	भाजपा	60(40.00)	61(40.67)	121(40.33)
2	कांग्रेस	35(23.33)	40(26.67)	75(25.00)
3	निर्दलीय	10(06.67)	14(09.33)	24(08.00)
4	किसी पार्टी विशेष से नहीं	45(30.00)	35(23.33)	80(26.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 3.22 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 121 (40.33) प्रतिशत उत्तरदाता भाजपा से सम्बद्धता रखते हैं। कांग्रेस से सम्बद्धता रखने वाले उत्तरदाताओं में 35 पुरूष व 40 महिलाएँ शामिल हैं, जिनका कुल प्रतिशत 25.00 प्रतिशत है। वहीं निर्दलीय के रूप में वोट देने वालों में 10 पुरूष व 14 महिला उत्तरदाता शामिल हैं, जिनका प्रतिशत 8.00 प्रतिशत है। जबकि 80(26.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी है, जो किसी भी राजनीतिक पार्टी से जुड़े हुए नहीं हैं अर्थात् अपने विवेक से मतदान करते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक उत्तरदाताओं की राय भाजपा के प्रति है अर्थात् भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्धता रखते हैं। परन्तु नियमित सदस्यता ग्रहण नहीं करते, ऐसे उत्तरदाताओं के विचार हैं।

तालिका संख्या 3.23

उत्तरदाताओं का राजनीतिक बोध स्तर

नाम बताइये	**उत्तरदाताओं का बोध स्तर**		**योग**
	पुरूष	**महिला**	
भारत के राष्ट्रपति	75	55	130
भारत के प्रधानमंत्री	145	100	245
भारत के गृहमंत्री	85	53	138
राजस्थान के राज्यपाल	96	70	166
राजस्थान के मुख्यमंत्री	147	117	264
राजस्थान के गृहमंत्री	95	75	170
क्षेत्र का सांसद	120	98	218
क्षेत्र का विधायक	130	100	230
जिला प्रमुख	115	97	212
प्रधान	122	119	241
सरपंच	148	146	294
वार्ड पंच	147	145	292
योग	1425	1175	2600
औसत स्कोर	118.75	97.91	216.67

नोट – तालिका संख्या 3.23 में 150 पुरूष व 150 महिला उत्तरदाता शामिल हैं। जिनका कुल योग 300 से अधिक और बिन्दु 10 है, जिनका औसत स्कोर निकाला गया है।

तालिका संख्या 3.23 से स्पष्ट होता है कि पुरूष उत्तरदाताओं का राजनीतिक बोध स्तर का औसत स्कोर 118.75 है, जबकि महिला उत्तरदाताओं का राजनीतिक बोध स्तर का औसत 97.91 हैं। अर्थात् महिला उत्तरदाताओं की अपेक्षा पुरूषों के राजनीतिक बोध स्तर का औसत स्कोर उच्च है। अतः तालिका से ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा व आरक्षण के आधार पर पुरूषों का राजनीतिक ज्ञान महिलाओं से अधिक है अर्थात् पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का स्तर नगण्य हैं।

निष्कर्षः—

अध्याय में उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित सूचनाओं को समायोजित किया गया। जिसके अन्तर्गत तालिकाओं के निष्कर्ष एवं सम्पूर्ण अध्याय का निष्कर्ष भी दिया जा रहा है—

- ✶ उत्तरदाताओं का चुनाव लिंग के आधार पर किया गया, जिसमें 150 पुरूष व 150 महिला उत्तरदाता शामिल है। जिनसे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि के साथ ही अन्य पक्षों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई हैं।
- ✶ पारिवारिक संरचना कुल उत्तरदाताओं में से 116(38.67) योग प्रतिशत संयुक्त परिवार से, 153(51.00) योग प्रतिशत एकांकी परिवारों से, 31(10.33) योग प्रतिशत अन्य परिवारों से जिसमें विधुर/विधवा/परित्यक्ता परिवारों को शामिल किया गया है। अतः अध्ययन क्षेत्र में एकांकी परिवारों की संख्या बढ़ रही हैं।
- ✶ आयु संरचना के वर्गान्तराल में कुल उत्तरदाताओं में से 21—30 वर्ष के आयु वर्ग में 35(11.67) योग प्रतिशत, 31—40 वर्ष के आयु वर्ग में 85(28.33) योग प्रतिशत, 41—50 वर्ष के आयु वर्ग में 114(38.00) योग प्रतिशत, 51—60 वर्ष के आयु वर्ग में 46(15.33) योग प्रतिशत, 61 वर्ष से ऊपर आयु वर्ग में 20(06.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः अध्ययन में 41—50 वर्ष के आयु वर्ग में उत्तरदाताओं का नेतृत्व सर्वाधिक रहा है।
- ✶ वैवाहिक स्थिति में कुल उत्तरदाताओं में से 180(93.33) योग प्रतिशत विवाहित से, 05(01.67) योग प्रतिशत अविवाहित से, 13(04.33) योग प्रतिशत विधुर/विधवा से, 02(0.67) योग प्रतिशत तलाकशुदा से। अतः अध्ययन क्षेत्र में विवाहित व्यक्तियों का प्रतिशत बढ़ रहा है।
- ✶ शिक्षा के स्तर में कुल उत्तरदाताओं में से 10(03.33) योग प्रतिशत उच्च प्राथमिक से, 45(15.00) योग प्रतिशत माध्यमिक से, 78(26.00) योग प्रतिशत उच्च माध्यमिक से, 85(28.33) योग प्रतिशत स्नातक से, 50(16.67) योग प्रतिशत स्नात्कोत्तर से,

32(10.67) योग प्रतिशत व्यावसायिक डिग्री/शिक्षा से। अतः अध्ययन क्षेत्र में उच्च शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है।

✶ खान–पान के स्तर में कुल उत्तरदाताओं में से 53(17.67) योग प्रतिशत सर्वाहारी से, 247(82.33) योग प्रतिशत शाकाहारी से। अतः अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से शाकाहारी भोजन का सेवन करने वालों की संख्या बढ़ रही है।

✶ मकान के स्वरूप में कुल उत्तरदाताओं में से 75(25.00) योग प्रतिशत के कच्चा मकान, 115(38.33) योग प्रतिशत के पक्का मकान, 30(10.00) योग प्रतिशत के किराये का मकान, 80(26.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता मिश्रित मकान रखते हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र में पक्के मकान रखने वालों की संख्या बढ़ रही है।

✶ वार्षिक आय के वर्गान्तराल में स्वयं व पारिवारिक आय का विवरण जिसमें 10,000 – 30,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 25(08.33) व पारिवारिक आय का प्रतिशत 25(08.34) योग प्रतिशत है। 30,001 – 50,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 50(16.67) योग प्रतिशत तथा पारिवारिक आय का प्रतिशत 49(16.33) योग प्रतिशत है। 50,001 – 1,00,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 116(38.67) योग प्रतिशत तथा पारिवारिक आय का प्रतिशत 115(38.33) योग प्रतिशत है। 1,00,001 – 5,00,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 87(29.00) योग प्रतिशत तथा पारिवारिक आय का प्रतिशत 90(30.00) योग प्रतिशत है। 5,00,001 से 10,00,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 22(07.33) योग प्रतिशत तथा पारिवारिक आय का प्रतिशत 21(07.00) योग प्रतिशत है। अतः उत्तरदाताओं की स्वयं की आय का स्तर सर्वाधिक 50,001 – 1,00,000 के बीच है, जिनका प्रतिशत 116(38.67) योग प्रतिशत है। वहीं पारिवारिक आय का स्तर 1,00,001 – 5,00,000 के बीच जो कि सर्वाधिक हैं, जिनका प्रतिशत 115(38.33) योग प्रतिशत है।

✶ व्यावसायिक स्थिति में कुल उत्तरदाताओं में से 95(31.67) योग प्रतिशत कृषि से, 28(09.33) योग प्रतिशत निजी दुकान से, 27(09.00) योग प्रतिशत उद्योग से, 85(28.33) प्रतिशत सरकारी नौकरी से, 37(12.34) योग प्रतिशत अर्द्ध–सरकारी नौकरी से, 28(09.33) योग प्रतिशत कृषि व मजदूरी से। अतः अध्ययन क्षेत्र में कृषि कार्य के साथ ही सरकारी नौकरी करने वालों की संख्या बढ़ रही है।

✶ आय के स्रोतों में कुल उत्तरदाताओं में से 95(31.67) योग प्रतिशत कृषि भूमि से, 28(09.33) योग प्रतिशत दुकान से, 27(09.00) योग प्रतिशत मकान किराया से, 85(28.33) योग प्रतिशत नौकरी से, 27(09.00) योग प्रतिशत उद्योग से, 38(12.67) योग प्रतिशत की आय एक से अधिक कार्यों से। अतः अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से आय का स्रोत कृषि भूमि रही है।

* सिंचाई के संसाधनों में कुल उत्तरदाताओं में से 42(14.00) योग प्रतिशत कुंओं से, 39(13.00) योग प्रतिशत तालाब से, 166(55.33) योग प्रतिशत नहरों से, 53(17.67) योग प्रतिशत नलकूपों से। अतः अध्ययन क्षेत्र में सिचाई के संसाधनों के रूप में नहर के पानी का प्रयोग किया जा रहा है, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
* कुल सिंचित भूमि के भाग के वर्गान्तराल में कुल उत्तरदाताओं में से 01–20 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 08(02.67) योग प्रतिशत, 21–30 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 23(07.67) योग प्रतिशत, 31–40 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 48(16.00) योग प्रतिशत, 41–50 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 86(28.66) योग प्रतिशत, 51–60 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 99(33.00) योग प्रतिशत, 61 से ऊपर या अधिक सिंचित भूमि रखने वालों का प्रतिशत 36(12.00) योग प्रतिशत है। अतः अध्ययन क्षेत्र में सिंचित भूमि रखने वालों का प्रतिशत 99(33.00) योग प्रतिशत, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
* निजी क्षेत्र में आरक्षण की मांग के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 248(82.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 52(17.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः अध्ययन क्षेत्र में निजी क्षेत्र के लिए आरक्षण की मांग बढ़ रही हैं, जो सर्वाधिक प्रतिशत है।
* आरक्षण की मांग के सम्बन्ध में कारण जिसमें 181(72.98) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में समानता, 168(67.74) योग प्रतिशत ने उचित प्रतिनिधित्व मिलना, 148(59.68) योग प्रतिशत ने आय की विषमता को कम करना, 121(48.79) प्रतिशत ने जीवन स्तर में सुधार, 138(55.65) योग प्रतिशत ने उच्च व तकनीकी शिक्षा में वृद्धि। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण रोजगार के अवसरों में समानता का रहा हैं।
* आधुनिक सुख–सुविधाओं में सभी उत्तरदाताओं के पास वर्तमान में पाई जाने वाली सभी सुविधाएं पर्याप्त हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि मीणा जनजाति के पुरूष व महिला उत्तरदाताओं के पास वर्तमान में पर्याप्त सुख–सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
* चुनाव लड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 40(13.33) योग प्रतिशत ने वार्ड पंच का, 76(25.33) योग प्रतिशत ने सरपंच का, 32(10.67) योग प्रतिशत ने पंचायत समिति सदस्य का, 24(08.00) योग प्रतिशत ने प्रधान का, 17(05.67) योग प्रतिशत ने जिला प्रमुख का, 08(02.67) योग प्रतिशत ने एक से अधिक चुनाव लड़ा, 103(34.33) योग प्रतिशत ने किसी भी प्रकार का चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र में सरपंच का चुनाव अधिक संख्या में लड़ा गया, जो सर्वाधिक प्रतिशत है।
* चुनाव प्रचार में किसने भूमिका निभाई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 150(50.00) योग प्रतिशत के लिए परिवार के सदस्य, 99(33.00) योग प्रतिशत के लिए मुखिया, 101(33.67) योग प्रतिशत के लिए जाति समाज के सदस्य, 110(36.

67) योग प्रतिशित के लिए जनजाति समाज के सदस्य, 63(21.00) योग प्रतिशत के लिए पार्टी कार्यकर्ता सदस्य, 52(17.33) योग प्रतिशत ने एक से अधिक के प्रचार में भूमिका निभाई, 103(34.33) योग प्रतिशत ने चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र में चुनाव प्रचार के लिए भूमिका निभाने वाले सर्वाधिक जनजाति के सदस्य सक्रिय हैं।

✶ चुनाव में प्रेरणा स्रोत के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 37(12.33) योग प्रतिशत के लिए दादा–दादी, 144(48.00) योग प्रतिशत के लिए माता–पिता, 64(21.33) योग प्रतिशत के लिए पति–पत्नी, 79(26.33) योग प्रतिशत के लिए सास–ससुर, 65(21. 67) योग प्रतिशत के लिए क्षेत्रीय कार्यकर्ता, 168(56.00) योग प्रतिशत के लिए आरक्षण व्यवस्था, 41(13.67) योग प्रतिशत में स्वयं (स्वप्रेरित), 103(.34.33) योग प्रतिशत ने चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र के चुनाव में प्रेरणा स्रोत आरक्षण व्यवस्था रही है।

✶ चुने जाने पर प्रतिष्ठा बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 160(53.33) योग प्रतिशत ने परिवार में, 137(45.67) योग प्रतिशत ने जातीय समाज में, 173(57.67) योग प्रतिशत ने जनजातीय समाज में, 80(26.67) योग प्रतिशत ने आर्थिक क्षेत्र में, 126(42.00) योग प्रतिशत ने राजनीतिक क्षेत्र में, 46(15.33) योग प्रतिशत की एक से अधिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठा बढ़ी, 103(34.33) योग प्रतिशत ने चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से जनजातीय समाज में प्रतिष्ठा बढ़ रही है।

✶ चुनाव से पूर्व या चुनाव के बाद किस पद में सक्रियता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 23(07.67) योग प्रतिशत ने जनजाति पंच के रूप में, 84(28.00) योग प्रतिशत ने पारिवारिक मुखिया के रूप में, 25(08.33) योग प्रतिशत ने ग्रामीण पदाधिकारी के रूप में, 32(10.67) योग प्रतिशत ने प्रचारक के रूप में, 13(04.33) योग प्रतिशत ने राजनीतिक दल की सदस्यता के रूप में, 20(06.67) योग प्रतिशत ने एक से अधिक कार्यों के रूप में, 103(34.33) योग प्रतिशत ने चुनाव नहीं लड़ा। अतः उत्तरदाता पारिवारिक मुखिया के रूप संलग्न थे साथ ही चुनाव भी नहीं लड़ा अर्थात् नौकरी के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं।

✶ राजनीति में आरक्षण व्यवस्था के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 216(72.00) योग प्रतिशत ने उचित के पक्ष में, 35(11.67) योग प्रतिशत ने अनुचित के पक्ष में, 49(16.33) योग प्रतिशत ने तटस्थता के पक्ष में। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता राजनीति में आरक्षण व्यवस्था के पक्ष में, जो सर्वाधिक योग .प्रतिशत है।

✶ आरक्षण व्यवस्था उचित होने के कारणों के पक्ष में कुल उत्तरदाताओं में से 143 (66.20) योग प्रतिशत उचित प्रतिनिधित्व मिलने के पक्ष में, 162(75.00) योग प्रतिशत राजनीतिक भागीदारी के पक्ष में, 102(47.22) योग प्रतिशत जनजातियों का

राजनीतिक विकास के पक्ष में, 103(47.69) योग प्रतिशत पिछड़ेपन को दूर करने के पक्ष में। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण उचित प्रतिनिधित्व मिलने का रहा है।

✶ राजनीति में धन व संख्या बल के महत्त्व के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 117(39.00) योग प्रतिशत ने पद/सम्मान के लिए, 47(15.67) योग प्रतिशत ने अपराधीकरण के लिए, 56(18.67) योग प्रतिशत ने चुनाव जीतने के लिए, 80(26.66) योग प्रतिशत ने समाज में वर्चस्व बढ़ाने के लिए माना। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता राजनीति में धन व संख्या बल का सर्वाधिक महत्त्व पद/सम्मान बढ़ाने को मानते है।

✶ राजनीतिक दलों से सम्बद्धता के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 121(40.33) योग प्रतिशत भाजपा से, 75(25.00) योग प्रतिशत कॉग्रेंस से, 24(08.00) योग प्रतिशत निर्दलीय से व 80(26.67) योग प्रतिशत किसी पार्टी विशेष से नहीं है। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता सर्वाधिक संख्या में भाजपा से सम्बद्धता रखते हैं।

✶ उत्तरदाताओं का राजनीतिक बोध स्तर कुल योग का औसत स्कोर, जिसमें पुरूष उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 118.75 हैं। महिला उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 82.75 है। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता राजनीतिक पदों पर आसीन व्यक्तियों का नाम जानते हैं, जिनमें पुरूषों का औसत स्कोर महिलाओं के औसत स्कोर से अधिक हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों का बोध स्तर सर्वाधिक है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि महिलाओं में राजनीतिक ज्ञान नगण्य है।

अतः उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति का सामाजिक स्तर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ठीक है। चाहे वो महिला हो या पुरूष, पारिवारिक संरचना में एकांकी परिवारों की संख्या 153(51.00) योग प्रतिशत पाई गयी जो सर्वाधिक है। वहीं इनकी वैवाहिक स्थिति में भी विवाहित उत्तरदाताओं की संख्या 180(93.33) योग प्रतिशत है साथ ही अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं की शिक्षा का स्तर भी ठीक है। इसलिए कहा जा सकता है कि मीणा जनजाति के उत्तरदाताओं का सामाजिक स्तर ठीक है। इसी क्रम में उत्तरदाताओं का आर्थिक स्तर भी ठीक है, क्योंकि इनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। जिसका प्रतिशत 95(31. 67) योग प्रतिशत है, परन्तु कृषि के साथ–साथ यह लोग सरकारी नौकरियों व उद्योगों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उत्तरदाताओं की स्वयं व पारिवारिक आय का स्तर भी उच्च है और आय के स्रोतों में कृषि के साथ–साथ सरकारी नौकरी व निजी क्षेत्र में कार्य को भी महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। आर्थिक क्षेत्र में आरक्षण व्यवस्था ने भी इस क्षेत्र के उत्तरदाताओं को आर्थिक रूप से सुदृढ़ता प्रदान की है।

उत्तरदाताओं की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन करने पर पाया कि मीणा जनजाति के उत्तरदाताओं की राजनीतिक पृष्ठभूमि मध्यम है। यहाँ के उत्तरदाता सामाजिक व आर्थिक रूप से तो सम्पन्न हैं, पर राजनीतिक रूप से पिछड़े हुए हैं। ज्यादातर ग्रामीण स्तर पर

चुनाव में भाग लेते हैं। जिसमें सरपंच का चुनाव अधिक संख्या में लड़ा जाता है, जिसके सम्बन्ध में 76(25.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता शामिल है। उत्तरदाता चुनाव में प्रचार–प्रसार भी करते हैं। महिला उत्तरदाता भी स्थानीय स्तर पर प्रचार–प्रसार करती है, परन्तु पुरुषों की अपेक्षा कम जागरुक है अर्थात् महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता नगण्य हैं।

उत्तरदाताओं के चुनाव लड़ने में इनके परिवार, जाति, जनजाति, व अन्य संघटन भी प्रेरणा स्रोत रहे हैं। उत्तरदाता राजनीतिक दलों से भी सम्बन्ध रखते हैं, जिसमें भारतीय जनता पार्टी से जुड़े हुए उत्तरदाताओं का प्रतिशत 121(40.35) योग प्रतिशत है। वहीं राजनीतिक प्रतिनिधित्व करने वालों को नाम से भी जानते हैं। इसलिए इनकी राजनीतिक जागरूकता में भी सजगता है, पर राष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं में राजनीतिक जागरूकता व सजगता कम है। इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने मीणा जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि को महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

सन्दर्भ सूची

1. सिंघी, नरेन्द्र कुमार : ''समाजशास्त्रीय सिद्धान्त विवेचन एवं व्याख्या'' रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2011, पृ.सं. 253
2. बर्गेश एण्ड लॉक : ''द फैमिली : फ्रॉम इन्सटीट्यूशन टू कम्पेनियनशिप'' न्यूयॉर्क 1966 अमेरिकन बुक कम्पनी पृ. सं. 8
3. दुबे, डॉ. एसं.सी. : ''मानव और संस्कृति'' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1970 पृ. सं. 113
4. श्री निवास एम.एन. : ''सोशल स्ट्रक्चर हिन्दुस्तान पब्लिकेशन कॉर्पोरेशन'' इंडिया (दिल्ली) 1980 पृ.सं. 62
5. महाजन डॉ. धर्मवीर व महाजन डॉ. कमलेश : ''जनजातीय समाज का समाजशास्त्र'' विवेक प्रकाशन नई दिल्ली 2009 पृ.सं. 147
6. मजमूदार डी.एन. : ''दि फॉर्चून्स ऑफ प्रिमिटिव ट्राईव, बाम्बे'' 1944, जाट, रामफूल, : ''जन–सहभागिता एवं ग्रामीण विकास'' आदि पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2015, पृ.सं.76
7. सिंह, डॉ. एन.आर. एवं मोर्य, डॉ. डी. एसं., : ''भौगोलिक पारिभाषिक शब्दकोष'' शारदा पुस्तक भवन 11, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, 2003, पृ.सं. 371
8. उप्रेती, डॉ. हरिशचन्द्र, : ''भारतीय जनजातियाँ : संरचना एवं विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007

9 भट्ट अनिल : ''कास्ट, क्लास एण्ड पॉलिटिक्स'' मनोहर बुक सर्विस, न्यू दिल्ली 1975

10 शर्मा, एसं.एल. : ''इमर्जिंग ट्राईबल आइडेन्टिटी'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर 2008

चतुर्थ अध्याय

''वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति के जीवन स्तर में परिवर्तन''

अध्याय चतुर्थ

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति के जीवन स्तर में परिवर्तन

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत मीणा जनजाति के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों को वैश्वीकरण के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया जा रहा है। ''वैश्वीकरण बहुआयामी एवं जटिल प्रक्रिया है। इसके अन्तर्गत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया सम्मिलित होती है''[1] साथ ही बाजारों, वित्त एवं प्रौद्योगिकी का भी इसमें एकीकरण होता है। इसमें ''विश्व का ऐसा संकुचन हो रहा है। जिसके प्रत्येक कोने में हम इतनी जल्दी और सस्ते में पहुँच जाते हैं, जितने में पहले कभी सम्भव नहीं था।''[2]

मॅकोल्म वेटर्स के अनुसार "वैश्वीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें भूगोल द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को दबाया जाता है। जिससे लोग इस बात के लिए जागरूक होने लगते हैं कि उनका प्रश्चप्रवण हो रहा है।"[3] इस प्रकार वैश्वीकरण के सूचनातंत्र, तीव्रगामी यातायात, आधुनिक संसाधनों तक सभी की पहुँच सरल, विज्ञापनों का बढ़ता महत्त्व, भौतिक सुख–सुविधाओं तक सभी की पहुँच आसानी से उपलब्ध होना आदि आयामों ने मीणा जनजाति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। अतः मीणा जनजाति भी वैश्वीकरण की चमक–दमक से अछूती नहीं रही है, जिसके अन्तर्गत मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में आये बदलाव को देखा गया है। साथ ही मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण के क्या प्रभाव पड़े और क्या परिवर्तन हुए आदि पक्षों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण का कार्य किया गया है।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तर्गत मीणा जनजाति के पुरूष व महिला उत्तरदाता, वैश्वीकरण के बारे में क्या जानते हैं। वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति के जीवन स्तर में क्या परिवर्तन आए और क्या प्रभाव पड़े आदि पक्षों के लिए तथ्यों का संकलन किया गया। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.1

क्या आपने वैश्वीकरण के बारे में सुना है?

क्र. सं.	**मत**	**उत्तरदाताओं की संख्या**		**योग (प्रतिशत)**
		पुरूष(प्रतिशत)	**महिला(प्रतिशत)**	
1	हाँ	120(80.00)	118(78.67)	238(79.33)
2	नहीं	30(20.00)	32(21.33)	62(20.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.1 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 238(79.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि हमने वैश्वीकरण के बारे में सुना है अर्थात् हाँ के पक्ष में। जबकि 62(20.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि हमने वैश्वीकरण के बारे में नहीं सुना। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति के उत्तरदाता वैश्वीकरण के बारे में जानते हैं, जिनका सर्वाधिक योग प्रतिशत है। परन्तु अध्ययन क्षेत्र में कुछ उत्तरदाता ऐसे भी है, जो इस प्रक्रिया से अनजान हैं।

तालिका संख्या 4.1(अ)

वैश्वीकरण के बारे में आप क्या जानते हैं?

क्र. सं.	**वैश्वीकरण (आप क्या जानते हैं?)**	**उत्तरदाताओं की संख्या**		**योग (प्रतिशत)**
		पुरूष(प्रतिशत)	**महिला(प्रतिशत)**	
1	तीव्रगामी यातायात	64(53.33)	62(52.54)	126(52.94)
2	आधुनिकतम सूचना तंत्र	72(60.00)	75(63.56)	147(61.77)
3	संसाधनों तक पहुँच सरल	76(63.33)	72(61.00)	148(62.19)
4	विज्ञापनों का बढ़ता महत्त्व	49(40.83)	43(36.44)	92(38.66)
5	आवश्यक वस्तुओं का आसानी से उपलब्ध होना	50(41.67)	46(38.98)	96(40.34)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 238 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 120 व 118 तथा 238 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.1(अ) से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में से 126(52.94) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया तीवग्रामी यातायात में वृद्धि है। जो सर्वाधिक संख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं 147(61.77) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण आधुनिक सूचना का तंत्र भी है। जबकि 148(62.19) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया से संसाधनों तक की पहुँच सरल भी हुई है। वहीं 92(38.66) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया विज्ञापनों का बढ़ता महत्त्व है। जबकि 96(40.34) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया से आवश्यक वस्तुओं का असानी से उपलब्ध होना भी रहा है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति के लोग वैश्वीकरण के बारे में अर्थात् संसाधनों तक पहुँच सरल हुई के बारे में जानते हैं। समाज का एक वर्ग जो शिक्षित है, वह ऐसा जानता है। परन्तु आज भी अध्ययन क्षेत्र में कुछ उत्तरदाता इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया से अनजान हैं।

वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन पर प्रभावः—

मीणा जाति मूल रूप में आदिम जनजाति थी। आदिकाल से ही इनका इतिहास साक्षी रहा है कि "ये लोग बीहड़ जंगलों तथा पर्वतों में रहकर आत्मरक्षा करते हुए अपना जीविकोपार्जन करते आये हैं।"[4] मीणा जनजाति के सामाजिक व सांस्कृतिक तौर तरीके जनजातीय समाज की परम्पराओं पर आधारित थे। स्वतन्त्रता के पश्चात्य भारतीय सरकारों के प्रयासों से इनके सामाजिक जीवन में काफी सुधार हुआ। सभ्य समाज के समान ही अपने सामाजिक जीवन के तौर तरीकों को अपनाने लगी है। परन्तु इस जनजाति का शैक्षिक स्तर, सामाजिक प्रस्थिति तथा सामाजिक सशक्तिकरण बहुत कम हुआ है।

वर्तमान में प्रचलित वैश्वीकरण की अवधारणा ने इनके सामाजिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया। वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण इन्होंने अपने परम्परागत सामाजिक जीवन के तौर तरीकों को त्याग कर आधुनिक सामाजिक जीवन के तौर—तरीकों को अपने जीवन में अपना लिया है। वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई तथा संचार एवं परिवहन के संसाधनों ने भी मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन को प्रभावित किया। प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.2

वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन पर प्रभाव

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	पूर्ण सहमत	94(62.66)	92(61.33)	186(62.67)
2	सहमत	28(18.67)	31(20.67)	59(19.67)
3	असहमत	18(12.00)	16(10.67)	34(11.33)
4	कोई प्रभाव नहीं	10(06.67)	11(07.33)	21(07.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.2 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 186(62.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता पूर्ण सहमत के पक्ष में। वहीं 59(19.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता सहमत के पक्ष में। 34 उत्तरदाता असहमत के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 11.33 प्रतिशत है। जबकि 21(07.00) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि वैश्वीकरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। जो पूर्ण सहमत के पक्ष में कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है। परन्तु कुछ उत्तरदाता सहमत भी रहे हैं, जिनको सूचना तकनीकी का थोड़ा ज्ञान है। वहीं कुछ उत्तरदाता असहमत भी नजर आये, जबकि 07.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई प्रभाव नहीं पड़ा को माना है।

तालिका संख्या 4.2(अ)

मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन को प्रभावित करने के कारण (पूर्ण सहमत)

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	संचार एवं परिवहन के संसाधनों में वृद्धि	45(47.87)	46(50.00)	91(48.93)
2	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	72(76.60)	67(72.83)	139(74.73)
3	भौतिकवादी सोच के कारण	64(68.09)	49(53.26)	113(60.75)
4	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	74(76.72)	62(67.39)	136(73.12)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 186 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 94 व 92 तथा 186 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.2(अ) से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में से 91(48.93) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि संचार एवं परिवहन के संसाधनों में वृद्धि से सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ। जबकि 139(74.73) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि से सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ। वहीं 113(60.75) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि भौतिकवादी सोच में वृद्धि से सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ है। जबकि 136(73.12) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से सामाजिक जीवन में बदलाव आया। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन में परिवर्तन हो रहा है।

परिवार की संरचना पर प्रभावः–

"परिवार मानवीय जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली महत्त्वपूर्ण संस्था है। मनुष्य की अनेक आवश्कताएँ होती है जैसे– भूख, प्यास, वस्त्र, आवास आदि इन सारी आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार के माध्यम से होती है। इसलिए परिवार के बिना समाज में मनुष्य का अस्तित्त्व असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य लगता है। सभ्यता के भिन्न दौरों में परिवार किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रहा है। कालान्तर में परिवार के विभिन्न रूपों का विकास हुआ जैसे– मातृसत्तात्मक परिवार, पितृसत्तात्मक परिवार, बहुपति तथा बहुपत्नी परिवार, संयुक्त तथा नाभिक परिवार आदि।"[5] ऐसा ही मीणा जनजातीय समाज में देखने को मिलता है। मीणा जनजाति के लोग प्राचीन काल में संयुक्त परिवार में रहना पसन्द करते थे, जिसके कारण संयुक्त परिवारों की संख्या अधिक थी। परन्तु वैश्वीकरण ने पारिवारिक संरचना को व्यापक रूप से प्रभावित किया। जिसके कारण संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार की अवधारणा को बढ़ावा मिला। वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिला, व्यक्ति की भौतिकवादी सोच को बढ़ावा मिला, पारिवारिक मूल्यों में कमी देखी गई। इस प्रकार से वैश्वीकरण ने परिवार की संरचना को प्रभावित किया।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र कि मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तर्गत पारिवारिक संरचना पर क्या प्रभाव पड़ा है। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको नीचे लिखित तालिका में प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.3

वैश्वीकरण ने परिवार की सरंचना को किस प्रकार प्रभावित किया

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	संयुक्त परिवार का टूटना	89(59.33)	84(56.00)	173(57.67)
2	व्यक्ति की भौतिकवादी सोच	63(42.00)	62(41.33)	125(41.67)
3	पारिवारिक नियंत्रण में कमी	70(46.67)	65(43.33)	135(45.00)
4	पारिवारिक मूल्यों का ह्रास	92(61.33)	102(68.00)	194(64.67)
5	सांस्कृतिक संक्रमण	49(32.67)	44(29.33)	93(31.00)
6.	रक्त सम्बन्धों का पतन	57(38.00)	48(32.00)	105(35.00)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.3 से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में से 173(57.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि संयुक्त परिवार टूटा या ह्रास हुआ है। जबकि 125(41.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि व्यक्ति की भौतिकवादी सोच में वृद्धि हुई है। वहीं 135(45.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि पारिवारिक नियंत्रण में कमी आई। जबकि 194(64.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि पारिवारिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। वहीं 93(31.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि वैश्वीकरण से सांस्कृतिक संक्रमण फैला। जबकि 105(35.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि रक्त सम्बन्धों का ह्रास या पतन हुआ है। अतः यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक संरचना पर प्रभाव पड़ा। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव पारिवारिक मूल्यों के ह्रास का रहा है। जिसके कारण परिवार की परम्परागत व्यवस्था में विघटन पैदा हो गया है। यह वैश्वीकरण का मीणा जनजाति की पारिवारिक संरचना पर नकारात्मक प्रभाव है।

सामाजिक सम्बन्धों पर प्रभावः–

"सामाजिक सम्बन्धों से तात्पर्य व्यक्तियों की उन पारस्परिक क्रियाओं से हैं, जो अर्थपूर्ण रूप से या किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्थापित की जाती है–जैसे यदि कोई व्यक्ति अपनी जैविक अथवा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए

किसी दूसरे व्यक्ति के साथ कोई क्रिया कर रहा है, तब ऐसी क्रिया के परिणामस्वरूप स्थापित होने वाले सम्बन्धों को ही हम सामाजिक सम्बन्ध कहेंगे।''[6]

पूर्व में मीणा समाज में सामाजिक सम्बन्ध अच्छे माने जाते थे, क्योंकि पारस्परिक घनिष्टता, प्रेम, स्नेह, बन्धुत्त्व आदि समाज में विद्यमान थे। जिसके कारण पंचायतों द्वारा सभी सामाजिक निर्णय लिए जाते थे और निर्णयों को सर्वोपरि मानते थे। वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति के सामाजिक सम्बन्धों में खुलापन आया, सामाजिक गतिशीलता भी बढ़ी, भौतिकवादी सोच तथा आधुनिकता की बढ़ती होड़ के कारण परस्पर लगाव तथा स्नेह कम हुआ साथ ही पंचायतों का महत्त्व भी कम हुआ है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के सामाजिक सम्बन्धों पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.4

वैश्वीकरण से सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	118(78.67)	115(76.67)	233(77.67)
2	नहीं	32(21.33)	35(23.33)	67(22.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.4 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 233 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 77.67 प्रतिशत है। वहीं 67(22.33) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत नहीं के पक्ष में है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण का सामाजिक सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ा, क्योंकि हाँ के पक्ष का योग प्रतिशत सर्वाधिक है।

तालिका संख्या 4.4(अ)

सामाजिक सम्बन्धों में क्या परिवर्तन हुआ

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	रक्त सम्बन्धों का महत्त्व बढ़ा है।	23(15.33)	21(14.00)	44(14.67)
2	रक्त सम्बन्धों का महत्त्व घटा है।	75(50.00)	77(51.33)	152(50.67)
3	यथावत है।	20(13.33)	17(11.33)	37(12.33)
4	कोई प्रभाव नहीं	32(21.33)	35(23.33)	67(22.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका 4.4(अ) को देखने से ज्ञात होता है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 50.67 प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से रक्त सम्बन्धों का महत्त्व घटा है। जिसमें 152 उत्तरदाता शामिल हैं। 12.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने रक्त सम्बन्धों को यथावत ही माना है, जिसमें 20 पुरूष व 17 महिला उत्तरदाता शामिल हैं जबकि 44(14.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने वैश्वीकरण के कारण रक्त सम्बन्धों में वृद्धि को माना है। 67(22.33) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई प्रभाव नहीं पड़ा को माना। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से रक्त सम्बन्धों के महत्त्व में कमी आई, जो नकारात्मक प्रभाव है। अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण ने कहीं न कहीं तो मीणा जनजाति को प्रभावित किया है।

द्वितीयक सम्बन्धों पर प्रभावः–

आदिम मीणा जनजाति में प्राथमिक सम्बन्धों का महत्त्व अधिक था, क्योंकि इनका सामाजिक क्षेत्र अत्यन्त संकुचित था। जिससे रक्त सम्बन्धों में अत्यधिक घनिष्ठता थी साथ ही एक–दूसरे की मदद भी करते थे। वैश्वीकरण की अवधारणा ने आदिम मीणा जनजाति के प्राथमिक सम्बन्धों को कमजोर किया साथ ही द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा दिया है। इनका सामाजिक क्षेत्र बढ़ा तथा सम्बन्धों में खुलापन आया। क्योंकि शिक्षा के कारण रोजगार के अवसरों में वृद्धि, उनकी मूलभूत आवश्यकताओं में वृद्धि तथा संचार के संसाधनों से एक–दूसरे से सम्पर्क करने में आसानी हुई। जिससे औपचारिक द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला है। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया। द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़वा मिला के सम्बन्ध में तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.5

वैश्वीकरण के कारण द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	125(83.33)	122(81.33)	247(82.33)
2	नहीं	25(16.67)	28(18.67)	53(17.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.5 के आंकड़े दर्शाते हैं कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 247 उत्तरदाता अर्थात् 82.33 प्रतिशत ने हाँ के पक्ष में मत व्यक्त किया। जिसमें 125 पुरूष व 122 महिला उत्तरदाता शामिल हैं। जबकि 53(17.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता प्रश्न के प्रति विपरीत सोच रखते हैं अर्थात् नहीं के पक्ष में मत प्रकट करते हैं। अतः तालिका के आधार

पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति का एक बड़ा वर्ग इसके पक्ष में अपने विचार प्रकट करता है। जो सर्वाधिक संख्या का योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.5(अ)

द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला के कारण

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	80(64.00)	68(55.74)	148(59.92)
2	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	73(58.04)	71(58.20)	144(58.30)
3	पारिवारिक मूल्यों का ह्यस	75(60.00)	72(59.07)	147(59.52)
4	पाश्चात्य संस्कृति की तरफ झुकाव	69(55.02)	62(50.82)	131(53.04)
5	भौतिकवादी सोच में वृद्धि	67(53.06)	59(48.36)	126(51.01)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 247 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 125 व 122 तथा 247 में से निकाला गया है।

तालिका 4.5(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाता में से 148(59. 92) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि से द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला, जो कुल संख्या का सर्वाधिक प्रतिशत है। वहीं 144(58.30) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला है। जबकि 147(59.52) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि पारिवारिक मूल्यों के ह्यस से द्वितीयक सम्बन्धों बढ़ावा मिला, जो सर्वाधिक से कम है। 131(53.04) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने द्वितीयक सम्बन्धों का कारण पाश्चात्य संस्कृति की तरफ झुकाव को माना है। 126(51.01) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि भौतिकवादी सोच में वृद्धि से द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कारणों में सर्वाधिक कारण शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है। जिसके कारण प्राथमिक सम्बन्धों के स्थान पर द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिल रहा है। यह वैश्वीकरण का सामाजिक सम्बन्धों पर नकारात्मक प्रभाव है।

सामाजिक गतिशीलताः—

आदिम मीणा जनजाति में सामाजिक गतिशीलता प्रतिबन्धित होती थी अर्थात् कोई भी व्यक्ति या समूह अपनी प्रस्थिति परिवर्तित नहीं कर सकता था। स्वतन्त्रता के बाद विशेष रूप से ''भारतीय संविधान लागू होने के बाद कोई भी समूह या जाति अपनी प्रस्थिति बदल सकते हैं। सरकारी प्रयासों के द्वारा मीणा जनजाति को ऊँचा उठाने के अनेक प्रयास किये गये। जिसके कारण इनकी सामाजिक स्थिति में भी सुधार आया।''[7] नब्बे के दशक में वैश्वीकरण की प्रक्रिया आई तो सामाजिक सोच, सामाजिक बन्धन, सामाजिक नियमों आदि में खुलापन आया तथा उच्च व तकनीकी शिक्षा ने इन लोगों की सोच में बदलाव किया। जिसके कारण सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा मिला है। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत सामाजिक गतिशीलता कैसे बढ़ी आदि पक्षों के लिए तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.6

वैश्वीकरण से मीणा जनजाति में सामाजिक गतिशीलता बढ़ी

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	सहमत	105(70.00)	99(66.00)	204(68.00)
2	असहमत	27(18.00)	30(20.00)	57(19.00)
3	तटस्थ	18(12.00)	21(14.00)	39(13.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.6 के आंकड़े इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 204 उत्तरदाता इससे सहमत है, जिनका प्रतिशत 68.00 प्रतिशत है। जो मीणा जनजाति के एक बहुत बड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं कुल 57 उत्तरदाता अर्थात् 19.00 प्रतिशत उत्तरदाता इससे असहमत है। जबकि 39(13.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता इस प्रश्न पर तटस्थ मत अपना रहे हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति की सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.6(अ)

मीणा जनजाति की सामाजिक गतिशीलता बढ़ी के कारण (सहमत)

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	84(80.00)	74(74.75)	158(77.45)
2	आधुनिकतम संसाधनों में वृद्धि	80(76.19)	71(71.72)	151(74.02)
3	रोजगार की लालसा	75(71.43)	69(69.61)	144(70.59)
4	भौतिकवादी सोच में वृद्धि	65(61.91)	61(61.62)	126(61.77)
5	सामाजिक सम्बन्धों में शिथिलता	40(38.10)	37(37.37)	77(37.75)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 204 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 105 व 99 तथा 204 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.6(अ) से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में से 158(77.45) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि से सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है। वहीं 151(74.02) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि आधुनिकतम संसाधनों में वृद्धि से सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है। 144(70.59) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया है कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है। जबकि 126(61.77) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि भौतिकवादी सोच में वृद्धि से सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है। वहीं 77(37.75) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि सामाजिक सम्बन्धों में शिथिलता से गतिशीलता बढ़ी है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से गतिशीलता बढ़ी। जिसमें सर्वाधिक कारण शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

सामाजिक रीति–रिवाजों पर प्रभावः–

आदिम मीणा जनजाति के रीति–रिवाज परम्परागत सामाजिक एवं सांस्कृतिक नियमों से संचालित होते थे। मीणा पुरूष अपने परम्परागत पहनावें में अंगरखा, पगड़ी, धोती, कुर्ता आदि धारण करते थे। स्त्रियाँ लूगड़ी, घाघरा, चोली आदि पहनती थी। परम्परागत भोजन सामग्री में ये लोग छाछ, गुड़, दही, मक्का, ज्वार, बाजरा, गेहूँ की रोटी आदि का प्रयोग करते थे। मीणा जनजाति में होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी, मकर

सक्रांति आदि प्रमुख त्यौहार मनाये जाते थे। स्वतंत्रता के बाद इनके रीति रिवाजों में परिवर्तन हुआ पर नाममात्र का, क्योंकि इनमें शिक्षा का अभाव था। जिसके कारण इनके रीति रिवाजों में परिवर्तन नगण्य ही रहा है।

नब्बे के दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो शिक्षा का स्तर बढ़ा, सामाजिक नियमों मे ंशिथिलता आई, सूचना क्रांति ज्ञान हुआ, रोजगार के अवसरों मे ंवृद्धि हुई आदि कारणों से इनके रीति–रिवाजों तथा रहन–सहन में आधुनिकता आ गई है। जैसे – पुरूष पेन्ट–शर्ट, टाई, सूट तथा महिलाएँ सलवार–कुर्ता, साड़ी, ब्लाउज आदि पहनती हैं। खान–पान में आधुनिकता का प्रयोग देखा जा सकता है जैसे– पिज्जा, बर्गर, होटलों में खाना आदि अपनाने लगे हैं, साथ ही त्यौहारों को मनाने में भी आधुनिकता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के रीति–रिवाजों पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.7

मीणा जनजाति के सामाजिक रीति–रिवाजों पर वैश्वीकरण का प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	परम्परागत रीति–रिवाजों में शिथिलता	70(46.67)	72(48.00)	142(47.33)
2	संयुक्त परिवार का घटता प्रभाव	64(42.67)	67(44.67)	131(43.67)
3	सामाजिक उत्सवों का संक्षिप्तिकरण	63(42.00)	62(41.33)	125(41.67)
4	सामाजिक सामंजस्य में बिखराव	78(52.00)	75(50.00)	153(51.00)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.7 के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 142(47.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से परम्परागत रीति–रिवाजों में शिथिलता आई है। जबकि 131(43.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से संयुक्त परिवारों के प्रभाव में कमी आई है। वहीं 125(41.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण ने सामाजिक उत्सवों का संक्षिप्तिकरण किया है। जबकि 153(51.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि वैश्वीकरण से सामाजिक

सामंजस्य में बिखराव आया है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से सामाजिक रीति–रिवाज़ों में परिवर्तन आया। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव सामाजिक सामंजस्य में बिखराव का रहा है। जिनका प्रतिशत 51.00 प्रतिशत है, यह वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव है।

खान–पान पर प्रभावः–

आदिम मीणा जनजाति में परम्परागत खान–पान के तौर–तरीके प्रचलित थे। भोजन सामग्री के रूप में इस जनजाति के लोग ''भोजन में देशी घी, गेहूँ, जौ, मक्का, बाजरा, ज्वार तथा छाछ–दही आदि का प्रयोग करते थे। मीणा जनजाति के खाने–पीने के बर्तन साधारणतः पीतल तथा मिट्टी के होते थे। धुम्रपान के सेवन में भी इस जनजाति के पुरूष परम्परागत रूप से हुक्के व बीड़ी का प्रयोग करते थे, वहीं स्त्रियाँ तम्बाकू का सेवन किया करती थी।''[8]

यद्यपि सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण इनके खान–पान के तौर तरीकों में परिवर्तन तो हुआ पर नाममात्र का, क्योंकि इनमें पूर्णरूप से शिक्षा व जागरूकता की कमी थी। जिसके कारण इनके खान–पान के तौर तरीकों में परिवर्तन कम हुआ। परन्तु वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिला, सामाजिक सम्बन्धों में खुलापन आया। जिसके कारण मीणा जनजाति के परम्परागत खान–पान में परिवर्तन हुआ। यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के परम्परागत खान–पान पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा। प्रभावों सहित तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.8(अ)
मीणा जनजाति के परम्परागत खान–पान पर प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	परम्परागत भोजन सामग्री का ह्रास	71(47.33)	78(52.00)	149(49.67)
2	नवीन पेय पदार्थों के सेवन में वृद्धि	79(52.67)	81(54.00)	160(53.33)
3	पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव	81(54.00)	71(47.33)	152(50.67)
4	भोजन में पौष्टिक तत्वों की कमी	61(40.67)	59(39.33)	120(40.00)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.8 (अ) के आंकड़े दर्शाते हैं कि कुल उत्तरदाताओं में से 149(49.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि परम्परागत भोजन सामग्री का ह्यस हुआ। वहीं 160(53.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से नवीन पेय पदार्थों के सेवन में वृद्धि हुई। जबकि 152(50.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा है। वहीं 120(40.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि वैश्वीकरण से भोजन में पौष्टिक तत्वों की कमी हुई है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से परम्परागत ख़ान–पान के तौर तरीकों में परिवर्तन आया। जिसमें सर्वाधिक प्रभाव नवीन पेय पदार्थों के सेवन में वृद्धि का रहा है।

वेशभूषा पर प्रभावः–

''प्राचीन एवं मध्य काल में सामान्यतः मीणा पुरूष धोती, उपवस्त्र, अंगरखी, दुपट्टा और पगड़ी आदि धारण किया करते थे। वहीं मीणा महिलाएँ लूगड़ी, कंचुकी, कुर्ती और घाघरा धारण करती थी।''[9] सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण इनके पहनावें में थोड़ा परिवर्तन हुआ। स्वतन्त्रता के बाद मीणा समाज में शिक्षा की किरण जागी, सरकारी प्रयास किये गये पर नाममात्र का विकास हुआ। क्योंकि इनमें जागरूकता का अभाव था।

वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, सूचना क्रांति आई, सामाजिक नियमों में खुलापन आया। जिसके कारण मीणा जनजाति के परम्परागत पहनावें में परिवर्तन हुआ, यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के परम्परागत पहनावें (वेशभूषा) पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा। प्रभावों सहित तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.8(ब)

मीणा जनजाति के परम्परागत वेशभूषा पर प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	आधुनिक वेशभूषा का बढ़ता प्रचलन	90(60.00)	91(60.67)	181(60.33)
2	नवीन पहनावें के स्रोतों में वृद्धि	80(53.33)	84(56.00)	164(54.67)
3	पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव	60(40.00)	61(40.67)	121(40.33)
4	आधुनिकता की बढ़ती होड़	52(34.67)	56(34.33)	108(36.00)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.8(ब) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 181(60.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से आधुनिक वेशभूषा का प्रचलन बढ़ा है। जबकि 164(54.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से नवीन पहनावें के स्रोतों में वृद्धि हुई है। वहीं 121(40.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया है कि पहनावें पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा है। जबकि 108(36.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि आधुनिकता की बढ़ती होड़ के कारण भी वेशभूषा पर प्रभाव पड़ा है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से परम्परागत वेशभूषा में परिवर्तन आया। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव आधुनिक वेशभूषा का बढ़ता प्रचलन बताया गया, यह वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव है।

आभूषणों पर प्रभावः–

आदिवासी मीणा जनजाति के ''पुरूष वर्ग कानों में मोती, हाथों व पैरों में कड़े, सोने की मुर्कियाँ, गले में बलेवड़ा तथा फूल–पत्ती, कमर में कणकती, हाथों में चाँदी के गड़े और दायें पैर में भी कड़ा धारण करते थे, जो एक सामाजिक प्रतिष्ठा की निशानी है। वहीं स्त्रियाँ हंसली, सोने का तिमणियाँ, मोगरी, पूंची, बंगड़ी, गजरा, बाजूबंद, कणकती, कड़ला, टणका, नेवरी, आंवळा आदि पहनती थी।''[10] परन्तु सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण इनके परम्परागत आभूषणों में न्यूनाधिक परिवर्तन हुआ है।

नब्बे के दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, सामाजिक नियमों एवं कानूनों में शिथिलता आई, आदि कारणों से मीणा जनजाति के परम्परागत आभूषणों में तीव्रगति से परिवर्तन हुआ। जिसके कारण स्त्री–पुरूष नई तकनीकी से निर्मित आभूषणों को धारण करने लगे है, यह सकारात्मक प्रभाव है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के परम्परागत आभूषणों पर क्या प्रभाव पड़ा। प्रभावों सहित तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.8(स)

मीणा जनजाति के परम्परागत आभूषणों पर प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	परम्परागत आभूषणों को बोझ समझना	80(53.33)	110(73.33)	190(63.33)
2	कृत्रिम आभूषणों से लगाव	50(33.33)	90(60.00)	140(46.67)
3	पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव	60(40.00)	63(42.00)	123(41.00)
4	समाजिक नियमों में शिथिलता	63(42.00)	61(40.00)	124(41.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.8(स) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 190(63. 33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि परम्परागत आभूषणों को बोझ समझा गया है। जबकि 140(46.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि कृत्रिम आभूषणों के प्रति लगाव बढ़ा है। वहीं 123(41.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि परम्परागत आभूषणों पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा है। जबकि 124 उत्तरदाताओं ने माना कि सामाजिक नियमों में शिथिलता के कारण भी परम्परागत आभूषणों में परिवर्तन आया है, जिनका प्रतिशत 41.33 प्रतिशत है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से परम्परागत आभूषणों में परिवर्तन आया। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत आभूषणों के प्रति हीन भावना का रहा है।

पूजा–पाठ पर प्रभावः–

"आदिवासी मीणा जनजाति मूलरूप से शैव तथा शाक्त थे। परम्परागत रूप से इनके ईष्ट देव के रूप में महादेव थे, जिनकी यह लोग पूजा अर्चना किया करते थे। मीणा जनजाति के लोगों ने अनेक शिव मन्दिरों की स्थापना करवाई जैसे– टोडा–बीलोत, मैंगी–कूदा, क्यारा, राजोर, खोह, आमेर, मांची आदि प्राचीन स्थानों पर मीणाओं के द्वारा बनवाये गये शिव मन्दिर विद्यमान हैं।"[11] हर मीणा गोत्र के व्यक्ति की एक अधिष्टात्री देवी

भी होती थी, जिसकी पूजा अर्चना किया करते थे। यद्यपि सभ्य समाज के सम्पर्क में आने के बाद ही अपने ईष्ट देव के साथ अन्य देवी–देवताओं की पूजा अर्चना करने लगे अर्थात् पूजा–पाठ के कार्यक्रमों में न्यूनाधिक परिवर्तन हुआ।

नब्बे कि दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के नये रास्ते खुले, सूचना क्रांति आई, नियमों में शिथिलता आई। जिसके कारण मीणा जनजाति के परम्परागत पूजा–पाठ के तौर तरीकों में परिवर्तन देखा गया। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के परम्परागत पूजा–पाठ के तौर–तरीकों पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा। प्रभावों सहित तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.9(अ)

मीणा जनजाति के परम्परागत पूजा–पाठ पर प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	परम्परागत पूजा–पाठ के तौर–तरीकों का ह्रास	84(56.00)	92(61.33)	176(58.67)
2	दैवीय शक्ति की आस्था में कमी	92(61.33)	70(46.67)	162(54.00)
3	व्यक्ति के पास समय के अभाव की कमी	95(63.33)	90(60.00)	185(61.67)
4	धार्मिक कार्यों को सम्पादित करने वालों की कमी	70(46.67)	60(40.00)	130(43.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.9(अ) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 176(58.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से परम्परागत पूजा–पाठ के तौर–तरीकों का ह्रास हुआ है। वहीं 162 उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से परम्परागत देवी–देवताओं के प्रति आस्था में कमी आई है। जिनका प्रतिशत 54.00 प्रतिशत है, जो सर्वाधिक से कम है। 185(61.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से व्यक्ति के पास समय के अभाव की कमी आई। वहीं 130(43.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि धार्मिक कार्यों को सम्पादित कराने वालों की

संख्या में कमी आई है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि परम्परागत पूजा–पाठ के तौर तरीको में परिवर्तन आया। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव व्यक्ति के पास समय के अभाव की कमी का रहा है।

अन्धविश्वास पर प्रभावः–

"आदिवासी मीणा जनजाति परम्परागत रूप से जादू–टोना, भूत–प्रेत, जन्तर–मन्तर आदि के प्रति अपनी श्रद्धा रखती थी। प्राचीन मीणों में शकुन के प्रति काफी श्रद्धा थी साथ ही बिना शकुन के ये लोग कहीं भी प्रवास नहीं करते थे। प्रायः इतिहासकारों तथा कवियों ने भी शकुनों की बात जोर देकर कही हैं। क्योंकि शकुनी का मीणा समाज में उन दिनों बहुत बड़ा आदर सत्कार होता था। हमारा प्राचीन कृषि शास्त्र शकुनों की मान्यताओं पर बहुत कुछ आधारित था। शकुन वास्तव में लंबे अनुभव के निचोड़ के रूप में कई पीढ़ियों से समाज में परम्परागत रूप से चले आ रहे हैं। जिसके कारण भारतीय ज्योतिष शास्त्र का यह एक विशिष्ट अंग बन गया है।"[12]

वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिला, सामाजिक सम्बन्धों में खुलापन आया, सूचना क्रांति आई आदि पक्षों के कारण मीणा जनजाति के परम्परागत अन्धविश्वासों के तौर–तरीकों में परिवर्तन देखा गया। इस आधुनिकता की दौड़ में सकारात्मक सोच पैदा हुई, यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है। जिसके कारण मीणा जनजाति की परम्परागत अन्धविश्वास की परम्परा में परिवर्तन आया। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के परम्परागत अन्धविश्वासों पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा। प्रभावों सहित तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.9(ब)

मीणा जनजाति के परम्परागत अन्धविश्वासों पर प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	तंत्र–मंत्र की विद्या में कमी	80(53.33)	84(56.00)	164(54.67)
2	नीम–हकीमों की संख्या में कमी	92(61.33)	90(60.00)	182(60.66)
3	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	94(62.67)	72(48.00)	166(55.33)
4	मीड़िया से जागरूकता में वृद्धि	45(30.00)	46(30.67)	91(30.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.9(ब) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 164(54.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से तंत्र–मंत्र की विद्या में कमी आई। जबकि 182(60.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से नीम–हकीमों की संख्या में कमी आई है। वहीं 166(55.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई। जबकि 91(30.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि मीड़िया से जागरूकता में वृद्धि हुई है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि परम्परागत अन्धविश्वास की परम्परा में कमी आई। क्योंकि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव नीम–हकीमों की संख्या में कमी का रहा, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

बहुविवाह प्रथा पर प्रभावः–

सामान्य स्थिति में सम्पन्न पुरूषों द्वारा एक से अधिक स्त्रियाँ रखना प्रतिष्ठा अथवा पद का प्रतीक होता था। वधु मूल्य भी कुछ जनजातियों में बहुविवाह का कारण होता था।''[13] आदिम मीणा जनजाति में भी बहुविवाह की प्रथा पाई गयी। जो मीणा शासक थे, वे एक से अधिक स्त्रियों के साथ विवाह सम्पन्न किया करते थे। यद्यपि सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण यह प्रथा खत्म होने लगी, पर शिक्षा का अभाव होने के कारण यह प्रथा लम्बे समय तक समाज में बनी रही। स्वतन्त्रता के बाद समाज में शिक्षा की किरण जागी पर सामाजिक रीति–रिवाजों एवं सामाजिक बन्धनों में कठोरता के कारण परिवर्तन न्यूनाधिक हुआ। जिसके कारण इस प्रथा का पूर्ण रूप से अन्त नहीं हो सका अर्थात् परिवर्तन तो हुआ, पर नाममात्र का हुआ था।

यद्यपि वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, सामाजिक बन्धनों में खुलापन आया, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई आदि पक्षों के कारण मीणा जनजाति की बहुविवाह प्रथा में परिवर्तन देखा गया है। अध्ययन क्षेत्र कि मीणा जनजाति की बहुविवाह प्रथा पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा। प्रभावों सहित तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.9(स)

मीणा जनजाति की बहुविवाह प्रथा पर प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	सामाजिक नियमों में खुलापन	60(40.00)	62(41.33)	122(40.67)
2	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	82(54.67)	81(54.00)	163(54.33)
3	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	90(60.00)	91(60.67)	181(60.33)
4	मीड़िया द्वारा जागरूकता फैलाना	46(30.67)	47(31.33)	93(31.00)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.9(स) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 122(40.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से सामजिक नियमों में खुलापन आया। वहीं 163 उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, जो सर्वाधिक संख्या का 54.33 प्रतिशत है। जबकि 181(60.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। वहीं 93(31.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि मीड़िया द्वारा जागरूकता फैलाना रहा है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से बहुविवाह की परम्परा प्रभावित हुई। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव रोजगार के अवसरों में वृद्धि का रहा, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

पुनर्विवाह पर प्रभावः–

मीणा जनजाति में यह प्रथा आदिकाल से चली आ रही थी। जिसके अन्तर्गत पुरूष वर्ग दूसरा विवाह कर सकता था, जबकि महिलाएँ नहीं कर सकती थी। जिस महिला का पति मर जाये तो उस महिला का पुनर्विवाह नहीं होता था। उसे नाते मेल दिया जाता था अर्थात् मीणा समाज में नाता प्रथा का प्रचलन था। सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण इस प्रथा में थोड़ा परिवर्तन हुआ। स्वतन्त्रता के बाद भारतीय सरकारों एवं समाज सुधारकों के प्रयासों से इस प्रथा मे ंपरिवर्तन देखा गया पर नाममात्र का। क्योंकि मीणा जनजाति में शिक्षा व जागरूकता की कमी थी।

यद्यपि वैश्वीकरण से शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, सामाजिक बन्धनों में खुलापन आया, सूचना क्रांति आई, महिलाओं को भी पुरूषों के समान ही अधिकार मिले। जिसके कारण मीणा जनजाति की पुनर्विवाह प्रथा में परिवर्तन हुआ। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के पुनर्विवाह प्रथा पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा। प्रभावों सहित तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.9(द)

मीणा जनजाति की पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	96(64.00)	86(57.33)	182(60.67)
2	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	70(46.67)	76(50.67)	146(48.67)
3	सामाजिक सोच में बदलाव	60(40.00)	65(43.33)	125(41.67)
4	सामाजिक नियम व कानूनों में खुलापन	69(46.00)	63(42.00)	132(44.00)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.9(द) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 182(60.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई है। वहीं 146 उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, जिनका प्रतिशत 48.67 प्रतिशत है। जबकि 125(41.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से सामाजिक सोच में बदलाव आया है। वहीं 132(44.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से सामाजिक नियम व कानूनों में खुलापन आया है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि पुनर्विवाह प्रथा में वैश्वीकरण से परिवर्तन आया। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव शैक्षिक स्तर में वृद्धि कर रहा है, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

अन्तर्जातीय विवाह पर प्रभावः–

धर्मशास्त्रों के अनुसार प्रत्येक हिन्दू को अपनी ही जाति के अन्दर विवाह करना चाहिए। किसी भी जाति का व्यक्ति अपनी जाति के बाहर मान्यता प्राप्त विवाह नहीं कर सकता। यदि हम भारतीय इतिहास पर नजर दौड़ाएँ तो अन्तर्जातीय विवाह भारत में प्राचीन

समय से चले आ रहे हैं। लेकिन इस प्रकार यह विवाह आज भी घृणा की दृष्टि से देखे जाते हैं। अधिकांश समाजों में अन्तर्जातीय विवाह पर जाति से बाहर कर दिया जाता था तथा उस व्यक्ति को समाज में आने के लिए अपने गलत कार्यों का प्रायश्चित करना पड़ता है।''[14] ऐसा ही मीणा जनजाति में भी देखा गया है। "मध्यकाल में मुसलमान बने मीणों, मेवो, मेवातियों आदि में वैवाहिक सम्बन्ध हुआ करते थे। टोडरमल मेव के पुत्र दरिया खॉ का बादाराव की पुत्री शशिवदनी से विवाह हुआ था, जिन्हें इतिहासकारों ने मीणा ही माना है।"[15]

यह उदाहरण मात्र शासक वर्ग में ही देखने को मिलते हैं, आम मीणा जन–समुदायों में नहीं। परन्तु वैश्वीकरण से शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, सामाजिक बन्धनों में खुलापन आया, सूचना क्रांति आई, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा आदि कारणों से मीणा जनजाति में जागरूकता आई। जिसके कारण परम्परागत अन्तर्जातीय विवाह में परिवर्तन हुआ। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया, जिसमें अन्तर्जातीय विवाह के बारे में सूचनाएँ प्राप्त की गई है। प्रभावों सहित तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.9(ड़)

मीणा जनजाति के अन्तर्जातीय विवाह पर प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	95(63.33)	93(62.00)	188(62.67)
2	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	84(56.00)	83(55.33)	167(55.67)
3	महिला–पुरूष के सम्बन्धों में खुलापन	60(40.00)	80(53.33)	140(46.67)
4	परम्परागत नियम व कानूनों में शिथिलता	43(28.67)	63(42.00)	106(35.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.9(ड़) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 188(62.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई। जबकि 167(55.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। वहीं 140(46.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण के कारण महिला–पुरूषों के सम्बन्धों में खुलापन आया। जबकि 106(35.33) योग प्रतिशत ने उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से परम्परागत नियम–कानूनों में शिथिलता आई। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति की अन्तर्जातीय विवाह की परम्परा में परिवर्तन आया। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक व प्रभाव है।

विवाह की आयु में परिवर्तनः–

''मानव समाज में विवाह संस्था विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के रूप में प्रचलित थी। इस संस्था की आवश्यकता जैसे – यौन सम्बन्धों की तृप्ति, आर्थिक सहयोग, बच्चों का पालन–पोषण तथा वंश परम्परा को चलाने के लिए रही है।''[16] ऐसा ही आदिम मीणा जनजाति में भी देखा गया है। इस जनजाति के व्यक्तियों का प्रायः छोटी उम्र में ही विवाह कर दिया जाता था, कई बार तो लड़के–लड़कियों को गोद में लेकर फेरे दिये जाते थे।[17] स्वतन्त्रता के बाद मीणा जनजाति में कुछ सुधार आया, परन्तु शिक्षा व जागरूकता का अभाव रहा। जिसके कारण इनका सामाजिक विकास कम हुआ, अर्थात् विवाह की आयु में न्यूनाधिक परिवर्तन हुआ।

भारत में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, सामाजिक बन्धनों में खुलापन आया। जिसके कारण मीणा समाज के लोग अपने लड़के–लड़कियों की शादी युवावस्था आने पर करने लगे, अर्थात् विवाह की आयु में परिवर्तन हुआ। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया। जिसमें परिवार के सदस्यों एवं स्वयं के विवाह की आयु में क्या परिवर्तन आया है। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से तथ्यों का प्रदर्शन।

तालिका संख्या 4.10

परिवार के सदस्यों के विवाह की आयु में परिवर्तन

क्र. सं.	वर्गान्तराल	उत्तरदाताओं की संख्या									योग प्रतिशत
		दादा प्रति0	दादी प्रति0	योग प्रति0	पिता प्रति0	माता प्रति0	योग प्रति0	भाई प्रति0	बहिन प्रति0	योग प्रति0	
1	05–10	12 (30.50)	15 (37.50)	27 (37.50)	–	–	–	–	–	–	**27 (9.00)**
2	11–15	20 (62.50)	25 (62.50)	45 (62.50)	30 (44.78)	25 (45.45)	55 (45.08)	–	–	–	**100 (33.33)**
3	16–20	–	–	–	37 (55.22)	30 (54.54)	67 (54.92)	25 (45.46)	24 (47.06)	49 (46.23)	**116 (38.67)**
4	21–25	–	–	–	–	–	–	30 (55.54)	27 (52.94)	57 (53.77)	**57 (19.00)**
	योग	**32 (100.00)**	**40 (100.00)**	**72 (100.00)**	**67 (100.00)**	**55 (100.00)**	**122 (100.00)**	**55 (100.00)**	**51 (100.00)**	**106 (100.00)**	**300 (100.00)**

तालिका संख्या 4.10 से स्पष्ट होता है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 27 उत्तरदाता मानते हैं कि इनके दादा–दादी का विवाह 05–10 वर्ष की आयु में हुआ था। जिनका प्रतिशत 09.00 प्रतिशत है। वहीं 100 उत्तरदाता मानते हैं कि इनके दादा–दादी एवं माता–पिता का विवाह 11–15 वर्ष की आयु में सम्पन्न हुआ था, जिनका प्रतिशत 33.33 प्रतिशत है। जिसमें 20 पुरूष व 25 महिला (दादा–दादी) तथा 30 पुरूष व 25 महिला (पिता–माता) परिवार के सदस्यों की विवाह की आयु के पक्ष में शामिल हैं। 116(38.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता स्वीकार करते हैं कि इनके पिता–माता व भाई–बहिन का विवाह 16–20 वर्ष की आयु में सम्पन्न हुआ जिसमें 37 पुरूष व 30 महिला (पिता–माता) तथा 25 पुरूष व 24 महिला (भाई–बहिन) परिवार के सदस्यों के विवाह की आयु के पक्ष में शामिल हैं। 57 उत्तरदाता, जिनके भाई–बहिन का विवाह 21–25 वर्ष की आयु में सम्पन्न में हुआ। जिसमें 30 पुरूष व 27 महिला उत्तरदाता शामिल हैं, जिनका प्रतिशत 19.00 प्रतिशत है। अतः उपर्युक्त तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति की वैवाहिक स्थिति में परिर्वतन हुआ। जिसमें उत्तरदाताओं ने 16 से 20 वर्ष की आयु में सम्पन्न हुए विवाह को दर्शया, जो माता पिता व भाई–बहन के विवाह की आयु थी। अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के विवाह की आयु में परिवर्तन हो रहा है।

तालिका संख्या 4.10(अ)

उत्तरदाताओं (स्वयं) के विवाह की आयु में परिवर्तन

क्र. सं.	वर्गान्तराल	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	11–15	10(06.67)	11(07.33)	21(07.00)
2	16–20	95(63.33)	99(66.00)	194(64.67)
3	21–25	45(30.00)	40(26.67)	85(28.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.10(अ) में कुल 300 उत्तरदाताओं के विवाह की आयु का विवरण दिया जा रहा है, जिसमें 11–15 वर्ष की आयु में स्वयं उत्तरदाताओं का विवाह हुआ है। जिसमें 10 पुरूष व 11 महिला शामिल हैं, जिनका योग प्रतिशत 21(07.00) है। 16–20 वर्ष की विवाह आयु में 194(64.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका सर्वाधिक संख्या में स्वयं का विवाह सम्पन्न हुआ है। 21–25 वर्ष के आयु वर्ग में स्वयं का विवाह सर्वाधिक संख्या से कम है, जो 85(28.33) योग प्रतिशत पुरूष व महिला उत्तरदाता शामिल हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति के उत्तरदाताओं में वैश्वीकरण के कारण जागरूकता आई। जिसके कारण 16 से 20 की आयु में पुरूष व महिला उत्तरदाताओं का सर्वाधिक संख्या में विवाह सम्पन्न हुआ था। अतः यह कहा जा सकता है कि स्वयं उत्तरदाताओं के विवाह की आयु में परिवर्तन हुआ, जो वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

लोकगीत तथा नृत्यों पर प्रभावः–

आदिम मीणा जनजाति में परम्परागत लोकगीत व नृत्यों का प्रचलन सामाजिक उत्सवों पर किया जाता था। मीणा जनजाति के पुरूष व महिलाएँ ''राजस्थान के प्रचलित त्यौहारों जैसे–तीज, गणगौर, दशहरा, होली, दीवाली आदि उत्सवों पर यह अपने लोकगीतों को गाया करते थे। ढूंढाड़ के बारह मेवासियों, पचवारा के पांच मेवासियों आदि के गीत, दोहे–बातें आदि बड़े चाव से कहीं–सुनी जाती थी। इसके साथ ही मीणा जनजाति में टोडरमल–बादाराव, दरियाखां–शशिवदनी, लाली आदि की प्रसिद्ध लोक गाथायें गाई जाती थी।''[18] यद्यपि सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने से, इनके परम्परागत लोकगीतों में परिवर्तन हुआ। पर परिवर्तन की धारा न्यूनाधिक रही है।

नब्बे के दशक में वैश्वीकरण आई तो शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, सामाजिक नियमों व बन्धनों में खुलापन आया तो लोगों में जागरूकता आई। जिसके कारण मीणा जनजाति में परम्परागत लोकगीतों व लोक नाटकों की जगह पाश्चात्य

गीतों व नाटकों का प्रचलन बढ़ा है। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया। जिसमें लोकगीतों व नृत्यों पर क्या प्रभाव पड़ा आदि पक्षों के लिए तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.11

वैश्वीकारण का मीणा जनजाति के लोकगीत/नृत्यों पर प्रभाव

क्र.सं	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	114(76.00)	116(73.33)	230(76.67)
2	नहीं	36(24.00)	34(22.67)	70(23.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.11 का अध्ययन करने पर स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 230 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 76.67 प्रतिशत है। जबकि 70 उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 23.33 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के लोकगीत व नृत्यों पर प्रभाव पड़ा। जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.11(अ)

मीणा जनजाति के लोकगीत/नृत्यों को किस प्रकार प्रभावित किया

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	परम्परागत लोकगीतों की जगह फिल्मी गीतों का प्रचलन	80(70.18)	78(67.24)	158(68.70)
2	लोक नाटकों की जगह टेलिविजन नाटकों का प्रयोग	64(56.14)	61(52.59)	125(54.35)
3	हिन्दी फिल्मों की जगह अंग्रेजी फिल्मों का प्रचलन	42(36.84)	33(28.45)	75(32.61)
4	परम्परागत सामाजिक उत्सवों की जगह आधुनिक उत्सवों का प्रचलन	52(45.62)	57(49.14)	109(47.39)
5	परम्परागत नृत्यों की जगह पोप नृत्यों का प्रचलन	49(42.62)	52(44.83)	101(43.91)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 230 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 114 व 116 तथा 230 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.11(अ) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 158(68.70) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से परम्परागत लोकगीतों की जगह फिल्मी गीतों का प्रचलन बढ़ा है। जबकि 125(54.35) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि लोक नाटकों की जगह टेलिविजन के नाटकों का प्रयोग बढ़ रहा है। वहीं 75(32.61) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि हिन्दी फिल्मों की जगह अंग्रेजी फिल्मों व गीतों का प्रचलन बढ़ा है। जबकि 109(47.39) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि परम्परागत उत्सवों व त्यौहारों की जगह आधुनिक उत्सवों व त्यौहारों का प्रचलन बढ़ा है। वहीं 101(43.91) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना की वैश्वीकारण से परम्परागत नृत्यों की जगह पोप नृत्यों का प्रचलन बढ़ा है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत लोकगीतों व नृत्यों की जगह फिल्मी गीतों के प्रचलन का रहा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा, क्योंकि नकारात्मक प्रभावों की संख्या प्रतिशत सर्वाधिक है।

संस्कृति पर प्रभावः–

आदिम मीणा जनजाति की संस्कृति जैसे– रहन–सहन, खान–पान, आवास, धार्मिक मान्यताएँ, विवाह संस्कार, आदि प्राचीन मान्यताओं पर आधारित थी। मीणा जनजाति के पुरूष व महिलाएँ राजस्थान के प्रचलित तीज–त्यौहारों को भी अपनी संस्कृति के अनुसार मनाते थे और ऐसे अवसरों पर याचकों को अन्न, वस्त्र, सोना–चाँदी, पशु आदि वस्तुओं का दान किया करते थे। ''मीणों की सांस्कृतिक गाथाओं में मेवात क्षेत्र के टोडरमल– बादाराव, दरियाखाँ–शशिवदनी, लाली तथा घुड़चिड़ीमेवखाँ के आख्यान प्रसिद्ध है।''[19] यद्यपि सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण मीणा जनजाति के लोगों ने सभ्य समाज की संस्कृति को भी अपनाया। जिसके कारण यह अपनी मूल संस्कृति से दूर होते गये अर्थात् सभ्य समाज की संस्कृति का प्रभाव भी मीणा समाज की संस्कृति पर देखा गया है।

वैश्वीकरण से शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिला, सामाजिक नियमों एवं बन्धनों में खुलापन आया आदि पक्षों के कारण सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन हुआ। जिसके कारण मीणा समाज के लोगों ने आधुनिक संस्कृति को अपनाया अर्थात् पाश्चात्य संस्कृति के रंग में मीणा जनजाति के लोग घुल मिल गये हैं। अध्ययन क्षेत्र कि मीणा जनजाति की संस्कृति पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.12

वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	हाँ	113(75.33)	115(76.67)	228(76.00)
2	नहीं	37(24.67)	35(23.33)	72(24.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका 4.12 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 228 उत्तरदाता, जिनका प्रतिशत 84.00 प्रतिशत है। जिनका मत हाँ के पक्ष में सर्वाधिक है। जबकि 72 उत्तरदाता इसके पक्ष में नहीं है। जिनका प्रतिशत 24.00 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति की संस्कृति वैश्वीकरण से परिवर्तित हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.12(अ)

मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई के कारण

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	आधुनिकतम संचार के संसाधनों में वृद्धि	67(59.29)	70(60.87)	137(60.09)
2	पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव	74(65.49)	78(67.83)	152(66.67)
3	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	52(46.02)	42(36.52)	94(41.23)
4	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	48(42.48)	51(44.35)	99(43.42)
5	भौतिकवादी सोच में वृद्धि	60(53.10)	57(49.57)	117(51.32)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 228 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 113 व 115 तथा 228 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.12(अ) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 137(60. 09) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि आधुनिकतम संचार के संसाधनों में वृद्धि

से संस्कृति में परिवर्तन हुआ है। वहीं 152(66.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई है। जबकि 94(41.23) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि से संस्कृति में परिवर्तन आया है। वहीं 99(43.42) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से संस्कृति परिवर्तित हुई। 117(51.32) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि भौतिकवादी सोच में वृद्धि से संस्कृति में परिवर्तित हुई। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का रहा है। जिसके कारण मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हो रही है, यह वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव है।

तलाक प्रथा पर प्रभावः—

''मानवीय समाज में परिवार एक अनिवार्य आवश्यकता है और विवाह परिवार के निर्माण का एक प्रमुख आधार। इसलिए प्रत्येक समाज में वैवाहिक सम्बन्धों को स्थायी बनाने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए नियमों एवं उपनियमों की व्यवस्था भी की जाती है। परन्तु इसके साथ ही साथ प्रत्येक समाज में असफल वैवाहिक सम्बन्धों को समाप्त करने के लिए कोई न कोई रास्ता निकाल लिया जाता है। वह रास्ता जो वैवाहिक सम्बन्धों को भंग कर देता है, न तो अच्छी दृष्टि से देखा जाता है और न ही कोई समाज ऐसी व्यवस्था को प्रोत्साहित करता है। मीणा जनजाति में भी तलाक की प्रथा देखी गई। जिसमें तलाक का अधिकार पुरूषों को अधिक दिया जाता था साथ ही परस्त्री या परपुरूष—गमन और स्त्री के बांझपन के आधार पर तलाक हो जाता था।''[20]

नब्बे के दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो शैक्षिक स्तर बढ़ा, सामाजिक नियमों में शिथिलता आई, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, कानूनी ज्ञान का विकास हुआ आदि पक्षों के कारण समाज के लोगों की सोच बदली, पुरूषों के समान ही महिलाओं को अधिकार मिले, क्योंकि पूर्व में मीणा समाज की महिलाओं को अपने अधिकारों का ज्ञान नहीं था। यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया। जिसमें तलाक प्रथा पर क्या प्रभाव पड़ा आदि पक्षों के लिए तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.13

वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की तलाक प्रथा पर प्रभाव पड़ा

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	हाँ	117(78.00)	119(79.33)	236(78.67)
2	नहीं	33(22.00)	31(20.67)	64(21.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका 4.13 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 236 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 78.67 प्रतिशत है। वहीं 64(21.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता अपना मत नहीं के पक्ष में व्यक्त करते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति की तलाक प्रथा प्रभावित हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.13(अ)

मीणा जनजाति की तलाक प्रथा पर किस प्रकार प्रभाव पड़ा

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	सामाजिक व पारिवारिक बन्धनों में कमी	60(51.28)	64(53.78)	124(52.54)
2	भौतिकवादी सोच में वृद्धि	34(29.67)	31(26.05)	65(27.54)
3	एकांकी परिवारों की संख्या में वृद्धि	70(59.83)	84(70.59)	154(65.26)
4	पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता मेल–मिलाप	50(42.74)	52(43.70)	102(43.22)
5	स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों में खुलापन	59(50.43)	54(45.38)	113(47.88)
6	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	49(41.88)	45(37.82)	94(39.83)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 236 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 117 व 119 तथा 236 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.13(अ) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 124(52.54) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से सामाजिक व पारिवारिक बन्धनों में कमी आई है। जबकि 65(27.54) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि भौतिकवादी सोच में वृद्धि हुई है। वहीं 154(65.26) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से एकांकी परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई। जबकि 102(43.22) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते मेल–मिलाप ने भी तलाक प्रथा को प्रभावित किया है। 113(47.88) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने ने स्वीकार किया कि स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों में खुलापन आने से भी तलाक प्रथा में परिवर्तन हुआ है। वहीं 94(38.83) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि होने से तलाक प्रथा में परिवर्तन हुआ है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव एकांकी परिवारों की संख्या में वृद्धि का रहा है। जिसके कारण मीणा जनजाति के पुरूष व महिलाओं में परम्परागत तलाक प्रथा के प्रति सोच बदल रही है, यह वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक प्रभाव है।

लैंगिक भेदभाव पर प्रभावः—

''भारतीय समाज में स्त्री व पुरूष की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति में भिन्नता रही है। जैविकीय आधार पर तो स्त्री–पुरूष में अन्तर स्वाभाविक है, लेकिन सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से विभेदीकरण समाज द्वारा निर्मित है।''[21] ''पूर्व में मीणा जनजाति में यह प्रथा नाम–मात्र की थी। क्योंकि ये लोग जंगलीय क्षेत्रों में निवास करते थे, इसलिए उनका सामाजिक सम्पर्क नहीं था। जब सम्पर्क सभ्य जातियों की तरफ बड़ा तो यह प्रथा भी मीणा समाज में व्याप्त हो गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद स्त्रियों की स्थिति में कुछ परिवर्तन आया, पर नाममात्र का। महिलाओं को कुछ अधिकार मिले, पर स्थिति समाज में वैसी की वैसी रही। क्योंकि समाज के नियमों में कठोरता थी, जिसके कारण लैंगिक भेदभाव की प्रथा में कमी नहीं आई।

वैश्वीकरण से शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, पुरूष–महिला के सम्बन्धों में खुलापन आया, सामाजिक नियमों में शिथिलता आई, आदि कारणों से मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव में परिवर्तन देखा गया। यह वैश्वीकरण का ही सकारात्मक प्रभाव है। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया है। जिसमें लैंगिक भेदभाव पर क्या प्रभाव पड़ा आदि पक्षों के लिए तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.14

वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	हाँ	115(76.67)	112(74.67)	227(75.67)
2	नहीं	35(23.33)	38(25.33)	73(24.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.14 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 227 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 75.67 प्रतिशत है। वहीं 73 उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 24.33 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया। जिसके सम्बन्ध में कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.14(अ)

किस प्रकार मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	70(60.87)	66(58.93)	136(59.91)
2	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	50(43.48)	52(46.43)	102(44.93)
3	मीड़िया की बढ़ती पहुँच	48(41.74)	46(41.07)	94(41.41)
4	सरकारी योजनाओं में महिलाओं की भूमिका	50(43.48)	65(58.04)	115(50.66)
5	महिला–पुरूषों के सम्बन्ध में खुलापन	30(26.09)	33(29.47)	63(27.75)
6	सामाजिक सोच में बदलाव	40(34.78)	38(33.93)	78(34.36)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 227 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 115 व 112 तथा 227 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.14(अ) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 136(59.91) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि से लैंगिक भेद–भाव के स्तर में कमी आई। वहीं 102(44.93) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से लैंगिक भेदभाव में कमी आई है। 94(41.41) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि मीड़िया की पहुँच के कारण लैंगिक भेदभाव में कमी आई है। जबकि 115(50.66) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सरकारी योजनाओं में महिलाओं की भागीदारी को माना। वहीं 63(27.75) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि महिला–पुरूषों के सम्बन्धों में खुलापन आया। जबकि 78(34.36) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि सामाजिक सोच में बदलाव आया। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा। अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण से महिला–पुरूषों में लिंग के आधार पर भेद–भाव कम हुए, यह वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक प्रभाव है।

सामाजिक सेवाओं पर प्रभावः–

पूर्व में मीणा जनजाति के पुरूष व महिलाएँ दोनों ही सामाजिक सेवा कार्यों से जुड़े हुए थे। पुरूष जाति पंचायतों एवं चौपालों के माध्यम से आपसी झगड़ों का निपटारा किया करते थे। जबकि महिलाएँ महिलाओं से जुड़ी हुई, कई समस्याओं का समाधान करती थी। यद्यपि सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के बाद मीणा जनजाति की सामाजिक सेवाओं का दायरा बढ़ गया, जिससे इनमें आत्मविश्वास की भावना पैदा हुई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इनकी सेवाओं को सरकार के प्रयासों से शुरू किया गया, पर शिक्षा का अभाव होने के कारण पूरी तरह से सामाजिक सेवा का लाभ नहीं मिल सका।

नब्बे के दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो शिक्षा का स्तर बढ़ा, सूचना क्रांति आई, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, सामाजिक नियमों में शिथिलता आई, पंचायतों का प्रभाव कम हुआ आदि कारणों से मीणा जनजाति में विकास की लहर जागी। जिसके कारण सामाजिक सेवाओं में परिवर्तन आया और साथ ही जनजातीय संगठनों का निर्माण हुआ। इस आधुनिकता की दौड़ में एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरियाँ कम हुई, तो सम्पर्कों का विस्तार हुआ। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र कि मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया। जिसमें परम्परागत सामाजिक सेवाओं पर क्या प्रभाव पड़ा। प्रभावों एवं मतों सहित तथ्यों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.15

वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति की सामाजिक सेवाओं को प्रभावित किया

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	जातिगत आधारित सेवाओं का ह्रास	76(50.67)	74(49.33)	150(50.00)
2	परम्परागत सामाजिक नियमों व कानूनों का ह्रास	84(56.00)	81(54.00)	165(55.00)
3	बढ़ते गैर–सरकारी संगठनों का प्रभाव	52(34.67)	47(31.33)	99(33.00)
4	सरकार द्वारा सामाजिक सेवाओं पर बल	40(26.67)	42(28.00)	82(27.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.15 आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 150(50.00) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने वैश्वीकरण का प्रभाव जातिगत सेवाओं के ह्रास को माना, जो सर्वाधिक है। वहीं 165(55.00) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने परम्परागत सामाजिक नियमों व कानूनों के ह्रास को माना, जो सर्वाधिक से कम है। जबकि 99(33.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने बढ़ते गैर–सरकारी संगठनों के प्रभाव को माना है। वहीं 82(27.33) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सरकार द्वारा सामाजिक सेवाओं पर बल को भी स्वीकार किया है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से, परम्परागत सामाजिक सेवाओं ह्रास हुआ। जो वैश्वीकरण का मीणा जनजाति की सामाजिक सेवाओं पर नकारात्मक प्रभाव है।

चिकित्सा सेवाओं पर प्रभावः–

पूर्व में मीणा जनजाति जंगलीय क्षेत्रों में निवास करती थी। जिसके कारण इनकी परम्परागत चिकित्सा पद्धति जंगल के नियमों पर आधारित थी अर्थात् इलाज के तौर–तरीके, जड़ी–बुटियों पर आधारित होते थे। सभ्य जातियों के सम्पर्क में आई तो इलाज के परम्परागत तरीकों में परिवर्तन देखा गया, पर परिवर्तन नाममात्र का हुआ। स्वतन्त्रता के बाद भी मीणा जनजाति के लोग ''इलाज हेतु आधुनिक चिकित्सा केन्द्रों की ओर नहीं जाकर पुजारी अथवा शमन की शरण लेते थे और साथ ही बीमारी को एक देवी–प्रकोप के रूप में मानते थे।''[22] क्योंकि उस समय भी इनमें शिक्षा व जागरूकता की कमी थी।

वैश्वीकरण से शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, सूचना क्रांति आई, सामाजिक नियमों में परिवर्तन हुआ आदि कारणों से मीणा जनजाति की परम्परागत

चिकित्सा सेवाओं में परिवर्तन हुआ। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के परम्परागत चिकित्सा सेवाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव क्या पड़ा। मतों एवं प्रभावों को तथ्यों सहित निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.16

वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की चिकित्सा सेवाओं पर प्रभाव

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	125(33.33)	120(80.00)	245(81.67)
2	नहीं	25(16.67)	30(20.00)	55(18.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.16 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 245 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 81.67 प्रतिशत है। वहीं 55(18.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता नहीं के पक्ष में है। अतः तालिका के आधार यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति की परम्परागत चिकित्सा सेवाओं पर प्रभाव पड़ा। जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.16 (अ)

मीणा जनजाति की चिकित्सा सेवाओं को किस प्रकार प्रभावित किया

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	चिकित्सा के परम्परागत तरीकों में परिवर्तन	71(56.08)	66(55.00)	137(55.92)
2	नीम–हकीमों का घटता प्रभाव	76(60.08)	80(66.67)	156(63.67)
3	सूचना क्रांति से चिकित्सा सेवा में वृद्धि	73(58.04)	74(61.67)	147(60.00)
4	प्रतिस्पर्दा से चिकित्सा सेवाओं का सस्ता होना	19(15.20)	18(15.00)	37(15.10)
5	भारतीय दवाओं की जगह अंग्रेजी दवाओं के प्रयोग में वृद्धि	80(64.00)	76(63.33)	156(63.67)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 245 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 125 व 120 तथा 245 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.16 (अ) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 137(55.92) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से चिकित्सा के परम्परागत तरीकों में परिवर्तन हुआ है। जबकि 156(63.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से नीम–हकीमों का प्रभाव घटा है। वहीं 147(60.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि सूचना क्रान्ति से चिकित्सा सेवाओं में वृद्धि हुई। 37(15.10) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रतिस्पर्दा से चिकित्सा सेवाओं का सस्ता होना भी बताया है। वहीं 156(63.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से भारतीय दवाओं की जगह अंग्रेजी दवाओं के प्रयोग में वृद्धि हुई है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव नीम हकीमों का घटता प्रभाव रहा है। जिसके कारण नई तकनीकी से इलाज करवाने लगे हैं। इस प्रकार परम्परागत चिकित्सा पद्धति पर वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

मीणा जनजाति के आर्थिक जीवन स्तर पर प्रभावः–

''अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक जीवन दोनों एक–दूसरे के पूरक है।''[23] आर्थिक परिवर्तन ने मीणा जनजाति के जीवन स्तर के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन किया। पूर्व में यह जनजाति शहर से दूर–दराज पहाड़ी एवं जंगलीय क्षेत्रों में जीवन–यापन करती थी साथ ही आर्थिक रूप से केवल कृषि तथा पशुपालन पर ही निर्भर थी। जिसके कारण इनका आर्थिक जीवन स्तर बहुत ही सामान्य सा हुआ करता था। स्वतन्त्र भारत में इनको आरक्षण मिला तो इनकी आर्थिक क्रियाओं में कुछ परिवर्तन हुआ। यद्यपि मीणा जनजाति में शिक्षा एवं सूचना तकनीकी का अभाव होने के कारण परम्परागत कृषि व पशुपालन के कार्यों में नई तकनीकी का प्रयोग पूर्णरूप से नहीं हो सका, साथ ही रोजगार का भी अभाव रहा। जिसके कारण इनका परम्परागत आर्थिक जीवन स्तर स्वतन्त्रता के बाद भी नगण्य ही रहा है।

नब्बे के दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो मीणा जनजाति के आर्थिक जीवन स्तर में परिवर्तन हुआ जैसे– शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, कृषि कार्य में नई तकनीकी का प्रयोग बढ़ा, समाज के नियमों में बदलाव आया, व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी, आरक्षण से नौकरियों में संख्या बढ़ी आदि पक्षों के कारण मीणा जनजाति के आर्थिक विकास का स्तर उच्च हुआ। परन्तु आज भी मीणा जनजाति में एक वर्ग जो निम्न श्रेणी का है, वह आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है अर्थात् उच्च वर्ग का विकास होता जा रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि मीणा जनजाति के आर्थिक जीवन स्तर में वैश्वीकरण के कारण परिवर्तन आ रहा है। यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के आर्थिक जीवन स्तर पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है। साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.17

वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	120(80.00)	118(78.67)	238(79.33)
2	नहीं	30(20.00)	32(21.33)	62(20.67)
	योग	150(100.0)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.17 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 238 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 79.33 प्रतिशत है। वहीं 62 उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 20.67 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ है, जो कुल का सर्वाधिक प्रतिशत है। जबकि कुछ (20.67 प्रतिशत) उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते, जो सर्वाधिक से कम है।

तालिका संख्या 4.17(अ)

किस प्रकार मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	आधुनिक संसाधनों से कृषि कार्य	80(66.67)	78(66.10)	158(66.39)
2	वैज्ञानिक तरीकों से पशुपालन	71(59.17)	73(61.87)	144(60.51)
3	नवीन तकनीकी से उद्योगों का संचालन	69(57.05)	74(62.71)	142(59.66)
4	आधुनिक तरीकों से घरेलू कार्य	49(40.83)	59(50.00)	108(45.80.)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 238 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 120 व 118 तथा 238 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.17 (अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 158(66.39) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि आधुनिक संसाधनों से कृषि कार्य किया जा रहा है। जबकि 144(60.51) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैज्ञानिक तरीकों से पशुपालन का कार्य किया जा रहा है। वहीं 142(59.66) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि नवीन तरीकों से उद्योगों का संचालन किया जा रहा है।

जबकि 108(45.38) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से आधुनिक तरीकों से घरेलू कार्यों का संचालन होने लगा है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव आधुनिक संसाधनों से कृषि कार्य का रहा है।

व्यावसायिक गतिशीलताः—

व्यावसायिक गतिशीलता से अभिप्राय एक जगह से दूसरी जगह पर उत्पादन के कारकों व संसाधनों की गतिशीलता से है। साधारण शब्दों में व्यावसायिक गतिशीलता से अभिप्राय आर्थिक क्रियाओं की गतिशीलता से है, जिसमें उत्पादन के कारक एवं संसाधन दोनों शामिल है। ऐसा ही मीणा जनजाति में भी देखा गया है, क्योंकि समय में उत्पादन के साधन परम्परागत तरीके के होते थे। जिसके कारण उत्पादन की क्रियाओं व संसाधनों में गतिशीलता का अभाव था। भारत में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी हुई, उत्पादन की क्रियाओं व संसाधनों में परिवर्तन हुआ। जिसके कारण मीणा जनजाति के आर्थिक जीवन स्तर में परिवर्तन हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के उत्तरदाताओं से व्यावसायिक गतिशीलता के बारे में जानने की कोशिश की गई। व्यावसायिक गतिशिलता के सम्बन्ध में तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.18

वैश्वीकरण से मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	122(81.33)	118(78.67)	240(80.00)
2	नहीं	28(18.67)	32(21.33)	60(20.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.18 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 240 उत्तरदाताओं का तर्क है कि वैश्वीकरण से व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी, जिनका प्रतिशत 80.00 प्रतिशत है। वहीं 60(20.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी हैं, जो ऐसा नहीं मानते अर्थात् व्यावसायिक गतिशीलता नहीं बढ़ी। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति में वैश्वीकरण से व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है। यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 4.18(अ)

मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ने के कारण

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	सूचना क्रांति के कारण	46(37.71)	50(42.37)	96(38.87)
2	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	86(70.49)	84(71.19)	170(68.83)
3	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	74(60.66)	72(61.02)	146(59.11)
4	बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कारण	27(22.13)	25(21.19)	52(21.05)
5	कुटीर उद्योग आधारित व्यवसायों में कमी	65(53.28)	60(50.85)	125(50.61)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 240 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 122 व 118 तथा 240 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.18(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 96(38.87) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि सूचना क्रान्ति से व्यावसायिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है। वहीं 170(68.83 योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि से व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है। जबकि 146(59.11) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है। वहीं 52(21.05) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आने से भी व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है। 125(50.61) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि कुटीर उद्योग आधारित व्यवसायों में कमी से व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है। जिसके कारण मीणा जनजाति की व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ रही है। यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है, इसलिए सकारात्मक प्रभावों की संख्या प्रतिशत सर्वाधिक है।

तालिका संख्या 4.19

व्यावसायिक गतिशीलता ने मीणा जनजाति को किस प्रकार प्रभावित किया

क्र.सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	आय में वृद्धि हुई	52(34.67)	47(31.33)	99(33.00)
2	आय में कमी हुई	30(20.00)	31(20.67)	61(20.33)
3	रोजगार में वृद्धि	41(27.33)	43(28.67)	84(28.00)
4	कोई प्रभाव नहीं पड़ा	27(18.00)	29(19.33)	56(18.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.19 से स्पष्ट होता है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 99(33.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि व्यावसायिक गतिशीलता से आय में वृद्धि हुई है। वहीं 61(20.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि व्यावसायिक गतिशीलता से आय में कमी हुई। जबकि 84(28.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि व्यावसायिक गतिशीलता से रोजगार के क्षेत्र में वृद्धि हुई तथा 56(18.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि व्यावसायिक गतिशीलता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि व्यावसायिक गतिशीलता ने मीणा जनजाति के आर्थिक जीवन को प्रभावित किया। प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव आय में वृद्धि का रहा है जो सर्वाधिक है। परन्तु कुछ उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते अर्थात् कोई प्रभाव नहीं पड़ा, जो सर्वाधिक से कम है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक गतिशीलता का सकारात्मक प्रभाव पड़ा। क्योंकि इसके कारण मीणा जनजाति की आय में वृद्धि, रोजगार में वृद्धि जो सर्वाधिक प्रतिनिधित्व करते हैं, यह आर्थिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 4.20

वैश्वीकरण से ग्रामीण प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	हाँ	122(81.33)	119(79.33)	241(80.33)
2	नहीं	28(81.67)	31(20.67)	59(19.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.20 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 241(80.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता हाँ के पक्ष में। वहीं 59(19.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता नहीं के पक्ष में है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति के युवा वर्ग का गाँवों से शहरों की ओर पलायन बढ़ा, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है। परन्तु कुछ उत्तरदाता इसके पक्ष में नहीं, जिनका प्रतिशत सर्वाधिक से कम है।

तालिका संख्या 4.20(अ)

ग्रामीण प्रतिभाओं के पलायन बढ़ने के कारण

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	परम्परागत व्यवसायों के उत्पादन में गिरावट	87(71.31)	74(62.19)	161(66.81)
2	कुटीर एवं लघु उद्योगों का बन्द होना	82(67.21)	70(58.82)	152(63.07)
3	उच्च व तकनीकी शिक्षा का अभाव	92(75.41)	89(74.79)	181(75.10)
4	योग्यता के अनुसार रोजगार न मिलना	65(53.28)	58(48.74)	123(51.04)
5	क्षैत्रीय स्तर पर पर्याप्त पहचान का अभाव	56(45.90)	52(43.70)	108(44.81)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 241 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 122 व 119 तथा 241 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.20(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओ में से 161(86.81) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि परम्परागत व्यवसायों के उत्पादन में गिरावट से भी पलायन बढ़ा है। वहीं 152(63.07) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि ग्रामीण स्तर पर लघु व कुटीर उद्योगों का पतन हुआ। जबकि 181(75.10) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि उच्च व तकनीकी शिक्षा का अभाव होने से पलायन हुआ। वहीं 123(51.04) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि ग्रामीण स्तर पर योग्यता के अनुसार रोजगार न मिलने से भी पलायन बढ़ा है। जबकि 108(44.81) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि क्षैत्रीय स्तर पर पर्याप्त पहचान का अभाव होने से पलायन बढ़ा है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि उपर्युक्त कारणों में सर्वाधिक कारण ग्रामीण स्तर पर उच्च व तकनीकी शिक्षा के अभाव का रहा है। अतः ग्रामीण स्तर पर रोजगार, शिक्षा व परम्परागत व्यवसायों में ह्रास आदि के कारण पलायान बढ़ा है। यह वैश्वीकरण का ग्रामीण प्रतिभाओं पर नकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 4.21

वैश्वीकरण से कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	117(78.00)	113(75.33)	230(76.67)
2	नहीं	33(22.00)	37(24.67)	70(23.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका सं. 4.21 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 230 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 76.67 प्रतिशत है। वहीं 70(23.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी हैं, जो नहीं के पक्ष में अपना मत व्यक्त करते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण ने कृषि व्यवसाय को प्रभावित किया। जिसके कारण कृषि की जगह उद्योगों की और पलायन बढ़ा है, परन्तु कुछ उत्तरदाता असहमत है। जिनका मत सर्वाधिक से कम है।

तालिका संख्या 4.21(अ)

कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ने के कारण

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	कृषि में कम पैदावार का होना	66(56.41)	62(54.87)	128(55.65)
2	कृषि कार्य के उपकरणों का महँगा होना	81(69.23)	70(61.95)	151(65.65)
3	उचित मूल्यों पर खाद–बीज का न मिलना	70(59.83)	72(63.72)	142(61.74)
4	फसल का उचित मूल्य नहीं मिलना	84(71.80)	77(68.14)	161(70.00)
5	मौसमी प्रकोप का आना	97(85.91)	95(84.07)	192(83.48)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 230 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 117 व 113 तथा 230 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.21(अ) के आंकड़े दर्शाते है कि कुल उत्तरदाताओं में से 128(55.65) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से कृषि व्यवसाय में कम पैदावार हुई। वहीं 151(65.65) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि

वैश्वीकरण से कृषि कार्यों के उपकरणों का महँगा होना है। जबकि 142(61.74) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से उचित मूल्यों पर खाद–बीज का उपलब्ध न होना है। वहीं 161(70.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि फसल का उचित मूल्य न मिल पाने से भी उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। जबकि 192(83.48) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि कृषि में मौसमी प्रकोप आने के कारण भी उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि उपर्युक्त कारणों से कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी है, क्योंकि वैश्वीकरण से परम्परागत व्यवसायों का ह्यस हुआ, उत्पादन में गिरावट आई एवं कृषि कार्य के उपकरण महँगें हुए आदि कारणों से उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी। अतः अध्ययन क्षेत्र में कृषक, कृषि कार्य की जगह उद्योगों की ओर बढ़ रहे हैं। यह वैश्वीकरण का कृषकों पर नकारात्मक प्रभाव है, क्योंकि नकारात्मक प्रभावों व कारणों की संख्या प्रतिशत सर्वाधिक है।

तालिका संख्या 4.22

वैश्वीकरण का कृषि व्यवसाय पर (नकारात्मक) प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष (प्रतिशत)	महिला (प्रतिशत)	
1	कृषि के संसाधनों का महँगा होना	71(47.33)	74(49.33)	145(48.33)
2	परम्परागत संसाधनों का ह्यस	52(34.67)	52(34.67)	104(34.67)
3	खाद–बीज व कीटनाशक दवाइयों का महंगा होना	84(56.00)	81(54.00)	165(55.00)
4	कृषि आधारित उद्योग धन्धें बन्द होना	81(54.00)	83(55.33)	164(54.67)
5	अधिक रासायनिक खाद के उपयोग से भूमि के उर्वरक का नष्ट होना	52(34.67)	51(34.00)	103(34.33)
6	कृषि व्यवसाय में रूचि का कम होना	89(59.33)	91(60.67)	170(56.67)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.22 के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 145(48.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से कृषि के संसाधन महँगे हुए। जबकि 104(34.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से परम्परागत संसाधनों का ह्यस हुआ। वहीं 165(55.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से खाद बीज व कीटनाशक दवाईयाँ महँगी हुई। जबकि 164(54.

67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि वैश्वीकरण से कृषि आधारित उद्योग धन्धें बंद हुए। वहीं 103(34.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से कृषि के व्यवसाय में रूचि कम हुई। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि नकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव कृषि आधारित उद्योग धन्धे बन्द होने का रहा है। अतः वैश्वीकरण का परम्परागत कृषि व्यवसाय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

तालिका संख्या 4.22(अ)

वैश्वीकरण का कृषि व्यवसाय पर(सकारात्मक) प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष (प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	कृषि में नई तकनीकी व मशीनरी का प्रयोग	84(56.00)	83(55.33)	167(55.67)
2	संचार के संसाधनों से कीटनाशक दवाईयों के बारे में जानकारी मिलना	79(52.67)	84(56.00)	163(54.33)
3	प्रतिस्पर्दा से किसानों की फसल का उचित मूल्य मिलना	52(34.67)	48(32.00)	100(33.33)
4	नवीन खाद–बीजों का प्रचलन	56(37.33)	58(38.67)	114(38.00)
5	नई तकनीकी से मृदा की जाँच	40(26.67)	38(25.33)	78(26.00)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.22 (अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 167(55.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से कृषि में नई तकनीकी व मशीनरी का प्रयोग बढ़ा। जबकि 163(54.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने ने माना कि संचार के संसाधनों से कीटनाशक दवाईयों के बारे में जानकारी मिली। 100(33.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि प्रतिस्पर्दा से किसानों की फसल का उचित मूल्य मिला। वहीं 141(38.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से कृषि में नवीन खाद बीजों का प्रचलन बढा। जबकि 78(26.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि नई तकनीकी से मृदा की जाँच में सफलता मिली। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से कृषि व्यवसाय प्रभावित हुआ। सकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव कृषि में नई तकनीकी व मशीनरी के प्रयोग में वृद्धि का रहा है।

तालिका संख्या 4.23

वैश्वीकरण के कारण लघु एवं कुटीर उद्योगों धन्धों का नष्ट होना

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	125(83.33)	122(81.33)	247(82.33)
2	नहीं	25(16.67)	38(25.33)	63(21.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.23 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 247(82.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता हाँ के पक्ष में है। वहीं 63(21.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जो नहीं के पक्ष में मत प्रकट करते हैं। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण के कारण लघु एवं कुटीर उद्योग धन्धें नष्ट हुए, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है। यह वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 4.24

वैश्वीकरण का गरीब एवं निम्न आय वर्ग पर सकारात्मक प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	वैज्ञानिक तरीकों से उत्पादन में वृद्धि	94(62.67)	93(62.00)	187(62.33)
2	जीवन स्तर का उच्च होना	40(26.67)	42(28.00)	82(27.33)
3	आय के संसाधनों में वृद्धि	49(32.67)	52(34.67)	101(33.67)
4	सामाजिक परिवेश में बदलाव	60(40.00)	52(34.67)	112(37.33)

138

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.24 के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 187(62.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया है कि वैज्ञानिक तरीकों से उत्पादन में वृद्धि हुई। जबकि 82(27.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से जीवन स्तर उच्च हुआ है। वहीं 101(33.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से आय के संसाधनों में वृद्धि हुई है। जबकि 112(37.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि सामाजिक परिवेश में बदलाव आया। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि सकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव वैज्ञानिक तरीकों से

उत्पादन में वृद्धि का रहा है। जिसके कारण मीणा जनजाति में गरीब व अमीर की दूरियाँ कम हुई, जो वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 4.24(अ)

वैश्वीकरण का गरीब एवं निम्न आय वर्ग पर नकारात्मक प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	गरीब और गरीब हो गया	84(56.00)	82(54.67)	166(53.33)
2	भौतिकवादी मानव का जन्म	51(34.00)	49(32.67)	100(33.33)
3	संसाधनों की पहुँच से दूर	33(22.00)	29(19.33)	62(20.67)
4	वस्तु एवं सेवाओं का महंगा होना	92(61.33)	95(63.33)	187(62.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.24(अ) आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 166(55.33) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं का समूह यह स्वीकार करता है कि वैश्वीकरण से गरीब और गरीब हो गया है। जो कुल संख्या का सर्वाधिक प्रतिशत है। वहीं 100(33.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने भौतिकवादी मानव का जन्म होना माना है। जो सर्वाधिक से कम है। जबकि 62(20.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने संसाधनों की पहुँच से दूर होना माना है। वहीं वस्तु एवं सेवाओं के महँगा होने के पक्ष में 187(63.33) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपना मत व्यक्त किया है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि नकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव गरीब और गरीब हो गया अर्थात् गरीब और अमीर में असमानता पैदा हुई का रहा है। जो वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव रहा है।

तालिका संख्या 4.25

वैश्वीकरण ने आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष (प्रतिशत)	महिला (प्रतिशत)	
1	सहमत	112(74.67)	110(73.33)	222(74.00)
2	असहमत	21(14.00)	25(16.67)	46(15.33)
3	तटस्थ	17(11.33)	15(10.00)	32(10.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.25 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 222 उत्तरदाता सहमत के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 74.00 प्रतिशत है। वहीं 46 उत्तरदाता असहमत के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 15.33 प्रतिशत है। जबकि 32(10.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, इस प्रश्न पर तटस्थ मत अपना रहे हैं। अर्थात न तो सहमत के पक्ष में और न ही असहमत के पक्ष में है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की आर्थिक असमानता में वृद्धि हुई, जो सहमत के पक्ष में कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.25(अ)

आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया के सहमत के कारण

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	भौतिकवादी सोच में वृद्धि	45(40.18)	42(38.18)	87(39.19)
2	व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि	66(58.93)	62(56.36)	128(57.66)
3	संसाधनों पर वर्ग विशेष का प्रभुत्व	81(72.32)	83(75.46)	164(73.87)
4	गरीब व अमीर में दूरियाँ	76(67.86)	79(71.82)	155(69.82)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 222 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 112 व 110 तथा 222 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.25(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 87(39.19) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि भौतिकवादी सोच में वृद्धि से आर्थिक अमानता बढ़ी है। जबकि 128(57.66) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि से आर्थिक अमानता बढ़ी। वहीं 64(73.87) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि संसाधनों पर वर्ग विशेष का प्रभुत्व बढ़ने से आर्थिक अमानता बढ़ी है। जबकि 155(69.82) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि गरीब व अमीर में दूरियाँ बढ़ने से असमानता बढ़ी है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर ज्ञात होता है कि उपर्युक्त कारणों में सर्वाधिक कारण संसाधनों पर वर्ग विशेष का प्रभुत्व रहा है। यह वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 4.26

वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति के कृषकों की दयनीय स्थिति हुई

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
1	हाँ	120(80.00)	117(78.00)	237(79.00)
2	नहीं	30(20.00)	33(22.00)	63(21.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.26 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 237(79.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता हाँ के पक्ष में। जबकि 63(21.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता नहीं के पक्ष में है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कृषकों की दयनीय स्थिति हुई, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है। परन्तु कुछ उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते है।

तालिका संख्या 4.26(अ)

मीणा जनजाति के कृषकों की दयनीय स्थिति हुई के कारण

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष (प्रतिशत)	महिला (प्रतिशत)	
1	कृषि आधारित परम्परागत व्यवसायों का ह्रास	66(55.00)	67(57.27)	133(56.12)
2	कुटीर उद्योग आधारित व्यवसायों का ह्रास	74(61.67)	79(67.52)	153(64.56)
3	उपज का उचित मूल्य नहीं मिलना	84(70.00)	83(70.94)	167(70.47)
4	बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बाज़ार में आना	49(40.83)	48(41.03)	97(40.93)
5	कृषि आधारित संसाधनों का महँगा होना	76(63.33)	74(63.25)	150(63.29)
6.	मौसमी प्रकोप आना	93(77.05)	95(81.20)	188(79.33)
	उचित मूल्य पर खाद् बीज न मिलना	70(58.33)	72(61.54)	142(59.92)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 237 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 120 व 117 तथा 237 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.26(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 133(56.12) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि कृषि आधारित परम्परागत व्यवसायों में ह्रास के कारण कृषकों की दयनीय स्थिति हुई। जबकि 153(64.56) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि कुटीर उद्योग आधारित व्यवसायों का ह्रास होने से कृषकों की दयनीय स्थिति हुई। वहीं 167(70.47) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि फसल का उचित मूल्य न मिलने से भी किसानों की दयनीय स्थिति हो रही है। जबकि

97(40.93) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बाजार में आने से भी कृषकों की दयनीय स्थिति पैदा हो रही है। वहीं 150(63.29) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि कृषि आधारित संसाधनों का महँगा होने से भी कृषकों की दयनीय स्थिति हुई। जबकि 188(79.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि माना कि मौसमी प्रकोप आने से कृषकों की दयनीय स्थिति हुई। वहीं 142(59.92) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि उचित मूल्यों पर खाद बीज न मिलने से कृषकों की दयनीय स्थिति हो रही है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कारणों में सर्वाधिक कारण कृषि में मौसमी प्रकोप आने का रहा है। जिसके कारण कृषकों की स्थिति दयनीय हुई, यह वैश्वीकरण का कृषकों पर नकारात्मक प्रभाव है।

मीणा जनजाति के राजनीतिक जीवन स्तर पर प्रभावः–

मीणा जनजाति का राजनीतिक जीवन स्तर ठीक था। परम्परागत न्यायिक निर्णय जाति पंचायतों के माध्यम से किये जाते थे और साथ ही इन पंचायतों के निर्णय सर्वमान्य होते थे। जिसके कारण मीणा जनजाति के अनेक सामाजिक झगड़े एवं मुद्दे विशेषकर विवाह, तलाक, नाता, मौसर, चरित्रहीनता, ऋण आदि जाति पंचायतों के माध्यम से खत्म कर दिये जाते थे।

मीणा जनजाति के लोग अर्थात् पुरूष गांव और जनजातीय संगठन का मुखिया होता था। जिसको जाति पंयायत का मुखिया या पटेल कहा जाता था। तथाकथित सभ्य समाज के सम्पर्क में आने के कारण इनकी परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में थोड़ा परिवर्तन हुआ, पर जाति आधारित निर्णयों का निपटारा तो जाति पंचों के माध्यम से ही खत्म किया जाता था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मीणा जनजाति की जाति पंचायतों में कुछ परिवर्तन हुआ। परन्तु मीणा जनजाति में शिक्षा का अभाव होने के कारण इनमें जागरूकता की कमी रही अर्थात् स्वतन्त्रता के बाद भी इनके राजनीतिक जीवन में परिवर्तन नाममात्र का हुआ।

यद्यपि मीणा जनजाति में राजनीतिक सुधार नब्बे के दशक के बाद व्यापक रूप से फैला, क्योंकि भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया का आगमन हो गया था। जिसने सभी क्षेत्रों के साथ–साथ मीणा जनजाति के राजनीतिक अधिकारों को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया। वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, रोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिला। इसके साथ ही विज्ञापन, मीड़िया, सरकार द्वारा संचालित योजनाएँ, सूचना क्रांति आदि के माध्यम से राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता आई। राजनीतिक जागरूकता से मतदान में भागीदारी बढ़ी, राजनीतिक अधिकारों का ज्ञान हुआ, राजनीतिक दलों में हिस्सेदारी बढ़ी तथा राजनीति के उच्च्य पदों पर मीणा समाज के लोग आसीन हुए।

वैश्वीकरण ने यद्यपि मीणा जनजाति के जीवन स्तर में परिवर्तन किया। यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है, परन्तु वर्तमान में अभी भी राजनीतिक विकास की जरूरत है।

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के राजनीतिक जीवन पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.27

वैश्वीकरण से परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	122(81.33)	120(80.00)	242(80.67)
2	नहीं	28(18.67)	30(20.00)	58(19.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.27 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 242(80.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत हाँ के पक्ष में है। वहीं 58(19.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत नहीं के पक्ष में है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन हुआ है। जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.27(अ)

परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन के कारण

क्र. सं.	कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	87(71.31)	84(70.00)	171(70.66)
2	मीड़िया द्वारा राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता	91(74.59)	93(77.05)	184(76.03)
3	युवा पीढ़ी द्वारा वंशवाद की उपेक्षा	84(68.85)	81(67.05)	165(68.18)
4	लोकतंत्रवादी सोच में वृद्धि	74(60.66)	65(54.17)	139(57.44)
5	जातिगत पंचायतों के प्रभाव में कमी	76(62.30)	69(57.05)	145(59.92)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 242 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 122 व 120 तथा 242 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.27(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाता में से 171(70.66) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि से परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन हुआ। वहीं 184(76.03) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि मीड़िया से राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी। जबकि 165(19.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने स्वीकार किया कि वैश्वीकरण से युवा पीढ़ी द्वारा वंशवाद की उपेक्षा की जा रही है। वहीं 139(57.44) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि लोकतंत्रवादी सोच में वृद्धि से परिवर्तन हुआ। जबकि 145(59.92) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि जातिगत पंचायतों के प्रभाव में कमी से परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन हुआ है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि उपर्युक्त कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया द्वारा राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने का रहा है। यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव रहा है।

राजनीतिक जागरुकताः—

राजनीतिक जागरुकता संवेगात्मक बुद्धि का ही एक भाग है, जिसका आशय मनुष्य का राजनीतिक दलों, नेताओं, कार्यक्रमों एवं नीतियों, प्रजातांत्रिक कार्यप्रणालियों आदि का ज्ञान रखना है। ऐसा ही आदिम मीणा जनजाति में ही देखा गया है। क्योंकि मीणा जनजाति के लोग दूर —दराज स्थानों पर निवास करते थे और साथ ही जाति पंचायत के नियमों और कार्यप्रणाली के बारे में जानते थे। स्वतंत्र भारत में मीणा जनजाति को आरक्षण तो मिला, पर इनके ज्ञान का स्तर जाति पंचायत के नियमों तथा परम्परागत रीति—रिवाजों तक ही सीमित रहा, जिसके कारण इनमें राजनीतिक जागरुकता नगण्य ही रही है।

नब्बे के दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो शिक्षा का स्तर बढ़ा, सामाजिक नियमों व कानूनों में शिथिलता आई, आरक्षण से स्थान निर्धारित हुए, लोकतंत्र में विश्वास पैदा हुआ, मतदान में सहभागिता बढ़ी आदि कारणों से मीणा जनजाति में राजनीतिक जागरुकता बढ़ी है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत राजनीतिक जागरुकता के बारे में जानने की कोशिश की गई साथ ही निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.28

वैश्वीकरण के कारण राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	120(80.00)	118(78.67)	238(79.33)
2	नहीं	30(20.00)	32(21.33)	62(20.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.28 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 238 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 79.33 प्रतिशत है। वहीं 62 उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 20.67 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है। परन्तु कुछ उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते, जो सर्वाधिक से कम है।

तालिका संख्या 4.28(अ)

राजनीतिक जागरूकता में किस प्रकार वृद्धि हुई

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	चुनाव प्रचार में भागीदारी	76(63.33)	73(61.87)	149(62.61)
2	मताधिकार के प्रयोग में चेतनता	81(67.05)	83(70.34)	164(68.91)
3	युवा नेतृत्त्व का विकास	91(75.83)	87(73.73)	178(74.79)
4	जाति पंचायतों की जगह लोकतंत्र में विश्वास	110(91.67)	107(90.68)	217(91.18)
5	राजनीतिक सोच में बदलाव	103(85.83)	97(82.20)	200(84.03)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 238 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 120 व 118 तथा 238 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.28(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 149(62.61) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से चुनाव प्रचार में भागीदारी बढ़ी है। जबकि 164(68.91) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से मताधिकार के प्रयोग में चेतना आई। वहीं 178(74.79) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि युवा नेतृत्त्व का विकास हुआ। जबकि 217(91.18) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि जातिगत पंचायतों की जगह लोकतंत्र में विश्वास बढ़ा है। वहीं 200(84.03) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि परम्परागत राजनीतिक सोच में बदलाव से राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव जाति पंचायतों की जगह लोकतंत्र में विश्वास पैदा हुआ का रहा है। क्योंकि प्रभावों की संख्या प्रतिशत सर्वाधिक है, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 4.28(ब)

राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि नहीं हुई के कारण

क्र. सं.	प्रभाव /कारण	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	उच्च व तकनिकी शिक्षा का अभाव	27(90.00)	30(93.75)	57(91.94)
2	जातिगत पंचायतों का महत्व	29(96.67)	31(96.87)	60(96.78)
3	जातिगत राजनीति में विश्वास	22(73.33)	24(75.00)	46(74.19)
4	सूचना तकनीकी का ज्ञान नहीं	17(56.67)	23(71.88)	40(64.52)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 62 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 30 व 32 तथा 62 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.28(ब) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाता में से 57(91.94) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि उच्च व तकनीकी शिक्षा का अभाव होने से राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि नहीं हुई। जबकि 60(96.78) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि जातिगत पंचायतों का महत्त्व होने से राजनीतिक जागरूकता नहीं बढ़ी। वहीं 46(74.19) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि जातिगत

राजनीति में विश्वास होने से राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि नहीं हुई। जबकि 40(64.52) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना तकनीकी का अभाव होने से राजनीतिक जागरूकता नहीं बढ़ी। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों/कारणों में सर्वाधिक कारण जाति पंचायतों का वर्तमान में भी प्रभाव रहा है। अतः मीणा जनजाति की राजनीतिक जागरूकता में कोई नहीं वृद्धि नहीं हुई अर्थात् वैश्वीकरण का प्रभाव नहीं पड़ा है।

तालिका संख्या 4.29

वैश्वीकरण के प्रभाव से युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई

क्र. सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	हाँ	120(80.20)	117(78.00)	237(79.00)
2	नहीं	30(20.00)	33(22.00)	63(21.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.29 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 237 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 79.00 प्रतिशत है। वहीं 63(21.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता जिनका मत नहीं के पक्ष में है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.29(अ)

युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में किस प्रकार वृद्धि हुई

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	लोकतान्त्रिक शासन में पारदर्शिता	78(65.00)	74(63.25)	152(64.14)
2	राजनीतिक दलों की सदस्यता ग्रहण करना	56(46.67)	48(41.03)	104(43.88)
3	अधिकारों के प्रति अधिक सजकता	84(70.00)	88(75.21)	172(72.57)
4	उच्च शिक्षा से संगठनों का नेतृत्त्व	40(33.33)	35(29.91)	75(31.65)
5	राजनीतिक कानूनों के ज्ञान में वृद्धि	50(41.67)	49(41.88)	99(41.77)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 237 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 120 व 117 तथा 237 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.29(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 152(64.14) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में पारदर्शिता से राजनीतिक भागीदारी बढ़ी। वहीं 104(43.88) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि राजनीतिक दलों की सदस्यता ग्रहण करने में रूचि बढ़ी। जबकि 172(72.57) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजगता बढ़ी। वहीं 75(31.65) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि उच्च शिक्षा से संगठनों के नेतृत्त्व में वृद्धि हुई है। जबकि 99(41.77) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि राजनीतिक कानूनों के ज्ञान में वृद्धि हुई। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव अधिकारों के प्रति अधिक सज़गता बढ़ी का रहा है। जिसके कारण राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हो रही है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के युवाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

तालिका संख्या 4.30

वैश्वीकरण से मतदान के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई

क्र.सं.	**मत**	**उत्तरदाताओं की संख्या**		**योग**
		पुरूष(प्रतिशत)	**महिला(प्रतिशत)**	**(प्रतिशत)**
1	हाँ	117(78.00)	115(76.67)	232(77.33)
2	नहीं	33(22.00)	35(23.33)	68(22.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.30 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 232 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 77.33 प्रतिशत है। वहीं 68 उत्तरदाता, जो नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 22.67 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजाति के व्यक्तियों में मतदान के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.31

वैश्वीकरण ने जातिगत राजनीति व्यवस्था को प्रभावित किया

क्र.सं.	**मत**	**उत्तरदाताओं की संख्या**		**योग**
		पुरूष(प्रतिशत)	**महिला(प्रतिशत)**	**(प्रतिशत)**
1	हाँ	115(76.67)	112(74.67)	227(75.67)
2	नहीं	35(23.33)	38(25.33)	73(24.33)
	योग	150(100..00)	150(100.00)	300(100.00)

तालिका संख्या 4.31 से स्पष्ट है कि कुल 300 उत्तरदाताओं में से 227 उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 75.67 प्रतिशत है। वहीं 73(24.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जो सर्वाधिक से कम है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण ने जातिगत राजनीति व्यवस्था को प्रभावित किया, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 4.31(अ)

जातिगत राजनीति व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया

क्र.सं.	**प्रभाव**	**उत्तरदाताओं की संख्या**		**योग**
		पुरूष(प्रतिशत)	**महिला(प्रतिशत)**	**(प्रतिशत)**
1	जाति विशेष का महत्त्व कम	80(69.57)	74(66.07)	154(67.84)
2	जाति व्यवस्था वर्ग में परिवर्तित	44(38.26)	40(35.72)	84(37.00)
3	जातिगत राजनीति में बिखराव	23(20.00)	18(16.07)	41(18.06)
4	शिक्षा से जातिगत विचारधारा में परिवर्तन	48(41.74)	44(39.29)	92(40.53)
5	जाति व्यवस्था के नियमों में शिथिलता	84(72.04)	81(72.32)	165(72.69)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 227 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 115 व 112 तथा 227 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.31(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 154(67.84) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से जाति विशेष का महत्त्व कम हुआ है। वहीं 84(37.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि जाति व्यवस्था वर्ग व्यवस्था में परिवर्तित हुई है। 41(18.06) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि जातिगत राजनीति में बिखराव आया है। जबकि 92(40.53) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि शिक्षा से जातिगत विचारधारा में परिवर्तन हुआ, 165(72.69) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि जाति व्यवस्था के नियमों में शिथिलता आई। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव जाति व्यवस्था के नियमों में शिथिलता का रहा है। अतः मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा, क्योंकि सकारात्मक प्रभावों की संख्या व प्रतिशत सर्वाधिक है।

तालिका संख्या 4.31(ब)

जातिगत राजनीति व्यवस्था को प्रभावित नहीं किया

क्र.सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	जाति के नियमों में कठोरता	34(97.14)	36(94.74)	70(95.89)
2	जाति वर्ग में परिवर्तित नहीं	30(85.72)	34(89.47)	64(87.67)
3	शिक्षा का अभाव	19(54.29)	20(52.63)	39(53.43)
4	जातिगत पंचायतों का महत्व	25(71.43)	27(71.05)	52(71.23)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 73 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 35 व 38 तथा 73 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.31(ब) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं से 70(95.89) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि जाति के नियमों में कठोरता से परिवर्तन नहीं हुआ। वहीं 64(87.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि जाति वर्ग में परिवर्तित नहीं हुई है। 39(53.43) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि शिक्षा का अभाव होने से कोई परिवर्तन नहीं हुआ। जबकि 52(71.23) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि जातिगत पंचायतों का महत्व होने से परिवर्तन नहीं हुआ। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव जाति के नियमों में कठोरता का रहा है। जिसके कारण जातिगत राजनीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

तालिका संख्या 4.32

वैश्वीकरण ने राजनीतिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	मताधिकार के प्रति चेतनता	91(60.67)	87(58.00)	178(59.33)
2	राजनीतिक जागरूकता	107(71.33)	103(68.67)	210(70.00)
3	राजनीतिक पदों की लालसा	118(78.67)	107(71.33)	225(75.00)
4	राजनीतिक दलों की आर्थिक सहायता में वृद्धि	54(36.00)	47(31.33)	101(33.67)
5	युवा वर्ग की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि	70(46.67)	64(42.67)	134(44.67)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.32 के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 178(59.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि मताधिकार के प्रति चेतनता में वृद्धि हुई। वहीं 210(70.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है। जबकि 225(75.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि राजनीतिक पदों की लालसा में वृद्धि हुई। 101(33.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि राजनीतिक दलों की आर्थिक सहायता में वृद्धि हुई है। वहीं 134(44.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि युवा वर्ग की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है। अतः तालिका में दी गई सूचना के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव राजनीतिक पदों की लालसा में वृद्धि कर रहा है। जिसके कारण परम्परागत राजनीति से लोकतांत्रिक राजनीति में प्रवेश हुआ, यह वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 4.33

वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	107(71.33)	103(68.67)	210(70.00)
2	उच्च व तकनीकी शिक्षा पर बल	98(65.33)	91(60.67)	189(63.00)
3	रूढ़ियों, कुरीतियों के बन्धनों में शिथिलता	70(46.67)	67(44.67)	137(45.67)
4	मताधिकार, निर्वाचन में रूचि	94(62.67)	87(58.00)	181(60.33)
5	सरकारी व निजी क्षेत्र में रोजगार की वृद्धि	89(59.33)	84(56.00)	173(57.67)
6	बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रति रूझान	45(30.00)	30(20.00)	75(25.00)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.33 के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 210(70.0) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई। जबकि 189(63.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि वैश्वीकरण से

उच्च व तकनीकी शिक्षा को बल मिला है। वहीं 137(45.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना है कि वैश्वीकरण से परम्परागत रूढ़ियों एवं कुरीतियों के बन्धनों में शिथिलता आई है। जबकि 181(60.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से मताधिकार एवं निर्वाचन की रूचि में वृद्धि हुई है। वहीं 173(57.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि सरकारी व निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है। जबकि 75(25.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रति रूझान बढ़ा है। अतः यह कहा जा सकता है कि मीणा जनजाति के शैक्षिक स्तर में वृद्धि से इनके सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। यह वैश्वीकरण सकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 4.34

वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर नकारात्मक प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या		योग (प्रतिशत)
		पुरूष(प्रतिशत)	महिला(प्रतिशत)	
1	पारम्परिक व्यवसायों की हानि	86(57.33)	74(49.33)	160(53.33)
2	सांस्कृतिक पक्ष की दृष्टि से पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण	89(59.33)	70(46.67)	159(53.00)
3	जातिगत परम्पराओं,रीति–रिवाजों का विलोपन	84(56.00)	80(53.33)	164(54.67)
4	आर्थिक असमानता में वृद्धि	70(46.67)	50(33.33)	120(40.00)
5	शारीरिक श्रम आधारित व्यवसायों का तिरस्कार	84(56.00)	91(60.67)	175(58.33)
6	जातिगत राजनीति व्यवस्था के मूल्यों का ह्रास	71(47.33)	64(42.67)	135(45.00)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल उत्तरदाताओं की संख्या 300 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 व 150 तथा 300 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 4.34 के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 160(53.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से पारम्परिक व्यवसायों की हानि हुई। जबकि 159(53.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि वैश्वीकरण से सांस्कृतिक पक्ष की दृष्टि से पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण भी हुआ। वहीं

164(54.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से जातिगत परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों का विलोपन हुआ है। 120(40.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से आर्थिक असमानता में भी वृद्धि हुई है। जबकि 175(58.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिनका मत है कि वैश्वीकरण से शारीरिक श्रम आधारित व्यवसायों का तिरस्कार हुआ है। वहीं 135(45.00) योग प्रतिशत उत्तरदाता, जिन्होंने माना है कि वैश्वीकरण से जातिगत राजनीति व्यवस्था के मूल्यों का ह्रास हुआ है। अतः उपर्युक्त नकारात्मक प्रभाव मीणा जनजाति के विकास पर लागू होते है। क्योंकि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने जितना सकारात्मक प्रभाव डाला उतना ही नकारात्मक प्रभाव भी डाला है। क्योंकि इसका प्रभाव सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में देखा गया है, जिसका प्रमाण तालिका में लिखित आंकड़ों से परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष :–

वैश्वीकरण की प्रक्रिया से मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन किया गया। जिसमें तालिकाओं के निष्कर्ष के साथ ही सम्पूर्ण अध्याय का निष्कर्ष दिया जा रहा है –

✶ वैश्वीकरण के बारे में सुना के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 238(79.33) योग प्रतिशत ने हाँ के पक्ष में, 62(20.67) योग प्रतिश्त ने नहीं के पक्ष में। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं ने वैश्वीकरण के बारे में सुना, जो कुल का सर्वाधिक प्रतिशत है। परन्तु कुछ उत्तरदाता आज भी इस प्रक्रिया से अनजान है।

✶ वैश्वीकरण के बारे में आप क्या जानते हैं के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 126(52.94) योग प्रतिशत तीव्रगामी यातायात के बारे में, 147(61.77) योग प्रतिशत आधुनिक सूचना तन्त्र के बारे में, 148(62.19) योग प्रतिशत संसाधनों तक पहुँच सरलता के बारे में, 92(38.66) योग प्रतिशत विज्ञापनों के बढ़ते महत्त्व के बारे में, 96(40.34) योग प्रतिशत आवश्यक वस्तुओं का आसानी से उपलब्ध होना है। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता सर्वाधिक रूप से संसाधनों तक पहुँच सरल हुई, के बारे में जानते हैं, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ वैश्वीकरण का सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 186(62.67) योग प्रतिशत ने पूर्ण सहमत के पक्ष में, 59(19.67) योग प्रतिशत ने सहमत के पक्ष में, 34(11.33) योग प्रतिशत ने असहमत के पक्ष में, 21(07.00) योग

प्रतिशत कोई प्रभाव नहीं पड़ा के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ा, जो पूर्ण सहमत के पक्ष में कुल का सर्वाधिक का योग प्रतिशत है।

- ✶ सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाले कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 91(48.93) योग प्रतिशत ने संचार एवं परिवहन के साधनों में वृद्धि, 139(74.73) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 113(60.75) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच के कारण, 136(73.12) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण ने परिवार की संरचना को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 173(57.67) योग प्रतिशत ने संयुक्त परिवार का टुटना, 125(41.67) योग प्रतिशत ने व्यक्ति की भौतिकवादी सोच, 135(45.00) योग प्रतिशत ने पारिवारिक नियंत्रण में कमी, 194(64.67) योग प्रतिशत ने पारिवारिक मूल्यों का हास, 93(31.00) योग प्रतिशत ने सांस्कृतिक संक्रमण, 105(35.00) योग प्रतिशत ने रक्त सम्बन्धों के पतन को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव पारिवारिक मूल्यों के ह्रास का रहा, यह वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव है।
- ✶ वैश्वीकरण से सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 233(77.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 67(22.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः सामजिक सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ, जो सर्वाधिक प्रतिशत है।
- ✶ समाजिक सम्बन्धों में क्या परिवर्तन हुआ के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 44(14.67) योग प्रतिशत ने रक्त सम्बन्धों का महत्त्व बढ़ा को, 152(50.67) योग प्रतिशत ने रक्त सम्बन्धों का महत्त्व घटा को, 37(12.33) योग प्रतिशत ने यथावत, 67(22.33) योग प्रतिशत ने कोई प्रभाव नही पड़ा को माना। अतः वैश्वीकरण के कारण रक्त सम्बन्धों का महत्त्व घटा, यह नकारात्मक प्रभाव है।
- ✶ वैश्वीकरण के कारण द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 247(82.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 53(17.67) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला, जो सर्वाधिक प्रतिशत है।
- ✶ द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 148(59.92) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 144(58.30) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 147(59.52) योग प्रतिशत ने पारिवारिक मूल्यों का ह्रास, 131(53.04) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति की तरफ झुकाव, 126(51.01)

योग प्रतिशत भौतिकवादी सोच में वृद्धि। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण से सामाजिक गतिशीलता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 204(68.00) योग प्रतिशत ने सहमत के पक्ष में, 57(19.00) योग प्रतिशत ने असहमत के पक्ष में, 39(13.00) योग प्रतिशत ने तटस्थता के पक्ष में। अतः सामाजिक गतिशीलता बढ़ी, जो सहमत के पक्ष में कुल का सर्वाधिक प्रतिशत है।
- ✶ सामाजिक गतिशीलता बढ़ने के सहमत के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 158(77.45) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 151(74.02) योग प्रतिशत ने आधुनिक संसाधनों में वृद्धि, 144(70.59) योग प्रतिशत ने रोजगार की लालशा में वृद्धि तथा 126(61.77) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि, 77(37.75) योग प्रतिशत सामाजिक सम्बन्धों में शिथिलता। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा।
- ✶ वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक रीति–रिवाजों पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 142(47.33) योग प्रतिशत ने परम्परागत रीति–रिवाजों में शिथिलता, 131(43.67) योग प्रतिशत ने संयुक्त परिवार का घटता प्रभाव, 125(41.67) योग प्रतिशत ने सामाजिक उत्सवों का सरलीकरण, 153(51.00) योग प्रतिशत ने सामाजिक सामनजस्य में बिखराव को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव सामाजिक सामंजस्य में बिखराव का रहा है।
- ✶ परम्परागत खान–पान को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 149(49.67) योग प्रतिशत ने परम्परागत भोजन सामग्री का ह्यस, 160(53.33) योग प्रतिशत ने नवीन पेय पदार्थों के सेवन में वृद्धि, 152(50.67) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, 120(40.00) योग प्रतिशत ने भोजन में पौष्टिक तत्त्वों की कमी को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव नवीन पेय पदार्थों के सेवन में वृद्धि का रहा है।
- ✶ परम्परागत वेशभूषा को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 181(60.33) योग प्रतिशत ने आधुनिक वेशभूषा का बढ़ता प्रचलन, 164(54.67) योग प्रतिशत ने नवीन पहनावें के स्रोतों में वृद्धि, 121(40.33) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, 108(36.00) योग प्रतिशत ने आधुनिकता की बढती होड़ को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव आधुनिक वेशभूषा का बढ़ता प्रचलन रहा है।

- ✶ परम्परागत आभूषणों को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 190(63.33) योग प्रतिशत ने परम्परागत आभूषणों को बोझ समझना, 140(46.67) योग प्रतिशत ने कृत्रिम आभूषणों से लगाव, 123(41.00) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, 124(41.33) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में शिथिलता को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत आभूषणों को बोझ समझा गया है।
- ✶ परम्परागत पूजा–पाठ को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं मे से 176(58.67) योग प्रतिशत ने परम्परागत पूजा पाठ के तौर तरीकों का ह्रास, 162(54.00) योग प्रतिशत ने देवी शक्ति की आस्था में कमी, 185(61.67) योग प्रतिशत ने व्यक्ति के पास समय के अभाव की कमी, 130(43.33) योग प्रतिशत ने धार्मिक कार्यों को सम्पादित कराने वालों की कमी को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव व्यक्ति के पास समय अभाव की कमी का रहा है।
- ✶ परम्परागत अन्धविश्वासों को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 164(54.67) योग प्रतिशत ने तन्त्र–मन्त्र की विद्या में कमी, 182(60.66) योग प्रतिशत ने नीम हकीमों की संख्या में कमी, 186(55.33) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 91(30.33) योग प्रतिशत ने मीडिया से जागरूकता में वृद्धि को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव नीम–हकीमों की संख्या में कमी का रहा है।
- ✶ बहुविवाह प्रथा को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 122(40.67) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में खुलापन, 163(54.33) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 181(60.33) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 93(31.00) योग प्रतिशत ने मीड़िया द्वारा जागरूकता फैलाने को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव रोजगार के अवसरों में वृद्धि का रहा है।
- ✶ पुनर्विवाह की प्रथा को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 182(60.67) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 146(48.67) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 125(41.67) योग प्रतिशत ने सामाजिक सोच में बदलाव, 132(44.00) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियम कानूनों में खुलेपन को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ अन्तर्जातीय विवाह को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 188(62.67) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 167(55.67) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 140(46.67) योग प्रतिशत ने महिला–पुरूष के सम्बन्धों

में खुलापन, 106(35.33) योग प्रतिशत ने परम्परागत नियम कानूनों में शिथिलता को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।

✶ परिवार के सदस्यों के विवाह की आयु के वर्गान्तराल के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 27(09.00) योग प्रतिशत के दादा–दादी का विवाह 05–10 वर्ष की आयु में, 100(33.33) योग प्रतिशत के दादा–दादी व माता–पिता का विवाह 11–15 वर्ष की आयु में, 116(38.67) योग प्रतिशत के माता–पिता व भाई बहिन का विवाह 16–20 वर्ष आयु में, 57(19.00) योग प्रतिशत के भाई–बहिन का विवाह 21–25 वर्ष की आयु में सम्पन्न हुआ। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं ने पारिवारिक सदस्यों के विवाह की आयु में हुए परिवर्तन को दर्शाया है। जिसमें 16 से 20 वर्ष की आयु में माता–पिता व भाई–बहन का विवाह सर्वाधिक संख्या में सम्पन्न हुआ।

✶ स्वयं उत्तरदाताओं के विवाह की आयु के वर्गान्तराल के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 21(07.00) योग प्रतिशत के विवाह की आयु 11–15 वर्ष की, 194(64.67) योग प्रतिशत के विवाह की आयु 16–20 वर्ष की, 85(28.33) योग प्रतिशत के विवाह की आयु 21–25 वर्ष की। अतः अध्ययन क्षेत्र के स्वयं पुरूष व महिला उत्तरदाताओं के विवाह की आयु में परिवर्तन हुआ है।

✶ वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के लोकगीत व नृत्यों पर क्या प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 230(76.670) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 70(23.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति के लोकगीत व नृत्यों पर प्रभाव पड़ा, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ लोकगीत व नृत्यों को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 158(68.70) योग प्रतिशत ने परम्परागत लोक गीतों की जगह फिल्मी गीतों का प्रचलन, 125(54.35) योग प्रतिशत ने लोक नाटकों की जगह टेलिविजन नाटकों का प्रयोग, 75(32.61) योग प्रतिशत ने हिन्दी फिल्मों की जगह अंग्रेजी फिल्मों का प्रचलन, 109(47.39) योग प्रतिशत ने परम्परागत सामाजिक उत्सवों की जगह आधुनिक उत्सवों का प्रचलन, 101(43.91) योग प्रतिशत ने परम्परागत नृत्यों की जगह पोप नृत्यों का प्रचलन को माना है। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत लोकगीतों की जगह फिल्मी गीतों के प्रचलन का रहा है।

✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 228(76.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 72(24.00) योग

प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 137(60.09) योग प्रतिशत ने आधुनिकतम संचार के संसाधनों में वृद्धि, 152(66.67) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, 94(41.23) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 99(43.42) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 117(51.32) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण पाश्यात्य संस्कृति के प्रभाव का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की तलाक प्रथा पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 236(78.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 64(21.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः तलाक प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ मीणा जनजाति की तलाक प्रथा किस प्रकार प्रभावित हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 124(52.54) योग प्रतिशत ने सामाजिक व पारिवारिक बन्धनों में कमी, 65(27.54) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि, 154(65.26) योग प्रतिशत ने एकांकी परिवारों की संख्या में वृद्धि, 102(43.22) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का बढता मेल मिलाप, 113(47.88) योग प्रतिशत ने स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों में खुलापन, 94(39.83) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव एकांकी परिवारों की संख्या में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 227(75.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 73(24.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ किस प्रकार मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 136(59.91) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 102(44.93) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 94(41.41) योग प्रतिशत ने मीड़िया की बढ़ती पहुँच, 115(50.66) योग प्रतिशत ने सरकारी योजनाओं में महिलाओं की भूमिका, 63(27.75) योग प्रतिशत ने महिला पुरूषों के सम्बन्धों में खुलापन, 78(34.36) योग प्रतिशत ने सामाजिक सोच में बदलाव को माना है। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।

- ✶ मीणा जनजाति की सामाजिक सेवाओं को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 150(50.00) योग प्रतिशत ने जाति आधारित सेवाओं का हास, 165(55.00) योग प्रतिशत ने परम्परागत सामाजिक नियमों व कानूनों का ह्यस, 99(33.00) योग प्रतिशत ने बढ़ते गैर–सरकारी संगठनों का प्रभाव, 82(27.33) योग प्रतिशत ने सरकार द्वारा सामाजिक सेवाओं पर बल। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत सामाजिक नियमों एवं कानूनों के ह्यस का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की चिकित्सा सेवाओं पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं से 245(81.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 55(18.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः चिकित्सा सेवाओं पर प्रभाव पड़ा जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ मीणा जनजाति की चिकित्सा सेवाओं को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 137(55.92) योग प्रतिशत ने चिकित्सा के पराम्परागत तरीकों में बदलाव, 156(63.67) योग प्रतिशत ने नीम–हकिमों का घटता प्रभाव, 147(60.00) योग प्रतिशत ने सूचना क्रान्ति से चिकित्सा सेवा में वृद्धि, 37(15.10) योग प्रतिशत ने प्रतिस्पर्दा से चिकित्सा सेवाओं का सस्ता होना, 156(63.67) योग प्रतिशत ने भारतीय दवाओं की जगह अंग्रेजी दवाओं के प्रयोग में वृद्धि माना।
- ✶ वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 238(79.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 62(20.67) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ किस प्रकार मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 158(66.39) योग प्रतिशत ने आधुनिक संसाधनों से कृषि कार्य, 144(60.51) योग प्रतिशत ने वैज्ञानिक तरीकों से पशुपालन, 142(59.66) योग प्रतिशत ने नवीन तकनीकी से उद्योगों का संचालन, 108(45.80) योग प्रतिशत ने आधुनिक तरीको से घरेलू कार्य को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव आधुनिक संसाधनों से कृषि कार्य का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 240(80.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 60(20.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ने के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 96(38.87) योग प्रतिशत ने सूचना क्रान्ति के कारण, 170(68.83) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 146(59.11) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 52(21.05) योग प्रतिशत ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कारण, 125(50.61) योग प्रतिशत ने कुटीर उद्योग आधारित व्यावसाय में कमी को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ व्यावसायिक गतिशीलता ने मीणा जनजाति को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 99(33.00) योग प्रतिशत ने आय में वृद्धि हुई को, 61(20.33) योग प्रतिशत ने आय में कमी आई को, 84(28.00) योग प्रतिशत ने रोजगार में वृद्धि हुई को, 56(18.67) योग प्रतिशत ने कोई प्रभाव नहीं पड़ा को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव आय में वृद्धि हुई का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से ग्रामीण प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 241(80.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 59(19.67) योग प्रतिशत ने नहीं के पक्ष में। अतः ग्रामीण प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ ग्रामीण प्रतिभाओं के पलायन के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 161(66.81) योग प्रतिशत ने परम्परागत व्यवसायों के उत्पादन में गिरावट, 152(63.07) योग प्रतिशत ने कुटीर व लघु उद्योग–धन्धों का बन्द होना, 181(75.10) योग प्रतिशत ने उच्च व तकनीकी शिक्षा का अभाव, 123(51.04) योग प्रतिशत ने योग्यता के अनुसार रोजगार न मिलना, 108(44.81) योग प्रतिशत ने क्षेत्रिय स्तर पर पर्याप्त पहचान का अभाव को माना है। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण उच्च व तकनीकी शिक्षा के अभाव का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 230(76.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 70(23.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 128(55.65) योग प्रतिशत ने कृषि में कम पैदावार का होना, 151(65.65) योग प्रतिशत ने कृषि कार्य के उपकरणों का महंगा होना, 142(61.74) योग प्रतिशत ने उचित मूल्यों पर खाद–बीज का न मिलना, 161(70.00) योग

प्रतिशत ने फसल का उचित मूल्य न मिलना, 192(83.48) योग प्रतिशत ने कृषि में मौसमी प्रकोप के आने को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण कृषि व्यवसाय में मौसमी प्रकोप के आने का रहा है।

✶ वैश्वीकरण का कृषि व्यवसाय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 145(48.33) योग प्रतिशत ने कृषि के संसाधनों का महँगा होना, 104(34.67) योग प्रतिशत ने परम्परागत संसाधनों का ह्रास, 165(55.00) योग प्रतिशत ने खाद बीज व कीटनाशक दवाईयों का महँगा होना, 164(54.67) योग प्रतिशत ने कृषि आधारित उद्योग धन्धें बन्द होना, 103(34.33) योग प्रतिशत ने अधिक रासायनिक खाद के उपयोग से भूमि की उर्वरक क्षमता का नष्ट होना, 170(56.67) योग प्रतिशत ने कृषि व्यवसाय में रूचि का कम होना माना। अतः नकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव खाद बीज व कीटनाशक दवाईयों के महँगा होने का रहा है।

✶ वैश्वीकरण का कृषि व्यवसाय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 167(55.67) योग प्रतिशत ने कृषि में नई तकनीकी व मशीनरी का प्रयोग, 163(54.33) योग प्रतिशत ने संचार के संसाधनों से कीटनाशक दवाईयों के बारे में जानकारी मिलना, 100(33.33) योग प्रतिशत ने प्रतिस्पर्दा से किसानों की फसल का उचित मूल्य मिलना, 114(38.00) योग प्रतिशत ने नवीन खाद बीजों का प्रचलन, 78(26.00) योग प्रतिशत ने नवीन तकनीकी से मृदा की जाँच को माना। अतः सकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव कृषि व्यवसाय में नई तकनीकी एवं मशीनरी के प्रयोग का रहा है।

✶ वैश्वीकरण के कारण लघु एवं कुटीर उधोग धन्धें नष्ट हुए के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 247(82.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 63(21.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः ग्रामीण उद्योग धन्धें नष्ट हुए, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ वैश्वीकरण का गरीब एवं निम्न आय वर्ग पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में सें 187(62.33) योग प्रतिशत ने वैज्ञानिक तरीकों से उत्पादन में वृद्धि, 82(27.33) योग प्रतिशत ने जीवन स्तर का उच्च होना, 101(33.67) योग प्रतिशत ने आय के संसाधनों में वृद्धि, 112(37.33) योग प्रतिशत ने सामाजिक परिवेश में बदलाव को माना है। अतः सकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव वैज्ञानिक तरिकों से उत्पादन में वृद्धि का रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण का गरीब एवं निम्न आय वर्ग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 166(53.33) योग प्रतिशत ने गरीब और गरीब हो गया, 10(33.33) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी मानव का जन्म, 62(20.67) योग प्रतिशत ने संसाधनों की पहुँच से दूर, 187(62.33) योग प्रतिशत ने वस्तु एवं सेवाओं के महँगा होने को माना। अतः नकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव वस्तु एवं सेवाओं के महँगा होने का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण ने आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 222(74.00) योग प्रतिशत ने सहमत के पक्ष में, 46(15.33) योग प्रतिशत ने असहमत के पक्ष में, 32(10.67) प्रतिशत ने तटस्थता के पक्ष में। अतः आर्थिक असमानता को बढ़ावा मिला, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ आर्थिक असमानता के सहमति के उचित कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 87(39.19) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि, 128(57.66) योग प्रतिशत ने व्यावसायिक प्रतिस्पर्दा में वृद्धि, 164(73.87) योग प्रतिशत ने संसाधनों पर वर्ग विशेष का प्रभुत्व, 155(69.82) योग प्रतिशत ने गरीब व अमीर में दूरियाँ को माना है। अतः सहमत के कारणों में सर्वाधिक कारण संसाधनों पर वर्ग विशेष के प्रभाव का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से कृषकों की दयनीय स्थिति हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरादाताओं में से 237(79.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 63(21.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः कृषकों की दयनीय स्थिति हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ कृषकों की दयनीय स्थिति हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 133(56.12) योग प्रतिशत ने कृषि आधारित परम्परागत व्यवसायों का ह्रास, 153(64.56) योग प्रतिशत ने कुटीर उद्योग आधारित परम्परागत व्यवसायों का ह्रास, 167(70.47) योग प्रतिशत ने उपज का उचित मूल्य नहीं मिलना, 97(40.93) योग प्रतिशत ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बाजार में आना, 150(63.29) योग प्रतिशत ने कृषि आधारित संसाधनों का महँगा होना, 188(79.33) योग प्रतिशत ने कृषि में मौसमी प्रकोप को कारण माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण कृषि व्यवसाय में मौसमी प्रकोप के आने का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 244(80.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 58(19.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति की परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 171(70.66) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 184(76.03)

योग प्रतिशत ने मीड़िया द्वारा राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता, 165(68.18) योग प्रतिशत ने युवा पीढ़ी द्वारा वंशवाद की उपेक्षा, 139(57.44) योग प्रतिशत ने लोकतन्त्रवादी सोच में वृद्धि, 145(59.92) योग प्रतिशत ने जातिगत पंचायतों के प्रभाव में कमी को माना है। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया द्वारा राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि का रहा है।

✶ वैश्वीकरण से राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 238(79.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 62(20.67) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ किस प्रकार राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 149(62.61) योग प्रतिशत ने चुनाव प्रचार में भागीदारी बढी, 164(68.91) योग प्रतिशत ने मताधिकार के प्रयोग में चेतनता, 178(74.79) योग प्रतिशत ने युवा नेतृत्त्व का विकास, 217(91.18) योग प्रतिशत ने जाति पंचायतों की जगह लोकतन्त्र में विश्वास, 200(84.03) योग प्रतिशत ने राजनीतिक सोच में बदलाव को माना। अतः प्रभावों /कारणों में सर्वाधिक कारणों में सर्वाधिक कारण जाति पंचायतों की जगह लोकतंत्र में विश्वास का रहा है।

✶ राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि नहीं हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 57(91.94) योग प्रतिशत ने उच्च व तकनिकी शिक्षा का अभाव, 60(96.78) योग प्रतिशत ने जाति पंचायतों का महत्व, 46(74.19) योग प्रतिशत ने जातिगत राजनीति में विश्वास, 40(64.52) योग प्रतिशत ने सूचना तकनिकी का ज्ञान नहीं है को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण जाति पंचायतों के महत्व का रहा है।

✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 237(79.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 63(21.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ किस प्रकार युवाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 152(64.14) योग प्रतिशत ने लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में पारदर्शिता, 104(43.88) योग प्रतिशत ने राजनीतिक दलों की सदस्यता ग्रहण करना, 172(72.57 योग प्रतिशत ने अधिकारों के प्रति अधिक सजकता, 75(31.65) योग प्रतिशत ने उच्च शिक्षा से संगठनों का नेतृत्त्व तथा 99(41.77) योग प्रतिशत ने राजनीतिक कानूनों के ज्ञान में वृद्धि को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव अधिकारों के प्रति अधिक सजकता का रहा है।

✶ वैश्वीकरण से मतदान के प्रति जागरूता में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 232(77.33) योग प्रतिशत हॉ के पक्ष में, 68(22.67) योग प्रतिशत

नहीं के पक्ष में। अतः मतदान के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ वैश्वीकरण ने जातिगत राजनीति व्यवस्था को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 227(75.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 73(24.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः जातिगत राजनीति को प्रभावित किया, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ जातिगत राजनीति व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 154(67.84) योग प्रतिशत ने जाति विशेष का महत्त्व कम, 84(37.00) योग प्रतिशत ने जाति व्यवस्था वर्ग में परिवर्तित, 41(18.06) योग प्रतिशत ने जातिगत राजनीति में बिखराव, 92(40.53) योग प्रतिशत ने शिक्षा के कारण जातिगत विचारधारा में परिर्वतन, 165(72.69) योग प्रतिशत ने जाति व्यवस्था के नियमों में शिथिलता को माना है। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव जाति व्यवस्था के नियमों में शिथिलता का रहा है।
- ✶ जातिगत राजनीति व्यवस्था को प्रभावित नहीं किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 70(95.89) योग प्रतिशत ने जाति के नियमों में कठोरता, 64(87.69) योग प्रतिशत ने जाति वर्ग में परिवर्तित नही, 39(53.43) योग प्रतिशत ने शिक्षा का अभाव, 52(71.23) योग प्रतिशत ने जातिगत पंचायतों के महत्व को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव जाति के नियमों में कठोरता का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण ने राजनीतिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 178(59.33) योग प्रतिशत ने मताधिकार के प्रति चेतनता, 210(17.00) योग प्रतिशत ने राजनीतिक जागरूकता, 225(75.00) योग प्रतिशत ने राजनीतिक पदों की लालसा में वृद्धि, 101(33.67) योग प्रतिशत ने राजनीतिक दलों की आर्थिक सहायता में वृद्धि, 134(44.67) योग प्रतिशत ने युवा वर्ग की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि को माना है। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव राजनीतिक पदों की लालसा में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 210(70.00) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 189(63.00) योग प्रतिशत ने उच्च व तकनीकी शिक्षा पर बल, 137(45.67) योग प्रतिशत ने रूढ़ियों एवं कुरीतियों के बन्धनों में शिथिलता, 181(60.33) योग प्रतिशत ने मताधिकार व निर्वाचन क्षेत्र में रूचि, 173(57.67) योग प्रतिशत ने सरकारी व निजी क्षेत्र में रोजगार की वृद्धि, 75(25.00) योग प्रतिशत ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रति रूझान बढ़ी को माना। अतः वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर

सकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिसके कारण मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर में परिवर्तन हो रहा है।

✶ वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 160(53.33) योग प्रतिशत ने पारम्परिक व्यवसायों की हानि, 159(53.00) योग प्रतिशत ने सांस्कृतिक पक्ष की दृष्टि से पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण, 164(54.67) योग प्रतिशत ने जातिगत परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों का विलोपन, 120(40.00) योग प्रतिशत ने आर्थिक असमानता में वृद्धि, 175(58.33) प्रतिशत ने शारीरिक श्रम–आधारित व्यवसायों का तिरस्कार, 135(45.00) योग प्रतिशत ने जातिगत राजनीति व्यवस्था के मूल्यों के ह्रास को माना। अतः अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

अतः मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा आदि पक्षों का अवलोकन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि जहाँ एक ओर सकारात्मक प्रभाव पड़े, वहीं दूसरी ओर नकारात्मक प्रभाव भी देखे गये। वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति के शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, सामाजिक बन्धनों में खुलापन आया, सामाजिक गतिशीलता बढ़ी 104(68.00) योग प्रतिशत, वेशभूषा में परिवर्तन आया, अंधविश्वासों में कमी आई, तलाक प्रथा में परिवर्तन हुआ, लैंगिक भेदभाव में कमी आई, पुनर्विवाह की प्रथा में परिवर्तन हुआ, अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला, खान–पान में परिवर्तन हुआ। ऐसा ही प्रभाव आर्थिक क्षेत्र में देखा गया जैसे– रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ 238(79.83) प्रतिशत, नवीन उद्योगों का संचालन हुआ, आर्थिक असमानता कम हुई, आय में वृद्धि हुई जिसका 99(33.00) योग प्रतिशत, व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी जिसका 240(80.00) योग प्रतिशत आदि पर प्रभाव पड़ा।

ऐसा ही प्रभाव राजनीतिक क्षेत्र पर भी देखा गया। वैश्वीकरण के कारण मतदान में जागरूकता आई जिसका 232(77.33) योग प्रतिशत, युवाओं में राजनीतिक भागीदारी बढ़ी जिसका प्रतिशत 237(79.00) योग प्रतिशत, परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया 242(80.67) योग प्रतिशत, जाति आधारित राजनीति में परिवर्तन आया, राजनीति में आरक्षण मिलने से उचित प्रतिनिधित्व मिला, महिला व पुरूषों में राजनीति के प्रति जागरूकता का विकास हुआ।

सकारात्मक प्रभावों के साथ ही साथ मीणा जनजाति के व्यक्तियों पर वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव भी देखे गयें। नकारात्मक प्रभावों के क्रम में परम्परागत मूल्यों का ह्रास हुआ, संयुक्त परिवारों का ह्रास हुआ, जिसका प्रतिशत 173(57.67) योग प्रतिशत, रक्त सम्बन्धों में कमी आई 152(50.67) योग प्रतिशत, परम्परागत संस्कृति का लोप हुआ 230(76.

67) योग प्रतिशत। इसी क्रम में आर्थिक क्षेत्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़े जैसे – कृषि के परम्परागत व्यावसायों का ह्यस हुआ, भूमि की उर्वरक क्षमता में कमी आई, परम्परागत उद्योग धन्धें बन्द हुए, प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा, गरीब और अमीर में दुरियाँ पैदा हुई, आर्थिक असमानता में वृद्धि हुई, प्रतिस्पर्धा बढ़ने से महंगाई बढ़ी। कृषकों की दयनीय स्थिति पैदा हुई आदि नकारात्मक प्रभाव देखे गये।

राजनीतिक जीवन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा। राजनीतिक अधिकार तो मिले पर धनाढ्य वर्ग का वर्चस्व बढ़ गया, आम आदमी की पहुँच से दूरी हो गई, सीटों के निर्धारण में पारदर्शिता की कमी आई, ग्रामीण स्तर पर जागरूकता में कमी आई, जाति पंचायतों का ह्यस हुआ, पुरूष व महिला के सम्बन्धों में राजनीति से दूरीयाँ बढ़ी।

प्रस्तुत अध्याय का बारिकी से अध्ययन या अवलोकन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक प्रभाव अधिक पड़ा, अर्थात् मीणा जनजाति के पुरूष व महिलाओं पर वैश्वीकरण का सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन स्तर पर सकारात्मक प्रभाव ज्यादा देखा गया। जिससे मीणा जनजाति के लोगों का जीवन स्तर वैश्वीकरण के कारण समृद्ध व सुविधा सम्पन्न बन गया है। परन्तु आज भी मीणा जनजाति का एक वर्ग इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया से अनजान है। जिसका प्रतिशत 19.00 प्रतिशत है अर्थात् जनजातीय क्षेत्रों में आज भी इस प्रक्रिया का प्रभाव कम है। जिसके कारण मीणा जनजाति के व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से सभ्य जातियों की अपेक्षा पिछड़े हुए हैं। यह वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव है। अतः सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों को देखने के बाद यह ज्ञात होता है कि पुरूषों की अपेक्षा मीणा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभावों के साथ –साथ नकारात्मक प्रभाव भी देखे गये हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आने वाली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक अध्ययन बनेगा।

सन्दर्भ सूची

1. यादव, डॉ. पूरणमल व भट्ट, डॉ. दिनेश चन्द्र : ''वैश्वीकरण–एक समाजशास्त्रीय अवधारणा'' पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर 2010, पृ.सं.1
2. वही, 2010, पृ.सं.3
3. वही, 2010, पृ.सं.9
4. रावत, सारस्वत : ''मीणा इतिहास'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं.130
5. उप्रेती, डॉ. हरिशचन्द्र : ''भारतीय जनजातियाँः संरचना एवं विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर 2007, पृ. सं. 101से 102
6. सिंह जे0पी0 : ''समाजशास्त्र : अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त'' पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2009, पृ.सं.42
7. शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश : ''समकालीन भारत में सामाजिक समस्याएँ'' पंचशील प्रकाशन जयपुर, 2007, पृ.सं.132
8. रावत, सारस्वत : ''मीणा इतिहास'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं.132
9. माथुर, दुर्गा प्रसाद, ''मीणा जाति का सत्त विकास एवं संस्कृति'' साहित्यागार, जयपुर, 2014, पृ.सं.39
10. रावत, सारस्वत : ''मीणा इतिहास'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012 पृ.सं.132
11. वही, 2012, पृ.सं.132
12. वही, 2012, पृ.सं.135
13. शुक्ला, डॉ.महेश व खान, मोहम्मद शरीफ : ''खैरवार जनजाति–सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन'' अर्जुन पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2004, पृ.सं.59 से 60
14. वही, 2004, पृ.सं.181
15. माथुर, दुर्गा प्रसाद : ''मीणा जाति का सत्त विकास एवं संस्कृति'' साहित्यागार, जयपुर, 2014, पृ.सं.38
16. उप्रेती, डॉ. हरिशचन्द्र : ''भारतीय जनजातियाँः संरचना एवं विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2007, पृ.सं.111
17. रावत, सारस्वत : ''मीणा इतिहास'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं.134
18. रावत, सारस्वत : ''मीणा इतिहास'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं.133
19. वही, 2012, पृ.सं.137

20. महाजन, डॉ. धर्मवीर व महाजन कमलेश : ''जनजातीय समाज का समाजशास्त्र'' विवेक प्रकाशन जवाहर नगर नई दिल्ली, 2009, पृ.सं.140–141

21. राजोरा, डॉ सुरेश चन्द्र : ''समकालीन भारत की समाजिक समस्याएँ'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2010, पृ.सं.179

22. उप्रेती, डॉ. हरिशचन्द : ''भारतीय जनजातियाँः संरचना एवं विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2007, पृ.सं.397

23. शुक्ला, डॉ. महेश एवं ख़ान मो. शरीफ : ''खैरवार जनजाति सामान्य, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन'' 2004, पृ.सं. 123

24. भार्गव, नरेश : ''वैश्वीकरण–समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2014

25. मंगल, आर.सी. : ''मीणा जनजाति के उभरते मध्यम वर्ग के प्रतिमान'' क्लासिक पब्लिकेशन, न्यू देहली, 2002

26. शर्मा, एसं.एल. : ''इमर्जिंग ट्राईबल आइडेन्टिटी'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2008

27. सिंह, योगेन्द्र : ''कल्चर चेंज इन इंडिया आइडेन्टिटी, ग्लॉबलाईजेशन'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2012

पंचम् अध्याय

''मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति''

पंचम् अध्याय

मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति

समाज पुरूष एवं महिला दोनों से मिलकर बनता है। महिला प्रत्येक समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग होती है चाहे वह सभ्य समाज की हो या जनजातीय समाज की, भारतीय संस्कृति की नींव डालने का श्रेय भी महिला को ही दिया गया है। वैश्वीकरण के कारण उत्पन्न नव–बाजारवाद की प्रक्रिया ने स्त्री–संघर्ष को नवीन रूप व आयाम प्रदान किये हैं। तकनीकी एवं सामान्य शिक्षा में भी स्त्री ने महारत हासिल की है। इसके प्रभाव के कारण महिलाओं ने साहित्य, कला, विज्ञान एवं विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

यद्यपि कृषि कार्य एवं मजदूरी के रूप में पहले भी महिलाएँ अर्थोपार्जन कर परिवार की सहायता कर रही थी। परन्तु वैश्वीकरण के कारण अब महिलाएँ स्वतन्त्र व्यवसाय की ओर तीव्र गति से आगे बढ़ रही हैं। शिक्षा एवं रोजगार के साथ ही सामाजिक परिवेश में भी पर्याप्त बदलाव देखने को मिल रहा है। वैश्वीकरण के कारण महिलाओं पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार के प्रभाव पड़े हैं।

इसी प्रकार वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति, समाज के दृष्टिकोण में बदलाव, सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति, सामाजिक बन्धनों में कमी, वेश–भूषा एवं पहनावें में बदलाव, समाज में महिलाओं को समान अधिकार आदि प्रदान कर व्यापक रूप से प्रभावित किया। मीणा महिलाएँ वैश्वीकरण के कारण आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुई, क्योंकि शिक्षा एवं उद्योगों की स्थापना से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई हैं। इसके साथ–साथ परम्परागत व्यवसायों ने भी वैश्वीकरण के कारण नया रूप ले लिया है।

राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता, मतदान व्यवहार, राजनीति में सक्रियता, राजनीतिक नीतियों एवं कानूनों के निर्माण में सहयोग आदि मीणा महिलाओं में वैश्वीकरण ने बढ़ाया है। इसकी विवेचना व्यापक रूप से इस अध्याय में प्रस्तुत की जा रही है।

मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थितिः–

जनजातीय समाज का अपना एक संसार रहा है। राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय हलचलों से दूर जंगलों और पहाड़ों पर निवास करने वाले लोग, जिन्हें नगरों एवं महानगरों की सभ्यता और संस्कृति एक लम्बे समय तक छू भी नहीं पाई। जनजातीय समाजों में स्त्रियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति मातृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में ठीक थी, क्योंकि महिला परिवार का सर्वोपरि मुखिया होती थी। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था आई तो महिला की स्थिति में परिवर्तन हुआ, जिसके कारण महिला की स्थिति दोयम दर्जे की हो गई। मुगल काल एवं ब्रिटिश काल में भी जनजातीय महिलाओं की स्थिति पर कोई ध्यान नहीं दिया गया, जिसके कारण उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति कमजोर ही रही है। अर्थात् हजारों वर्षों का कालखण्ड़ जनजातीय महिलाओं के लिए अन्धकारमय युग रहा है।[1]

हिन्दु समाज की जातियों के कुप्रभाव जैसे– पर्दा–प्रथा, बाल–विवाह, दहेज–प्रथा, छुआछूत आदि से जनजातीय समाज की महिलाएँ प्रभावित हुई है।''[2] इसी सन्दर्भ में मीणा जनजातीय समाज की महिलाएँ भी बाह्य संस्कृति के सम्पर्क में आने के कारण इनकी समाजिक स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है। क्योंकि मीणा समाज में भी अनेक सामाजिक समस्याएँ जैसे – गरीबी, बेरोजगारी, ऋणग्रस्थता, साथ ही सामाजिक कुरीतियाँ जैसे सती–प्रथा, बाल–विवाह, दहेज–प्रथा, नाता–प्रथा, छुआछूत आदि व्याप्त थी। जिसके कारण मीणा समाज की महिलाएँ नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई है। ''इस अंधकार में रोशनी का उजाला भारत के स्वतन्त्र होने पर आया। देश के बुनियादी ढांचे में परिवर्तन नियोजित ढंग से किया जाने लगा और पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से पिछड़ी, दलित एवं शोषित जनजातियों के कल्याण के लिए समयबद्ध कार्यक्रम सरकार ने बनाये। इसी प्रकार जनजातीय समाज की स्त्रियों के लिए सरकार ने अनेक प्रकार की योजनाएँ और कार्यक्रम चलायें, जिससे वे उन्नति और प्रगति कर सकें साथ ही वे शिक्षित और स्वावलम्बी बन सकें। जनजातीय समाज के बदलाव में नगरीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण की भूमिका का महत्त्वपूर्ण स्थान है।''[3] आज मीणा जनजातीय समाज के शैक्षिक स्तर में वृद्धि होने के कारण महिलाओं की सोच में बदलाव आया और पुरूषों में भी महिलाओं के प्रति सकारात्मक सोच में वृद्धि हुई। जिससे मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। इसलिए यह कहा जा सकता है कि पूर्व में जो स्थिति महिलाओं की थी, वर्तमान में इनकी स्थिति में परिवर्तन हो गया है।

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का अध्ययन किया गया है। वैश्वीकरण से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में क्या परिवर्तन आया और महिलाओं की समाज में क्या भागीदारी रही आदि पक्षों का सर्वे के दौरान अध्ययन किया गया है। जिनको निम्न तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.1

मीणा समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

क्र. सं.	समाजिक स्थिति	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1.	अच्छी	62(41.33)	62(41.33)
2.	सामान्य	57(38.00)	57(38.00)
3.	खराब	31(20.67)	31(20.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.1 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 75 महिला उत्तरदाता मानती है कि परिवार में महिलाओं की स्थिति अच्छी है। जिनका प्रतिशत 41.33 प्रतिशत है, जो सर्वाधिक संख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं 57 महिला उत्तरदाता मानती है कि मीणा समाज में महिलाओं की स्थिति सामान्य हैं, जिनका प्रतिशत 38.00 प्रतिशत है। जबकि 31(20.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि समाज में महिलाओं की स्थिति खराब है। अतः उपर्युक्त तालिका में दी गई सूचनाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति अच्छी है। लेकिन कुछ महिला उत्तरदाता ऐसी भी हैं, जो महिलाओं की खराब स्थिति का आंकलन करती है अर्थात् आज भी मीणा महिलाओं में जागरूकता का अभाव है।

महिलाओं पर शिक्षा का प्रभावः—

''पहले केवल पुरूष को ही शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था। स्त्री को इस अधिकार से वंचित रखा गया। लेकिन वैश्वीकरण के कारण विचारों में परिवर्तन हुआ, एक समाज के लोगों ने दूसरे स्थान पर जाकर कुछ अपने विचारों से, अपनी संस्कृति से उस स्थान के लोगों को प्रभावित किया तथा कुछ उनसे ग्रहण भी किया। भारतीय समाज में जहाँ स्त्रियों का घर से निकलना बन्द था। पाश्चात्य देशों की महिलाओं को पुरूष के समान ही शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार तथा पाश्चात्य महिलाओं को पुरूषों के समान ही विचारों की स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्त था। इससे प्रभावित होकर भारतीय महिलाओं को

भी संविधान द्वारा पुरूषों के समान ही अधिकार प्रदान किये गये। आज हर क्षेत्र में भारतीय महिलाएँ भी पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। आज सभी मान्यताएँ बदल चुकी है, जब नारी को पैर की जूती या पद–दलिता समझा जाता था और उसे घर में बंधक बनाकर रखा जाता था।''[4]

यद्यपि विभिन्न कालखण्डों में मीणा महिलाओं की स्थिति भी अन्य जातियों की महिलाओं के समकक्ष ही बदलती रही है। यही कारण है कि आज की मीणा नारी भी समय एवं शिक्षा दोनों के ही महत्त्व हो समझने लगी है। अतः मीणा महिलाओं में भी परिवर्तनों को आसानी से देखा जा सकता है। शिक्षा के इस विकसित स्वरूप का ही परिणाम है कि अब सरकार के द्वारा जनजातीय महिलाओं के लिए शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाकर उन्हें शिक्षित किया जा रहा है। जिसके कारण मीणा जनजाति की महिलाएँ उच्च्य शिक्षित होकर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

इसी सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत महिलाओं की सामाजिक स्थिति एवं महिला शिक्षा से मीणा समाज पर क्या प्रभाव पड़ा आदि प्रश्नों के बारे में महिला उत्तरदाताओं से सूचनाएँ प्राप्त की गई है। जिनको निम्न तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.2

महिला शिक्षा से मीणा समाज पर प्रभाव

क्र. सं.	प्रभाव	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	परम्परागत रूढ़ियों का ख़त्म होना	91(60.67)	91(60.67)
2	पारिवारिक निर्णयों में अहम् भूमिका	92(61.33)	92(61.33)
3	अधिकारों के प्रति जागरूकता में वृद्धि	97(64.67)	97(64.67)
4	जीवन स्तर में सुधार	101(67.33)	101(67.33)
5	आर्थिक स्तर में वृद्धि	107(71.33)	107(71.33)

नोट — उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 150 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.2 के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल महिला उत्तरदाता में से 91(60.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना है कि महिला शिक्षा से मीणा समाज में परम्परागत रूढ़ियाँ ख़त्म हो रही है। जबकि 92(61.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि महिला शिक्षा से पारिवारिक निर्णयों में अहम भूमिका रही है।

वहीं 97(64.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि महिला शिक्षा से अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। आगे इसी क्रम में महिला शिक्षा से महिलाओं के जीवन स्तर पर भी प्रभाव बताया गया है, जिनका योग प्रतिशत 101(67.33) है। जबकि महिला शिक्षा से आर्थिक जीवन स्तर में भी सुधार आया है, जिनका योग प्रतिशत 107(71.33) है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि महिला शिक्षा से इनके सभी पक्षों पर प्रभाव पड़ा, जिनमें महिला उत्तरदाताओं ने सर्वाधिक प्रभाव आर्थिक जीवन स्तर में वृद्धि को बताया है। अतः महिला शिक्षा से मीणा समाज पर सकारात्मक देखा गया है।

पारिवारिक निर्णयों में सहभागिताः—

सहभागिता का अर्थ है किसी भी कार्य में पूर्ण रूप से रूचि लेना अर्थात् मीणा समाज की महिलाएँ शिक्षित होने के कारण परिवार के निर्णयों में भागीदार होने लगी है। जिस प्रकार पुरूष का दायित्व होता है, उसी प्रकार शिक्षित महिलाएँ भी परिवार के कार्यों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं की सामाजिक स्थिति के अन्तर्गत पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया। जिसके सम्बन्ध में निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों का प्रदर्शन।

तालिका संख्या 5.3

वैश्वीकरण से महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी

क्र. सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	115(76.67)	115(76.67)
2	नहीं	35(23.33)	35(23.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.3 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 115 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 76.67 है। वहीं विपक्ष में मत व्यक्त करने वाली महिला उत्तरदाता 35 हैं, जिनका प्रतिशत 23.33 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि मीणा महिलाओं की परिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.3(अ)

पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी के कारण

क्र. सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	अधिकारों के प्रति सजगता	61(53.04)	61(53.04)
2	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	65(56.52)	65(56.52)
3	आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि	76(66.09)	76(66.09)
4	सरकार द्वारा संचालित योजनाओं में भागीदारी	62(53.91)	62(53.91)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 115 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 115 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.3(अ) से स्पष्ट है कि कुल महिला उत्तरदाताओं में से 61(53.04) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि से सहभागिता बढ़ी है। इसी क्रम में 65 महिला उत्तरदाता अपने अधिकारों के प्रति सजगता को दर्शाती है, जिनका प्रतिशत 59.52 प्रतिशत है। वहीं 76(66.09) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, मानती है कि वैश्वीकरण से महिलाएँ आर्थिक रूप से परिवार में आत्मनिर्भर हो रही है। आगे इसी क्रम में 62(53.91) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि सरकार के द्वारा संचालित योजनाओं में भागीदारी से महिलाएँ जागरूक हो रही है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी बढ़ने का सर्वाधिक कारण आर्थिक रूप से आत्म निर्भरता में वृद्धि होने का रहा है। जिसके कारण महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हो रहा है।

अन्तर्जातीय विवाह पर प्रभावः–

धर्मशास्त्रों के अनुसार प्रत्येक हिन्दू को अपनी ही जाति के अन्दर विवाह करना चाहिए, किसी भी जाति का पुरूष व महिला अपनी जाति के बाहर मान्यता प्राप्त विवाह नहीं कर सकते। यदि हम भारतीय इतिहास पर नजर दौड़ाएँ तो अन्तर्जातीय विवाह भारत में प्राचीन समय से चले आ रहें हैं। क्योंकि भारतीय राजाओं एवं नवाबों के नाम अन्तर्जातीय विवाह के इतिहास में दर्ज हैं।[5] ''मध्यकाल में मुसलमान बने मीणों, मेवों, मेवातियों आदि में वैवाहिक सम्बन्ध हुआ करते थे। टोडरमल मेव के पुत्र दरिया खॉ का बादाराव की पुत्री शशिवदनी से विवाह हुआ था, जिन्हें इतिहासकारों ने मीणा ही माना है।''[6]

परन्तु यह सभी उदाहरण मात्र शासक वर्ग में ही देखने को मिलते हैं, आम मीणा जन–समुदाय में नहीं। वैश्वीकरण से महिलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी हुई, महिलाओं की आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई। जिसके कारण सामाजिक परम्पराओं का त्याग हुआ। अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया। महिला उत्तरदाताओं के अन्तर्जातीय विवाह के प्रति क्या दृष्टिकोण है आदि पक्षों को जानने का प्रयास किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.4
वैश्वीकरण से महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला

क्र.सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	110(73.33)	110(73.33)
2	नहीं	40(26.67)	40(26.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.4 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 127 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 84.67 प्रतिशत है। वहीं 23 महिला उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 15.33 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि हाँ के पक्ष में अर्थात् प्रश्न के पक्ष में मत प्रकट करने वाली महिला उत्तरदाताओं का योग प्रतिशत सर्वाधिक है।

तालिका संख्या 5.4(अ)
महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला के कारण

क्र.सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	जाति आधारित नियमों में शिथिलता	77(77.00)	77(77.00)
2	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	75(68.18)	75(68.18)
3	मीड़िया का प्रभाव	95(86.36)	95(86.36)
4	रोजगारों के अवसरों में वृद्धि	90(81.82)	90(81.82)
5	सामाजिक बन्धनों एवं सोच में परिवर्तन	93(84.55)	93(84.55)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 110 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 110 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.4(अ) से स्पष्ट है कि महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला। जिसके सम्बन्ध में महिला उत्तरदाताओं ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि को कारण माना,

जिनका योग प्रतिशत 77(77.00) है। इसी क्रम में 75 महिला उत्तरदाताओं ने जाति आधारित नियमों में शिथिलता का होना माना, जिनका प्रतिशत 68.18 प्रतिशत है। वहीं 95(86.36) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने मीड़िया के प्रभाव को कारण माना। जबकि 90(18. 82) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता ऐसी है, जो रोजगार के अवसरों में वृद्धि को कारण मानती हैं। वहीं 93(84.55) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि सामाजिक बन्धनों एवं सोच में परिवर्तन होने से बढ़ावा मिला है। अतः उपर्युक्त तालिका में दी गई सूचनाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया के प्रभाव का रहा है। जिसके कारण अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह के प्रति सकारात्मक सोच पैदा हो रही है।

वस्त्राभूषणों पर प्रभावः—

पूर्व में मीणा जनजाति की महिलाएँ वस्त्रों के रूप में लूगड़ी, कंचुकी, कुर्ती एवं घाघरा आदि धारण करती थी। वहीं आभूषणों के रूप में सोना—चाँदी, पीतल या कथीर धातु के आभूषण जैसे—हसली, करधनी, पैरों में झाझर, कड़े या रमझोल पहनने की प्रथा थी। इनके अतिरिक्त हाथी दांत की चूडीयाँ, भुजबन्द, तथा राखड़ी भी धारण करती थी। इन सब परम्परागत वस्त्राभूषणों में वैश्वीकरण के कारण परिवर्तन आ गया है। वैश्वीकरण से शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुई, सामाजिक बन्धनों में छूट देखी गई, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई पाश्चात्य सभ्यता का भी सीधा असर दिखाई दिया आदि पक्षों के कारण परिवर्तन हुआ है।

अतः यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक मीणा समाज की महिलाओं में वैश्वीकरण के कारण जागरूकता आई। जिसके कारण इनकी सोच में बदलाव देखा गया साथ ही परम्परागत आभूषणों के स्थान पर नवीन आभूषणों का प्रचलन बढ़ा है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं के वस्त्राभूषणों (पहनावें) पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा। महिला उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.5

वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं के पहनावें पर प्रभाव पड़ा

क्र.सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	117(78.00)	117(78.00)
2	नहीं	33(22.00)	33(22.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.5 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 117 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 78.00 प्रतिशत है। वहीं 33(22.00) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका नहीं के पक्ष में। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं के परम्परागत पहनावें पर प्रभाव पड़ा है, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.5(अ)

किस प्रकार मीणा महिलाओं के पहनावें को प्रभावित किया

क्र. सं.	प्रभाव	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	परम्परागत पहनावें से दूरी	66(56.41)	66(56.41)
2	पाश्चात्य पहनावें की ओर झुकाव	95(81.20)	95(81.20)
3	परम्परागत पहनावें को हास्यापद बनना	96(82.05)	96(82.05)
4	सामाजिक नियमों में लचीलापन	75(64.10)	75(64.10)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 117 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 117 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.5(अ) से स्पष्ट है कि मीणा महिलाओं के परम्परागत पहनावें को प्रभावित किया। जिसके सम्बन्ध में 66 महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि वैश्वीकरण से परम्परागत पहनावें में दूरियाँ बढ़ी। जिनका प्रतिशत 54.41 प्रतिशत है। दूसरा प्रभाव 95 महिला उत्तरदाताओं ने पाश्चात्य पहनावें की ओर झुकाव को माना, जिनका प्रतिशत 81.20 प्रतिशत है। वहीं 96(82.05) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि परम्परागत पहनावा वैश्वीकरण के दौर में हास्यास्पद हुआ है। 75(64.10) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि वैश्वीकरण से सामाजिक नियमों में लचीलापन पैदा हुआ है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा महिलाओं में परम्परागत पहनावें से दूरियाँ बढ़ रही है। वहीं आधुनिक पहनावें की ओर कदम बढ़ा रही हैं, यह वैश्वीकरण का महिलाओं के परम्परागत पहनावें पर नकारात्मक प्रभाव है।

सामाजिक कुरीतियों पर प्रभावः–

भारतीय समाज में पहले लोग अशिक्षित थे, जिसके कारण उनकी मानसिकता भी संकीर्ण थी। खुले विचारों की कमी के कारण ही समाज में अनेक सामाजिक कुरीतियाँ व्याप्त थी जैसे–पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा एवं कन्या वध तो ऐसी कुरीति थी, जो आज भी भ्रूण हत्या के रूप में हमारे समाज में विद्यमान है। इन कुरीतियों से लिप्त समाज ने औरत की स्थिति को अत्यंत दयनीय बना दिया।"[7] जनजातीय समाज में तो यह स्थिति ओर भी बुरी थी, क्योंकि मीणा जनजाति में सामाजिक कुरीतियाँ व्याप्त थी। जिनके कारण मीणा महिलाओं की सामाजिक स्थिति सभ्य समाज की महिलाओं जैसी नहीं थी। परन्तु शिक्षा के स्तर में वृद्धि होने से इनकी सोच में बदलाव देखा गया है। जिसके कारण महिलाएँ जागरूक एवं आत्मनिर्भर हो रही हैं, यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत सामाजिक कुरीतियों पर क्या प्रभाव पड़ा आदि पक्षों को जानने का प्रयास किया गया। महिला उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शन किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.6

वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं की सामाजिक कुरीतियों को प्रभावित किया

क्र. सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	120(80.00)	120(80.00)
2	नहीं	30(20.00)	30(20.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.6 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 124 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 82.67 प्रतिशत है। वहीं 26 महिला उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 17.33 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण ने सामाजिक कुरीतियों को प्रभावित किया, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.6(अ)

मीणा महिलाओं की सामाजिक कुरीतियों को प्रभावित किया के कारण

क्र. सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	सामाजिक नियमों में लचीलापन	105(87.05)	105(87.05)
2	पाश्चात्य संस्कृति की ओर झुकाव	95(79.17)	95(79.17)
3	शिक्षा का बढ़ता स्तर	107(89.17)	107(89.17)
4	मीड़िया द्वारा जागरूकता फैलाना	115(95.83)	115(95.83)
5	भौतिकवादी सोच में वृद्धि	103(85.83)	103(85.83)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 120 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 120 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.6(अ) के आंकड़े वह विवरण दर्शाता है कि कुल महिला उत्तरदाताओं में से 105(87.05) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने सामाजिक कुरीतियों को प्रभावित करने का कारण सामाजिक नियमों में लचीलेपन को माना है। वहीं 95(79.17)योग प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने पाश्चात्य संस्कृति की ओर झुकाव को माना है। दूसरा कारण 107(89.17) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने शिक्षा के स्तर में बढ़ोत्तरी के प्रभाव को माना है। वहीं 115 महिला उत्तरदाताओं ने मीड़िया को माना, जिनका प्रतिशत 95.83 प्रतिशत है। जबकि 103(85.83) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना की वैश्वीकारण से भौतिकवादी सोच में वृद्धि हुई। अतः तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि उपर्युक्त कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया द्वारा जागरूकता फैलाने का रहा है। यह वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव है।

विधवा पुनर्विवाह पर प्रभावः–

भारतीय समाज की मान्यताओं के अनुसार हिन्दू समाज में विधवा पुनर्विवाह की परम्परा रही थी। "हिन्दू समाज की तरह जनजातीय समाज में भी विधवा महिला को पुनर्विवाह करने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था। यह मान्यता अधिकांश मामलों में देवर–भाभी विवाह के रूप में थी। इस प्रकार के विवाह को अधिमान्य विवाह के रूप में माना जाता था।"[8] मीणा जनजाति में भी विधवा विवाह की परम्परा प्रचलित थी, जो तथाकथित सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण शुरू हुई। इनमें भी विधवा का विवाह मृत पति के छोटे भाई से करवा दिया जाता था। भाई अपनी भाभी से विवाह करने के लिए राजी नहीं हों तो उस महिला को नाते मेल दिया जाता था। यह प्रथा स्वतन्त्रता से पहले एवं प्राप्ति के बाद भी समाज में व्याप्त थी।

वर्तमान में शिक्षा के स्तर में वृद्धि से, सूचना क्रांति आने से एवं महिलाओं में सकारात्मक सोच पैदा होने से इस प्रथा के प्रति बदलाव आया है। यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है, जिससे समाज में परिवर्तन हुआ और महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बदलाव देखा गया। अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.7

वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह पर प्रभाव पड़ा

क्र.सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	120(80.00)	120(80.00)
2	नहीं	30(20.00)	30(20.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.7 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 120 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 80.00 प्रतिशत है। वहीं 30 महिला उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 20.00 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि महिलाओं में इस प्रथा के प्रति सकारात्मक सोच पैदा हुई, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.7(अ)

मीणा महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह पर प्रभाव के कारण

क्र. सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	सामाजिक नियमों में बदलाव	95(79.17)	95(79.17)
2	महिला–पुरूषों के सम्बन्धों में खुलापन	116(96.67)	116(96.67)
3	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	117(97.05)	117(97.05)
4	मीड़िया का प्रभाव	96(80.00)	96(80.00)
5	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	92(76.67)	92(76.67)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 120 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 120 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.7(अ) से स्पष्ट है कि कुल महिला उत्तरदाताओं में से 95(79.17) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि सामाजिक नियमों में बदलाव से विधवा पुनर्विवाह हुए है। जबकि 116(96.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों में खुलापन आने से बदलाव आया है। वहीं 117(97.05) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुई, जो सर्वाधिक है। जबकि 96(80.00) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि मीणा महिलाओं पर मीड़िया का प्रभाव पड़ा है। वही 92(76.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से विधवा पुनर्विवाह होने लेगे। अतः उपर्युक्त तालिका में दी गई सूचनाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है। जिसके कारण मीणा समाज में महिलाओं के प्रति सकारात्मक सोच पैदा हो रही है।

विवाह की आयु पर प्रभावः–

''जनजातीय समाज में आम तौर पर जीवनसाथी के चयन के तरीके तथा विवाह के स्वरूप उनकी परिस्थिति के हिसाब से सम्पन्न होते थे। विवाह के ये तरीके सर्वाधिक बर्बरता से लेकर पर्याप्त विकसित मानव समाजों के तरीकों तक सीमित थे। जनजातीय समाज में विवाह योग्य लड़के तथा लड़की को जीवनसाथी के चयन की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी और अन्यत्र विवाह का आयोजन माता–पिता द्वारा भी निर्धारित किया जाता था।''[9] इसी सन्दर्भ में मीणा महिलाओं का अध्ययन किया गया। मीणा जनजाति में बाल–विवाह का चलन अधिक मात्रा में था, जिसके कारण बालक–बालिकाओं का विवाह कम उम्र में ही सम्पन्न कर दिया जाता था।

वैश्वीरकण से शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, सामाजिक नियमों में बदलाव आया, सूचना क्रांति आई आदि पक्षों के कारण समाज में बालक–बालिकाओं का विवाह युवा अवस्था आने पर सम्पन्न होने लगे हैं। यह वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक प्रभाव है। अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं के विवाह की आयु में आए परिवर्तन का अध्ययन किया गया है। जिसमें पूर्व और वर्तमान के विवाह की आयु के बारे में महिला उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गई, जिसको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.8

मीणा महिलाओं के विवाह की आयु में परिवर्तन

क्र. सं.	वर्गान्तराल	महिला उत्तरदाताओं की संख्या			योग (प्रतिशत)
		प्रथम पीढ़ी (प्रतिशत)	द्वितीय पीढ़ी (प्रतिशत)	स्वंय (प्रतिशत)	
1	05 –10वर्ष	10(28.57)	–	–	10(06.67)
2	11–15 वर्ष	25(71.43)	27(47.37)	–	52(34.67)
3	16–20 वर्ष	–	25(43.86)	35(60.34)	60(40.00)
4	21–25 वर्ष	–	05(08.77)	23(39.66)	28(18.66)
	योग	35(100.00)	57(100.00)	58(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.8 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं से उनके परिवार के सदस्यों एवं स्वयं के विवाह की आयु के बारे में जानकारी प्राप्त करने पर '5–10 वर्ष के मध्य विवाह की आयु 10(06.67) योग प्रतिशत है, जो कि महिला की दादी के विवाह की आयु थी। 11–15 वर्ष की आयु का वर्गान्तराल प्रथम पीढ़ी (दादी) और द्वितीय पीढ़ी (माता) का योग प्रतिशत 52(34.67) है, जो यह दर्शाता है कि महिला उत्तरदाता की दादी व माता का विवाह इस वर्ग अन्तराल के बीच हुआ था। 16–20 वर्ग–अन्तराल का विवाह द्वितीय पीढ़ी और स्वयं का है, जिसमें दर्शाया गया है कि कुल 150 में से 60(40.00) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने माना कि माता और स्वयं का विवाह सम्पन्न हुआ था। 21–25 वर्गान्तराल अर्थात् विवाह की आयु में दर्शाया गया कि महिला उत्तरदाता की माता और स्वयं के विवाह की आयु 21 से 25 वर्ष के बीच थी, जिनका योग प्रतिशत 28(18.66) है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण के कारण अध्ययन क्षेत्र की महिला उत्तरदाताओं की प्रथम पीढ़ी एवं द्वितीय पीढ़ी और साथ ही स्वयं के विवाह की आयु में परिवर्तन हो रहा है। यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

दहेज प्रथा पर प्रभावः–

''जिस सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कोख से दहेज प्रथा ने जन्म लिया। उसका आरम्भिक स्वरूप निश्चित ही आज के भौतिकवादी समाज की तरह नहीं था। विवाह संस्था की स्थापना के साथ जीवन की आवश्यक चीजें वर–वधु को दी जाती थी। जिनसे वह अपनी गृहस्थी को चला सके, यह प्रथा कई शताब्दियों से चली आ रही है।''[10]

''कालान्तर में लड़की के साथ बहुत सी चीजें जुड़ती गई। लड़के और लड़कियों की सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक स्थिति का मूल्यांकन होने लगा। लड़की की सुन्दरता और सौन्दर्यता का आंकलन किया जाने लगा। दहेज की मांग बढ़ती गई साथ ही

वर मूल्यों के भाव आसमान छूने लगे। जिसके कारण दहेज ने एक व्यवसाय का रूप धारण कर लिया। दहेज दो परिवारों के मध्य रिश्तों के सम्बन्ध नहीं बनाते, बल्कि धन–सम्पत्ति के सम्बन्ध बनाते हैं। जिसके कारण लड़की पर उत्पीड़न एवं अत्याचार किया जाता है।"[11]

ऐसा ही मीणा जनजाति की महिलाओं में देखा जाता है। इनमें भी वर को अधिक मूल्य व वस्तु देने की प्रथा है तथा दहेज प्रथा इनके लिए एक अभिशाप बन गई है। वैश्वीकरण के बाजार में दहेज एक मण्डी या मोल की वस्तु बन गई है। इसलिए वैश्वीकरण के इस युग में दहेज का व्यावसायीकरण हो गया है। मीणा महिलाओं का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत दहेज प्रथा पर क्या प्रभाव पड़ा आदि पक्षों के लिए तथ्यों का संकलन किया गया, जिनको निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 5.9

वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव पड़ा

क्र. सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	117(78.00)	117(78.00)
2	नहीं	33(22.00)	33(22.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.9 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 117 महिला उत्तरदाताओं का प्रश्न के पक्ष में हाँ का मत, जिनका प्रतिशत 78.00 प्रतिशत है। वहीं 33(22.00) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने विपक्ष में मत प्रकट किया है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र के महिला उत्तरदाताओं का प्रश्न के पक्ष में, कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.9(अ)

मीणा महिलाओं की दहेज प्रथा को प्रभावित किया के कारण

क्र. सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव	116(99.15)	116(99.15)
2	महिलाओं का आत्मनिर्भर होना	104(88.89)	104(88.89)
3	मीड़िया और सरकार द्वारा जागरूकता फैलाना	112(95.73)	112(95.73)
4	कानूनों का सख्त होना	104(88.89)	104(88.89)
5	समाजिक नियमों में शिथिलता	115(98.29)	115(98.29)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 117 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 117 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.9(अ) के आंकड़े दर्शाते है कि दहेज प्रथा को प्रभावित किया। जिसके सम्बन्ध में 116 महिला उत्तरदाता मानती है कि पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ा, जिनका प्रतिशत 99.15 प्रतिशत है। जबकि 104(88.89) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता स्वीकार करती है कि वैश्वीकरण से महिलाओं में आत्मनिर्भरता आई। वहीं 112(95.73) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि मीड़िया और सरकार द्वारा जागरूकता फैल रही है। जबकि 104(88.89) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि कानूनों के सख्त होने से दहेज प्रथा में परिवर्तन आया है। वहीं 115(98.29) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि सामाजिक नियमों में शिथिलता आने से महिलाओं की परम्परागत दहेज प्रथा में परिवर्तन हुआ। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव पड़ा है। जिसके उचित कारणों में सर्वाधिक कारण पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव रहा, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

पर्दा–प्रथा पर प्रभावः–

''आदिम समाज में पर्दा–प्रथा का चलन मूलरूप में कहीं विद्यमान नहीं था। यद्यपि "परिहार" का चलन था, लेकिन पर्दा–प्रथा नहीं थी। कहीं–कहीं तो पर्दा–प्रथा ने आदिवासी स्त्री को दयनीय स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। राजस्थान की मीणा तथा डामोर जनजाति में व्यापक रूप से पर्दा–प्रथा का चलन है, जिसके कारण मीणा महिलाओं की दयनीय स्थिति थी।''[12] वैश्वीकरण के कारण मीणा महिलाओं की शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुई, सामाजिक बन्धनों एवं नियमों में खुलापन आया, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा, सूचना क्रांति आई आदि पक्षों के कारण पर्दा–प्रथा प्रभावित हुई। यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का अध्ययन किया गया, जिसके अन्तर्गत पर्दा–प्रथा पर क्या प्रभाव पड़ा। उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनका निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शन।

तालिका संख्या 5.10

वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव पड़ा

क्र.सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	115(76.67)	115(76.67)
2	नहीं	35(23.33)	35(23.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.10 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 115 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में , जिनका प्रतिशत 76.67 प्रतिशत है। वहीं 35(23.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत नहीं के पक्ष में है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मीणा महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.10(अ)

मीणा महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव के कारण

क्र. सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	समाजिक बन्धनों में कमी	65(56.52)	65(56.52)
2	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	67(58.26)	67(58.26)
3	महिलाओं का आत्मनिर्भर होना	64(55.65)	64(55.65)
4	पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव	57(49.57)	57(49.57)
5	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	60(52.17)	60(52.17)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 115 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 115 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.10(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि महिलाओं की पर्दा प्रथा पर प्रभाव पड़ा। जिसके सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 65(56.52) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि सामाजिक बन्धनों में कमी आने से पर्दा प्रथा में परिवर्तन आया। जबकि 67(58.26) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि से पर्दा प्रथा में बदलाव आया। वहीं 64(55.65) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि महिलाओं की आत्मनिर्भरता में वृद्धि से पर्दा प्रथा में कमी आई है। जबकि 57(49.57) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि पर्दा–प्रथा पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा है। 60(52.17) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से पर्दा–प्रथा में बदलाव देखा गया है। अतः उपर्युक्त तालिका में दी गई सूचनाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है, जिसके कारण पर्दा–प्रथा में परिवर्तन हो रहा है। यह वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव है।

विवाह–विच्छेद पर प्रभावः–

''विवाह–विच्छेद वह स्थिति है, जिसमें पति–पत्नी का वैवाहिक सम्बन्ध अंतिम रूप से समाप्त हो जाता है। दोनों ही पक्ष वैवाहिक सम्बन्ध से मुक्त होकर विवाह पूर्व की स्थिति में आ जाते हैं। दोनों ही पक्षों को एक दूसरे के साथ रहने, सहवास अथवा यौन सम्बन्ध रखने का अधिकार भी पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है। इसे हम यथार्थ विवाह की अन्तिम समाप्ति कहते हैं।''[13] इसी सन्दर्भ में मीणा महिलाओं का अध्ययन किया गया है। पूर्व में मीणा जनजाति में विवाह–विच्छेद की प्रथा प्रचलित नहीं थी। तथाकथित सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण इस प्रथा का प्रचलन हुआ, जिसमें भी सिर्फ पुरूषों को ही अधिकार प्राप्त था। वह भी मात्र विशेष परिस्थितियों में जैसे– स्त्री के बदचलन होने, बांझ या बीमार होने पर ही वह उसे तलाक दे सकता है। व्यावहारिक रूप से तलाक के स्थान पर सामंजस्य को महत्त्व दिया जाता था। परन्तु मीणा महिलाओं के शैक्षिक स्तर में वृद्धि होने से महिलाएँ भी पुरूषों के समान ही तलाक लेने में एवं देने में आत्मनिर्भर हो रही हैं।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत परम्परागत विवाह–विच्छेद की प्रथा पर क्या प्रभाव पड़ा है। महिला उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है, जिनका निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शन।

तालिका संख्या 5.11

वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं के विवाह–विच्छेद की प्रथा पर प्रभाव पड़ा

क्र. सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	116(77.33)	116(77.33)
2	नहीं	34(22.67)	34(22.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.11 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 116 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 77.33 प्रतिशत है। वहीं 34(22.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने नहीं के पक्ष में मत प्रकट किया है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं की तलाक प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.11(अ)

मीणा महिलाओं के विवाह–विच्छेद की प्रथा पर प्रभाव के कारण

क्र. सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	जाति आधारित नियमों में लचीलापन	49(42.24)	49(42.24)
2	कानूनी प्रावधानों का सरलीकरण	47(40.57)	47(40.57)
3	आत्मनिर्भरता में सजगता	57(49.14)	57(49.14)
4	पारिवारिक न्यायालयों में वृद्धि	62(53.45)	62(53.45)
5	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	59(50.86)	59(50.86)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 116 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 116 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.11(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 49(42.24) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि जाति आधारित नियमों में लचिलेपन से विवाह विच्छेद की प्रथा में परिवर्तन आया। जबकि 47(40.57) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि कानूनी प्रावधानों में सरलीकरण से भी तलाक प्रथा में परिवर्तन हुआ, वहीं 57(49.14) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने महिलाओं की आत्मनिर्भरता में सजगता को भी कारण माना है। जबकि 62(53.45)) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने पारिवारिक न्यायालयों की संख्या में वृद्धि को कारण माना है। वहीं 59(50.86) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि से विवाह विच्छेद की प्रथा में परिवर्तन आया। अतः उपर्युक्त तालिका में दी गई सूचनाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण पारिवारिक न्यायालयों में वृद्धि का रहा है। यह वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव है।

लैंगिक भेदभाव पर प्रभावः–

"लिंग का सामाजिक एवं सांस्कृतिक भेद सार्वभौमिक है। हालांकि इस भेदभाव को प्रकट करने के तरीके प्रत्येक देश और काल में भिन्न–भिन्न होते रहे हैं। लेकिन हर समाज एवं काल में केवल महिलाएँ ही इस भेद के दुष्परिणाम भोगती रही है। अगर कोई महिला अपने पुरूष साथी की अपेक्षा ज्यादा काम करती है, तो भी उसे परिवार में अथवा समाज में वो स्थान प्राप्त नहीं होता जिसकी वो अधिकारी है।"[14] हमारे भारतीय समाज में आज भी कुछ ऐसी जनजातियाँ हैं, जो इस लैंगिक भेदभाव का शिकार है अर्थात् मीणा जनजाति में भी इस लैंगिक भेदभाव का अंश देखा गया। जिसके कारण महिला और पुरूषों में भेदभाव की स्थिति पैदा हुई। परन्तु वैश्वीकरण के दौर में अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं के

लैंगिक भेदभाव में क्या परिवर्तन हुए और क्या प्रभाव पड़ें आदि पक्षों का अध्ययन किया गया। महिला उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनका निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शन।

तालिका संख्या 5.12

वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं के लैंगिक भेदभाव पर प्रभाव पड़ा

क्र.सं.	**मत**	**महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)**	**योग (प्रतिशत)**
1	हाँ	118(78.67)	118(78.67)
2	नहीं	32(21.33)	32(21.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका 5.12 से यह स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 78.67 प्रतिशत अर्थात् 118 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में है। वहीं 32 महिला उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका का प्रतिशत 21.33 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण से महिलाओं के लैंगिक भेदभाव पर प्रभाव पड़ा, जिनका प्रश्न के पक्ष में सर्वाधिक संख्या का योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.12(अ)

मीणा महिलाओं के लैंगिक भेदभाव पर प्रभाव के कारण

क्र. सं.	**कारण**	**महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)**	**योग (प्रतिशत)**
1	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	64(54.24)	64(54.24)
2	संचार साधनों का प्रसार	75(63.56)	75(63.56)
3	सरकारी योजनाएँ	78(66.10)	78(66.10)
4	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	65(55.09)	65(55.09)
5	सामाजिक नियमों में शिथिलता	60(50.85)	60(50.85)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 118 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 118 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.12(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 64(54.24) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि से लैंगिक भेदभाव में कमी आयी। वहीं 75(63.56) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि संचार के संसाधनों के प्रसार से लैंगिक भेदभाव में बदलाव आया। दूसरी ओर

78(66.10) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि सरकारी योजनाएँ भी लैंगिक भेदभाव को प्रभावित करती है। वहीं 65(55.09) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से लैंगिक भेदभाव में कमी आयी। जबकि 60(50.85) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि सामाजिक नियमों में शिथिलता से लैंगिक भेदभाव में कमी आयी है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण सरकार द्वारा संचालित योजनाएँ रही है, जिसके कारण महिलाओं में जागरूकता पैदा हो रही है। जो वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की आर्थिक स्थितिः—

जनजातीय समाज की अर्थव्यवस्था मूल रूप से प्रकृति केन्द्रित रही है, जिसके कारण उत्पादन सम्बन्धी समस्त कार्य प्रकृति पर निर्भर थे। क्योंकि आदिवासी पूर्ण रूप से जंगलीय क्षेत्रों में निवास करते थे, साथ ही उनका जीवन स्तर भी सामान्य था। ''रिजवी के अनुसार मानवशास्त्रियों ने जनजातीय समाजों में स्त्री की आर्थिक जीवन में भूमिका विषय पर बहुत ध्यान केन्द्रित किया। जनजातीय अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित प्राप्त अध्ययनों में महिला—पुरूषों के मध्य श्रम—विभाजन को ही प्रमुख रूप से वर्णित किया गया है।''[15] यद्यपि जनजातीय समाज में महिलाएँ पुरूषों के साथ कृषि कार्य भी किया करती थी, जिसके कारण पुरूष व महिलाओं में श्रम—विभाजन की स्थिति सामान्य थी। ऐसा ही मीणा महिलाओं में देखा गया है, परन्तु उन्हें घर के बाहर कृषि कार्य के अलावा अन्य कार्यों की इजाजत नहीं थी।

''इस प्रकार आर्थिक विकास की चाहे कोई भी अवस्था हो जनजातीय महिलाएँ वर्तमान समय तक एक ''लेबर मशीन'' की भांति अपना योगदान अपने परिवार की अर्थव्यवस्था में देती आई है। यह योगदान आन्तरिक तौर पर ही सीमित नहीं है, बाहरी एवं घरेलू आर्थिक मामलों में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।''[16] आधुनिकता के परिणामस्वरूप जब उनके द्वारा शिक्षा प्राप्त की जाने लगी, तो धीरे—धीरे करके उन्होंने रोजगार के क्षेत्र में भी अपने कदम रखने शुरू कर दिये। इस प्रकार से अन्य जातियों की देखा—देखी ही सही मीणा महिलाओं ने भी बाहर आकर काम करने की हिम्मत दिखाई। आर्थिक स्थिति में सुधार आते देख मीणा पुरूषों के द्वारा भी इसे स्वीकृति प्रदान की जाने लगी।

अब मीणा महिलाएँ कृषि के साथ—साथ अन्य कई क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने लगी, साथ ही पारिवारिक आर्थिक स्थिति को भी बेहतर बनाने में पुरूषों के साथ कन्धें से कन्धा मिला कर खड़ी हुई। आरक्षण व्यवस्था ने भी उन्हें सरकारी नौकरियों की ओर आकृष्ट करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिसके कारण मीणा समाज के

पुरूषों के द्वारा अपनी मूक स्वीकृति प्रदान कर उन्हें उत्साहित किया जाने लगा है। प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन क्षेत्र कि मीणा महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया। वैश्वीकरण का महिलाओं के आर्थिक जीवन स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा है। महिला उत्तरदाताााओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.13

मीणा महिलाओं के परम्परागत व्यवसाय

क. सं.	परम्परागत व्यवसाय	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	कृषि	62(41.33)	62(41.33)
2	पशुपालन	65(43.33)	65(43.33)
3	घरेलू कार्य	97(64.67)	97(64.67)
4	कुटीर उद्योग	50(33.33)	50(33.33)
5	एक अधिक	25(16'67)	25(16.67)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 150 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.13 के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल महिला उत्तरदाताओं में से 62(41.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि मीणा महिलाएँ परम्परागत रूप से कृषि का कार्य करती थी। वहीं 65(43.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता ऐसी है, जो मानती है कि मीणा महिलाएँ परम्परागत रूप से पशुपालन का कार्य करती थी। 97(64.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मनाती है कि मीणा महिलाएँ परम्परागत रूप से घरेलू कार्यों में सलंग्न थी। जबकि 50(33.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि मीणा महिलाएँ परम्परागत व्यवसायों के रूप में कुटीर उद्योगों में कार्य करती थी। वहीं 25(16.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि महिलाएँ एक से अधिक परम्परागत व्यवसायियो में संलग्न थी। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र की महिलाएँ परम्परागत व्यवसायों के रूप में पशुपालन व घरेलू कार्यों से जुड़ी हुई थी। जिसके सम्बन्ध में महिला उत्तरदाताओं के संज्ञान सर्वाधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि प्राचीन समय में मीणा महिलाओं की आर्थिक स्थिति कमजोर थी।

तालिका संख्या– 5.14

मीणा महिलाओं के नवीन व्यवसाय

क्र.सं.	नवीन व्यवसाय	महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	अध्यापन का कार्य	116(77.33)	116(77.33)
2	डॉक्टर व नर्स का कार्य	47(31.33)	47(31.33)
3	उद्योगों में कार्य	57(38.00)	57(38.00)
4	आधुनिक तरीके से कृषि कार्य	62(41.33)	62(41.33)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 150 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 150 में से निकाला गया है।

तालिका 5.14 के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल महिला उत्तरदाताओं में से 116 (77.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि नवीन व्यवसाय के रूप में मीणा महिलाएँ अध्यापन का कार्य करने लगी है। जबकि 47(31.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि नवीन व्यवसाय के रूप में डॉक्टर व नर्स का कार्य करने लगी है। वहीं 57(38.00) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि मीणा महिलाएँ नवीन व्यवसाय के रूप में उद्योगों में कार्य करने लगी है। जबकि 62(41.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि मीणा महिलाएँ आधुनिक तरीके से कृषि कार्य करने लगी है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाएँ नवीन व्यवसाय के रूप में सर्वाधिक संख्या में अध्यापन का कार्य कर रही है। यह वैश्वीकरण का महिलाओं के आर्थिक पक्ष पर सकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 5.15

वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं का नौकरी की तरफ रूझान बढ़ा

क्र.सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1.	हाँ	121(80.67)	121(80.67)
2.	नहीं	29(19.33)	29(19.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.15 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 121 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 80.67 प्रतिशत है। वहीं 29 महिला उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 19.33 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का नौकरी की तरफ रूझान बढ़ा, जो सर्वाधिक संख्या का योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.15(अ)

मीणा महिलाओं का नौकरी की तरफ रूझान बढ़ने के कारण

क्र. सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	उचित प्रतिनिधित्व मिलना	98(80.99)	98(80.99)
2	पिछड़ेपन को दूर करना	67(55.37)	67(55.37)
3	आत्मनिर्भरता के लिए	81(66.94)	81(66.94)
4	पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता	92(76.03)	92(76.03)
5	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	76(62.81)	76(62.81)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 121 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 121 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.15(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल महिला उत्तरदाताओं में से 98(80.99) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता नौकरी करने का कारण समाज में उचित प्रतिनिधित्व को मानती हैं। वहीं 67(55.37) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता नौकरी करने का कारण पिछड़ेपन को दूर करने के लिए मानती हैं। जबकि 81(66.94) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता नौकरी करने का कारण आत्मर्निभरता को मानती हैं। वहीं 92(76.03) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता नौकरी करने का कारण पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता को भी मानती हैं। 76(62.81) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि से नौकरी की तरफ रूझान बड़ा। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अतः अध्ययन क्षेत्र की महिला उत्तरदाता नौकरी करने की इच्छा प्रकट करती हैं। जिसमें सर्वाधिक कारण उचित प्रतिनिधित्व मिलने का रहा है। यह वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव है।

तालिका संख्या 5.16

मीणा महिलाओं को रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलना चाहिए

क्र.सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	130(86.67)	130(86.67)
2	नहीं	20(13.33)	20(13.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.16 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 130(86. 67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता इसके पक्ष में विचार प्रकट करती हैं अर्थात् आरक्षण मिलना चाहिए। वहीं 20(13.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता इसके पक्ष में नहीं है। अतः तालिका से ज्ञात होता है कि मीणा महिलाएँ रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण की मांग करती हैं, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.16(अ)

मीणा महिलाओं को रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलने के कारण

क्र. सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	समानता प्रदान करना	74(56.92)	74(56.92)
2	उचित प्रतिनिधित्व मिलना	81(62.31)	81(62.31)
3	पिछड़ेपन को दूर करना	76(58.46)	76(58.46)
4	आर्थिक सुदृढ़ता	74(56.92)	74(56.92)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 130 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 130 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.16(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल महिला उत्तरदाताओं में से 74(56.92) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि आरक्षण से समानता में वृद्धि होगी। वहीं 81(62.31) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि आरक्षण से उचित प्रतिनिधित्व मिलेगा। जबकि 76(58.46) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि आरक्षण से पिछड़ापन दूर होगा। वहीं 74(56.92) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि आरक्षण से आर्थिक सुदृढ़ता आएगी। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि महिला उत्तरदाता आरक्षण मिलने के पक्ष में है। जिन्होंने कारणों में सर्वाधिक कारण उचित प्रतिनिधित्व मिलने को माना है।

तालिका संख्या 5.17

वैश्वीकरण से मीणा महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई

क्र. सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	123(82.00)	123(82.00)
2	नहीं	27(18.00)	27(18.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.17 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 123 महिला उत्तरदाता प्रश्न के पक्ष में हाँ का मत, जिनका प्रतिशत 82.00 प्रतिशत है। वहीं 27 महिला उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 18.00 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई, जो सर्वाधिक संख्या का योग प्रतिशत है। परन्तु कुछ महिला उत्तरदाताओं ने नहीं के पक्ष में भी मत प्रकट किया, जो सर्वाधिक से कम है।

तालिका संख्या 5.17(अ)

मीणा महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई के कारण

क्र. सं.	कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	82(66.67)	82(66.67)
2	संचार के संसाधनों में वृद्धि	76(61.79)	76(61.79)
3	सामाजिक नियमों में बदलाव	47(38.21)	47(38.21)
4	रोजगार के अवसरों में वृद्धि	57(46.34)	57(46.34)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 123 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 123 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.17(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 82(66.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि से महिलाएँ नवीन व्यवसाय की और प्रवृत हुई है। जबकि 76(61.79) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि संचार के संसाधनों में वृद्धि से महिलाएँ नवीन व्यवसाय की और बढी है। वहीं 47(38.21) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि सामाजिक नियमों में बदलाव आया। जबकि 57(46.34) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि से महिलाएँ नवीन व्यवसाय की और बढी है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के

स्तर में वृद्धि का रहा है। जिसके कारण महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हो रही है। यह वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव है।

मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की राजनीतिक स्थितिः—

मुगल एवं ब्रिटिश काल में मीणा महिलाओं की राजनीतिक स्थिति काफी दयनीय थी। पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं के राजनीतिक अधिकार नगण्य थे, क्योंकि पुरूष गांव और जनजातीय संगठन का मुखिया होता था। जिसके कारण सारे निर्णय पुरूष द्वारा लिए जाते थे, परन्तु सभी जनजातियों में ऐसा नहीं है। ''थारू जनजाति में स्त्रियों को पुरूषों के समकक्ष अधिकार दिये जाते हैं तथा थारू पुरूष अनेक मामलों में स्त्रियों की सलाह लेना श्रेयस्कर समझते हैं। ऐसा ही उदाहरण सॉसी जनजाति में भी दिखाई देता है, क्योंकि इसमें भी पुरूष स्त्रियों की राय लेते हैं।''[17] इससे यह ज्ञात होता है आदिकाल में स्त्रियों की स्थिति भी पुरूषों के समान ही सम्मानजनक थी। लेकिन ऐसी जनजातियों की संख्या अत्यन्त ही कम है, जिसमें महिलाओं को पुरूषों के समकक्ष अधिकार दिये गये हैं।

मीणा जनजाति की महिलाओं में देखा गया कि स्वतन्त्रता से पहले इनकी राजनीतिक क्षेत्र में हिस्सेदारी कम दिखाई देती थी तथा पुरूषों का आधिपत्य अधिक होता था। यद्यपि स्वतन्त्रता के पश्चात् मीणा महिलाओं की राजनीतिक स्थिति में लगातार सुधार देखा जा रहा है, पर पुरूषों की अपेक्षा नाम मात्र है। परन्तु यह सुधार नब्बे के दशक से व्यापक रूप में फैला है, क्योंकि विश्व के सभी देशों के साथ ही भारत में भी वैश्वीकरण की अवधारणा आई। जिसने सभी क्षेत्रों के साथ—साथ मीणा महिलाओं को भी प्रभावित किया है, जैसे — शैक्षिक स्तर में वृद्धि, जाति आधारित पंचायतों का ह्यस हुआ। इसके साथ ही विज्ञापन, मीड़िया, सरकार तथा संचार के संसाधनों के माध्यम से मीणा महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता आई है।

राजनीतिक जागरूकता से मतदान के प्रति रूचि बढ़ी, अपने राजनीतिक अधिकारों का ज्ञान हुआ, राजनीतिक दलों में हिस्सेदारी बढ़ी, राजनीतिक नीतियों एवं कानूनों के निर्माण में भागीदारी बढ़ी तथा राजनीति के उच्च पदों पर मीणा महिलाएँ आसीन हुई। वैश्वीकरण ने यद्यपि मीणा महिलाओं की राजनीतिक प्रस्थिति को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। परन्तु वर्तमान में भी पुरूषों की तुलना में राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका नगण्य ही रही है। अतः समय आ गया है कि उन्हें भी ओर अधिक राजनीतिक खुलेपन तथा राजनीतिक अधिकार प्रदान किये जाये। जिसके कारण महिलाएँ राजनीति में अपनी स्थिति मजबूत कर सकें।

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन क्षेत्र कि मीणा महिलाओं की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन किया गया। महिलाओं की परम्परागत राजनीतिक स्थिति पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

मतदान व्यवहारः—

भारत सरकार ने मतदान के लिए 18 वर्ष की उम्र निर्धारित की है, क्योंकि सफल प्रजातंत्र के लिए देश की जनता का मतदान में भागीदार होना अति आवश्यक है। पूर्व में मीणा जनजाति में जाति पंचायत व्यवस्था, जो पुरुष प्रधान व्यवस्था थी। स्वतन्त्र भारत में मीणा जनजाति को मतदान का अधिकार मिला, परन्तु पुरुषों की अपेक्षा मीणा महिलाएँ जागरुक कम थी अर्थात् शिक्षा का अभाव था। जिसके कारण महिलाएँ राजनीति से दूर थी।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया और शिक्षा के स्तर में वृद्धि से सामाजिक बन्धनों में खुलापन, जाति पंचायत व्यवस्था का ह्यस, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, आदि कारणों से महिलाओं में मतदान के प्रति जागरूकता आई। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें मतदान व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ा आदि पक्षों के लिए, तथ्यों का संकलन किया गया है। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.18

वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित किया

क्र.सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	उचित	119(79.33)	119(79.33)
2	अनुचित	31(20.67)	31(20.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.18 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 119(79.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता उचित के पक्ष में। वहीं 31(20.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता अनुचित के पक्ष में है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मतदान व्यवहार को प्रभावित किया, जो उचित के पक्ष में सर्वाधिक योग प्रतिशत है। परन्तु एक पक्ष इससे अनजान है अर्थात् अनुचित के पक्ष मैं रहा, जो सर्वाधिक से कम है।

तालिका संख्या 5.18(अ)

मीणा महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने के उचित कारण

क्र.सं.	उचित के कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	शिक्षा के स्तर में वृद्धि	87(73.11)	87(73.11)
2	संचार के संसाधनों में वृद्धि	82(68.91)	82(68.91)
3	मीड़िया का प्रभाव	47(39.50)	47(39.50)
4	मतदान के प्रति जागरूकता	49(41.18)	49(41.18)
5	जातिगत नियमों शिथिलता	62(52.10)	62(52.10)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 119 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 119 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.18(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 87(73.11) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि से मतदान व्यवहार प्रभावित हुआ है। वहीं 82(68.91) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि संचार के संसाधनों में वृद्धि से मतदान व्यवहार में परिवर्तन आया। जबकि 47(39.50) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि मतदान व्यवहार पर मीड़िया का प्रभाव पड़ा है। वहीं 49(41.18) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ी। जबकि 62(52.10) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि जातिगत नियमों में शिथिलता से मतदान व्यवहार में बदलाव आया। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है, जिसके कारण महिलाओं में मतदान व्यवहार के प्रति सकारात्मक सोच पैदा हो रही है। यह वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव है।

राजनीतिक भागीदारीः–

राजनीतिक भागीदारी का शाब्दिक अर्थ है, किसी राज्य या देश के नागरिकों को राजनीति की प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार। प्राचीन समय में मीणा जनजाति जाति पंचायत के कार्यक्रमों व नीतियों में भागीदारी निभाती थी। जिसमें भी महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों का आदिपत्य अधिक था, क्योंकि महिलाओं को यह अधिकार नहीं दिया जाता था। स्वतन्त्र भारत में भी ऐसा ही देखने को मिला, क्योंकि अधिकार तो मिले परन्तु अधिकारों एवं नीतियों की जानकारी नहीं थी। जिसमें महिलाओं का स्थान निम्न स्तर का था, इन कारणों से महिलाओं की राजनीतिक स्थिति कमजोर रही।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया और शिक्षा के स्तर में वृद्धि से, सामाजिक बन्धनों में लचीलापन, मतदान में सहभागिता आदि कारणों से मीणा महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी बढ़ रही है। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का अध्ययन, उनकी राजनीतिक भागीदारी के बारे में जानने के लिए किया गया। जिसके सम्बन्ध में निम्नलिखित तालिका के माध्यम से तथ्यों का प्रदर्शन किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.19

वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई

क्र. सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	121(80.67)	121(80.67)
2	नहीं	29(19.33)	29(19.33)
	कुल	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 5.19 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 121 महिला उत्तरदाता हाँ के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 80.67 प्रतिशत है। वहीं 29 महिला उत्तरदाता नहीं के पक्ष में, जिनका प्रतिशत 19.33 प्रतिशत है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है। परन्तु कुछ महिला उत्तरदाता ऐसा नहीं मानती हैं, जो सर्वाधिक से कम है।

तालिका संख्या 5.19(अ)

किस प्रकार मीणा महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई

क्र. सं.	प्रभाव/कारण	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	82(67.77)	82(67.77)
2	राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजकता	47(38.84)	47(38.84)
3	सूचना क्रांति का प्रभाव	83(68.60)	83(68.60)
4	जनजातीय समाज में प्रतिष्ठा	64(52.89)	64(52.89)
5	सामाजिक नियमों में बदलाव	57(47.11)	57(47.11)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 121 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 121 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.19(अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल महिला उत्तरदाताओं मे से 82(67.77) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि शैक्षिक स्तर में वृद्धि से जागरूकता बढ़ी है। जबकि 47(38.84) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका मत है कि राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजकता बढ़ी है। वहीं 83(68.60) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि सूचना क्रांति के बढ़ते प्रभाव से भागीदारी बढ़ी। वहीं 64(52.89) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि जनजातीय समाज में प्रतिष्ठा से भागीदारी बढ़ी है। जबकि 57(47.11) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना है कि सामाजिक नियमों में बदलाव से भागीदारी बढ़ी। अतः उपर्युक्त तालिका में दी गई सूचनाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कारणों में सर्वाधिक कारण सूचना क्रान्ति के प्रभाव का रहा है। जिसके कारण महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी बढ़ रही है। अतः यह वैश्वीकरण का महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव है।

राजनीति में आरक्षण व्यवस्थाः—

राजनीति में आरक्षण व्यवस्था का तात्पर्य भारतीय लोकतंत्रीय संस्थाओं में अनुसूचित जातियों, जनजातियों तथा महिलाओं के स्थानों के संरक्षण से लिया जाता है। ऐसा ही मीणा जनजाति में देखा गया, क्योंकि स्वतन्त्र भारत में मीणा जनजाति को आरक्षण मिला। जिसके कारण भारतीय राजनीति में इनके स्थान सुरक्षित हुए तथा लाभ का पद भी मिला, पर पुरुषों की अपेक्षा मीणा महिलाओं की राजनीतिक स्थिति नगण्य ही रही है।

नब्बें के दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा आई तो शिक्षा का स्तर बढ़ा, सामाजिक नियमों में शिथिलता आई, महिलाओं के प्रति पुरुषों की सोच में परिवर्तन हुआ, मतदान के प्रति जागरुकता आई, लोकतंत्र में विश्वास पैदा हुआ, राजनीतिक दलों से सम्बद्धता बढ़ी आदि कारणों से महिलाओं की परम्परागत राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन देखा गया। अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं की परम्परागत राजनीतिक स्थिति में क्या परिवर्तन आया और क्या प्रभाव पड़ा है। महिला उत्तरदाताओं की सूचना के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया। जिनको निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

तालिका संख्या 5.20

राजनीति में आरक्षण व्यवस्था से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया

क्र. सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हाँ	124(82.67)	124 (82.67)
2	नहीं	26(17.33)	26 (17.33)
3	योग	150(100.00)	150 (100.00)

तालिका संख्या 5.20 से स्पष्ट है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 124(82.67) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता जिनका मत हाँ के पक्ष में, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है। वहीं 26(17.33) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता जिनका मत नहीं के पक्ष में, जो सर्वाधिक से कम है। अतः तालिका के आधार पर यह ज्ञात होता है कि राजनीति में आरक्षण व्यवस्था से महिलाओं की परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

तालिका संख्या 5.20 (अ)

मीणा महिलाओं की स्थिति में किस प्रकार परिवर्तन आया

क्र. सं.	कारण / प्रभाव	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	उचित प्रतिनिधित्व का मिलना	65(52.42)	65(52.42)
2	सरकारी योजनाओं में भागीदारी	81(65.32)	81(65.32)
3	राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता	83(66.94)	83(66.94)
4	संगठन के निर्णयों में भागीदारी	47(37.90)	47(37.90)
5	समाज में प्रतिष्ठा	76(61.29)	76(61.29)

नोट – उत्तर एक से अधिक होने के कारण कुल महिला उत्तरदाताओं की संख्या 124 से अधिक है। प्रतिशत क्रमशः 124 में से निकाला गया है।

तालिका संख्या 5.20 (अ) के आंकड़े व विवरण दर्शाता है कि कुल महिला उत्तरदाताओं में से 65(52.42) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना कि राजनीति में आरक्षण से उचित प्रतिनिधित्व मिला। वहीं 81(65.32) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि राजनीति में आरक्षण से सरकारी योजनाओं में भागीदारी बढ़ी। जबकि 83(66.94) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता मानती है कि आरक्षण से राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता आई। वहीं 47(37.90) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिनका विचार है कि राजनीति में आरक्षण से संगठन के निर्णयों में भागीदारी बढ़ी। वहीं 76(61.29) योग प्रतिशत महिला उत्तरदाता, जिन्होंने माना है कि राजनीति में आरक्षण से समाज में महिलाओं की प्रतिष्ठा बढ़ी है। अतः उपर्युक्त तालिका में दी गई सूचनाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि राजनीति में आरक्षण मिलने से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन हुआ। जिसमें सर्वाधिक कारण राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता का रहा है। जिसके कारण महिलाओं पर वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव देखा गया है।

निष्कर्ष :–

वैश्वीकरण की प्रक्रिया से मीणा महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में आये बदलाव को समायोजित किया गया। जिनमें निम्न तालिकाओं के निष्कर्ष के साथ ही सम्पूर्ण अध्याय का निष्कर्ष यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

✶ मीणा समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 62(41.33) योग प्रतिशत ने अच्छी मानी, 57(38.00) योग प्रतिशत ने सामान्य मानी, 31(20.67) योग प्रतिशत ने खराब मानी है। अतः अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अच्छी है, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है। लेकिन कुछ महिला उत्तरदाता ऐसी भी है, जो महिलाओं की खराब स्थिति का आंकलन करती हैं। जिसके कारण अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं में जागरूकता का अभाव रहा है।

✶ महिला शिक्षा के समाज पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 91(60.67) योग प्रतिशत ने परम्परागत रूढ़ियों का खत्म होना, 92(31.33) योग प्रतिशत ने पारिवारिक निर्णयों में अहम भूमिका, 97(64.67) योग प्रतिशत ने अधिकारों के प्रति जागरूकता में वृद्धि, 101(67.33) योग प्रतिशत ने जीवन स्तर में सुधार, 107(71.33) योग प्रतिशत ने आर्थिक स्तर में वृद्धि को माना। अतः अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षा से मीणा महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन हो रहा है।

✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 115(76.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 35(23.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ महिलाओं के पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता किस प्रकार बढ़ी के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 61(53.04) योग प्रतिशत ने अधिकारों के प्रति सजकता, 65(56.52) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 76(66.09) योग प्रतिशत ने आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि, 62(53.91) योग प्रतिशत ने सरकार द्वारा संचालित योजनाओं में भागीदारी को माना है। अतः महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ रही है।

✶ वैश्वीकरण से महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 110(73.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 40(26.67) योग

प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 77(77.00) योग प्रतिशत ने जाति आधारित नियमों में शिथिलता, 75(68.18) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 95(86.36) योग प्रतिशत ने मीड़िया का प्रभाव, 90(81.82) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 93(84.55) योग प्रतिशत ने सामाजिक बन्धनों एवं सोच में परिवर्तन को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया के प्रभाव का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के पहनावें पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 117(78.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 33(22.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं के पहनावें पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं के पहनावें को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 66(56.41) योग प्रतिशत ने परम्परागत पहनावें से दूरी, 95(81.20) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य पहनावें की तरफ झुकाव, 96(82.05) योग प्रतिशत ने परम्परागत पहनावें को हास्यापद बनना, 75(64.10) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में लचीलापन को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत पहनावें को हास्यापद बनना रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण ने महिलाओं की सामजिक कुरीतियों को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 120(80.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 30(20.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिलाओं की सामजिक कुरीतियों को प्रभावित किया, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं की सामाजिक कुरीतियों को प्रभावित करने के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 105(87.05) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में लचीलापन, 95(79.17) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति की ओर झुकाव, 107(89.17) योग प्रतिशत ने शिक्षा का बढ़ता स्तर, 115(95.83) योग प्रतिशत ने मीड़िया द्वारा जागरूकता फैलाना, 103(85.83) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया द्वारा जागरूकता फैलाने का रहा है।

* वैश्वीकरण से महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 120(80.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 30(20.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
* महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 95(79.17) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में बदलाव, 116(96.67) योग प्रतिशत ने महिला–पुरूषों के सम्बन्धों में खुलापन, 117(97.05) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 96(80.00) योग प्रतिशत ने महिलाओं पर मीड़िया का प्रभाव, 92(76.67) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।
* विवाह की आयु के वर्गान्तराल में परिवर्तन के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 10(06.67) योग प्रतिशत जिनका विवाह 05–10 वर्ष की आयु में हुआ, जो कि महिला की दादी के विवाह की आयु थी। 11–15 वर्ष की आयु का वर्गान्तराल प्रथम पीढी(दादी) और द्वितीय पीढ़ी(माता) के विवाह का प्रतिशत 52(34.67) योग प्रतिशत, 16–20 वर्ष की आयु का वर्गान्तराल द्वितीय पीढ़ी (माता) और स्वयं के विवाह का है, जिनका प्रतिशत 60(40.00) योग प्रतिशत है। 21–25 वर्ष की आयु का वर्गान्तराल द्वितीय पीढ़ी (माता) और स्वयं महिला उत्तरदाता के विवाह का है, जिनका प्रतिशत 28(18.66) योग प्रतिशत है। अतः महिला उत्तरदाता की दादी व माता के विवाह की आयु से अधिक महिला उत्तरदाता के विवाह में परिवर्तन हुआ। यह वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं की वैवाहिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव है।
* वैश्वीकरण से महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 117(78.00) प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 33(22.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
* महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 116(99.15) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, 104(88.89) योग प्रतिशत ने महिलाओं का आत्मनिर्भर होना, 112(95.73) योग प्रतिशत ने मीड़िया और सरकार द्वारा जागरूकता फैलाना, 104(88.89) योग प्रतिशत ने कानूनों का सख्त होना, 115(98.29) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों

में शिथिलता को माना। अतः कारणों में से सर्वाधिक कारण पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव का रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 115(76.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 35(23.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 65(56.52) योग प्रतिशत ने सामाजिक बन्धनों में कमी, 67(58.26) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 64(55.65) योग प्रतिशत ने महिलाओं का आत्मनिर्भर होना, 57(49.57) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य सभ्यता, 60(52.17) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के विवाह–विच्छेद पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं मे से 116(77.33) प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 34(22.67) प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिलाओं के विवाह–विच्छेद पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं के विवाह–विच्छेद की प्रथा पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 49(42.24) योग प्रतिशत ने जाति आधारित नियमों में लचीलापन, 47(40.57) योग प्रतिशत ने कानूनी प्रावधानों का सरलीकरण, 57(49.14) योग प्रतिशत ने आत्मनिर्भरता में सजगकता, 62(53.45) योग प्रतिशत ने पारिवारिक न्यायालयों में वृद्धि, 59(50.86) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण पारिवारिक न्यायालयों में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के लैंगिक भेदभाव पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 118(78.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 32(21.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं के लैंगिक भेदभाव पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 64(54.24) योग प्रतिशत ने शिक्षा का प्रसार, 75(63.56) योग प्रतिशत ने संचार के साधनों का प्रसार, 78(66.10) योग प्रतिशत ने सरकारी योजनाएँ 65(55.09) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 60(50.85) योग

प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में शिथिलता को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण महिलाओं का सरकारी योजनाओं में भागीदारी का रहा है।

- ✶ मीणा महिलाओं के परम्परागत व्यवसाय क्या है, के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 62(41.33) योग प्रतिशत ने कृषि कार्य को, 65(43.33) योग प्रतिशत ने पशु पालन के कार्य को 97(64.67) योग प्रतिशत ने घरेलू कार्य को, 50(33.33) योग प्रतिशत ने कुटीर उद्योगों में कार्य को, 25(16.67) योग प्रतिशत ने एक से अधिक व्यवसायों में कार्य को माना। अतः अध्ययन क्षेत्र में मीणा महिलाएँ परम्परागत व्यवसायों के रूप में घरेलू कार्यों में शामिल थी।
- ✶ आधुनिक व्यवसायों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 116(77.33) योग प्रतिशत ने अध्यापन कार्य को, 47(31.33) योग प्रतिशत ने डॉक्टर व नर्स के कार्य को, 57(38.00) योग प्रतिशत ने उद्योगों में कार्य को, 62(41.33) योग प्रतिशत ने आधुनिक तरीके से कृषि कार्य को। अतः अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाएँ आधुनिक व्यवसाय करने लगी है। जिसमें सर्वाधिक कार्य अध्यापन के कार्य का रहा है,
- ✶ वैश्वीकरण से नौकरी की तरफ रूझान बढ़ा के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 121(80.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 29(19.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिला उत्तरदाता नौकरी करने के पक्ष में हैं, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ नौकरी करने की तरफ रूझान बढने के उचित कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 98(80.99) योग प्रतिशत ने उचित प्रतिनिधत्व के लिए, 67(55. 37) योग प्रतिशत ने पिछड़ेपन को दूर करने के लिए, 81(66.94) योग प्रतिशत ने आत्मनिर्भरता में वृद्धि के लिए, 92(76.03) योग प्रतिशत ने पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता, 76(62.81) योग प्रतिशत शैक्षिक स्तर में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण उचित प्रतिनिधित्व मिलने का रहा है।
- ✶ रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलने के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 130(86.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 20(13.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः अध्ययन क्षेत्र की महिला उत्तरदाता रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण की मांग करती है, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलने के उचित कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 74(56.92) योग प्रतिशत ने समानता, 81(62.31) योग प्रतिशत ने उचित प्रतिनिधित्व मिलना, 76(58.46) योग प्रतिशत ने पिछड़ेपन को दूर करना,

74(56.92) योग प्रतिशत ने आर्थिक सुदृढ़ता को माना है। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण उचित प्रतिनिधित्व मिलने का रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण से महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 123(82.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 27(18.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 82(66.67) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 76(61.79) योग प्रतिशत ने संचार के संसाधनों में वृद्धि, 47(38.21) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में बदलाव, 57(46.34) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि को माना है। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 119(79.33) योग प्रतिशत ने उचित के पक्ष में, 31(20.67) योग प्रतिशत ने अनुचित के पक्ष में। अतः महिलाओं ने मतदान व्यवहार के प्रति उचित दृष्टिकोण को अपनाया, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ मीणा महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने के उचित कारणों के सम्बन्ध कुल महिला उत्तरदाताओं में से 87(73.11) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 82(68.91) योग प्रतिशत ने संचार के संसाधनों मे वृद्धि, 47(39.50) योग प्रतिशत ने मीड़िया का प्रभाव, 49(41.18) योग प्रतिशत ने मतदान व्यवहार के प्रति जागरूकता, 62(52.10) योग प्रतिशत ने जातिगत नियमों में शिथिलता को माना है। अतः उचित कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 121(80.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 29(19.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ किस प्रकार महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 82(67.77) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 47(38.84) योग प्रतिशत ने राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजकता, 83(68.60) योग प्रतिशत ने सूचना क्रांति का प्रभाव, 64(52.89) योग प्रतिशत ने जनजातीय समाज में प्रतिष्ठा, 57(47.11) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में बदलाव को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव सूचना क्रांति के प्रभाव का रहा है।

★ राजनीति में आरक्षण व्यवस्था से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 124(82.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 26(17.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः आरक्षण व्यवस्था से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

★ महिलाओं की स्थिति में किस प्रकार परिवर्तन आया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 65(52.42) योग प्रतिशत ने उचित प्रतिनिधित्व का मिलना, 81(65.32) योग प्रतिशत ने सरकारी योजनाओं में भागीदारी, 83(66.94) योग प्रतिशत ने राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा 47(37.90) योग प्रतिशत ने संगठन के निर्णयों में भागीदारी, 76(61.29) योग प्रतिशत ने समाज में प्रतिष्ठा को माना। इस प्रकार मीणा महिलाओं को राजनीति में आरक्षण मिलने के कारण इनकी परम्परागत राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन हुआ, जो वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

अतः मीणा महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सभी क्षेत्रों की स्थिति के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जहाँ एक ओर सकारात्मक प्रभाव पड़ा, वहीं दूसरी ओर नकारात्मक प्रभाव भी देखा गया है। वैश्वीकरण के कारण मीणा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव में उनकी सामाजिक स्थिति अच्छी के पक्ष में 62(41.33) योग प्रतिशत, शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, सामाजिक कुरीतियों में कमी आई 120(80.00) योग प्रतिशत, सामाजिक बन्धनों में कमी देखी गई, पहनावें और वेश–भूषा में भी परिवर्तन आया, 117(87.00) योग प्रतिशत, पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी के पक्ष में 115(76.67) योग प्रतिशत तथा पुरूषों के समान ही अधिकार दिया जाने लगा। इसी प्रकार मीणा महिलाओं में वैश्वीकरण के कारण परम्परागत व्यवसायों ने नया रूप ले लिया है तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, जिससे उनमें आत्मनिर्भरता आई है। इसके साथ–साथ राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता, मतदान में सक्रिय भागीदारी, राजनीतिक निर्णयों एवं कानूनों में सहयोग तथा आरक्षण के माध्यम से सहकारी संगठनों में महिलाओं का हस्तक्षेप बढ़ा है।

वैश्वीकरण के कारण मीणा महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है। जिसमें महिलाओं की खराब स्थिति का आंकलन किया गया। जिसका योग प्रतिशत 31(20.67) है। सामाजिक बन्धनों में छूट से एवं फ़ूहड पहनावें से समाज में छेड़–छाड़ की घटनाएँ बढ़ी तथा तलाक की घटनाएँ बढ़ी है। रोजगार के अवसरों में वृद्धि से महिलाओं में आत्मनिर्भरता तो आई है, परन्तु पारिवारिक संस्था को इसने कमजोर किया है। महिलाओं को रोजगार के

लिए बाहर जाने से बच्चों के पालन–पोषण तथा संस्कार प्रभावित हुए है। इसके साथ ही राजनीतिक स्वतन्त्रता से महिलाओं को राजनीतिक अधिकार तो मिले हैं, परन्तु अभी भी मीणा महिलाओं को राजनीति में मतदान की स्वतन्त्रता नहीं मिली है। राजनीतिक नीतियों एवं कानूनों के निर्माण में भी मीणा महिलाओं का योगदान अत्यल्प है अर्थात् अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं का राजनीतिक क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा नगण्य योगदान रहा है।

परन्तु समग्र क्षेत्र का बारिकी से अवलोकन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि मीणा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव अधिक पड़ा है। जिससे उनके सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन पर बहुत सकारात्मक प्रभाव डाला है और उनके जीवन को समृद्ध सुविधा सम्पन्न बना दिया है। जिससे मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में बदलाव आया है। परन्तु पुरुषों की अपेक्षा मीणा समाज में महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में योगदान कम ही रहा है। इस वैश्वीकरण के दौर में आज भी जनजातीय क्षेत्रों में मीणा जनजाति की महिलाएँ पुरूषों की अपेक्षा पिछड़ी हुई है।

सन्दर्भ सूची

1. मीना, डॉ. एसं.पी. : ''भारतीय जनजातियाँ एवं मानवाधिकार वैधानिक एवं सामाजिक परिदृश्य'' आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2015, पृ.सं. 84
2. शुक्ला, डॉ.महेश, खान शरीफ मोहम्मद : ''खैरवार जनजाति–सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन'' अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली– 2004 पृ.सं. 51
3. मीना, डॉ. एसं.पी., : ''भारतीय जनजातियाँ एवं मानवाधिकार वैधानिक एवं सामाजिक परिदृश्य'' आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2015, पृ.सं. 84
4. गुप्ता, डॉ मिथलेश : ''भूमंडलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन'' गौतम बुक कम्पनी राजापार्क, जयपुर, 2013 पृ.सं. 240
5. शुक्ला, डॉ. महेश, खान शरीफ मोहम्मद : ''खैरवार जनजाति–सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन'' अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली–2004 पृ.सं. 181
6. माथुर, दुर्गा प्रसाद : ''मीणा जाति का सतत् विकास एवं संस्कृति'' साहित्यागार, जयपुर–2014 पृ.सं. 38
7. गुप्ता, डॉ. मिथलेश : ''भूमंडलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन'' गौतम, बुक कम्पनी राजापार्क जयपुर, 2013 पृ.सं. 240

8. उप्रेती, डॉ हरिश्चन्द्र : ''भारतीय जनजातियाँ : संरचना एवं विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007 पृ.सं. 304

9. वही, 2007 पृ. सं. 302

10. सिंह, जनमेजय, सिंह एन.वी. : ''आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण'' रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, 2010 पृ.सं. 255

11. वही, 2010 पृ.सं. 255

12. उप्रेती, डॉ हरिश्चन्द्र : ''भारतीय जनजातियाँ : संरचना एवं विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007 पृ.सं. 309

13. राजोरा, डॉ. सुरेश चन्द : ''समकालीन भारत की सामाजिक समस्याएँ'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010 पृ.सं. 285

14. सिंघी, नरेन्द्र कुमार : ''समाजशास्त्रीय सिद्धान्त विवेचन एवं व्याख्या'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011 पृ.सं. 253

15. उप्रेती, डॉ हरिश्चन्द्र, ''भारतीय जनजातियाँ : संरचना एवं विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007 पृ.सं. 293

16. वही, 2007 पृ.सं. 296

17. वही, 2007 पृ.सं. 308–309

18. मीणा, डॉ. सुनीता : ''जनजातीय महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता'' गौत्तम बुक कम्पनी, जयपुर, 2014

19- शर्मा, एसं.एल. : ''इमर्जिंग ट्राईबल आइडेन्टिटी'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2008

20- चौधरी, एस एन. : ''ट्राईबल वुमन – यस्टरडे, टूडे, एण्ड टूमारो'' रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, 2015

षष्टम् अध्याय

‘‘वैयक्तिक अध्ययन’’

षष्टम् अध्याय

वैयक्तिक अध्ययन

अनुसंधान शोध की एक प्रक्रिया है, जिससे नये ज्ञान तथा अनुभव का उपयोग करते हुए सिद्धान्त निरूपित करने का प्रयास किया जाता है। यह प्रयास गंभीर, तटस्थ एवं विधि विज्ञान से युक्त होता है साथ ही इसमें गहन अध्ययन किया जाता है। इसके लिए गुणात्मक तथ्यों अथवा आंकड़ों को संकलित करने हेतु वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का सहारा लिया जाता है। इस पद्धति से गहनता एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करने के साथ ही तथ्यों का संग्रह भी किया जाता है। हालांकि सर्वेक्षण में इस पद्धति का प्रयोग कम किया जाता है। लेकिन वास्तविक तथ्यों का पता लगाने तथा सर्वेक्षण की सार्थकता निर्धारित करने में यह विधि महत्त्वपूर्ण सहायक विधि है। जब किसी भी घटना/प्रघटना या परिस्थिति के बारे में वास्तविक इतिहास या उसका सम्पूर्ण वर्णन दिया जाये तो ऐसी जानकारी केवल अनुसूची, प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन पद्धतियों से प्राप्त नहीं हो सकती। इस शोध विषय हेतु वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत उन प्रतिष्ठित पुरुष व महिला उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। जिनका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पक्ष मीणा जनजाति अर्थात् जनजातीय समाज में अपने आप में उत्तम या श्रेष्ठ हैं।

''प्राथमिक तथ्यों के संकलन के दौरान अध्ययन क्षेत्र से चार ऐसे वैयक्तिक अध्ययन उभरे हैं, जो आमूलचूल परिवर्तन को प्रस्तुत करते हैं।''[1] चारों वैयक्तिक अध्ययनों में दो पुरूष व दो महिला जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप से मीणा जनजातीय समाज में प्रतिष्ठित हैं। मीणा जनजातीय समाज में दो पुरूष व दो महिला, जिनका वैयक्तिक अध्ययन किया गया, जिसमें एक पुरूष कृषि के साथ–साथ राजनीतिक क्षेत्र से जुडा हुआ है। वहीं दूसरा पुरूष आर्थिक रूप से सरकारी नौकरी से जुड़ा हुआ है, जिसका राजनीतिक क्षेत्र नगण्य है। वैयक्तिक अध्ययन के क्रम में एक मीणा महिला ग्रहणी महिला है, साथ ही राजनीतिक क्षेत्र में अपना एक मुकाम हासिल किया हुआ है। जो पूर्व प्रधान रह चुकी हैं, जिसकी मीणा जनजातीय समाज में अपनी एक पहचान है। वहीं दूसरी महिला व्यवसाय से डॉक्टर है, जिनका अपना निजी चिकित्सालय है। परन्तु राजनीतिक क्षेत्र में अपनी पकड़ कमजोर बनाई हुई है। इन चारों मीणा जनजाति के महिला पुरूषों का वैयक्तिक अध्ययन पद्धति को ध्यान में रखकर अध्ययन किया गया है। क्योंकि इस पद्धति में

जो भी अध्ययन कार्य होते है, वह व्यक्ति विशेष के जीवन से जुड़ी हर घटना का सचित्र वर्णन किया जाता है। जिसके सन्दर्भ में मीणा जनजाति के इन प्रतिष्ठित महिला पुरूषों को अध्ययन में चुना गया और इनकी तीन पीढ़ियों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन का कार्य शुरू किया गया। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में, इनकी तीन पीढ़ियों का वैयक्तिक अध्ययन किया गया। जो क्रमशः प्रस्तुत हैं–

वैयक्तिक अध्ययन 1

संजना मीणा जिनकी उम्र 40 वर्ष है और सिन्धपुरी गांव की रहने वाली प्रतिष्ठित महिला है। इनके पति का नाम पटेल चन्द्रमोहन मीणा है, जो पूर्व में सरपंच रह चुके हैं। इनके परिवार की तीन पीढ़ियों में वैश्वीकरण के कारण क्या परिवर्तन आये आदि पक्षों को वैयक्तिक अध्ययन के रुप में समाहित किया गया है।

वैश्वीकरण का इनकी पीढ़ियों पर काफी असर देखने को मिला है। जिसके कारण आधुनिक सोच को इनकी पीढ़ियों ने बढ़चढ़ कर अपनाया, इसी का परिणाम है कि संजना मीणा के जीवन स्तर में परिवर्तन आया है। जिसके कारण मीणा समाज में इनकी अलग पहचान बनी हुई है। इसी क्रम में संजना मीणा के परिवार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति को वैयक्तिक अध्ययन के रूप में देखा गया है।

संजना की मां और दादी दोनों गृहणी महिलाएँ थी और घर–परिवार के कार्य किया करती थी, हालांकि वह सामाजिक कार्यों में भी भाग लेती थी। किन्तु वह कहीं नौकरी आदि नहीं किया करती थी और न ही वह इतनी पढ़ी–लिखी थी कि वह कोई व्यवसाय कर सकें। जिसके कारण उनका जीवन स्तर साधारण था। इनके पिता के पास जमींन अधिक होने के कारण इनका आर्थिक जीवन सुख–सम्पन्नता से बीता। लेकिन इनकी आर्थिक उन्नति में माता का कोई योगदान नहीं था। जबकि संजना 12वीं पास है और आधुनिक सोच रखती हैं। वह यह मानती है कि उनकी मां और दादी की तुलना में इनका जीवन अधिक श्रेष्ठ है। संजना मीणा भी एक गृहणी महिला ही है, जो आर्थिक रूप से अपने पति पर निर्भर है। लेकिन उन्हें पूरी आजादी है कि वह अपने निर्णय स्वयं ले सके। इनके पति गांव के एक धनाढ्य व्यक्ति होने के कारण इनकी जनजातीय समाज व गांव में काफी प्रतिष्ठा है।

इनका विवाह 17 वर्ष की आयु में चन्द्रमोहन मीणा के साथ कर दिया गया था, जो सिन्धपुरी गांव के रहने वाले थे। यह भी आधुनिक सोच का थोड़ा–सा असर होने का परिचायक है, क्योंकि पहले के जमाने में मीणा समाज में लड़कियों को सिर्फ घर का कामकाज ही सिखाया जाता था। उनके पढ़ने लिखने के कार्य को कोई महत्त्व नहीं दिया

जाता था। परन्तु पढ़ी–लिखी होने के कारण संजना की सोच बदली, यह घाघरा–लुगड़ी की जगह साड़ी, ब्लाज, पेटी–कोट आदि पहनने लगी और कभी–कभी सलवार–कुर्त्ता भी पहन लेती है। इससे ज्ञात होता है कि इनके पति की सोच भी काफी आधुनिक है और यह सब वैश्वीकरण के कारण ही संभव हो पाया है।

मीणा समाज ने भी इसे स्वीकारा है कि यह सिन्धपुरी गांव की सबसे अमीर व्यक्ति के घर की बहू है और समाज के सभी कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेती है। यह सब इनके पूर्व की पीढ़ी को मान्य नहीं था। इससे विदित होता है कि इनके गांव वालों की सोच भी काफी बदल चुकी है और वहाँ की महिलाएँ भी सामाजिक कार्यों में भागीदारी निभा रही है।

संजना के दो बच्चे हैं, जिसमें एक लड़का और एक लड़की हैं। यह दोनों ही कोटा के प्रतिष्ठित अंग्रेजी विद्यालय सिंघानिया में पढ़ते हैं। इससे भी पता चलता है कि इनके दृष्टिकोण में कितना बदलाव आ गया है। इनके पति और स्वयं संजना मीणा अपने बेटे और बेटी में कोई फर्क नहीं करते हैं। इनके लिए दोनों की ही शिक्षा दीक्षा का महत्त्व समान है, जिससे वह अच्छी तरह पढ़–लिखकर उच्च पद प्राप्त कर सकें।

संजना मीणा की दादी व मां का राजनीति से कोई सरोकार नहीं रहा। उस समय के सामाजिक परिवेश के कारण वह सिर्फ घर तक ही सीमित रही। दादी गांव की महिलाओं के आपसी झगड़ों को सुलझाती थी, साथ ही समझौता आदि करवा देती थी। लेकिन उनकी मां का ऐसा कोई कार्य नहीं रहा, क्योंकि वह बहू थी। अतः उन पर बाहर निकलने पर पाबंदी थी, जबकि दादी उनकी सास थी। अतः घर में उनकी बात मान्य थी। संजना की मां थोड़ी पढ़ी लिखी थी, जिसके कारण शिक्षा से जुड़े काम के लिए गांव की महिलाएँ उनके पास आया करती थी। संजना 12वीं पास है अतः वह उनसे थोड़ा अधिक मुखर हो सकी, वह अन्ता में महिला प्रधान रह चुकी है। जिसके कारण गांव में उनकी सराहना भी हुई, हालांकि इनके पति भी राजनीतिक पार्टी से जुड़े हुए हैं। लेकिन संजना मीणा को उनके द्वारा किये गये सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कार्यों से पहचाना जाता है।

वर्तमान में संजना मीणा एकांकी परिवार में रह रही है और अपने बच्चों के लिए अच्छी मां की भूमिका को बखूबी निभा रही है। इनकी व इनके पति की सोच में बदलाव के कारण ही आज इनका पारिवारिक जीवन स्तर उच्च हुआ है। इनकी आधुनिक सोच के कारण ही इनकी बेटी का जीवन ओर भी संवर सकता है। संजना मीणा एक गृहणी महिला होने के कारण वह घर का कार्य भी अच्छी तरह से करती है, क्योंकि वह गांव में रहती है। अतः सारे कार्य स्वयं करती है और साथ ही इनके खान–पान का स्तर भी आधुनिक है।

जबकि इनकी दादी और मां का खान–पान व रहन–सहन का स्तर इतना आधुनिक नहीं था, जितना संजना मीणा का है। उनके यहाँ देसी खाना और पहनावा था। उन्होंने अपनी बेटी को भी सभी कार्य करना सिखाना आरम्भ कर दिया है। लेकिन वह चाहती है कि उनकी बेटी बहुत पढ़े–लिखे और समाज में अपना एक उच्च स्थान बनाये। उनकी सोच का असर गांव में भी देखने को मिल रहा है और अन्य परिवार के सदस्य भी बेटी की शिक्षा को महत्त्व देने लगे हैं। जिससे समाज में संजना मीणा की सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी हो रही है।

शोधार्थी ने यह जाना कि संजना मीणा समाज की एक प्रतिष्ठित महिला है। अतः इनके कार्यों की सराहना और अनुसरण किया जाता है, जबकि गांव की कोई साधारण महिला इस तरह के कार्य को बहुत कठिनता से कर पाती। यही कारण है कि आज संजना का प्रतिष्ठित होना मीणा जनजातीय समाज के लिए बहुत महत्त्व रखता है। समाज में एक धनाढ्य के विरूद्ध आवाज उठाने की किसी की हिम्मत नहीं हो पाती, जबकि एक गरीब के लिए कुछ भी परम्पराओं से अलग हटकर करना कठिन होता है। पूरे गांव एवं मीणा समाज की सोच पर इनकी सोच का असर होने के कारण, इन्हें समाज का सहयोग प्राप्त हो रहा है।

अतः यह कहा जा सकता है कि संजना मीणा के परिवार की प्रथम पीढ़ी व द्वितीय पीढ़ी में परिवर्तन कम हुआ, परन्तु स्वयं संजना मीणा के जीवन स्तर में समय के अनुसार परिवर्तन देखा गया। संजना मीणा आज की नारी एवं शिक्षित होने के कारण इनकी पीढ़ी में समय के अनुसार परिवर्तन हुआ। संजना एक ऐसी महिला है जो सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से सम्पन्न परिवार की बहु होने के कारण इनका जीवन स्तर ठीक है। संजना ने राजनीति में भी अपनी पकड़ मजबूत की है। जिसके कारण यह प्रधान का चुनाव जीत चुकी है साथ ही कारण इनका जीवन स्तर राजनीति के आधार पर भी सही रहा है। वर्तमान में मीणा जनजातीय समाज को वैश्वीकरण ने बहुत अधिक प्रभावित किया है। इसके कारण ही संजना की सोच के साथ–साथ गांव की महिलाओं की सोच में परिवर्तन आया। यह आधुनिकता का ही प्रभाव है कि प्रथम पीढ़ी व द्वितीय पीढ़ी में बदलाव देखा गया है। संजना के जीवन पर वैश्वीकरण का प्रभाव देखा गया है। जिसके कारण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में परिवर्तन हुआ है। जो कि मीणा समाज पर वैश्वीकरण का एक सकारात्मक प्रभाव है।

वैयक्तिक अध्ययन 2

चन्द्रप्रकाश मीणा काचरी गांव के रहने वाले एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है, जिनकी उम्र 50 वर्ष की है। वैश्वीकरण का इनके ऊपर एवं परिवार पर भी प्रभाव देखा गया, जिसमें यह भी आधुनिक विचारधारा को अपना चुके है। चन्द्रप्रकाश मीणा के परिवार की तीन पीढ़ियों का वैयक्तिक अध्ययन किया जा रहा है, जिसमें इनके दादा स्वर्गीय. भंवरलाल मीणा एक ग्रामीण परिवेश में रहने वाले प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। वह संयुक्त परिवार में रहते थे, जिनके रहन–सहन एवं खान–पान का स्तर भी सामान्य था। जिसमें कच्चा व पक्का भोजन किया करते थे और वह धोती–कुर्ता एवं पगड़ी पहनते थे। इनके पिता स्वर्गीय. मथुरा लाल मीणा कम पढ़े–लिखे व्यक्ति थे और यह भी संयुक्त परिवार में रहते थे। इनका रहन–सहन एवं खान–पान भी आदिवासियों की तरह ही था। यह भी अपने पिता की तरह ही धोती–कुर्ता एवं पगड़ी पहनते थे। लेकिन अब चन्द्रप्रकाश मीणा स्वयं आधुनिक सोच अपना चुके हैं। वह एक सामाजिक कार्यकर्ता होने के कारण यद्यपि सादा पहनावा पहनते हैं, जिससे समाज पर इसका अच्छा असर पड़े। लेकिन आधुनिक होने के कारण वह शादी आदि अवसरों पर कोट–पेंट आदि भी पहनने लगे हैं। इनकी शिक्षा का स्तर उच्च माध्यमिक स्तर का है अर्थात् 12वीं कक्षा तक पढ़े लिखे हैं, जो वर्तमान परिपेक्ष में देखा जाये तो बहुत कम है।

चन्द्रप्रकाश मीणा के दादा और पिता के जीवन पर आधुनिक सोच का इतना असर देखने को नहीं मिला, जितना चन्दप्रकाश मीणा के जीवन में देखने को मिला है। दादा के जीवन का अत्यधिक असर इनके पिता के रहन–सहन आदि पर हुआ, जिसके कारण उन्होंने उसी का ताउम्र निर्वहन किया। परन्तु वैश्वीकरण के इस युग में स्वयं का तालमेल बिठाकर चन्द्रप्रकाश मीणा ने खुद को इसी धारा में समाहित करना सही माना। उनकी इस सोच को समाज में भी स्वीकृति प्राप्त हुई है। चन्द्र प्रकाश मीणा भी एकांकी परिवार में रह रहे हैं और उनके एक लड़का और दो लड़कियाँ हैं, जो अध्ययनरत है। इससे ज्ञात होता है कि उनकी दृष्टि में बालिका शिक्षा का भी महत्त्व है।

चन्द्रप्रकाश के दादा कृषि का कार्य करते थे, जो कृषि मौसम पर निर्भर होती थी। जिसमें ज्वार, बाजरा अधिक पैदा होता था और बैलों के द्वारा खेती की जाती थी, जिसके कारण कृषि में पैदावार भी कम होती थी। इनके पिता ने कृषि के लिए बैलों के साथ–साथ ट्रेक्टर भी खरीदा साथ ही सिंचाई के अन्य संसाधनों का भी प्रबन्ध किया। इससे पैदावार बढ़ गई और साथ ही इनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी हो गई। चन्द्रप्रकाश मीणा स्वयं भी कृषि का कार्य करते हैं। वर्तमान में इनके पास 40 बीघा जमीन है, जो कि पूर्णरूप से

सिंचित है। यह कृषि कार्य हेतु आधुनिक तकनीकी एवं संसाधनों का उपयोग करने लगे हैं साथ ही नहरी क्षेत्र होने के कारण कृषि कार्य में पैदावार अच्छी होने लगी। यह गांव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है साथ ही इन्होंने अपना एक पक्का मकान अन्ता तहसील मुख्यालय में भी बनवा लिया है। यह आधुनिकीकरण का ही असर है कि इनके बच्चे बाहर रहकर अध्ययन कार्य कर रहे हैं।

चन्द्रप्रकाश के दादा का राजनीतिक जीवन ग्रामीण स्तर तक ही सीमित रहा, क्योंकि उस समय जाति पंचायतें होती थी। अतः गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं जमींदार होने के कारण सारे कार्य इनके दादा ही करते थे। इनके पिता भी जाति आधारित पंचायत के मुखिया थे। गांव के पटेल होने के कारण गांव के सभी निर्णय किया करते थे। अब स्वयं चन्द्रप्रकाश मीणा वर्ष 2000–2004 तक सरपंच के पद पर कार्य करने के साथ ही जल उपभोक्ता समिति के अध्यक्ष पद पर भी कार्य कर चुके हैं। यह वर्तमान में जिला कांग्रेस कार्य समिति के महामंत्री है। मीणा समाज में इनका सम्मान है, जिससे समाज इनको प्रतिष्ठित व्यक्ति की नजर से देखता है।

मीणा समाज के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होने के कारण समाज ने इनका अनुसरण किया है। हालांकि मीणा समाज की सोच में बहुत अधिक परिवर्तन देखने को नहीं मिला है। लेकिन चन्द्रप्रकाश मीणा के परिवार में यह परिवर्तन बहुत धीरे–धीरे हुआ। इनके दादा से इनके पिता तक यह परिवर्तन मात्र आर्थिक स्तर पर ही दृष्टिगत होता है। अन्य स्तरों पर इनके पिता अपने दादा का ही अनुसरण करते देखे गये। जबकि चन्द्रप्रकाश मीणा स्वयं कम पढ़े लिखे होने के बाद भी अपने परिवार एवं समाज के हितों को ध्यान में रखकर स्वयं ने अपने आप को आधुनिक सोच के साथ बदल लिया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि चन्द्रप्रकाश मीणा के दादा पर आधुनिकता एवं वैश्वीकरण का कुछ भी प्रभाव नहीं था। परन्तु उनके पिता ने आधुनिकीकरण के कारण परम्परागत कृषि एवं सिंचाई के साधनों के साथ ही नवीन तकनीकी का भी प्रयोग किया। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मे सुधार आया, परन्तु ख़ान–पान व रहन–सहन के तौर–तरीकों में अन्तर नगण्य ही रहा है। स्वयं चन्द्रप्रकाश मीणा ने आधुनिकता एवं वैश्वीकरण के सभी आयामों को अपना कर अपने बच्चों की आगे बढ़ने में मदद की। जिससे मीणा जनजातीय समाज में चन्द्रप्रकाश मीणा की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी हुई है, यह एक सकारात्मक सोच का परिणाम है। जिसके कारण चन्द्रप्रकाश मीणा के जीवन स्तर में परिवर्तन आया अर्थात् चन्द्रप्रकाश मीणा के परिवार की तीन पीढ़ियों में परिवर्तन देखा गया। जिसमें प्रथम पीढ़ी में नाम मात्र, वहीं दूसरी पीढ़ी में थोड़ा अधिक

और स्वयं चन्दप्रकाश मीणा की पीढ़ी में समय के अनुसार परिवर्तन हो रहा है, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

वैयक्तिक अध्ययन 3

अविनाश मीणा जिनकी उम्र 40 वर्ष है और यह ग्राम पलवासा के रहने वाले व्यक्ति है। इनके परिवार की पीढ़ियों पर भी वैश्वीकरण का काफी प्रभाव पड़ा है। यह स्वयं भी इस बात से सहमत है कि इनके दादा के समय से अब तक बहुत कुछ परिवर्तन हो गया है। इनके दादा स्वर्गीय किशोरीलाल मीणा ग्रामीण क्षेत्र में रहते थे, जिनके परिवार का स्वरुप संयुक्त था। इसी तरह इनके पिता भी कृषि के साथ–साथ सरकारी नौकरी किया करते थे। स्वयं अविनाश एक शिक्षित वर्ग के व्यक्ति है और अन्ता शहर में निवास करता है। इनके दादा का सामाजिक जीवन अत्यन्त साधारण था साथ ही इनका रहन–सहन ग्रामीण परिवेश से जुड़ा हुआ था। वे धोती, कुर्ता, पगड़ी आदि ग्रामीण पोशाक पहनते थे और साथ ही वह गांव के सामाजिक कार्यों में भी भाग लेते थे। जिसके कारण अविनाश मीणा के दादाजी का ग्रामीण परिवेश एवं समाज में एक महत्त्वपूर्ण पद व स्थान था।

अविनाश के पिता धन्नालाल मीणा सरकारी नौकरी में कार्यरत थे, हालांकि वह ज्यादा पढ़े–लिखे नहीं थे। फिर भी उस समय के लिहाज से वह सरकारी नौकरी के लायक पढ़े लिखे थे, इसलिए उनकी नौकरी लग गई थी। इन्होंने आधुनिक सोच के कारण स्वयं कम पढ़े–लिखे होने के बाद भी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाई। इनका खान–पान आधुनिक परिवेश के अनुसार बदल गया साथ ही इन्होंने अपना पहनावा भी बदल लिया। अविनाश के पिता सरकारी नौकरी के साथ ही कृषि कार्य भी किया करते थे, जिससे समाज में इनकी अपनी एक प्रतिष्ठा थी।

स्वयं अविनाश मीणा जो पंचायत समिति अन्ता के नरेगा ऑफिस में कार्यरत है। सरकारी नौकरी के साथ ही यह सामाजिक कार्यों में भी संलग्न रहा है। इससे ज्ञात होता है कि स्वयं अविनाश मीणा ने किस तरह नई सोच को धीरे–धीरे आत्मसात् कर लिया और अपने परिवार एवं समाज का विकास किया। आर्थिक पक्ष की बात करें तो इनके दादा कृषि कार्य करते थे और यह कृषि मौसम पर निर्भर थी। इनके पिता ने नौकरी करते हुए कृषि में और अधिक उत्पादन बढ़ाने के लिए उच्च तकनीकी ज्ञान का लाभ लिया। अतः इनका जीवन स्तर उच्च होता गया साथ ही नहरी क्षेत्र में होने से इनके उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई। अविनाश मीणा सरकारी नौकरी करते हैं, इसलिए आर्थिक दृष्टि से काफी सम्पन्न है जिसके कारण मीणा जनजातीय समाज में अविनाश मीणा की आर्थिक स्थिति ठीक है

यद्यपि इनके दादा का परम्परागत राजनीतिक क्षेत्र में काफी प्रभाव था, इसलिए गांव के न्याय सम्बन्धी निर्णय भी वही करते थे। किन्तु इनके पिता जो कि सरकारी नौकरी में थे, इसलिए उनका राजनीतिक प्रभाव भी नगण्य था। अविनाश भी सरकारी नौकरी में होने के कारण राजनीति में सक्रिय नहीं रहा। लेकिन उनका विचार है कि ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहिए, जो सम्पूर्ण समाज एवं देश का विकास करें अर्थात् योग्य व्यक्ति को ही वोट देना चाहिए। जिससे समाज व देश का विकास होगा, ऐसी सोच अविनाश मीणा की थी। जिसके कारण अविनाश के राजनीतिक जीवन में परिवर्तन देखा गया है।

अविनाश मीणा के वैयक्तिक अध्ययन से यह पता चलता है कि इनके दादा पुराने विचारों के व्यक्ति थे, जिन पर वैश्वीकरण का प्रभाव नगण्य था। किन्तु इनके पिता ने आधुनिकता के कारण ही कृषि के स्थान पर नौकरी को अपनाया तथा इसका सीधा सा प्रभाव इनके रहन–सहन तथा ख़ान–पान पर भी पड़ा। आर्थिक दृष्टि से भी वे अपने पिता के अग्रणी थे। अविनाश मीणा स्वयं वैश्वीकरण से बहुत अधिक प्रभावित हुए तथा इन्होंने भी कृषि के स्थान पर सरकारी नौकरी को प्राथमिकता दी। परन्तु वैश्वीकरण का इनके राजनीतिक पक्ष पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अविनाश मीणा की सरकारी नौकरी होने के कारण इनके पिता के समान ही राजनीति से दूरी बना कर चलते रहे हैं तथा मतदान के समय वोट भी किसी काबिल व्यक्ति को देने की प्राथमिकता रखते हैं। इस प्रकार अविनाश मीणा का राजनीतिक पक्ष भी अपने पिता के समान ही रहा है।

अतः यह कहा जा सकता है कि अविनाश मीणा का जीवन स्तर एक कर्मचारी के रूप में जुडा हुआ है। जिसके कारण अविनाश का जीवन स्तर सामाजिक, आर्थिक रूप से तो ठीक है पर राजनीति से नगण्य है अर्थात् इनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि नगण्य है। इनका वर्चस्व सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र में रहा। जिसके कारण मीणा समाज में इनकी प्रतिष्ठा बढ़ी है। अविनाश सामाजिक, आर्थिक रूप से समाज सेवा का कार्य भी करता है, यह अपने परिवार को इस आधुनिकता की दौड़ में भी पीछे नहीं रखना चाहता। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के कारण अविनाश मीणा के जीवन स्तर में परिवर्तन हुआ साथ ही इसके दादा व पिता की पीढ़ी में भी समय के अनुसार बदलाव देखा गया। यह आधुनिकता एवं वैश्वीकरण का ही प्रभाव है, जिसके कारण समय के साथ पीढ़ियों में बदलाव देखा गया है। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि चन्द्रप्रकाश मीणा का वैयक्तिक अध्ययन करने पर पाया कि इनकी तीन पीढ़ियों में समय के अनुसार बदलाव आया। स्वयं चन्द्रप्रकाश मीणा राजनीतिज्ञ होने के कारण इनका राजनीति से सम्बन्धित पक्ष भी अच्छा रहा है। सामाजिक व आर्थिक पक्ष तो ठीक ही रहा, क्योंकि इनकी समाज में पकड़ थी।

जिसके कारण इनके तीनों ही पक्ष ठीक रहे हैं, यह वैश्वीकरण एवं आधुनिकता का ही सकारात्मक प्रभाव है।

वैयक्तिक अध्ययन 4

शिमला मीणा ग्राम पचेलकला की रहने वाली प्रतिष्ठित महिला है, जिनकी उम्र 40 वर्ष है। शिमला मीणा का विवाह 18 वर्ष की उम्र में सम्पन्न हुआ था। इनके पति का नाम जितेन्द्र कुमार मीणा है और व्यवसाय से एक डॉक्टर है, जो आधुनिकता का परिचायक है। शिमला मीणा भी व्यवसाय से एक महिला डॉक्टर है और अन्ता के निजी चिकित्सालय में कार्यरत है। शिमला मीणा के परिवार की तीन पीढ़ियों का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में वैयक्तिक अध्ययन किया जा रहा है।

शिमला मीणा की दादी स्वर्गीय गुलाब बाई मीणा एक गृहणी महिला थी और साक्षर भी नहीं थी। इसके बावजूद भी वह सामाजिक कार्यों में सक्रिय भाग लेती थी साथ ही वह ग्रामीण परिवेश में पली बड़ी है। इसलिए उनका पहनावा भी परम्परागत रूप से घाघरा लूगड़ी ही था। उनके पास अपनी स्वयं की आय का कोई साधन नहीं था अर्थात् अपने पति की आय पर पूर्ण रूप से निर्भर थी। इस कारण शिमला मीणा की दादी का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर निम्न था।

ऐसा ही शिमला मीणा के मां की पीढ़ी में भी देखा गया, क्योंकि शिमला मीणा की मां भी एक गृहणी महिला है जो निरक्षर है। जिसका नाम रूकमणी बाई है साथ ही ग्रामीण परिवेश में पली–बड़ी हुई है। शिमला मीणा की मां अपने पति की आय पर पूर्ण रूप से निर्भर है, परन्तु सामाजिक कार्यों में भी भाग लेती है। जिसके कारण इनकी माता का सामाजिक परिवेश ठीक है, पर आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से इनका बाकी परिवेश नगण्य है अर्थात् शिमला मीणा की दादी व मां की पीढी पर वैश्वीकरण का कोई प्रभाव नहीं देखा गया। लेकिन इनके परिवार की सोच पर आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा गया। क्योंकि शिमला मीणा के पिता एक पढ़े–लिखे एवं जिम्मेदार व्यक्ति होने के कारण, उन्होंने शिमला मीणा को अच्छी तरह पढ़ाया–लिखाया साथ ही इनके परिवार की पहले की पीढ़ियाँ कम पढ़ी लिखी या पूर्णतया अनपढ़ रही है। वैश्वीकरण और घर के माहौल के कारण शिमला मीणा आज इतनी ऊचाइयाँ प्राप्त कर सकी है। परन्तु इनका जीवन स्तर काफी संघर्षमय रहा है, क्योंकि उस समय मीणा समाज में कई प्रकार की सामाजिक समस्याएँ एवं

कुप्रथाएँ विद्यमान थी। जिसके कारण मीणा समाज में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति कमजोर रही थी।

जिस परिवार में महिलाओं को चारदीवारी से बाहर निकलने की आजादी नहीं थी। उस परिवार की लड़की पढ़–लिखकर डॉक्टर बन जाये। यह तभी संभव है, जब उनकी पहले की पीढ़ियाँ आधुनिकता के साथ–साथ कदम मिलाकर चले। आज शिमला मीणा हर चीज के लिए स्वतन्त्र है। अन्ता के निजी अस्पताल में इलाज करती है और उनकी अपनी स्वयं की आय है, इसलिए उनका जीवन स्तर काफी उच्च है। उनकी मां और दादी का कोई राजनीतिक जीवन नहीं था। शिमला मीणा शिक्षित महिला होने के कारण इनका राजनीतिक जीवन भी ठीक है साथ ही इनकी कई राजनीतिक पार्टियों में पहचान भी है। जो आधुनिकता एवं वैश्वीकरण का परिचायक है।

वैश्वीकरण के कारण ही इनका पहनावा, बोलचाल, खान–पान, रहन–सहन सब कुछ बदल चुका है, हालांकि यह बचपन में ग्रामीण माहौल में पली–बड़ी है। फिर भी अपनी मेहनत के बल पर वह इस पद पर आसीन हुई है। वह सामाजिक रूप से एक प्रतिष्ठित महिला है, जिससे समाज व अन्य जातियों के व्यक्ति उनका सम्मान करते हैं। यह उनके पद और उच्च आर्थिक जीवन स्तर के कारण ही सम्भव हो पाया है।

किन्तु यह सब तब सम्भव हुआ जब उनके पिता ने भी आधुनिकीरण के कारण अपनी सोच को बदला। इससे उनके रहन–सहन, ख़ान–पान तथा बोलचाल में भी अन्तर आ गया है। यद्यपि वह डॉक्टर है, जिससे शिमला मीणा का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर ठीक है

यह वैयक्तिक अध्ययन इस बात को भी स्पष्ट करता है कि शिमला मीणा के उच्च पद प्राप्त करने से अन्य मीणा जनजाति के पुरूष व महिलाएँ अपनी सोच में बदलाव करने लगे हैं। अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए तैयार करके ग्रामीण क्षेत्रों से बाहर पढ़ने भेजने लगे, यह वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है। शिमला मीणा के जीवन स्तर में परिवर्तन हुआ है, जिसके कारण अन्य महिलाओं में भी जागरूकता आई है अर्थात् शिमला मीणा का वैयक्तिक अध्ययन करने पर पाया कि शिमला मीणा के परिवार की दो पीढ़ियों मे धीरे–धीरे परिवर्तन हुआ। परन्तु स्वयं शिमला मीणा की पीढ़ी में परिवर्तन तीव्र गति से हुआ है। जिसके कारण शिमला मीणा के जीवन स्तर में सुधार हुआ और आज शिमला मीणा इस आधुनिकता कि चमक–दमक में पीछे नहीं है। शिमला मीणा पर वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है, चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक क्षेत्र

हों। शिमला मीणा का वैयक्तिक अध्ययन मीणा महिलाओं के लिए एक मील का पत्थर शाबित होगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी मार्गदर्शक बनेगा।

अतः यह कहा जा सकता है कि मीणा समाज में धीरे–धीरे महिलाओं के प्रति सोच बदल रही है। प्रथम पीढ़ी की अपेक्षा द्वितीय पीढ़ी में अर्थात् दादा–दादी व माता पिता की अपेक्षा बच्चों में बदलाव आ रहा है। ऐसा ही शिमला मीणा के जीवन में भी देखा गया है। शिमला मीणा का जीवन स्तर भी ठीक रहा है। क्योंकि इनके जीवन में सामाजिक व आर्थिक पक्ष तो उच्च स्तर का रहा है पर राजनीति का पक्ष निम्न रहा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण स्तर पर महिलाओं का राजनीतिक वर्चस्व कम रहा है।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त चारों वैयक्तिक अध्ययनों से यह स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि मीणा जनजाति के इन प्रतिष्ठित पुरूष व महिलाओं का वैयक्तिक अध्ययन करने पर पाया गया कि इनकी तीन पीढ़ियों में आधुनिकता व वैश्वीकरण के कारण परिवर्तन हुआ। चारों अध्ययनों में प्रथम पीढ़ी को देखा जाए, तो पुरूषों की प्रथम पीढ़ी से महिलाओं की प्रथम पीढ़ी में परिवर्तन कम हुआ। वहीं दूसरी पीढ़ी का अध्ययन किया जाए, तो जो प्रथम पीढ़ी में देखा गया। वैसा ही द्वितीय पीढ़ी में भी देखा गया है, परन्तु समय के अनुसार परिवर्तन हुआ है। लोगों को शिक्षा मिली, जिसके कारण तीसरी पीढ़ी में अंतर कम आया अर्थात् पुरूष व महिला की पीढ़ी में आधुनिकता व वैश्वीकरण के कारण परिवर्तन हुआ है। क्योंकि पूर्व में जनजाति के लोग जंगलीय क्षेत्रों में रहते थे। जिसके कारण जागरूकता का अभाव था। मीणा समाज पुरूष प्रधान समाज था, आज भी है। परन्तु वर्तमान में इसका प्रभाव कम हो गया है। जिसके कारण महिलाओं की पीढ़ियों में परिवर्तन नगण्य ही रहा है अर्थात् वर्तमान पीढ़ी के पुरूष व महिलाओं में आधुनिकता व वैश्वीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जिसके कारण इनके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन में परिवर्तन तीव्र गति से हुआ। परन्तु आज भी पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में परिवर्तन नगण्य ही रहा है। तुलनात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए तो मीणा समाज में पुरूषों की अपेक्षा महिलाएँ आज भी कमजोर है अर्थात सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से पिछड़ी हुई है। जिसका प्रभाव पीढ़ियों में देखा गया है, चाहे वह प्राचीन समय हो या आधुनिक समय पर महिला–पुरूषों में असमानता नजर आयी है। ऐसा ही पीढ़ियों में भी देखा गया है। परन्तु समय के साथ–साथ परिवर्तन की धारा मीणा समाज की पीढ़ियों में भी बह रही है। यही कारण है कि वैश्वीकरण का प्रभाव देखा जा रहा है। अतः वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के वैयक्तिक अध्ययनों पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. राजपूत, उदयसिंह : ''आदिवासी विकास एवं गैर–सरकारी संगठन'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010 पृ.सं. 240
2. रावत, हरिकृष्ण : ''सामाजिक शोध की विधियाँ'' प्रेमरावत, रावत पब्लिकेशन्स, जवाहर नगर, जयपुर, 2013
3. आहूजा, राम : ''सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर,, 2008
4. सिंह, सुरेन्द्र : ''सामाजिक सर्वेक्षण'' हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ (उ0 प्र0), 1982
5. Goode and Hatt : "Mehod's in Social Research" Leading Publishing, 1952

सप्तम् अध्याय

''निष्कर्ष एवं सुझाव''

सप्तम् अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

इस वैज्ञानिक युग में हमारे विकासोन्मुखी देश के अन्दर ऐसी जनजातियाँ निवास करती हैं, जो सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक से भी पिछड़ी हुई है। ऐसे अपरिचित लोगों का उल्लेख भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजातियों के अन्तर्गत किया गया है। राजस्थान में कुल जनजातीय जनसंख्या का 43.8 प्रतिशत, इसी भू–भाग में निवास करता है। इनमें भील, मीणा, गरासिया, सहरिया और डामोर आदि प्रमुख जनजातीय समूह हैं।

अध्ययनरत मीणा जनजाति का 51.19 प्रतिशत भाग जयपुर, सवाईमाधोपुर, उदयपुर जिलों और शेष भाग अलवर, चित्तौड़, कोटा, बूंदी, डूंगरपुर जिलों में निवास करता है। यह जनजाति मीणा, मीना, मैणा आदि नामों से सम्बोन्धित की जाती रही हैं।

शोध प्रबन्ध के अध्यायों में इस जाति का क्रमवार विकास उल्लेखित किया गया है। इसमें वैश्वीकरण का अर्थ एवं उद्देश्य समझाते हुए वैश्वीकरण और जनजातीय समाज, महिलाओं से जुड़े हुए मुद्दे, जनजाति, जनजातीय समाज में मीणा जनजाति। जिसके अन्तर्गत मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण के प्रभावों का अध्ययन किया गया साथ ही वैश्वीकरण और जनजातीय समाज के अनेक मुद्दों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। इस हेतु उपलब्ध अनेकानेक शोध पुस्तकों का आश्रय लेते हुए, उनके मूल बिन्दुओं को संक्षिप्त रूप में उल्लेखित करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए बारां जिले की अन्ता तहसील के चार गांव जो मीणा बाहुल्य श्रेणी के हैं, जिनका चयन किया गया है। जिनमें से मीणा जनजाति के पुरूष व महिला अर्थात् 150 पुरूष व 150 महिला सदस्यों का चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली के आधार पर किया गया। इस प्रकार कुल 300 पुरूष व महिला उत्तरदाताओं के आधार पर मीणा जनजाति का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

अध्ययन में तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक व द्वितीयक दोनों ही स्रोतों को उपयोग में लिया गया है। अध्ययन से सम्बन्धित तथ्य एकत्रित करने के लिए प्राथमिक स्रोतों में साक्षात्कार अनुसूची तथा सहभागी अवलोकन को आधार बनाया गया साथ ही द्वितीयक स्रोतों में विभिन्न समितियों, संस्थाओं के प्रतिवेदनों, जनगणना रिपोर्ट, सरकारी आंकड़े, समाचार पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं, इन्टरनेंट आदि का प्रयोग करते हुए, संकलित सूचनाओं का सांख्यिकीय तरीके से वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में चुने गये पुरूष व महिला उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्टभूमि का विशलेषण किया गया। जिनके प्रमुख निष्कर्ष अग्रवृत है–

- ✶ उत्तरदाताओं का चुनाव लिंग के आधार पर किया गया, जिसमें 150 पुरूष व 150 महिला उत्तरदाता शामिल है। जिनसे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि के साथ ही अन्य पक्षों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई हैं।
- ✶ पारिवारिक संरचना कुल उत्तरदाताओं में से 116(38.67) योग प्रतिशत संयुक्त परिवार से, 153(51.00) योग प्रतिशत एकांकी परिवारों से, 31(10.33) योग प्रतिशत अन्य परिवारों से जिसमें विधुर/विधवा/परित्यक्ता परिवारों को शामिल किया गया है। अतः अध्ययन क्षेत्र में एकांकी परिवारों की संख्या बढ़ रही हैं।
- ✶ आयु संरचना के वर्गान्तराल में कुल उत्तरदाताओं में से 21–30 वर्ष के आयु वर्ग में 35(11.67) योग प्रतिशत, 31–40 वर्ष के आयु वर्ग में 85(28.33) योग प्रतिशत, 41–50 वर्ष के आयु वर्ग में 114(38.00) योग प्रतिशत, 51–60 वर्ष के आयु वर्ग में 46(15.33) योग प्रतिशत, 61 वर्ष से ऊपर आयु वर्ग में 20(06.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः अध्ययन में 41–50 वर्ष के आयु वर्ग में उत्तरदाताओं का नेतृत्व सर्वाधिक रहा है।
- ✶ वैवाहिक स्थिति में कुल उत्तरदाताओं में से 180(93.33) योग प्रतिशत विवाहित से, 05(01.67) योग प्रतिशत अविवाहित से, 13(04.33) योग प्रतिशत विधुर/विधवा से, 02(0.67) योग प्रतिशत तलाकशुदा से। अतः अध्ययन क्षेत्र में विवाहित व्यक्तियों का प्रतिशत बढ़ रहा है।
- ✶ शिक्षा के स्तर में कुल उत्तरदाताओं में से 10(03.33) योग प्रतिशत उच्च प्राथमिक से, 45(15.00) योग प्रतिशत माध्यमिक से, 78(26.00) योग प्रतिशत उच्च माध्यमिक से, 85(28.33) योग प्रतिशत स्नातक से, 50(16.67) योग प्रतिशत स्नात्कोत्तर से, 32(10.67) योग प्रतिशत व्यावसायिक डिग्री/शिक्षा से। अतः अध्ययन क्षेत्र में उच्च शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है।
- ✶ खान–पान के स्तर में कुल उत्तरदाताओं में से 53(17.67) योग प्रतिशत सर्वाहारी से, 247(82.33) योग प्रतिशत शाकाहारी से। अतः अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से शाकाहारी भोजन का सेवन करने वालों की संख्या बढ़ रही है।
- ✶ मकान के स्वरूप में कुल उत्तरदाताओं में से 75(25.00) योग प्रतिशत के कच्चा मकान, 115(38.33) योग प्रतिशत के पक्का मकान, 30(10.00) योग प्रतिशत के किराये का मकान, 80(26.67) योग प्रतिशत उत्तरदाता मिश्रित मकान रखते हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र में पक्के मकान रखने वालों की संख्या बढ़ रही है।

* वार्षिक आय के वर्गान्तराल में स्वयं व पारिवारिक आय का विवरण जिसमें 10,000 – 30,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 25(08.33) व पारिवारिक आय का प्रतिशत 25(08.34) योग प्रतिशत है। 30,001 – 50,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 50(16.67) योग प्रतिशत तथा पारिवारिक आय का प्रतिशत 49(16.33) योग प्रतिशत है। 50,001 – 1,00,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 116(38.67) योग प्रतिशत तथा पारिवारिक आय का प्रतिशत 115(38.33) योग प्रतिशत है। 1,00,001 – 5,00,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 87(29.00) योग प्रतिशत तथा पारिवारिक आय का प्रतिशत 90(30.00) योग प्रतिशत है। 5,00,001 से 10,00,000 स्वयं की आय का प्रतिशत 22(07.33) योग प्रतिशत तथा पारिवारिक आय का प्रतिशत 21(07.00) योग प्रतिशत है। अतः उत्तरदाताओं की स्वयं की आय का स्तर सर्वाधिक 50,001 – 1,00,000 के बीच है, जिनका प्रतिशत 116(38.67) योग प्रतिशत है। वहीं पारिवारिक आय का स्तर 1,00,001 – 5,00,000 के बीच जो कि सर्वाधिक हैं, जिनका प्रतिशत 115(38.33) योग प्रतिशत है।
* व्यावसायिक स्थिति में कुल उत्तरदाताओं में से 95(31.67) योग प्रतिशत कृषि से, 28(09.33) योग प्रतिशत निजी दुकान से, 27(09.00) योग प्रतिशत उद्योग से, 85(28.33) प्रतिशत सरकारी नौकरी से, 37(12.34) योग प्रतिशत अर्द्ध–सरकारी नौकरी से, 28(09.33) योग प्रतिशत कृषि व मजदूरी से। अतः अध्ययन क्षेत्र में कृषि कार्य के साथ ही सरकारी नौकरी करने वालों की संख्या बढ़ रही है।
* आय के स्रोतों में कुल उत्तरदाताओं में से 95(31.67) योग प्रतिशत कृषि भूमि से, 28(09.33) योग प्रतिशत दुकान से, 27(09.00) योग प्रतिशत मकान किराया से, 85(28.33) योग प्रतिशत नौकरी से, 27(09.00) योग प्रतिशत उद्योग से, 38(12.67) योग प्रतिशत की आय एक से अधिक कार्यो से। अतः अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से आय का स्रोत कृषि भूमि रही है।
* सिंचाई के संसाधनों में कुल उत्तरदाताओं में से 42(14.00) योग प्रतिशत कुंओं से, 39(13.00) योग प्रतिशत तालाब से, 166(55.33) योग प्रतिशत नहरों से, 53(17.67) योग प्रतिशत नलकूपों से। अतः अध्ययन क्षेत्र में सिचाई के संसाधनों के रूप में नहर के पानी का प्रयोग किया जा रहा है। जो कुल का सर्वाधिक प्रतिशत है।
* कुल सिंचित भूमि के भाग के वर्गान्तराल में कुल उत्तरदाताओं में से 01–20 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 08(02.67) योग प्रतिशत, 21–30 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 23(07.67) योग प्रतिशत, 31–40 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 48(16.00) योग प्रतिशत, 41–50 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 86(28.66) योग प्रतिशत, 50–60 बीघा सिंचित भूमि रखने वालों का 99(33.00) योग प्रतिशत, 61 से

ऊपर या अधिक सिंचित भूमि रखने वालों का प्रतिशत 36(12.00) योग प्रतिशत है। अतः अध्ययन क्षेत्र में सिंचित भूमि रखने वालों का प्रतिशत 99(33.00) योग प्रतिशत, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ निजी क्षेत्र में आरक्षण की मांग के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 248(82.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 52(17.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः अध्ययन क्षेत्र में निजी क्षेत्र के लिए आरक्षण की मांग बढ़ रही हैं, जो सर्वाधिक प्रतिशत है।

✶ आरक्षण की मांग के सम्बन्ध में कारण जिसमें 181(72.98) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में समानता, 168(67.74) योग प्रतिशत ने उचित प्रतिनिधित्व मिलना, 148(59.68) योग प्रतिशत ने आय की विषमता को कम करना, 121(48.79) प्रतिशत ने जीवन स्तर में सुधार, 138(55.65) योग प्रतिशत ने उच्च व तकनीकी शिक्षा में वृद्धि। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण रोजगार के अवसरों में समानता का रहा हैं।

✶ आधुनिक सुख–सुविधाओं में सभी उत्तरदाताओं के पास वर्तमान में पाई जाने वाली सभी सुविधाएं पर्याप्त हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि मीणा जनजाति के पुरूष व महिला उत्तरदाताओं के पास वर्तमान में पर्याप्त सुख–सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

✶ चुनाव लड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 40(13.33) योग प्रतिशत ने वार्ड पंच का, 76(25.33) योग प्रतिशत ने सरपंच का, 32(10.67) योग प्रतिशत ने पंचायत समिति सदस्य का, 24(08.00) योग प्रतिशत ने प्रधान का, 17(05.67) योग प्रतिशत ने जिला प्रमुख का, 08(02.67) योग प्रतिशत ने एक से अधिक चुनाव लड़ा, 103(34.33) योग प्रतिशत ने किसी भी प्रकार का चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र में सरपंच का चुनाव अधिक संख्या में लड़ा गया, जो सर्वाधिक प्रतिशत है।

✶ चुनाव प्रचार में किसने भूमिका निभाई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 150(50.00) योग प्रतिशत के लिए परिवार के सदस्य, 99(33.00) योग प्रतिशत के लिए मुखिया, 101(33.67) योग प्रतिशत के लिए जाति समाज के सदस्य, 110(36.67) योग प्रतिशित के लिए जनजाति समाज के सदस्य, 63(21.00) योग प्रतिशत के लिए पार्टी कार्यकर्ता सदस्य, 52(17.33) योग प्रतिशत ने एक से अधिक के प्रचार में भूमिका निभाई, 103(34.33) योग प्रतिशत ने चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र में चुनाव प्रचार के लिए भूमिका निभाने वाले सर्वाधिक जनजाति के सदस्य सक्रिय हैं।

✶ चुनाव में प्रेरणा स्रोत के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 37(12.33) योग प्रतिशत के लिए दादा–दादी, 144(48.00) योग प्रतिशत के लिए माता–पिता, 64(21.33) योग प्रतिशत के लिए पति–पत्नी, 79(26.33) योग प्रतिशत के लिए सास–ससुर, 65(21.67) योग प्रतिशत के लिए क्षेत्रीय कार्यकर्ता, 168(56.00) योग प्रतिशत के लिए आरक्षण व्यवस्था, 41(13.67) योग प्रतिशत में स्वयं (स्वप्रेरित), 103(.34.33) योग

प्रतिशत ने चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र के चुनाव में प्रेरणा स्रोत आरक्षण व्यवस्था रही है।

✶ चुने जाने पर प्रतिष्ठा बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 160(53.33) योग प्रतिशत ने परिवार में, 137(45.67) योग प्रतिशत ने जातीय समाज में, 173(57.67) योग प्रतिशत ने जनजातीय समाज में, 80(26.67) योग प्रतिशत ने आर्थिक क्षेत्र में, 126(42.00) योग प्रतिशत ने राजनीतिक क्षेत्र में, 46(15.33) योग प्रतिशत की एक से अधिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठा बढ़ी, 103(34.33) योग प्रतिशत ने चुनाव नहीं लड़ा। अतः अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से जनजातीय समाज में प्रतिष्ठा बढ़ रही है।

✶ चुनाव से पूर्व या चुनाव के बाद किस पद में सक्रियता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 23(07.67) योग प्रतिशत ने जनजाति पंच के रूप में, 84(28.00) योग प्रतिशत ने पारिवारिक मुखिया के रूप में, 25(08.33) योग प्रतिशत ने ग्रामीण पदाधिकारी के रूप में, 32(10.67) योग प्रतिशत ने प्रचारक के रूप में, 13(04.33) योग प्रतिशत ने राजनीतिक दल की सदस्यता के रूप में, 20(06.67) योग प्रतिशत ने एक से अधिक कार्यों के रूप में, 103(34.33) योग प्रतिशत ने चुनाव नहीं लड़ा। अतः उत्तरदाता पारिवारिक मुखिया के रूप संलग्न थे साथ ही चुनाव भी नहीं लड़ा अर्थात् नौकरी के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं।

✶ राजनीति में आरक्षण व्यवस्था के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 216(72.00) योग प्रतिशत ने उचित के पक्ष में, 35(11.67) योग प्रतिशत ने अनुचित के पक्ष में, 49(16.33) योग प्रतिशत ने तटस्थता के पक्ष में। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता राजनीति में आरक्षण व्यवस्था के पक्ष में, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ आरक्षण व्यवस्था उचित होने के कारणों के पक्ष में कुल उत्तरदाताओं में से 143 (66.20) योग प्रतिशत उचित प्रतिनिधित्व मिलने के पक्ष में, 162(75.00) योग प्रतिशत राजनीतिक भागीदारी के पक्ष में, 102(47.22) योग प्रतिशत जनजातियों का राजनीतिक विकास के पक्ष में, 103(47.69) योग प्रतिशत पिछड़ेपन को दूर करने के पक्ष में। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण उचित प्रतिनिधित्व मिलने का रहा है।

✶ राजनीति में धन व संख्या बल के महत्त्व के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 117(39.00) योग प्रतिशत ने पद/सम्मान के लिए, 47(15.67) योग प्रतिशत ने अपराधीकरण के लिए, 56(18.67) योग प्रतिशत ने चुनाव जीतने के लिए, 80(26.66) योग प्रतिशत ने समाज में वर्चस्व बढ़ाने के लिए माना। अतः उत्तरदाता राजनीति में धन व संख्या बल का सर्वाधिक महत्त्व पद/सम्मान को मानते हैं।

✶ राजनीतिक दलों से सम्बद्धता के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 121(40.33) योग प्रतिशत भाजपा से, 75(25.00) योग प्रतिशत कॉग्रेंस से, 24(08.00) योग

प्रतिशत निर्दलीय से व 80(26.67) योग प्रतिशत किसी पार्टी विशेष से नहीं है। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता सर्वाधिक संख्या में भाजपा से सम्बद्धता रखते हैं।

✶ उत्तरदाताओं का राजनीतिक बोध स्तर कुल योग का औसत स्कोर, जिसमें पुरूष उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 118.75 हैं। महिला उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 82.75 है। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता राजनीतिक पदों पर आसीन व्यक्तियों का नाम जानते हैं, जिनमें पुरूषों का औसत स्कोर महिलाओं के औसत स्कोर से अधिक हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों का बोध स्तर सर्वाधिक है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि महिलाओं में राजनीतिक ज्ञान नगण्य है।

अतः निष्कर्ष निकलता है कि अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करने के बाद पाया कि अध्ययन क्षेत्र में एकांकी परिवारों की संख्या बढ़ रही है। जिसका प्रतिशत 153(51.00) योग प्रतिशत है। विवाहित उत्तरदाताओं का प्रतिशत 180(93.33) योग प्रतिशत है। शिक्षा के स्तर में 85(28.33) योग प्रतिशत स्नातक से है। 115(38.33) योग प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास पक्के मकान है। व्यवसायिक स्थिति में 95(31.67) योग प्रतिशत कृषि से सम्बन्धित उत्तरदाता है। आय के स्रोतों में कृषि भूमि सर्वाधिक है। जिसका प्रतिशत 95(31.67) योग प्रतिशत है।

राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करे तो अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता ग्रामीण स्तर पर सरपंच का चुनाव अधिक संख्या में लड़ा गया। जिसका प्रतिशत 76(25.33) योग प्रतिशत है। चुनाव में भूमिका निभाई के सम्बन्ध में 150(50.00) योग प्रतिशत परिवार व 110(36.67) योग प्रतिशत जनजाति समाज अग्रणी रहा है। आगे इसी क्रम में अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्यद्धता रखते हैं। जिनका प्रतिशत 121(40.33) योग प्रतिशत है। अतः कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि ठीक है। परन्तु राजनीतिक पृष्ठभूमि कमजोर है, क्योंकि 103(34.33) योग प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिन्होंने कोई चुनाव नहीं लड़ा है। परन्तु चुनाव में प्रचार – प्रसार का काम तो करते हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं का राजनीतिक स्तर मध्यम दर्जे का रहा है। अन्य प्रश्नों को भी अध्ययन में समायोजित किया गया। जिसमें उत्तरदाताओं से उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन से जुड़ी हुई क्रियाओं तथा जीवन स्तर पर, वैश्वीकरण के सकारात्मक व नकारात्मक रूप से क्या प्रभाव पड़े आदि पक्षों को ध्यान में रखते हुए उनके विचारों को

साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है। जिनके प्रमुख निष्कर्ष अग्रवत है–

- ✶ वैश्वीकरण के बारे में सुना के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 238(79.33) योग प्रतिशत ने हाँ के पक्ष में, 62(20.67) योग प्रतिश्त ने नहीं के पक्ष में। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं ने वैश्वीकरण के बारे में सुना, जो कुल का सर्वाधिक प्रतिशत है। परन्तु कुछ उत्तरदाता आज भी इस प्रक्रिया से अनजान है।
- ✶ वैश्वीकरण के बारे में आप क्या जानते हैं के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 126(52.94) योग प्रतिशत तीव्रगामी यातायात के बारे में, 147(61.77) योग प्रतिशत आधुनिक सूचना तन्त्र के बारे में, 148(62.19) योग प्रतिशत संसाधनों तक पहुँच सरलता के बारे में, 92(38.66) योग प्रतिशत विज्ञापनों के बढ़ते महत्त्व के बारे में, 96(40.34) योग प्रतिशत आवश्यक वस्तुओं का आसानी से उपलब्ध होना है। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाता सर्वाधिक रूप से संसाधनों तक पहुँच सरल हुई, के बारे में जानते हैं, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ वैश्वीकरण का सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 186(62.67) योग प्रतिशत ने पूर्ण सहमत के पक्ष में, 59(19.67) योग प्रतिशत ने सहमत के पक्ष में, 34(11.33) योग प्रतिशत ने असहमत के पक्ष में, 21(07.00) योग प्रतिशत कोई प्रभाव नहीं पड़ा के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ा, जो पूर्ण सहमत के पक्ष में कुल का सर्वाधिक का योग प्रतिशत है।
- ✶ सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाले कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 91(48.93) योग प्रतिशत ने संचार एवं परिवहन के साधनों में वृद्धि, 139(74.73) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 113(60.75) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच के कारण, 136(73.12) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण ने परिवार की संरचना को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 173(57.67) योग प्रतिशत ने संयुक्त परिवार का टुटना, 125(41.67) योग प्रतिशत ने व्यक्ति की भौतिकवादी सोच, 135(45.00) योग प्रतिशत ने पारिवारिक नियंत्रण में कमी, 194(64.67) योग प्रतिशत ने पारिवारिक मूल्यों का हास, 93(31.00) योग प्रतिशत ने सांस्कृतिक संक्रमण, 105(35.00) योग प्रतिशत ने रक्त सम्बन्धों के पतन को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव पारिवारिक मूल्यों के ह्यस का रहा, यह वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव है।

- ✶ वैश्वीकरण से सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 233(77.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 67(22.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः सामजिक सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ समाजिक सम्बन्धों में क्या परिवर्तन हुआ के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 44(14.67) योग प्रतिशत ने रक्त सम्बन्धों का महत्त्व बढ़ा को, 152(50.67) योग प्रतिशत ने रक्त सम्बन्धों का महत्त्व घटा को, 37(12.33) योग प्रतिशत ने यथावत, 67(22.33) योग प्रतिशत ने कोई प्रभाव नही पड़ा को माना। अतः वैश्वीकरण के कारण रक्त सम्बन्धों का महत्त्व घटा, यह नकारात्मक प्रभाव है।
- ✶ वैश्वीकरण के कारण द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 247(82.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 53(17.67) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला, जो सर्वाधिक प्रतिशत है।
- ✶ द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 148(59.92) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 144(58.30) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 147(59.52) योग प्रतिशत ने पारिवारिक मूल्यों का ह्रास, 131(53.04) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति की तरफ झुकाव, 126(51.01) योग प्रतिशत भौतिकवादी सोच में वृद्धि। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से सामाजिक गतिशीलता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 204(68.00) योग प्रतिशत ने सहमत के पक्ष में, 57(19.00) योग प्रतिशत ने असहमत के पक्ष में, 39(13.00) योग प्रतिशत ने तटस्थता के पक्ष में। अतः सामाजिक गतिशीलता बढ़ी, जो सहमत के पक्ष में कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ सामाजिक गतिशीलता बढ़ने के सहमत के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 158(77.45) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 151(74.02) योग प्रतिशत ने आधुनिक संसाधनों में वृद्धि, 144(70.59) योग प्रतिशत ने रोजगार की लालशा में वृद्धि तथा 126(61.77) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि, 77(37.75) योग प्रतिशत सामाजिक सम्बन्धों में शिथिलता। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक रीति–रिवाजों पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 142(47.33) योग प्रतिशत ने परम्परागत रीति–रिवाजों में शिथिलता, 131(43.67) योग प्रतिशत ने संयुक्त परिवार का घटता

प्रभाव, 125(41.67) योग प्रतिशत ने सामाजिक उत्सवों का सरलीकरण, 153(51.00) योग प्रतिशत ने सामाजिक सामनजस्य में बिखराव को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव सामाजिक सामंजस्य में बिखराव का रहा है।

★ परम्परागत खान–पान को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 149(49.67) योग प्रतिशत ने परम्परागत भोजन सामग्री का ह्रास, 160(53.33) योग प्रतिशत ने नवीन पेय पदार्थों के सेवन में वृद्धि, 152(50.67) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, 120(40.00) योग प्रतिशत ने भोजन में पौष्टिक तत्त्वों की कमी को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव नवीन पेय पदार्थों के सेवन में वृद्धि का रहा है।

★ परम्परागत वेशभूषा को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 181(60.33) योग प्रतिशत ने आधुनिक वेशभूषा का बढ़ता प्रचलन, 164(54.67) योग प्रतिशत ने नवीन पहनावें के स्रोतों में वृद्धि, 121(40.33) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, 108(36.00) योग प्रतिशत ने आधुनिकता की बढती होड़ को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव आधुनिक वेशभूषा का बढ़ता प्रचलन रहा है।

★ परम्परागत आभूषणों को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 190(63.33) योग प्रतिशत ने परम्परागत आभूषणों को बोझ समझना, 140(46.67) योग प्रतिशत ने कृत्रिम आभूषणों से लगाव, 123(41.00) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, 124(41.33) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में शिथिलता को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत आभूषणों को बोझ समझा गया है।

★ परम्परागत पूजा–पाठ को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं मे से 176(58.67) योग प्रतिशत ने परम्परागत पूजा पाठ के तौर तरीकों का ह्रास, 162(54. 00) योग प्रतिशत ने देवी शक्ति की आस्था में कमी, 185(61.67) योग प्रतिशत ने व्यक्ति के पास समय के अभाव की कमी, 130(43.33) योग प्रतिशत ने धार्मिक कार्यों को सम्पादित कराने वालों की कमी को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव व्यक्ति के पास समय अभाव की कमी का रहा है।

★ परम्परागत अन्धविश्वासों को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 164(54.67) योग प्रतिशत ने तन्त्र–मन्त्र की विद्या में कमी, 182(60.66) योग प्रतिशत ने नीम हकीमों की संख्या में कमी, 186(55.33) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में

वृद्धि, 91(30.33) योग प्रतिशत ने मीड़िया से जागरूकता में वृद्धि को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव नीम–हकीमों की संख्या में कमी का रहा है।

✶ बहुविवाह प्रथा को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 122(40.67) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में खुलापन, 163(54.33) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 181(60.33) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 93(31.00) योग प्रतिशत ने मीड़िया द्वारा जागरूकता फैलाने को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव रोजगार के अवसरों में वृद्धि का रहा है।

✶ पुनर्विवाह की प्रथा को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 182(60.67) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 146(48.67) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 125(41.67) योग प्रतिशत ने सामाजिक सोच में बदलाव, 132(44.00) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियम कानूनों में खुलेपन को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।

✶ अन्तर्जातीय विवाह को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 188(62.67) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 167(55.67) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 140(46.67) योग प्रतिशत ने महिला–पुरूष के सम्बन्धों में खुलापन, 106(35.33) योग प्रतिशत ने परम्परागत नियम कानूनों में शिथिलता को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।

✶ परिवार के सदस्यों के विवाह की आयु के वर्गान्तराल के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 27(09.00) योग प्रतिशत के दादा–दादी का विवाह 05–10 वर्ष की आयु में, 100(33.33) योग प्रतिशत के दादा–दादी व माता–पिता का विवाह 11–15 वर्ष की आयु में, 116(38.67) योग प्रतिशत के माता–पिता व भाई बहिन का विवाह 16–20 वर्ष आयु में, 57(19.00) योग प्रतिशत के भाई–बहिन का विवाह 21–25 वर्ष की आयु में सम्पन्न हुआ। अतः अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं ने पारिवारिक सदस्यों के विवाह की आयु में हुए परिवर्तन को दर्शाया है। जिसमें 16 से 20 वर्ष की आयु में माता–पिता व भाई–बहन का विवाह सर्वाधिक संख्या में सम्पन्न हुआ।

✶ स्वयं उत्तरदाताओं के विवाह की आयु के वर्गान्तराल के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 21(07.00) योग प्रतिशत के विवाह की आयु 11–15 वर्ष की, 194(64.67) योग प्रतिशत के विवाह की आयु 16–20 वर्ष की, 85(28.33) योग

प्रतिशत के विवाह की आयु 21–25 वर्ष की। अतः अध्ययन क्षेत्र के स्वयं पुरूष व महिला उत्तरदाताओं के विवाह की आयु में परिवर्तन हुआ है।

- ✶ वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के लोकगीत व नृत्यों पर क्या प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 230(76.670) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 70(23.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति के लोकगीत व नृत्यों पर प्रभाव पड़ा, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ लोकगीत व नृत्यों को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 158(68.70) योग प्रतिशत ने परम्परागत लोक गीतों की जगह फिल्मी गीतों का प्रचलन, 125(54.35) योग प्रतिशत ने लोक नाटकों की जगह टेलिविजन नाटकों का प्रयोग, 75(32.61) योग प्रतिशत ने हिन्दी फिल्मों की जगह अंग्रेजी फिल्मों का प्रचलन, 109(47.39) योग प्रतिशत ने परम्परागत सामाजिक उत्सवों की जगह आधुनिक उत्सवों का प्रचलन, 101(43.91) योग प्रतिशत ने परम्परागत नृत्यों की जगह पोप नृत्यों का प्रचलन को माना है। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत लोकगीतों की जगह फिल्मी गीतों के प्रचलन का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 228(76.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 72(24.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 137(60.09) योग प्रतिशत ने आधुनिकतम संचार के संसाधनों में वृद्धि, 152(66.67) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, 94(41.23) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 99(43.42) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 117(51.32) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण पाश्यात्य संस्कृति के प्रभाव का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की तलाक प्रथा पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 236(78.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 64(21.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः तलाक प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ मीणा जनजाति की तलाक प्रथा किस प्रकार प्रभावित हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 124(52.54) योग प्रतिशत ने सामाजिक व पारिवारिक बन्धनों में

कमी, 65(27.54) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि, 154(65.26) योग प्रतिशत ने एकांकी परिवारों की संख्या में वृद्धि, 102(43.22) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का बढता मेल मिलाप, 113(47.88) योग प्रतिशत ने स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों में खुलापन, 94(39.83) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव एकांकी परिवारों की संख्या में वृद्धि का रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 227(75.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 73(24.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ किस प्रकार मीणा जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 136(59.91) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 102(44.93) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 94(41.41) योग प्रतिशत ने मीड़िया की बढ़ती पहुँच, 115(50.66) योग प्रतिशत ने सरकारी योजनाओं में महिलाओं की भूमिका, 63(27.75) योग प्रतिशत ने महिला पुरूषों के सम्बन्धों में खुलापन, 78(34.36) योग प्रतिशत ने सामाजिक सोच में बदलाव को माना है। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ मीणा जनजाति की सामाजिक सेवाओं को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 150(50.00) योग प्रतिशत ने जाति आधारित सेवाओं का हास, 165(55.00) योग प्रतिशत ने परम्परागत सामाजिक नियमों व कानूनों का ह्रास, 99(33.00) योग प्रतिशत ने बढ़ते गैर–सरकारी संगठनों का प्रभाव, 82(27.33) योग प्रतिशत ने सरकार द्वारा सामाजिक सेवाओं पर बल। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत सामाजिक नियमों एवं कानूनों के ह्रास का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की चिकित्सा सेवाओं पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं से 245(81.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 55(18.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः चिकित्सा सेवाओं पर प्रभाव पड़ा जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ मीणा जनजाति की चिकित्सा सेवाओं को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 137(55.92) योग प्रतिशत ने चिकित्सा के पराम्परागत तरीकों में बदलाव, 156(63.67) योग प्रतिशत ने नीम–हकिमों का घटता प्रभाव, 147(60.00) योग प्रतिशत ने सूचना क्रान्ति से चिकित्सा सेवा में वृद्धि, 37(15.10)

योग प्रतिशत ने प्रतिस्पर्दा से चिकित्सा सेवाओं का सस्ता होना, 156(63.67) योग प्रतिशत ने भारतीय दवाओं की जगह अंग्रेजी दवाओं के प्रयोग में वृद्धि माना।

✶ वैश्वीकरण से मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 238(79.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 62(20.67) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ किस प्रकार मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 158(66.39) योग प्रतिशत ने आधुनिक संसाधनों से कृषि कार्य, 144(60.51) योग प्रतिशत ने वैज्ञानिक तरीकों से पशुपालन, 142(59.66) योग प्रतिशत ने नवीन तकनीकी से उद्योगों का संचालन, 108(45.80) योग प्रतिशत ने आधुनिक तरीको से घरेलू कार्य को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव आधुनिक संसाधनों से कृषि कार्य का रहा है।

✶ वैश्वीकरण से मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 240(80.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 60(20.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ने के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 96(38.87) योग प्रतिशत ने सूचना क्रान्ति के कारण, 170(68.83) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 146(59.11) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 52(21.05) योग प्रतिशत ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कारण, 125(50.61) योग प्रतिशत ने कुटीर उद्योग आधारित व्यावसाय में कमी को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।

✶ व्यावसायिक गतिशीलता ने मीणा जनजाति को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 99(33.00) योग प्रतिशत ने आय में वृद्धि हुई को, 61(20.33) योग प्रतिशत ने आय में कमी आई को, 84(28.00) योग प्रतिशत ने रोजगार में वृद्धि हुई को, 56(18.67) योग प्रतिशत ने कोई प्रभाव नहीं पड़ा को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव आय में वृद्धि हुई का रहा है।

✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से ग्रामीण प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 241(80.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 59(19.67) योग प्रतिशत

ने नहीं के पक्ष में। अतः ग्रामीण प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ ग्रामीण प्रतिभाओं के पलायन के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 161(66.81) योग प्रतिशत ने परम्परागत व्यवसायों के उत्पादन में गिरावट, 152(63.07) योग प्रतिशत ने कुटीर व लघु उद्योग–धन्धों का बन्द होना, 181(75.10) योग प्रतिशत ने उच्च व तकनीकी शिक्षा का अभाव, 123(51.04) योग प्रतिशत ने योग्यता के अनुसार रोजगार न मिलना, 108(44.81) योग प्रतिशत ने क्षेत्रिय स्तर पर पर्याप्त पहचान का अभाव को माना है। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण उच्च व तकनीकी शिक्षा के अभाव का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 230(76.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 70(23.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ कृषि के स्थान पर उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 128(55.65) योग प्रतिशत ने कृषि में कम पैदावार का होना, 151(65.65) योग प्रतिशत ने कृषि कार्य के उपकरणों का महँगा होना, 142(61.74) योग प्रतिशत ने उचित मूल्यों पर खाद–बीज का न मिलना, 161(70.00) योग प्रतिशत ने फसल का उचित मूल्य न मिलना, 192(83.48) योग प्रतिशत ने कृषि में मौसमी प्रकोप के आने को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण कृषि व्यवसाय में मौसमी प्रकोप के आने का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण का कृषि व्यवसाय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 145(48.33) योग प्रतिशत ने कृषि के संसाधनों का महंगा होना, 104(34.67) योग प्रतिशत ने परम्परागत संसाधनों का ह्यस, 165(55.00) योग प्रतिशत ने खाद बीज व कीटनाशक दवाईयों का महँगा होना, 164(54.67) योग प्रतिशत ने कृषि आधारित उद्योग धन्धें बन्द होना, 103(34.33) योग प्रतिशत ने अधिक रासायनिक खाद के उपयोग से भूमि की उर्वरक क्षमता का नष्ट होना, 170(56.67) योग प्रतिशत ने कृषि व्यवसाय में रूचि का कम होना माना। अतः नकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव खाद बीज व कीटनाशक दवाईयों के महंगा होने का रहा है।

★ वैश्वीकरण का कृषि व्यवसाय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 167(55.67) योग प्रतिशत ने कृषि में नई तकनीकी व मशीनरी का प्रयोग, 163(54.33) योग प्रतिशत ने संचार के संसाधनों से कीटनाशक दवाईयों के बारे में जानकारी मिलना, 100(33.33) योग प्रतिशत ने प्रतिस्पर्दा से किसानों की फसल का उचित मूल्य मिलना, 114(38.00) योग प्रतिशत ने नवीन खाद बीजों का प्रचलन, 78(26.00) योग प्रतिशत ने नवीन तकनीकी से मृदा की जाँच को माना। अतः सकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव कृषि व्यवसाय में नई तकनीकी एवं मशीनरी के प्रयोग का रहा है।

★ वैश्वीकरण के कारण लघु एवं कुटीर उधोग धन्धें नष्ट हुए के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 247(82.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 63(21.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः ग्रामीण उद्योग धन्धें नष्ट हुए, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

★ वैश्वीकरण का गरीब एवं निम्न आय वर्ग पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में सें 187(62.33) योग प्रतिशत ने वैज्ञानिक तरीकों से उत्पादन में वृद्धि, 82(27.33) योग प्रतिशत ने जीवन स्तर का उच्च होना, 101(33.67) योग प्रतिशत ने आय के संसाधनों में वृद्धि, 112(37.33) योग प्रतिशत ने सामाजिक परिवेश में बदलाव को माना है। अतः सकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव वैज्ञानिक तरिकों से उत्पादन में वृद्धि का रहा है।

★ वैश्वीकरण का गरीब एवं निम्न आय वर्ग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 166(53.33) योग प्रतिशत ने गरीब और गरीब हो गया, 10(33.33) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी मानव का जन्म, 62(20.67) योग प्रतिशत ने संसाधनों की पहुँच से दूर, 187(62.33) योग प्रतिशत ने वस्तु एवं सेवाओं के महँगा होने को माना। अतः नकारात्मक प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव वस्तु एवं सेवाओं के महँगा होने का रहा है।

★ वैश्वीकरण ने आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 222(74.00) योग प्रतिशत ने सहमत के पक्ष में, 46(15.33) योग प्रतिशत ने असहमत के पक्ष में, 32(10.67) प्रतिशत ने तटस्थता के पक्ष में। अतः आर्थिक असमानता को बढ़ावा मिला, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

★ आर्थिक असमानता के सहमति के उचित कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 87(39.19) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि, 128(57.66) योग प्रतिशत ने व्यावसायिक प्रतिस्पर्दा में वृद्धि, 164(73.87) योग प्रतिशत ने संसाधनों पर वर्ग

विशेष का प्रभुत्व, 155(69.82) योग प्रतिशत ने गरीब व अमीर में दूरियाँ को माना है। अतः सहमत के कारणों में सर्वाधिक कारण संसाधनों पर वर्ग विशेष के प्रभाव का रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से कृषकों की दयनीय स्थिति हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरादाताओं में से 237(79.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 63(21.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः कृषकों की दयनीय स्थिति हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ कृषकों की दयनीय स्थिति हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 133(56.12) योग प्रतिशत ने कृषि आधारित परम्परागत व्यवसायों का ह्रास, 153(64. 56) योग प्रतिशत ने कुटीर उद्योग आधारित परम्परागत व्यवसायों का ह्रास, 167(70.47) योग प्रतिशत ने उपज का उचित मूल्य नहीं मिलना, 97(40.93) योग प्रतिशत ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बाजार में आना, 150(63.29) योग प्रतिशत ने कृषि आधारित संसाधनों का महँगा होना, 188(79.33) योग प्रतिशत ने कृषि में मौसमी प्रकोप को कारण माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण कृषि व्यवसाय में मौसमी प्रकोप के आने का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 244(80.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 58(19.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति की परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 171(70.66) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 184(76.03) योग प्रतिशत ने मीड़िया द्वारा राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता, 165(68. 18) योग प्रतिशत ने युवा पीढ़ी द्वारा वंशवाद की उपेक्षा, 139(57.44) योग प्रतिशत ने लोकतन्त्रवादी सोच में वृद्धि, 145(59.92) योग प्रतिशत ने जातिगत पंचायतों के प्रभाव में कमी को माना है। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया द्वारा राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 238(79.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 62(20.67) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ किस प्रकार राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 149(62.61) योग प्रतिशत ने चुनाव प्रचार में भागीदारी बढ़ी, 164(68.91) योग प्रतिशत ने मताधिकार के प्रयोग में चेतनता, 178(74.79) योग प्रतिशत ने युवा नेतृत्त्व का विकास, 217(91.18) योग प्रतिशत ने जाति पंचायतों की जगह लोकतन्त्र में विश्वास, 200(84.03) योग प्रतिशत ने राजनीतिक सोच में बदलाव को माना।

अतः प्रभावों /कारणों में सर्वाधिक कारणों में सर्वाधिक कारण जाति पंचायतों की जगह लोकतंत्र में विश्वास का रहा है।

* राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि नहीं हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 57(91.94) योग प्रतिशत ने उच्च व तकनिकी शिक्षा का अभाव, 60(96.78) योग प्रतिशत ने जाति पंचायतों का महत्व, 46(74.19) योग प्रतिशत ने जातिगत राजनीति में विश्वास, 40(64.52) योग प्रतिशत ने सूचना तकनिकी का ज्ञान नहीं है को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण जाति पंचायतों के महत्व का रहा है।
* वैश्वीकरण के प्रभाव से युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 237(79.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 63(21.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
* किस प्रकार युवाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 152(64.14) योग प्रतिशत ने लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में पारदर्शिता, 104(43.88) योग प्रतिशत ने राजनीतिक दलों की सदस्यता ग्रहण करना, 172(72. 57 योग प्रतिशत ने अधिकारों के प्रति अधिक सजकता, 75(31.65) योग प्रतिशत ने उच्च शिक्षा से संगठनों का नेतृत्त्व तथा 99(41.77) योग प्रतिशत ने राजनीतिक कानूनों के ज्ञान में वृद्धि को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव अधिकारों के प्रति अधिक सजकता का रहा है।
* वैश्वीकरण से मतदान के प्रति जागरूता में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 232(77.33) योग प्रतिशत हॉ के पक्ष में, 68(22.67) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मतदान के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
* वैश्वीकरण ने जातिगत राजनीति व्यवस्था को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 227(75.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 73(24.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः जातिगत राजनीति को प्रभावित किया, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
* जातिगत राजनीति व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 154(67.84) योग प्रतिशत ने जाति विशेष का महत्त्व कम, 84(37. 00) योग प्रतिशत ने जाति व्यवस्था वर्ग में परिवर्तित, 41(18.06) योग प्रतिशत ने जातिगत राजनीति में बिखराव, 92(40.53) योग प्रतिशत ने शिक्षा के कारण जातिगत विचारधारा में परिर्वतन, 165(72.69) योग प्रतिशत ने जाति व्यवस्था के नियमों में शिथिलता को माना है। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव जाति व्यवस्था के नियमों में शिथिलता का रहा है।

* जातिगत राजनीति व्यवस्था को प्रभावित नहीं किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 70(95.89) योग प्रतिशत ने जाति के नियमों में कठोरता, 64(87.69) योग प्रतिशत ने जाति वर्ग में परिवर्तित नही, 39(53.43) योग प्रतिशत ने शिक्षा का अभाव, 52(71.23) योग प्रतिशत ने जातिगत पंचायतों के महत्व को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव जाति के नियमों में कठोरता का रहा है।
* वैश्वीकरण ने राजनीतिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 178(59.33) योग प्रतिशत ने मताधिकार के प्रति चेतनता, 210(17.00) योग प्रतिशत ने राजनीतिक जागरूकता, 225(75.00) योग प्रतिशत ने राजनीतिक पदों की लालसा में वृद्धि, 101(33.67) योग प्रतिशत ने राजनीतिक दलों की आर्थिक सहायता में वृद्धि, 134(44.67) योग प्रतिशत ने युवा वर्ग की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि को माना है। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव राजनीतिक पदों की लालसा में वृद्धि का रहा है।
* वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 210(70.00) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 189(63.00) योग प्रतिशत ने उच्च व तकनीकी शिक्षा पर बल, 137(45.67) योग प्रतिशत ने रूढ़ियों एवं कुरीतियों के बन्धनों में शिथिलता, 181(60.33) योग प्रतिशत ने मताधिकार व निर्वाचन क्षेत्र में रूचि, 173(57.67) योग प्रतिशत ने सरकारी व निजी क्षेत्र में रोजगार की वृद्धि, 75(25.00) योग प्रतिशत ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रति रूझान बढ़ी को माना। अतः वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिसके कारण मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर में परिवर्तन हो रहा है।
* वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 160(53.33) योग प्रतिशत ने पारम्परिक व्यवसायों की हानि, 159(53.00) योग प्रतिशत ने सांस्कृतिक पक्ष की दृष्टि से पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण, 164(54.67) योग प्रतिशत ने जातिगत परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों का विलोपन, 120(40.00) योग प्रतिशत ने आर्थिक असमानता में वृद्धि, 175(58.33) प्रतिशत ने शारीरिक श्रम–आधारित व्यवसायों का तिरस्कार, 135(45.00) योग प्रतिशत ने जातिगत राजनीति व्यवस्था के मूल्यों के ह्रास को माना। अतः अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

अतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकारण के कारण मीणा जनजाति पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों को देखा गया है। जिसमें सकारात्मक प्रभावों की

संख्या अधिक है अर्थात् मीणा जनजाति के व्यक्तियों के जीवन स्तर में परिवर्तन हुआ है।

इस वैश्वीकरण के दौर में मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति कैसी है, जिसके सम्बन्ध में मीणा महिला उत्तरदाताओं के संज्ञान क्या थे। महिलाओं पर वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव क्या पड़े आदि पक्षों का निष्कर्ष तालिकाओं के माध्यम से निम्नानुसार प्रस्तुत है –

✶ मीणा समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 62(41.33) योग प्रतिशत ने अच्छी मानी, 57(38.00) योग प्रतिशत ने सामान्य मानी, 31(20.67) योग प्रतिशत ने खराब मानी है। अतः अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अच्छी है, जो कुल का सर्वाधिक योग प्रतिशत है। लेकिन कुछ महिला उत्तरदाता ऐसी भी है, जो महिलाओं की खराब स्थिति का आंकलन करती हैं। जिसके कारण अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाओं में जागरूकता का अभाव रहा है।

✶ महिला शिक्षा के समाज पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 91(60.67) योग प्रतिशत ने परम्परागत रूढ़ियों का खत्म होना, 92(31.33) योग प्रतिशत ने पारिवारिक निर्णयों में अहम भूमिका, 97(64.67) योग प्रतिशत ने अधिकारों के प्रति जागरूकता में वृद्धि, 101(67.33) योग प्रतिशत ने जीवन स्तर में सुधार, 107(71.33) योग प्रतिशत ने आर्थिक स्तर में वृद्धि को माना। अतः अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षा से मीणा महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन हो रहा है।

✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 115(76.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 35(23.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ महिलाओं के पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता किस प्रकार बढ़ी के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 61(53.04) योग प्रतिशत ने अधिकारों के प्रति सजकता, 65(56.52) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 76(66.09) योग प्रतिशत ने आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि, 62(53.91) योग प्रतिशत ने सरकार द्वारा संचालित

योजनाओं में भागीदारी को माना है। अतः महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ रही है।

- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 110(73.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 40(26.67) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 77(77.00) योग प्रतिशत ने जाति आधारित नियमों में शिथिलता, 75(68.18) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 95(86.36) योग प्रतिशत ने मीड़िया का प्रभाव, 90(81.82) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 93(84.55) योग प्रतिशत ने सामाजिक बन्धनों एवं सोच में परिवर्तन को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया के प्रभाव का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के पहनावें पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 117(78.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 33(22.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं के पहनावें पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं के पहनावें को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 66(56.41) योग प्रतिशत ने परम्परागत पहनावें से दूरी, 95(81. 20) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य पहनावें की तरफ झुकाव, 96(82.05) योग प्रतिशत ने परम्परागत पहनावें को हास्यापद बनना, 75(64.10) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में लचीलापन को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव परम्परागत पहनावें को हास्यापद बनना रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण ने महिलाओं की सामजिक कुरीतियों को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 120(80.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 30(20.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिलाओं की सामजिक कुरीतियों को प्रभावित किया, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं की सामाजिक कुरीतियों को प्रभावित करने के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 105(87.05) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में लचीलापन, 95(79.17) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति की ओर झुकाव, 107(89. 17) योग प्रतिशत ने शिक्षा का बढ़ता स्तर, 115(95.83) योग प्रतिशत ने मीड़िया

द्वारा जागरूकता फैलाना, 103(85.83) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया द्वारा जागरूकता फैलाने का रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 120(80.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 30(20.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 95(79.17) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में बदलाव, 116(96.67) योग प्रतिशत ने महिला–पुरूषों के सम्बन्धों में खुलापन, 117(97.05) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 96(80.00) योग प्रतिशत ने महिलाओं पर मीड़िया का प्रभाव, 92(76.67) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ विवाह की आयु के वर्गान्तराल में परिवर्तन के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 10(06.67) योग प्रतिशत जिनका विवाह 05–10 वर्ष की आयु में हुआ, जो कि महिला की दादी के विवाह की आयु थी। 11–15 वर्ष की आयु का वर्गान्तराल प्रथम पीढी(दादी) और द्वितीय पीढ़ी(माता) के विवाह का प्रतिशत 52(34.67) योग प्रतिशत, 16–20 वर्ष की आयु का वर्गान्तराल द्वितीय पीढ़ी (माता) और स्वयं के विवाह का है, जिनका प्रतिशत 60(40.00) योग प्रतिशत है। 21–25 वर्ष की आयु का वर्गान्तराल द्वितीय पीढ़ी (माता) और स्वयं महिला उत्तरदाता के विवाह का है, जिनका प्रतिशत 28(18.66) योग प्रतिशत है। अतः महिला उत्तरदाता की दादी व माता के विवाह की आयु से अधिक महिला उत्तरदाता के विवाह में परिवर्तन हुआ। यह वैश्वीकरण का मीणा महिलाओं की वैवाहिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव है।
- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 117(78.00) प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 33(22.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 116(99.15) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, 104(88.89) योग प्रतिशत ने महिलाओं का आत्मनिर्भर होना, 112(95.73) योग

प्रतिशत ने मीड़िया और सरकार द्वारा जागरूकता फैलाना, 104(88.89) योग प्रतिशत ने कानूनों का सख्त होना, 115(98.29) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में शिथिलता को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव का रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 115(76.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 35(23.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं की पर्दा–प्रथा पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 65(56.52) योग प्रतिशत ने सामाजिक बन्धनों में कमी, 67(58.26) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 64(55.65) योग प्रतिशत ने महिलाओं का आत्मनिर्भर होना, 57(49.57) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य सभ्यता, 60(52.17) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के विवाह–विच्छेद पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं मे से 116(77.33) प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 34(22.67) प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिलाओं के विवाह–विच्छेद पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं के विवाह–विच्छेद की प्रथा पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 49(42.24) योग प्रतिशत ने जाति आधारित नियमों में लचीलापन, 47(40.57) योग प्रतिशत ने कानूनी प्रावधानों का सरलीकरण, 57(49.14) योग प्रतिशत ने आत्मनिर्भरता में सजगकता, 62(53.45) योग प्रतिशत ने पारिवारिक न्यायालयों में वृद्धि, 59(50.86) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण पारिवारिक न्यायालयों में वृद्धि का रहा है।
- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के लैंगिक भेदभाव पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 118(78.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 32(21.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं के लैंगिक भेदभाव पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 64(54.24) योग प्रतिशत ने शिक्षा का प्रसार, 75(63.56) योग

प्रतिशत ने संचार के साधनों का प्रसार, 78(66.10) योग प्रतिशत ने सरकारी योजनाएँ 65(55.09) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 60(50.85) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में शिथिलता को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण महिलाओं का सरकारी योजनाओं में भागीदारी का रहा है।

- ✶ मीणा महिलाओं के परम्परागत व्यवसाय क्या है, के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 62(41.33) योग प्रतिशत ने कृषि कार्य को, 65(43.33) योग प्रतिशत ने पशु पालन के कार्य को 97(64.67) योग प्रतिशत ने घरेलू कार्य को, 50(33.33) योग प्रतिशत ने कुटीर उद्योगों में कार्य को, 25(16.67) योग प्रतिशत ने एक से अधिक व्यवसायों में कार्य को माना। अतः अध्ययन क्षेत्र में मीणा महिलाएँ परम्परागत व्यवसायों के रूप में घरेलू कार्यों में शामिल थी।
- ✶ आधुनिक व्यवसायों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 116(77.33) योग प्रतिशत ने अध्यापन कार्य को, 47(31.33) योग प्रतिशत ने डॉक्टर व नर्स के कार्य को, 57(38.00) योग प्रतिशत ने उद्योगों में कार्य को, 62(41.33) योग प्रतिशत ने आधुनिक तरीके से कृषि कार्य को। अतः अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाएँ आधुनिक व्यवसाय करने लगी है। जिसमें सर्वाधिक कार्य अध्यापन के कार्य का रहा है,
- ✶ वैश्वीकरण से नौकरी की तरफ रूझान बढ़ा के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 121(80.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 29(19.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिला उत्तरदाता नौकरी करने के पक्ष में हैं, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ नौकरी करने की तरफ रूझान बढने के उचित कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 98(80.99) योग प्रतिशत ने उचित प्रतिनिधत्व के लिए, 67(55.37 योग प्रतिशत ने पिछड़ेपन को दूर करने के लिए, 81(66.94) योग प्रतिशत ने आत्मनिर्भरता में वृद्धि के लिए, 92(76.03) योग प्रतिशत ने पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता, 76(62.81) योग प्रतिशत शैक्षिक स्तर में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण उचित प्रतिनिधित्व मिलने का रहा है।
- ✶ रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलने के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 130(86.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 20(13.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः अध्ययन क्षेत्र की महिला उत्तरदाता रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण की मांग करती है, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलने के उचित कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 74(56.92) योग प्रतिशत ने समानता, 81(62.31) योग प्रतिशत ने उचित प्रतिनिधित्व मिलना, 76(58.46) योग प्रतिशत ने पिछड़ेपन को दूर करना, 74(56.92) योग प्रतिशत ने आर्थिक सुदृढ़ता को माना है। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण उचित प्रतिनिधित्व मिलने का रहा है।

✶ वैश्वीकरण से महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 123(82.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 27(18.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ महिलाएँ नवीन व्यवसायों की ओर प्रवृत्त हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 82(66.67) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 76(61.79) योग प्रतिशत ने संचार के संसाधनों में वृद्धि, 47(38.21) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में बदलाव, 57(46.34) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि को माना है। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।

✶ वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 119(79.33) योग प्रतिशत ने उचित के पक्ष में, 31(20.67) योग प्रतिशत ने अनुचित के पक्ष में। अतः महिलाओं ने मतदान व्यवहार के प्रति उचित दृष्टिकोण को अपनाया, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ मीणा महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने के उचित कारणों के सम्बन्ध कुल महिला उत्तरदाताओं में से 87(73.11) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 82(68.91) योग प्रतिशत ने संचार के संसाधनों मे वृद्धि, 47(39.50) योग प्रतिशत ने मीड़िया का प्रभाव, 49(41.18) योग प्रतिशत ने मतदान व्यवहार के प्रति जागरूकता, 62(52.10) योग प्रतिशत ने जातिगत नियमों में शिथिलता को माना है। अतः उचित कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।

✶ वैश्वीकरण से महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 121(80.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 29(19.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ किस प्रकार महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 82(67.77) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 47(38.84) योग प्रतिशत ने राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजकता, 83(68.60) योग

प्रतिशत ने सूचना क्रांति का प्रभाव, 64(52.89) योग प्रतिशत ने जनजातीय समाज में प्रतिष्ठा, 57(47.11) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में बदलाव को माना। अतः प्रभावों में सर्वाधिक प्रभाव सूचना क्रांति के प्रभाव का रहा है।

- ✶ राजनीति में आरक्षण व्यवस्था से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 124(82.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 26(17.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः आरक्षण व्यवस्था से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।
- ✶ महिलाओं की स्थिति में किस प्रकार परिवर्तन आया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 65(52.42) योग प्रतिशत ने उचित प्रतिनिधित्व का मिलना, 81(65.32) योग प्रतिशत ने सरकारी योजनाओं में भागीदारी, 83(66.94) योग प्रतिशत ने राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा 47(37.90) योग प्रतिशत ने संगठन के निर्णयों में भागीदारी, 76(61.29) योग प्रतिशत ने समाज में प्रतिष्ठा को माना। इस प्रकार मीणा महिलाओं को राजनीति में आरक्षण मिलने के कारण इनकी परम्परागत राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन हुआ, जो वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

अतः कहा जा सकता है कि मीणा महिलाओं पर वैश्वीकरण का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव देखा गया। जिसमें सकारात्मक प्रभावों में महिलाओं की समाजिक स्थिति अच्छी के पक्ष में 41.33 प्रतिशत, पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी के पक्ष में 76.67 प्रतिशत, सामाजिक कुरीतियों का ह्यस हुआ के पक्ष में 80.00 प्रतिशत, रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिला के पक्ष में 86.67 प्रतिशत आदि प्रभाव देखे गये। इसी क्रम में राजनीतिक क्षेत्र की बात करें तो मीणा महिलाओं के राजनीतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मतदान व्यवहार में परिवर्तन आया, राजनीतिक भागीदारी बढ़ी आदि सकारात्मक प्रभाव देखे गये।

नकारात्मक प्रभावों में सामाजिक बन्धनों में छूट से एवं फूहड् पहनावे से समाज में छेड़छाड़ की घटनाएँ बढ़ी पारिवारिक संस्थाएँ कमजोर हुई, परम्परागत रीति–रीवाजों का ह्यस हुआ। आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर तो हुई पर बच्चों के पालन–पोषण में कमी आई। इसी क्रम में राजनीतिक पक्ष को देखा जाए तो मीणा महिलाएँ राजनीतिक क्षेत्र में भागीदारी तो हुई, पर पुरूषों की अपेक्षा अधिकार कम ही मिले। जिसके कारण राजनीतिक वर्चस्व कम रहा है।

वैयक्तिक अध्ययन में चार प्रतिष्ठित पुरूष व महिला उत्तरदाताओं का वैयक्तिक अध्ययन किया गया है, जिसमें उनसे तीन पीढ़ी की जानकारी प्राप्त की गई।

वैश्वीकरण के कारण उनके जीवन स्तर में क्या परिवर्तन आया आदि पक्षों का अध्ययन करते हुए। यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि वैश्वीकरण के कारण तीन पीढ़ियों में परिवर्तन देखा गया अर्थात् महिलाओं की तीन पीढ़ियों की अपेक्षा पुरूषों की तीन पीढ़ियों में परिवर्तन अधिक देखा गया।

अतः निष्कर्षतया यह कह सकते हैं कि मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप से व्यापक प्रभाव डाला है। वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति पर सकारात्मक प्रभावों में –शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, सामाजिक रीति–रिवाजों में शिथिलता आई 142(47.33) योग प्रतिशत, सामाजिक चेतना में वृद्धि हुई, सामाजिक गतिशिलता बढ़ी 204(68.00) योग प्रतिशत, सामाजिक भेद–भाव कम हुआ, सामाजिक कुरीतियों में कमी आई, महिला पुरूषों के सम्बन्धों में खुलापन आया 140(46.67) योग प्रतिशत, विवाह की आयु में परिवर्तन हुआ, लैंगिक भेदभाव में कमी आई, विधवा पुर्नविवाह में परिवर्तन हुआ। इसी क्रम में आर्थिक स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव देखे गये जैसे–रोजगार के अवसरों में वृद्धि 84(28.00) योग प्रतिशत, आय में वृद्धि हुई 99(33.00) योग प्रतिशत, आत्मनिर्भरता में वृद्धि, आय के नये संसाधनों का विकास, आर्थिक असमानता में कमी, व्यावसायिक गतिशिलता बढ़ी जिसका प्रतिशत 240(80.00) योग प्रतिशत, नये औधोगिक व्यावसायों का विकास हुआ। इसके साथ ही साथ राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी, राजनीतिक दलों में हस्तक्षेप बढ़ा, राजनीतिक नियमों व निर्णयों में भागीदारी बढ़ी, मतदान व्यवहार में परिवर्तन आया।

इसके साथ ही वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति पर नकारात्मक प्रभाव भी देखे गये। सामाजिक सम्बन्धों की दूरीयों में वृद्धि हुई 152(50.67) योग प्रतिशत, सामाजिक मूल्यों में कमी आई, प्राथमिक सम्बन्धों में कमी आई, परिवार का महत्त्व घटा, संयुक्त परिवार टुटे 157(57.67) योग प्रतिशत, विवाह विच्छेद के मुकदमें बढ़े, सांस्कृतिक मूल्यों में कमी आई, फुहड़ पहनावें की ओर आकर्षण बढ़ा तथा इसके साथ ही साथ आर्थिक असमानता में वृद्धि हुई, परम्परागत एवं कुटीर व्यावसायों का क्षय हुआ, भौतिक संसाधनों के प्रति मोह में वृद्धि हुई, युवा प्रतिभाओं के पलायन में वृद्धि देखी गई। वैश्वीकरण के कारण राजनीतिक जागरूकता एवं राजनीतिक अधिकारों में वृद्धि हुई, परन्तु इसमें पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है।

अतः वैश्वीकरण का प्रभाव मीणा महिलाओं पर भी देखा गया। जिसमें – लिंग भेद में कमी, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, आत्मनिर्भरता में वृद्धि, सामाजिक

बन्धनों में छूट, पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी 115(76.67) योग प्रतिशत, नौकरी की तरफ रूझान बढ़ा 121(80.67) योग प्रतिशत, आरक्षण मिलने से उचित प्रतिनिधितव मिला 81(62.31) योग प्रतिशत, सामाजिक एवं राजनीतिक निर्णयों एवं दलों में भागीदारी, राजनीतिक पदों में नेतृत्त्व बढ़ा, शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, लिंगानुपात में वृद्धि हुई, भ्रूण हत्या में कमी आई, महिला हत्याचारों में कमी देखी गई, विधवा–पुनर्विवाह में वृद्धि, पर्दा–प्रथा में कमी आदि सामाजिक कुरीतियों में परिवर्तन देखा गया। वैश्वीकरण के कारण मीणा महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा। जिसमें महिलाओं की खराब स्थिति जिसका प्रतिशत 31(20.67) योग प्रतिशत, रोजगार में कमी, राजनीतिक निर्णयों व कानूनों के ज्ञान में कमी आदि नकारात्मक प्रभाव देखे गये।

अतः तुलनात्मक रूप से हम कह सकते है कि मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण के कारण नकारात्मक प्रभावों की अपेक्षा सकारात्मक प्रभाव अधिक देखे जा सकते हैं, परन्तु अपेक्षित सुधार की आवश्यकता है। क्योंकि मीणा समाज में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव कम देखे गये। जैसे सामाजिक पक्ष की बात करें तो मीणा जनजाति में महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों का आधिपत्य अधिक रहा है। अध्ययन में पाया गया कि पुरूष सभी क्षेत्रों में महिलाओं से आगे है। क्योंकि महिलाओं का बाहर नौकरी करने में समाज के नियम रास्ते में आ जाते है, परन्तु पुरूषों के लिए ऐसा कुछ नहीं होता अर्थात सामाजिक नियम महिलाओं के लिए कठोर होते है। आर्थिक स्थिति की बात करे तो पुरूषों की अपेक्षा महिलाएँ आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई है, क्योंकि परिवार में पुरूष मुखिया होता है। इस कारण सम्पत्ति उसके नाम होती है, जिसके कारण पुरूष सारे निर्णय लेता है। अध्ययन में भी पाया गया कि महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों का आधिपत्य आर्थिक क्षेत्र में सर्वाधिक रहा है। क्योंकि व्यवसायों में जैसे कृषि, नौकरी, उद्योग आदि पक्षों में पुरूषों की संख्या अधिक पाई गयी है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आर्थिक रूप से आज भी मीणा महिलाएँ कमजोर है। इसी क्रम में राजनीतिक पक्ष की बात करें तो पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं का राजनीतिक वर्चस्व भी कमजोर रहा है। क्योंकि मतदान का अधिकार तो मिला पर चुनाव में भाग लेना आज भी मीणा महिलाओं के लिए पुरूषों की अपेक्षा नाममात्र है। जिसके कारण राजनीति से बहुत दूर है, परन्तु तथाकथित सभ्य समाज के दृष्टिकोण से देखा जाए तो मीणा पुरूषों का राजनीतिक पक्ष भी कमजोर है। अतः मीणा जनजाति के पुरूष और महिलाओं

के सर्वांगीण विकास के लिए वैश्वीकरण की सकारात्मक अवधारणा को अपनाया जाना अवश्यक है। जिससे पुरूषों के साथ–साथ मीणा महिलाओं का भी विकास होगा, क्योंकि महिलाओं की स्थिति वर्तमान में भी पुरूषों से कम है अर्थात् परिवर्तन तो हुआ पर परिवर्तन की धारा महिलाओं में नगण्य ही रही है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

सुझावः–

जनजातीय विकास एवं परिवर्तन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये गये हैं, जो निम्नानुसार प्रस्तुत हैं –

- पर्याप्त संचार संसाधनों के विकास की आवश्यकता है, क्योंकि आज भी ग्रामीण स्तर पर इनके विकास में कमी देखी गई है। इसलिए जनजातीय क्षेत्रों में अधिक से अधिक संख्या में संचार के संसाधनों का विकास किया जाना चाहिए।
- शैक्षणिक स्तर में वृद्धि– शिक्षा के स्तर में वृद्धि एवं रोजगार के नये अवसर पैदा करने के लिए शैक्षिक तकनीकी व व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों, मीड़िया एवं विज्ञापनों, सरकार द्वारा संचालित योजनाओं आदि के द्वारा जानजातीय क्षेत्रों में जागरूकता फैलाई जानी चाहिए।
- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जागरूकता की आवश्यकता है, क्योंकि वर्तमान में जनजातीय क्षेत्रों में जागरूकता का अभाव है।
- रोजगार के अवसरों एवं आय के संसाधनों में वृद्धि के लिए पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है।
- प्रतिभा पलायन एवं सामाजिक गतिशिलता को रोकने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए अर्थात् ग्रामीण स्तर पर रोजगार के संसाधनों की पर्याप्त सुविधा मुहैया करानी चाहिए।
- ग्रामीण स्तर पर सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का सही तरह से मूल्यांकन किया जाना चाहिए, ताकि कमजोर आय वाले व्यक्तियों को सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का पर्याप्त लाभ मिल सके।

- ✶ महिलाओं में सामाजिक चेतना लाने के लिए ग्रामीण स्तर पर नुक्कड़ नाटक व विज्ञापनों के माध्यम से जागरूक किया जाना चाहिए।
- ✶ आर्थिक दृष्टि से कमजोर महिलाओं के लिए उद्योग व प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाये, जिससे आत्मनिर्भरता में वृद्धि होगी।
- ✶ कृषि कार्य के लिए किसानों को नई तकनीकी एवं आधुनिक संसाधनों को उचित दामों पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए, ताकि उनका रूझान कृषि के आधुनिक संसाधनों की तरफ बढ़े।
- ✶ जनजातीय समाज की कई महिलाएँ अभी भी परम्परागत नियमों में बुरी तरह से जकड़ी हुई है। अतः इनके उत्थान एवं कल्याण के लिए समुचित प्रबन्ध किया जाना चाहिए।
- ✶ वर्तमान में मीणा समाज का एक वर्ग आरक्षण से अनजान हैं अर्थात् निम्न वर्ग को लाभ नहीं मिल पा रहा है। इसलिए अधिकारों के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है।
- ✶ मीणा समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं एवं कुप्रथाओं को भी दूर किया जाना चाहिए, जिससे गरीब व अमीरी की दूरीयाँ कम होगी।
- ✶ अध्ययन क्षेत्र में अभी भी मीणा जनजाति के पुरूष व महिलाएँ आर्थिक रूप से समृद्ध नहीं है। अतः ऐसे पुरूष व महिलाओं के लिए किसी व्यावसायिक प्रशिक्षण के द्वारा रोजगार प्रदान कर, उन्हें आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाने के प्रयास किये जाने चाहिए।
- ✶ अध्ययन क्षेत्र में इस वैश्वीकरण के दौर में आज महिलाएँ पुरूषों की अपेक्षा काफी पिछड़ी हुई है। अतः मेरा सुझाव है कि सरकार के द्वारा मीणा महिलाओं के लिए महिला कल्याण समिति का निर्माण करना चाहिए। जिससे सिर्फ मीणा महिलाओं का उत्थान हो अर्थात् महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से लाभ मिले।

प्राक्कल्पनाओं की सत्यताः–

इस अध्ययन में प्राक्कल्पनाएँ, जो अध्ययन प्रारम्भ करते समय पूर्व साहित्यिक अवलोकन व अन्य स्रोतों के आधार पर निर्मित की गई थी। जिनकी सत्यता व असत्यता के बारे में यहाँ पर जानकारी दी जा रही है।

1. अध्ययन में प्राप्त तथ्य प्रथम प्राक्कल्पना को सत्य सिद्ध करते हैं, क्योंकि वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। जिसके कारण शिक्षा के

स्तर में वृद्धि, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, सामाजिक गतिशीलता बढ़ी, आय में वृद्धि हुई, राजनीतिक जागरूकता बढ़ी, मतदान के प्रति सहभागिता बढ़ी, व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी आदि सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। वहीं नकारात्मक प्रभावों में पारिवारिक सरंचना का ह्यस, अपनी मूल संस्कृति से दूरियाँ, पाश्चात्य पहनावें की तरफ झुकाव, ग्रामीण प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा, रक्त सम्बन्धों का महत्त्व घटा, आदि नकारात्मक प्रभाव मीणा जनजाति पर देखे गये हैं। अतः यह प्राक्कल्पना भी सत्य सिद्ध हुई है।

2. अध्ययन की दूसरी प्राक्कल्पना शोध कार्य में कितनी सत्य सिद्ध हुई के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का प्रभाव मीणा पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं पर कम पड़ा है। क्योंकि आज भी कुछ महिलाएँ जो ज्यादा उम्र की है, वह परम्परागत रीति–रिवाजों व अंधविश्वासों में विश्वास करती है। मीणा समाज में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन हुआ पर नाममात्र अर्थात् वैश्वीकरण का तो प्रभाव पड़ा पर जितना पुरूषों पर पड़ा, उतना महिलाओं पर नहीं। अतः यह कहा जा सकता है कि इस वैश्वीकरण एवं आधुनिकता के दौर में मीणा महिलाएँ आज भी पुरूषों के पीछे ही रही है। इस प्रकार यह दूसरी प्राक्कल्पना भी सत्य सिद्ध हुई है।

3. यह तीसरी प्राक्कल्पना भी सत्य सिद्ध हो रही है। क्योंकि प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 82.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि वैश्वीकरण के कारण द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला है। अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के कारण प्राथमिक सम्बन्धों की, अपेक्षा द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला है। यह प्राक्कल्पना भी इस वैश्वीकरण के दौर में सत्य सिद्ध हुई है, क्योंकि वर्तमान में मीणा जनजाति के प्राथमिक सम्बन्धों का महत्त्व धीरे–धीरे कम होता जा रहा है।

4. इस शोध अध्ययन में यह प्राक्कल्पना भी सत्य सिद्ध हुई है, क्योंकि वैश्वीकरण के कारण महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन हुआ है। वर्तमान में मीणा समाज में महिलाओं की स्थिति, प्राचीन मीणा समाज की अपेक्षा वर्तमान मीणा समाज में अच्छी है। यह वैश्वीकरण की प्रक्रिया का ही सकारात्मक प्रभाव है। यह प्रभाव मीणा समाज की महिलाओं पर देखा गया है जैसे – शिक्षा के स्तर में वृद्धि, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, सामाजिक सम्बन्धों में खुलापन आया, राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई, मतदान के प्रति रूचि बढ़ी आदि प्रभाव मीणा महिलाओं पर देखे गये हैं। अतः यह प्रक्कल्पना भी सत्य सिद्ध हुई है।

5. शोध कार्य के लिए इस प्राक्कल्पना का चयन किया गया। जिसमें मीणा जनजाति के पुरूष व महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता बढ़ी या नहीं। वैश्वीकरण के

कारण मीणा जनजातीय समाज में राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई। इसके सम्बन्ध में 79.67 प्रतिशत हाँ के पक्ष में अपना विचार प्रकट करते हैं अर्थात् वैश्वीकरण के कारण मीणा समाज के पुरूष व महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हो रही है। यह वैश्वीकरण का एक सकारात्मक प्रभाव है। अतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजातीय समाज में राजनीतिक जागरूकता बढ़ रही है। युवाओं में इसका असर अधिक देखा जा रहा है, इसलिए यह प्राक्कल्पना भी सत्य सिद्ध हुई है।

6. इस शोध अध्ययन में यह अंतिम प्राक्कल्पना है, जो तथ्यों को प्राप्त करने के लिए यह प्राक्कल्पना बनाई गई है। जिसमें मीणा जनजाति में वैश्वीकरण के कारण व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है, क्योंकि वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति में शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई, जिसके कारण मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है। इसके सम्बन्ध में उत्तरदाताओं के विचार हाँ के पक्ष में 80.00 प्रतिशत सर्वाधिक रहे हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि इस वैश्वीकरण के दौर में मीणा जनजाति की व्यावसायिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है। क्योंकि सूचना क्रांति के कारण मीणा जनजाति में जागरूकता आई, शिक्षा का स्तर बढ़ा, रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। जिसके कारण व्यावसायिक गतिशीलता समाज के लोगों में बढ़ रही है, इसलिए यह प्राक्कल्पना भी सत्य सिद्ध हो रही है।

शोध सार

शोध सार

वैश्वीकरण वर्तमान आधुनिक समय की पहचान है, जिसके कारण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक वैश्विक गांव बन गया है। वैश्वीकरण एक बहुलवादी सामाजिक प्रक्रिया है जिसका प्रभाव सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारत का प्रत्येक क्षेत्र अपनी स्वयं की एक अलग संस्कृति एवं कला रखता है, ऐसा ही जनजातीय समाज में भी देखा जाता है। क्योंकि प्रत्येक जनजाति की अपनी एक अलग संस्कृति एवं कला होती है, जिसके कारण उस जनजाति को पहचाना जाता है। ऐसा ही मीणा जनजाति में भी देखा गया है। इस सभ्यता एवं संस्कृति पर वर्तमान सन्दर्भ में, जो वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। उन्हीं को शोध ग्रंथ के रूप में समाहित किया गया है।

इस अध्ययन विषय के अन्तर्गत बारां जिले की अन्ता तहसील के उन मीणा बाहुल्य क्षेत्रों पर वैश्वीकरण के कारण पड़ने वाले व्यापक प्रभावों का अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के मीणा जनजातीय समाज की संरचना, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आदि क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों का भी अध्ययन किया गया है। जिनका सार अध्याय क्रमांक के रूप में प्रस्तुत है।

प्रथम अध्यायः– ''अध्ययन विषय का परिचय, निरूपण एवं पूर्व साहित्य का अवलोकन;; वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय घटनाओं के विश्वस्तर पर रूपान्तरण की प्रक्रिया से है। इस प्रक्रिया में पूरे विश्व के लोग एक समाज बनाते हैं और एक साथ कार्य करते है। यह प्रक्रिया आर्थिक तकनीकी, राजनीतिक एवं सामाजिक ताकतों का संयोजन है। वैश्वीकरण का उपयोग सामान्यतः आर्थिक वैश्वीकरण के सन्दर्भ में भी किया जाता है।

समाजशास्त्री वेलरस्टेन के अनुसार ''वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके कारण पूँजीवाद का विस्तार और उसकी समृद्धि है।'' इसी प्रकार **रवि प्रकाश पाण्डेय** के अनुसार ''वैश्वीकरण अन्तर्वेशन और बहिष्करण की एक जटिल प्रक्रिया है। इसमें विश्व बाजार, विभिन्न आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं, मल्टीमीडिया, प्रौद्योगिकी तथा संस्कृति आदि के एकीकरण का अन्तर्वेशन हो रहा है। जबकि राष्ट्र–राज्य की प्रभुसत्ता और स्वदेशीयता आदि का बहिष्कार हो रहा है।'' अतः निष्कर्ष रूप से यह स्पष्ट है कि विश्व के समस्त देश वैश्वीकरण के कारण एक दूसरे पर आश्रित हो चुके हैं। जिसके फलस्वरूप सामाजिक सम्बन्धों में नजदीकियाँ देखी जा सकती है।

भारत पर भी वैश्वीकरण का प्रभाव 90 के दशक से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वैश्वीकरण ने भारतीय समाज को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक रूप में व्यापक रूप से प्रभावित किया है। भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों के साथ–साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ें हैं। जो वैश्वीकरण की चुनौतियों के रूप में सामने आये हैं जैसे– अन्धी प्रतिस्पर्धा में वृद्धि, पारम्परिक एवं कुटीर उद्योगों का ह्यस, स्वयं के लाभ के लिए उद्योगों की स्थापना करना, पश्चिमीकरण की अन्धी दौड़, प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवसथा में एकीकरण और कृषि क्षेत्र में रासायनिक खाद के उपयोग से उर्वरक क्षमता का नष्ट होना आदि चुनौतियाँ वैश्वीकरण ने प्रस्तुत की है।

यद्यपि वैश्वीकरण ने भारतीय महिलाओं को आत्म–निर्भर एवं आत्म–विश्वासी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तथापि पश्चिमी सभ्यता के प्रति आकर्षण, समाज के नैतिक एवं साामजिक पतन को दर्शाता है। वैश्वीकरण के कारण नई सम्भावनाओं का लाभ उठाने के लिए सबल होना आवश्यक है, तभी वे पूर्णरूपेण लाभान्वित हो सकेंगी।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जनजातियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ''जनजाति'' शब्द का विस्तृत अर्थ है जिसे वन्य जाति, आदिवासी, बनवासी, गिरिजन आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। **मजूमदार** के अनुसार ''एक जनजाति परिवारों या परिवारों के समूह का संकलन होता है, जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित भू–भाग पर रहते हैं, सामान्य भाषा बोलते हैं और विवाह, व्यवसाय, उद्योग के विषय में कुछ निषेधों का पालन करते हैं और एक निश्चित एवं उपयोगी परस्पर आदान–प्रदान की व्यवस्था का विकास करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि एक जनजाति वह क्षेत्रिय मानव समूह है, जो भू–भाग, भाषा, सामाजिक नियम और आर्थिक कार्य आदि विषयों में एक सामान्य सूत्र में बंधा होता है।''

वैश्वीकरण ने भारतीय जनजातियों को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है उनके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, रहन–सहन, खान–पान, जीवन शैली आदि को सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। इसने जनजाति को समाज के प्रभुत्व वाले वर्ग से मुक्ति दिलाने में अहम भूमिका निभाई तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की ओर अग्रसर किया है। परन्तु वैश्वीकरण के कारण जनजातियों के पारम्परिक रीति रिवाजों, सामाजिक उत्तरदायित्वों, एवं नैतिक दायित्वों का भी ह्यस हुआ है।

इस शोध में मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण के प्रभावों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। राजस्थान में यह जनजाति प्रथम स्थान रखती है। मीणा जनजाति का मीना शब्द मीन से बना है। जिसका अर्थ मछली है अर्थात् इनकी उत्पत्ति मीन भगवान से मानी जाती है। ऐतिहासिक दृष्टि से मीणा जनजाति अति प्राचीन एवं प्रतापी जनजाति मानी जाती है, जिसकी वीरता व धीरता का सभी लोहा मानते थे। हाड़ौती क्षेत्र में भी प्राचीन समय से लेकर आज तक मीणा जनजाति का दब–दबा रहा है।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने जनजातियों के कल्याण एवं विकास के लिए अनेक प्रयास किये, जिसमें मीणा जनजाति भी एक जनजाति है। इसके लिए ठक्कर आयोग, आयंगर आयोग, काका कालेकर आयोग तथा अनेक संवैधानिक प्रावधान जैसे– 19, 16, 335, 330, 332, 334, 29(2), 164, 244 तथा पाँचवी अनुसूची आदि प्रयास किये गये। जिससे जनजातियाँ देश एवं समाज की राष्ट्रीय धारा से जुड़ सके और अपना सर्वांगीण विकास कर सके।

वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के सामाजिक ढांचे में परिवर्तन किया अर्थात् परिवर्तित किया है जैसे सती प्रथा, बहुविवाह, बाल–विवाह आदि को समाप्त करके विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह की ओर प्रेरित किया है। पितृसतात्त्मक समाज की धारणा को कमजोर किया और समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों को भी समाप्त किया है। जिसके कारण सामाजिक सम्बन्धों में खुलापन देखा जा सकता है। साथ ही साथ वैश्वीकरण ने सामाजिक बिखराव को बढ़ावा दिया, सामाजिक समरस्ता, सामाजिक भाई–चारे आदि को समाप्त किया है।

वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति के आर्थिक ढांचे में भी परिवर्तन आया है, जहाँ प्राचीन काल में यह जनजाति कृषि प्रधान थी। वहीं वर्तमान समय में वैश्वीकरण के कारण कृषि के स्थान पर अन्य क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है। जिसके कारण व्यावासायिक गतिशीलता बढ़ी, अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में भी वृद्धि हुई, जिसके कारण मीणा जनजाति में आत्मनिर्भरता बढ़ी है।

वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के राजनीतिक ढांचे को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। जहाँ प्राचीन समय में पंचायतों का मीणा जनजातीय समाज पर अधिक प्रभाव था, इस परम्परागत राजनीतिक ढांचे में वैश्वीकरण की अवधारणा के कारण कमी आई। संवैधानिक प्रावधानों एवं नियम कानूनों के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं, जिसमें तकनीकी ज्ञान व बढ़ती शिक्षा के स्तर ने अहम भूमिका निभाई है।

साहित्य के पुनरावलोकन में उन विद्वानों के विचारों को भी समायोजित किया गया। जिनके इस शोध विषय से सम्बन्धित मिलते–जुलते विचार थे। जिनका संक्षिप्त सारांश प्रथम अध्याय के अन्तर्गत दिया गया है।

वर्तमान अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्त्वः–

प्रस्तुत शोध का विषय ''वैश्वीकरण जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता से जुड़ा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिस पर वैश्विक अध्ययन का कार्य करने की आवश्यकता एवं महत्त्व है। वैश्वीकरण के संदर्भ में जनजातीय समाज, जिसके अंदर मीणा जनजाति का अध्ययन किया गया है। समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य से देखा जाये तो मीणा जनजातीय समाज की संरचना, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों से जुड़ी हुई है। जिन पर वैश्वीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ा है और प्रत्येक की गतिशीलता में वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजातीय समाज की सामाजिक संस्थाओं में अनेक परिवर्तन हो रहे है और साथ ही राजनीतिक जागरूकता भी पैदा हो रही है। यह अध्ययन की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है। अन्त में यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने मीणा जनजातीय समाज को अन्य जनजातियों की अपेक्षा एक नई पहचान प्रदान की है। क्योंकि वैश्वीकरण के कारण सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है। इसलिए यह अध्ययन वर्तमान परिपेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण साबित हुआ, साथ ही यह अध्ययन विज्ञान विषय के दृष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण साबित होगा। अतः यह अध्ययन वर्तमान परिपेक्ष्य एवं आने वाली युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक बनेगा।

द्वितीय अध्याय ''**अध्ययन क्षेत्र का परिचय एवं अनुसंधान प्रविधि''** में अध्ययन क्षेत्र के परिचय के रूप में बारां जिले की भौगोलिक, जनसंख्यात्मक तथा प्रशासनिक संरचना के बारे में बताया गया और साथ ही प्रसिद्ध मेलें व पयर्टक स्थलों के बारे में भी संक्षिप्त जानकारी दी गई है। बाराँ जिले के अन्ता तहसील की ग्रामीण व शहरी जनसंख्या, साक्षरता दर, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति का विवरण भी तालिकाओं के माध्यम से दिया गया है। जिनकी कुल जनसंख्या तथा मीणा जनजाति की जनसंख्या व परिवारों का भी उल्लेख किया गया है। मीणा जनजाति के बाहुल्य श्रेणी के गांव पचेलकला, काचरी, पलसावा तथा सिंधपुरी के बारे में भी संक्षिप्त जानकारी दी गई।

शोध के उद्देश्यः–

1. वैश्वीकरण एवं जनजातीय समाज के बारे में जानकारी प्राप्त कर मीणा जनजाति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
2. मीणा जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना।
3. वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति के जीवन स्तर में परिवर्तन का अध्ययन करना।
4. मीणा जनजाति की सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन का अध्ययन करना।
5. मीणा जनजाति की महिलाओं की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
6. जनजाति के बदलते हुए व्यावसायिक प्रकारों तथा उनके उद्देश्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
7. मीणा जनजाति की तीन पीढ़ियों का वैयक्तिक अध्ययन करना।
8. मीणा जनजाति में राजनीतिक जागरूकता एवं राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ती सहभागिता के बारे में जानना।

प्राक्कल्पनाः–

प्रस्तुत अध्ययन की प्राक्कल्पनाएँ निम्न प्रकार से हैं –

1. वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ा।
2. मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभाव महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों पर अधिक पड़ा।
3. वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति में प्राथमिक सम्बन्धों की अपेक्षा द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला।
4. वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन किया।
5. वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति में राजनीतिक जागरूकता को बढ़ावा दिया।
6. वैश्वीकरण से मीणा जनजाति की व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है।

मुख्य चरः–

अध्ययन के मुख्य चर इस प्रकार है – 1. आयु 2. शिक्षा 3. परिवार के स्वरूप 4. परिवार का आकार 5. आय का स्रोत 6. कृषि भूमि 7. वैश्वीकरण एवं परिवार

8. वैश्वीकरण एवं विवाह 9. वैश्वीकरण एवं सामाजिक सम्बन्ध 10. वैश्वीकरण एवं महिला प्रस्थिति 11. वैश्वीकरण एवं गतिशीलता 12. वैश्वीकरण एवं सामाजिक रीति–रिवाज़ 13. वैश्वीकरण एवं परम्परा 14. वैश्वीकरण एवं राजनीतिक जागरूकता 15. वैश्वीकरण एवं युवा 16. वैश्वीकरण एवं जनजाति

समग्रः–

समग्र उस पूरे समूह या क्षेत्र को कहते है, जिसके विषय में ज्ञान प्राप्त करना चाहते है। वर्ग विशेष के सदस्यों से जानकारी प्राप्त करने के लिए समग्र का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए समग्र के रूप में बारां जिले की अन्ता तहसील के चार गांव यथा पचेलकला, पलसावा, सिंधपुरी तथा काचरी की मीणा जनजाति के सभी पुरूष एवं महिला सदस्यों को समग्र के रूप में लिया गया है।

निदर्शनः–

निदर्शन किसी विशाल समूल समग्र का एक अंश है, जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के लिए समग्र में से चार गांवों पचेलकला (जनसंख्या 501), पलसावा (जनसंख्या 506), सिंधपुरी (जनसंख्या 143), काचरी (जनसंख्या 456) का चयन किया गया। जिनकी कुल मीणा जनजाति की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 1606 है। जिसमें मैंने उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया, जो परिवार के मुख्य उत्तरदायी व्यक्ति है। जिसमें महिला एवं पुरूष उत्तरदाता शामिल हैं।

अनुसंधान की प्रविधिः–

प्रस्तुत अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए, समग्र में से कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। जिसमें 150 महिला एवं 150 पुरूष उत्तरदाता शामिल है। जिनसे प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग करते हुए, क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान अवलोकन विधि का भी प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य, सरकारी एवं गैर–सरकारी आंकड़ें, उपयोगी पुस्तकें व वेबसाइट का प्रयोग किया गया। साथ ही केस स्टडी के माध्यम से चार उत्तरदाताओं का वैयक्तिक अध्ययन भी किया गया है।

अध्ययन प्रविधियों का पूर्ण परीक्षणः–

अध्ययन के अन्तर्गत प्रयोग में ली गई साक्षात्कार अनुसूची का 30 व्यक्तियों द्वारा अर्थात् पुरूष व महिला उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची का पूर्व परीक्षण किया गया और साथ ही उसमें वांछित सुधार भी किया गया है। जिससे अध्ययन सुगम एवं पारदर्शीय बन सके।

तथ्यों का विश्लेषणः–

साक्षात्कार अनुसूची द्वारा संग्रहित तथ्यों को सांख्यिकी की प्राथमिक आवश्यकताओं के अनुरूप सारणीबद्ध किया गया है। तद्न्तर विषय के केन्द्र बिन्दु से प्रभावित एवं उस पर प्रभाव डालने वाली प्रतिस्थापनाओं से सम्बन्धित समंकों को विश्लेषण हेतु चयनित किया गया है। मीणा जनजाति के सन्दर्भ में प्राथमिक स्तर की सूचनाओं के लिए सम्बन्धित गांवों के परिवार के मुखिया, जिसमें पुरूष व महिला का साक्षात्कार लिया गया। अन्त में कुछ विशिष्ट पक्षों को विश्लेषित करने हेतु अवलोकन विधि से चयनित उत्तरदाताओं के वैयक्तिक इतिहास के सम्बन्ध में सूचनाएँ संकलित की गई हैं। जिन्हें यथावत् उपर्युक्त अध्यायों में समाविष्ट किया गया है।

तथ्यों का प्रस्तुतीकरण विश्लेषण एवं व्याख्याः–

वर्तमान अध्ययन के तथ्यों को सात अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है। विषय से सम्बन्धित सैद्धान्तिक पक्ष को प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया गया है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न अवधारणाओं का विश्लेषण एवं अनुसंधान साहित्य का सर्वेक्षण मुख्य सन्दर्भ रहा है। द्वितीय अध्याय अध्ययन क्षेत्र का परिचय, अध्ययन के उद्देश्य, अनुसंधान प्रारूप, शोध की समस्याओं एवं सीमाओं के अध्ययन से सम्बन्धित है। जिनका विवरण दिया गया है। तृतीय अध्याय उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि के अध्ययन से सम्बन्धित है। जिसमें उत्तरदाताओं की वर्तमान स्थिति का उल्लेख किया गया है। अध्याय चतुर्थ में वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों एवं परिवर्तनों का विस्तृत वर्णन किया गया है। पंचम अध्याय में मीणा महिलाओं की स्थिति की विवेचना की गई है। इसमें परम्परागत स्थिति एवं वैश्वीकरण के प्रभावों से महिलाओं की स्थिति में आये बदलाव को आधुनिक स्थिति के रूप में विश्लेषित किया गया है। अध्याय षष्ट्म में उन प्रतिष्ठित पुरूष व महिलाओं का वैयक्तिक अध्ययन है। जो सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त है। अन्तिम अध्याय के अन्तर्गत विश्लेषित तथ्यों से प्राप्त निष्कर्षों को संकलित किया गया है,

साथ ही तुलनात्मक निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए, प्राक्कल्पनाओं की सत्यता को भी दर्शाया गया है। अन्त में सुझाव भी दिये गये हैं।

अनुसंधान की सीमाएँः—

वर्तमान अध्ययन वैश्वीकरण के जनजातीय समाज पर पड़ने वाले प्रभावों से सम्बन्धित है। जिसमें वैश्वीकरण की प्रक्रिया से सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता एवं राजनीतिक जागरूकता का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन मुख्य रूप से वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक सामग्री से संकलित सूचनाओं को विश्लेषित किया गया है। जनजातीय समुदाय के प्राचीन एवं वर्तमान सामाजिक, व्यावसायिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों को जानने हेतु लोगों को बार—बार सचेत कर सूचना संकलित की गई है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त सूचनाओं को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार किया गया है। यद्यपि वैश्वीकरण के प्रभावों पर कतिपय उत्तरदाताओं ने अनभिज्ञता प्रकट की, जिससे अध्ययन के कुछ पक्षों की गहनता सीमित हुई है। अतः यह स्पष्ट है कि निदान के उपकरण व व्यवस्था का संचालन सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का एक अंग है। अध्ययनकर्ता का अल्प समय, ज्ञान एवं अनुभव की कमी मुख्य सीमा रही है।

तृतीय अध्याय **"उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि"** जिसमें उत्तरदाताओं से सामाजिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उनकी पारिवारिक सरंचना, आयु सरंचना, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा का स्तर, ख़ान—पान का स्तर, मकान के स्वरूप आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर तालिका रूप में उनको दर्शाया गया है। आर्थिक पृष्ठभूमि के तौर पर उत्तरदाताओं की वार्षिक आय जिसमें स्वयं व पारिवारिक आय, व्यवसाय के स्वरूप, आय के स्रोत, सिचाई के संसाधन, कुल सिंचित भूमि का भाग, इसके अन्तर्गत आधुनिक सुख—सुविधाएँ तथा निजी क्षेत्र में आरक्षण व्यवस्था के बारे में भी उनके द्वारा दी गई जानकारी को तालिकाबद्ध प्रस्तुत किया गया है। राजनीतिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उत्तरदाताओं से चुनाव लड़ने के प्रकार, चुनाव प्रचार में भूमिका, चुनाव में उनके प्रेरणा स्रोत, उत्तरदाताओं के चुने जाने पर प्रतिष्ठा बढ़ना, चुनाव से पूर्व या चुनाव के बाद किस पद में सक्रियता, उत्तरदाताओं का बोध स्तर, राजनीति में आरक्षण व्यवस्था, राजनीति में धन व संख्या बल का महत्त्व, राजनीतिक दलों से सम्बद्धता आदि के बारे में जानकारी प्राप्त

कर उन्हें भी तालिकाबद्ध करने का प्रयास किया गया है। अन्त में अध्याय का निष्कर्ष एवं तालिकाओं का निष्कर्ष भी प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय ''**वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा जनजाति के जीवन स्तर में परिवर्तन**'' के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गई कि वे वैश्वीकरण के बारे में वे क्या जानते हैं। इसके उपरान्त मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन से जुडे हुए हर पक्ष को वैश्वीकरण के सन्दर्भ में देखा गया है। जिसके अन्तर्गत पारिवारिक संरचना, सामाजिक सम्बन्ध, द्वितीयक सम्बन्ध, सामाजिक गतिशीलता, रीति–रिवाज, खान–पान, वेशभूषा, आभूषण, पूजा–पाठ, अन्धविश्वास, बहुविवाह, पुर्नविवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विवाह की आयु जिसमें परिवार के सदस्यों की व स्वयं उत्तरदाता की, लोकगीत तथा संस्कृति, तलाक प्रथा, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक तथा चिकित्सा सेवाओं आदि पक्षों पर वैश्वीकरण का प्रभाव देखा गया। अन्त में प्रभावों को तालिकाबद्ध किया गया है।

इसी क्रम में मीणा जनजाति के आर्थिक जीवन स्तर को भी वैश्वीकरण के सन्दर्भ में देखा गया है। जिसमें परम्परागत व्यवसाय, व्यावसायिक गतिशीलता, ग्रामीण प्रतिभाओं का पलायन, कृषि के स्थान पर उद्योगों की तरफ बढ़ना, कृषि व्यवसाय पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव, लघु व कुटीर उद्योगों का नष्ट होना, गरीब व निम्न आय वर्ग पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव, आर्थिक असमानता, कृषकों की दयनीय स्थिति आदि पक्षों पर पढ़ने वाले प्रभावों को तालिकाबद्ध किया गया है।

इसी क्रम में मीणा जनजाति के राजनीतिक जीवन स्तर को भी वैश्वीकरण के सन्दर्भ में देखा गया है। जिसमें इनकी परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन, राजनीतिक जागरुकता में वृद्धि, युवाओं की राजनीति में भगीदारी में वृद्धि, जातिगत् राजनीति पर प्रभाव आदि पक्षों पर पढ़ने वाले प्रभावों को तालिकाबद्ध किया गया है साथ ही मीणा जनजाति के विकास पर वैश्वीकरण के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों को भी तालिकाओं के रुप में दर्शाया गया। अन्त में तालिकाओं का निष्कर्ष एवं समग्र अध्याय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

पंचम् अध्याय ''**मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति**'' के अन्तर्गत मीणा महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में आंकलन किया गया है। चयनित महिला उत्तरदाताओं से सामाजिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है कि मीणा समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति कैसी है, महिला शिक्षा का समाज पर प्रभाव, पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता, अन्तर्जातीय विवाह, वस्त्राभूषणों, सामाजिक कुरीतियाँ, विधवा–पुर्नविवाह, विवाह की आयु जिसमें परिवार के सदस्यों एवं स्वयं की, दहेज प्रथा, पर्दा–प्रथा, विवाह विच्छेद, लैंगिक भेदभाव आदि पक्षों पर वैश्वीकरण का प्रभाव देखा गया और अन्त में तालिकाबद्ध किया गया है।

इसी क्रम में मीणा महिलाओं की आर्थिक स्थिति को भी वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में देखा गया, जिसमें परम्परागत व्यवसाय, आधुनिक व्यवसाय, महिलाओं का नौकरी की तरफ रुझान बढ़ना, रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलना, नवीन व्यवसायों की तरफ बढ़ना आदि पक्षों की विवेचना की गई है। जिनको तालिकाबद्ध करने का प्रयास किया गया है।

इसी प्रकार वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मीणा महिलाओं की राजनीतिक स्थिति के बारे में भी जानने की कोशिश की गई है। क्योंकि महिला शिक्षा में वृद्धि होने के कारण, इनकी राजनीतिक स्थिति में भी बदलाव आया है। वैश्वीकरण से प्रभावित होने के कारण मतदान व्यवहार प्रभावित हुआ, राजनीति में भागीदारी बढ़ी, राजनीति में आरक्षण व्यवस्था आदि पक्षों को तालिकाबद्ध किया गया है। अन्त में यह स्पष्ट हुआ कि वैश्वीकरण के कारण मीणा महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन हुआ है। अन्त में तालिकाओं का निष्कर्ष एवं समग्र अध्याय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठम अध्याय ''**वैयक्तिक अध्ययन**'' के अन्तर्गत अनुसंधान की वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का अध्ययन किया गया, जिसमें अन्ता तहसील के उन चार मीणा बाहुल्य गांवो के प्रतिष्ठित दो पुरूष व दो महिला उत्तरदाताओं का वैयक्तिक अध्ययन किया गया। जिनका सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पक्ष मीणा समाज में प्रतिष्ठित है। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में इनकी तीन पीढ़ियों का वैयक्तिक अध्ययन किया गया साथ ही यह जानने की कोशिश कि गई कि मीणा जनजाति के इन प्रतिष्ठित उत्तरदाताओं की तीन पीढ़ियों के सामाजिक,

आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर में वैश्वीकरण के कारण क्या परिवर्तन आया। अन्त में अध्याय का निष्कर्ष भी दिया गया है।

निष्कर्ष:—

प्रस्तुत शोध में प्रत्येक अध्याय की तालिकाओं का संक्षिप्त निष्कर्ष देते हुए सम्पूर्ण निष्कर्ष दिया जा रहा है —

✶ पारिवारिक संरचना कुल उत्तरदाताओं में से 116(38.67) योग प्रतिशत संयुक्त परिवार से, 153(51.00) योग प्रतिशत एकांकी परिवारों से, 31(10.33) योग प्रतिशत अन्य परिवारों से जिसमें विधुर/विधवा/परित्यक्ता परिवारों को शामिल किया गया है। अतः अध्ययन क्षेत्र में एकांकी परिवारों की संख्या बढ़ रही हैं।

✶ वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 186(62.67) योग प्रतिशत पूर्ण सहमत के पक्ष में, 59(19.67) योग प्रतिशत सहमत के पक्ष में, 34(11.33) योग प्रतिशत असहमत के पक्ष में, 21(07.00) योग प्रतिशत कोई प्रभाव नहीं पड़ा के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ा, जो पूर्ण सहमत के पक्ष में कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाले कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 91(48.93) योग प्रतिशत ने संचार एवं परिवहन के साधनों में वृद्धि, 139(74. 73) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 113(60.75) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच के कारण, 136(73.12) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शैक्षिक स्तर में वृद्धि का रहा है।

✶ वैश्वीकरण से सामाजिक गतिशीलता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 204(68.00) योग प्रतिशत ने सहमत के पक्ष में, 57(19.00) योग प्रतिशत ने असहमत के पक्ष में, 39(13..00) योग प्रतिशत ने तटस्थता के पक्ष में। अतः सामाजिक गतिशीलता बढ़ी, जो सहमत के पक्ष में कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

✶ सामाजिक गतिशीलता बढ़ने के सहमत के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 158(77.45) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 151(74.02) योग प्रतिशत ने आधुनिक संसाधनों में वृद्धि, 144(70.59) योग प्रतिशत ने रोजगार की लालशा, में वृद्धि 126(61.77) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि, 77(37.75) योग प्रतिशत ने सामाजिक सम्बन्धों में शिथिलता को माना।

- ✶ वैश्वीकरण के प्रभाव से मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 228(76.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 72(24.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ मीणा जनजाति की संस्कृति परिवर्तित हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 137(60.09) योग प्रतिशत ने आधुनिकतम संचार के संसाधनों में वृद्धि, 152(66.67) योग प्रतिशत ने पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, 94(41.23) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 99(43.42) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 117(51.32) योग प्रतिशत ने भौतिकवादी सोच में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण से मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 240(80.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 60(20.00) प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा जनजाति के व्यक्तियों में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ने के कारणों के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 96(38.87) योग प्रतिशत ने सूचना क्रान्ति के कारण, 170(68.83) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 146(59.11) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 52(21.05) योग प्रतिशत ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कारण, 125(50.61) योग प्रतिशत ने कुटीर उद्योग आधारित व्यावसायों में कमी को माना है।

- ✶ वैश्वीकरण से राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 238(79.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 62(20.67) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई, जो सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ किस प्रकार राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 149(62.61) योग प्रतिशत ने चुनाव प्रचार में भागीदारी बढ़ी, 164(68.91) योग प्रतिशत ने मताधिकार के प्रयोग में चेतनता, 178(74.79) योग प्रतिशत ने युवा नेतृत्त्व की क्षमता में वृद्धि, 217(91.18) योग प्रतिशत ने जाति पंचायतों की जगह लोकतन्त्र में विश्वास, 200(84.03) योग प्रतिशत ने सामाजिक सोच में बदलाव को माना।

* वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पडा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 210(70.00) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 189(63.00) योग प्रतिशत ने उच्च व तकनीकी शिक्षा पर बल, 137(45.67) योग प्रतिशत ने रूढियों एवं कुरीतियों के बन्धनों में शिथिलता, 181(60.33) योग प्रतिशत ने मताधिकार व निर्वाचन क्षेत्र में रूचि, 173(57.67) योग प्रतिशत ने सरकारी व निजी क्षेत्र में रोजगार की वृद्धि, 75(25.00) योग प्रतिशत ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रति रूझान को माना। अतः वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जिसके कारण मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर में परिवर्तन हो रहा है।

* वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 160(53.33) योग प्रतिशत ने पारम्परिक व्यवसायों की हानि, 159(53.00) योग प्रतिशत ने सांस्कृतिक पक्ष की दृष्टि से पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण, 164(54.67) योग प्रतिशत ने जातिगत परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों का विलोपन, 120(40.00) योग प्रतिशत ने आर्थिक असमानता में वृद्धि, 175(58.33) योग प्रतिशत ने शारीरिक श्रम–आधारित व्यवसायों का तिरस्कार, 135(45.00) योग प्रतिशत ने जातिगत राजनीतिक व्यवस्था के मूल्यों के ह्रास को माना। अतः अध्ययन क्षेत्र की मीणा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

* वैश्वीकरण से मीणा महिलाओं के पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 115(76.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 35(23.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं के पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

* मीणा महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता किस प्रकार बढ़ी के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 61(53.03) योग प्रतिशत ने अधिकारों के प्रति सजकता, 65(56.52) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 76(66.09) योग प्रतिशत ने आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि, 62(53.91) योग प्रतिशत ने सरकार द्वारा संचालित योजनाओं में भागीदारी को माना है।

* वैश्वीकरण से महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 110(73.33) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 40(26.67) योग

प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 77(77.00) योग प्रतिशत ने जाति आधारित नियमों में शिथिलता, 75(68.18) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 95(86.36) योग प्रतिशत ने मीड़िया का प्रभाव, 90(81.82) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि, 93(84.55) योग प्रतिशत ने सामाजिक बन्धनों एवं सोच में परिवर्तन को माना । अतः कारणों में सर्वाधिक कारण मीड़िया का प्रभाव रहा है।

- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 120(80.00) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 30(20.00) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव पड़ा, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ महिलाओं के विधवा–पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 95(79.17) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में बदलाव, 116(96.67) योग प्रतिशत ने महिला–पुरूष के सम्बन्धों में खुलापन, 117(97.05) योग प्रतिशत ने शिक्षा के स्तर में वृद्धि, 96(80.00) योग प्रतिशत ने मीड़िया के प्रभाव को, 92(76.67) योग प्रतिशत ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि का रहा है।

- ✶ नवीन (आधुनिक) व्यवसायों के सम्बन्ध में कुल महिलाओं उत्तरदाताओं में से 116(77.33) योग प्रतिशत ने अध्यापन के कार्य को, 47(31.33) योग प्रतिशत ने डॉक्टर व नर्स के कार्य को, 57(38.00) योग प्रतिशत ने उद्योगों में कार्य को, 62(41. 33) योग प्रतिशत ने आधुनिक तरीके से कृषि कार्य को माना। अतः अध्ययन क्षेत्र की मीणा महिलाएँ आधुनिक व्यवसाय करने लगी है, जिसमें अध्यापन कार्य को सर्वाधिक माना है।

- ✶ वैश्वीकरण से महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 121(80.67) योग प्रतिशत हाँ के पक्ष में, 29(19.33) योग प्रतिशत नहीं के पक्ष में। अतः मीणा महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई, जो कुल संख्या का सर्वाधिक योग प्रतिशत है।

- ✶ किस प्रकार महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई के कारणों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 82(67.77) योग प्रतिशत ने शैक्षिक स्तर में वृद्धि, 47(38.84) योग प्रतिशत ने राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजकता, 83(68.60) योग प्रतिशत ने सूचना क्रांति के प्रभाव, 64(52.89) योग प्रतिशत ने जनजातीय समाज में प्रतिष्ठा को, 57(47.11) योग प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में बदलाव को माना। अतः कारणों में सर्वाधिक कारण सूचना क्रांति के प्रभाव का रहा है।

- ✶ वैयक्तिक अध्ययन में समाज के प्रतिष्ठित पुरूष व महिला उत्तरदाताओं का वैयक्तिक अध्ययन किया गया है। जिसमें उनसे तीन पीढ़ी की जानकारी प्राप्त की गई। वैश्वीकरण के कारण उनके जीवन स्तर में क्या परिवर्तन आया आदि पक्षों का अध्ययन करते हुए। यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति के पुरूष व महिला उत्तरदाताओं की तीन पीढ़ियों में परिवर्तन देखा गया है।

अतः निष्कर्षतया यह कह सकते हैं कि मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप से व्यापक प्रभाव डाला है। वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति पर सकारात्मक प्रभावों में—शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, सामाजिक रीति—रिवाजों में शिथिलता आई, सामाजिक चेतना में वृद्धि हुई, सामाजिक गतिशिलता बढ़ी, सामाजिक भेद—भाव कम हुआ, सामाजिक कुरीतियों में कमी आई तथा आर्थिक स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव देखे गये, जैसे—रोजगार के अवसरों में वृद्धि, आय में वृद्धि, आत्मनिर्भरता में वृद्धि, आय के नये संसाधनों का विकास, आर्थिक असमानता में कमी, व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी, नये औधोगिक व्यावसायों का विकास हुआ। इसके साथ ही साथ राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी, राजनीतिक दलों में हस्तक्षेप बढ़ा, राजनीतिक नियमों व निर्णयों में भागीदारी बढ़ी, मतदान व्यवहार में परिवर्तन आया।

इसके साथ ही वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति पर नकारात्मक प्रभाव भी देखे गये। सामाजिक सम्बन्धों की दूरीयों में वृद्धि हुई, सामाजिक मूल्यों में कमी आई, प्राथमिक सम्बन्धों में कमी आई, परिवार का महत्त्व घटा, संयुक्त परिवार टूटे, विवाह विच्छेद के मुकदमें बढ़े, सांस्कृतिक मूल्यों में कमी आई, फुहड़ पहनावें की ओर आकर्षण बढ़ा तथा इसके साथ ही साथ आर्थिक असमानता में वृद्धि हुई, परम्परागत एवं कुटीर व्यावसायों का क्षय हुआ, भौतिक संसाधनों के प्रति मोह में

वृद्धि हुई, युवा प्रतिभाओं के पलायन में वृद्धि देखी गई। वैश्वीकरण के कारण राजनीतिक जागरूकता एवं राजनीतिक अधिकारों में वृद्धि हुई, परन्तु इसमें पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है।

अतः वैश्वीकरण का प्रभाव मीणा जनजाति की महिलाओं पर लिंग भेद में कमी, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, आत्मनिर्भरता में वृद्धि, सामाजिक बन्धनों में छूट, सामाजिक एवं राजनीतिक निर्णयों एवं दलों में भागीदारी, राजनीतिक पदों में नेतृत्त्व बढ़ा, शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, पारिवारिक निर्णयों में सक्रिय भागीदारी बढ़ी, लिंगानुपात में वृद्धि हुई, भ्रूण हत्या में कमी आई, महिला हत्याचारों में कमी देखी गई, विधवा–पुनर्विवाह में वृद्धि, पर्दा–प्रथा में कमी आदि सामाजिक कुरीतियों में परिवर्तन देखा गया।

अतः तुलनात्मक रूप से हम कह सकते है कि मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण के कारण नकारात्मक प्रभावों की अपेक्षा सकारात्मक प्रभाव अधिक देखे जा सकते हैं, परन्तु अपेक्षित सुधार की आवश्यकता है। क्योंकि मीणा समाज में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव कम देखे गये। जैसे महिलाओं का बाहर नौकरी करने में समाज के नियम रास्ते में आ जाते है, परन्तु पुरूषों के लिए ऐसा कुछ नहीं होता अर्थात सामाजिक नियम महिलाओं के लिए कठोर होते है। आर्थिक स्थिति की बात करे तो पुरूषों की अपेक्षा महिलाएँ आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई है, क्योंकि परिवार में पुरूष मुखिया होता है। इस कारण सम्पत्ति उसके नाम होती है। इसलिए आर्थिक रूप से भी महिलाएँ कमजोर है। इसी क्रम में राजनीतिक पक्ष की बात करें तो पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं का राजनीतिक वर्चस्व भी कमजोर रहा है। क्योंकि मतदान का अधिकार तो मिला पर चुनाव में भाग लेना आज भी मीणा महिलाओं के लिए पुरूषों की अपेक्षा नाममात्र है। जिसके कारण राजनीति से बहुत दूर है, परन्तु तथाकथित सभ्य समाज के दृष्टिकोण से देखा जाए तो मीणा पुरूषों का राजनीतिक पक्ष भी कमजोर है। अतः मीणा जनजाति के पुरूष और महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए वैश्वीकरण की सकारात्मक अवधारणा को अपनाया जाना अवश्यक है। जिससे पुरूषों के साथ–साथ मीणा महिलाओं का भी विकास होगा, क्योंकि महिलाओं की स्थिति वर्तमान में भी पुरूषों से कम है अर्थात् परिवर्तन तो हुआ पर परिवर्तन की धारा महिलाओं में नगण्य ही रही है।

सुझावः—

जनजातीय विकास एवं परिवर्तन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये गये हैं, जो निम्नानुसार प्रस्तुत हैं —

- ✶ पर्याप्त संचार संसाधनों के विकास की आवश्यकता है, क्योंकि आज भी ग्रामीण स्तर पर इनके विकास में कमी देखी गई है। इसलिए जनजातीय क्षेत्रों में अधिक से अधिक संख्या में संचार के संसाधनों का विकास किया जाना चाहिए।
- ✶ शैक्षणिक स्तर में वृद्धि— शिक्षा के स्तर में वृद्धि एवं रोजगार के नये अवसर पैदा करने के लिए शैक्षिक तकनीकी व व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- ✶ सरकारी एवं गैर—सरकारी संगठनों, मीड़िया एवं विज्ञापनों, सरकार द्वारा संचालित योजनाओं आदि के द्वारा जानजातीय क्षेत्रों में जागरूकता फैलाई जानी चाहिए।
- ✶ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जागरूकता की आवश्यकता है, क्योंकि वर्तमान में जनजातीय क्षेत्रों में जागरूकता का अभाव है।
- ✶ रोजगार के अवसरों एवं आय के संसाधनों में वृद्धि के लिए पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है।
- ✶ प्रतिभा पलायन एवं सामाजिक गतिशिलता को रोकने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए अर्थात् ग्रामीण स्तर पर रोजगार के संसाधनों की पर्याप्त सुविधा मुहैया करानी चाहिए।
- ✶ ग्रामीण स्तर पर सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का सही तरह से मूल्यांकन किया जाना चाहिए, ताकि कमजोर आय वाले व्यक्तियों को सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का पर्याप्त लाभ मिल सके।
- ✶ महिलाओं में सामाजिक चेतना लाने के लिए ग्रामीण स्तर पर नुक्कड़ नाटक व विज्ञापनों के माध्यम से जागरूक किया जाना चाहिए।
- ✶ आर्थिक दृष्टि से कमजोर महिलाओं के लिए उद्योग व प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाये, जिससे आत्मनिर्भरता में वृद्धि होगी।
- ✶ कृषि कार्य के लिए किसानों को नई तकनीकी एवं आधुनिक संसाधनों को उचित दामों पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए, ताकि उनका रूझान कृषि के आधुनिक संसाधनों की तरफ बढ़े।

* जनजातीय समाज की कई महिलाएँ अभी भी परम्परागत नियमों में बुरी तरह से जकड़ी हुई है। अतः इनके उत्थान एवं कल्याण के लिए समुचित प्रबन्ध किया जाना चाहिए।
* वर्तमान में मीणा समाज का एक वर्ग आरक्षण से अनजान हैं अर्थात् निम्न वर्ग को लाभ नहीं मिल पा रहा है। इसलिए अधिकारों के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है।
* मीणा समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं एवं कुप्रथाओं को भी दूर किया जाना चाहिए, जिससे गरीब व अमीरी की दूरीयाँ कम होगी।
* अध्ययन क्षेत्र में अभी भी मीणा जनजाति के पुरूष व महिलाएँ आर्थिक रूप से समृद्ध नहीं है। अतः ऐसे पुरूष व महिलाओं के लिए किसी व्यावसायिक प्रशिक्षण के द्वारा रोजगार प्रदान कर, उन्हें आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाने के प्रयास किये जाने चाहिए।
* अध्ययन क्षेत्र में इस वैश्वीकरण के दौर में आज महिलाएँ पुरूषों की अपेक्षा काफी पिछड़ी हुई है। अतः मेरा सुझाव है कि सरकार के द्वारा मीणा महिलाओं के लिए महिला कल्याण समिति का निर्माण करना चाहिए। जिससे सिर्फ मीणा महिलाओं का उत्थान हो अर्थात् महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से लाभ मिले।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, राजीव लोचन : ''जनजातीय जीवन और संस्कृति'' सहचरी प्रकाशन, कानपुर, 1967
2. श्रीनिवास, एम.एन. : ''आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन'' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1967
3. शर्मा, डॉ. ब्रह्यदेव : ''आदिवासी विकास एक सैद्धान्तिक विवेचन'' म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1986
4. पलोत, आर. सी. : ''राजस्थान की वनविहारी जनजातियाँ'' नीलकमल ब्रदर्स, डूँगरपुर, 1987
5. शीला, सिंह महेन्द्र : ''राजस्थान की देशभक्त आदिम जातियाँ'' अरावली उद्घोष, उदयपुर, 1989
6. तिवारी, राकेश कुमार : ''आदिवासी समाज में आर्थिक परिवर्तन'' नार्दन बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 1990

7. तिवारी, शिवकुमार : ''भारतीय जनजातियाँ'' नार्दन बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 1992
8. मीणा, लक्ष्मीनारायण : ''मीणा जनजाति एक परिचय'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1998
9. उप्रेती, डॉ. हरिशचन्द्र : ''भारतीय जनजातियाँ : सरंचना एवं विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000
10. दोषी, एसं.एल. : ''आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002
11. मंगल, आर.सी. : ''मीणा जनजाति के उभरते मध्यम वर्ग के प्रतिमान'' क्लासिक पब्लिकेशन, न्यू देहली, 2002
12. सिन्हा, सच्चिदानन्द : ''भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
13. शर्मा, डॉ. सी.एल. : ''सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण पद्धतियाँ'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008
14. कुमार, अरूण : ''उदारीकरण, भूमंडलीकरण एवं दलित'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2009
15. सिंह, वी.एन. : सिंह जनमेजय, ''आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण'' रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, 2010
16. यादव, डॉ. पूरणमल एवं भट्ट : दिनेश चन्द्र, ''वैश्वीकरण – एक समाजशास्त्रीय अवधारणा'' पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 2010
17. रावत, सारस्वत : ''मीणा इतिहास'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012
18. रावत, हरिकृष्ण : ''सामाजिक शोध की विधियॉ'' प्रेमरावत, रावत पब्लिकेशन्स, जवाहर नगर, जयपुर, 2013
19. माथुर, दुर्गा प्रसाद : ''मीणा जाति का सतत् विकास एवं संस्कृति'' साहित्यागार, जयपुर, 2014
20. मीणा, डॉ. सुनीता : ''जनजातीय महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता'' गौत्तम बुक कम्पनी, जयपुर, 2014
21. सिंह, वी.पी. : ''उत्तर आधुनिकतावाद : राजनीति, समाज एवं संस्कृति'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2016

ENGLISH BOOKS

1. Chaudhary, S. N. :"Globlization, National Development and Tribal Identity" Rawat publications, Jaipur, 2013
2. Chaudhary, S. N. : "Tribal Women – Yesterday, Today and Tomorrow" Rawat Publications, Jaipur, 2015
3. Ghuriye, G.S. : "The Scheduled Tribes" Popular Prakashan, Bombay, 1963
4. Sharma, S.L. : "Emerging Tribal Identity" Rawat Publications, Jaipur, 2008
6. Trivedi, Dr. R.N. and Shukla, Dr. D.P. : "Research Methodology" College book Depo. Tripolia Bazar Jaipur, 2008
7. Goode and Hatt :"Method's in Social Research" Leading Publishing, 1952
8. Jahoda & Cook :"Research Method in Social Relationship" Hapres Publishing, 1965
9. Das, P.K.: "The Tribal Social Structure, Inter India" Publication, New Delhi, 1988
10. Doshi, S.L.: "Tribal Rajasthan : Sunshine on The Aravali" Himanshu Publication, Udaipur, 1992
11. Bairathi, Shashi : "Tribal Culture Economy and Health" Rawat Publications, Jaipur, 1991
12. Singh, Yogendra : "Culture Change in India Identity Globlization" Rawat Publications, Jaipur, 2012

पत्र–पत्रिकाएँ

1. अग्रवाल, प्रमोद कुमार, ''राजनीति और प्रशासन में महिलाएँ'' योजना, अंक 9, दिसम्बर, 2000, नई दिल्ली
2. कुमार, राकेश, अंक 3, जून, ''पिछड़ी जातियों में सामाजिक गतिशीलता'' 2002 योजना, नई दिल्ली
4. मीणा डॉ. जगन सिंह, ''वर्तमान परिदृश्य में आदिवासी'' अरावली उद्घोष त्रिमासिक पत्रिका, दिसम्बर 2011
5. जिला जनगणना पुस्तिका, जिला बारां, 2011
6.. ''राजस्थान समाजशास्त्रीय परिषद'' जयपुर 2011 वोल्युम–3 पृ.सं.107–111
7. Directorate of Sensus, Department of Rajasthan, District Baran, Tahsil Anta, Sensus, 2011
8. सिंह नरेन्द्र और सीमा देवी, ''कुरूक्षेत्र ग्रामीण विकास मंत्रालय'' नई दिल्ली, सितम्बर, 2004
9. मीणा डॉ. जगन सिंह, ''वर्तमान परिदृश्य में आदिवासी'' अरावली उद्घोष त्रिमासिक पत्रिका, दिसम्बर 2011
10. राजस्थान पत्रिका, कोटा
11. दैनिक भास्कर, कोटा
12. हिन्दूस्तान टाईम्स पत्रिका, नई दिल्ली

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिद्धान्तालंकार, सत्यव्रत : ''भारत की जनजातियाँ तथा संस्थाऐं'' विद्या विहार, देहरादून, 1960
2. शर्मा, राजीव लोचन : ''जनजातीय जीवन और संस्कृति'' सहचरी प्रकाशन, कानपुर, 1967
3. श्रीनिवास, एम.एन. : ''आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन'' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1967
4. विद्यार्थी, ल. प्र. : ''भारतीय आदिवासी, नागरी प्रचारणी सभा'' वाराणासी (उ.प्र.), 1975
5. डिसूजा, अल्फ्रेड : ''सम सोशल एण्ड इकोनोमिक डिटरमिनेंट्स ऑफ लीडरशिप इन इंडिया, दी पॉलिटिक्स ऑफ चेन्ज एण्ड लीडरशिप डवलपमेन्ट (संपा)'' मनोहर, नई दिल्ली, 1978
6. सिंह, सुरेन्द्र : ''सामाजिक सर्वेक्षण'' हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ (उ.प्र.), 1962
7. पटेल, एम.एल. : ''ट्राइबल डवलपमेन्ट'' इन्टर इन्डिया पब्लि., नई दिल्ली, 1984
8. शर्मा, डॉ. ब्रह्मदेव : ''आदिवासी विकास एक सैद्धान्तिक विवेचन'' म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1986
9. मुखर्जी, डॉ. आर.एन. : ''सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी'' विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987
10. पलोत, आर. सी. : ''राजस्थान की वनविहारी जनजातियाँ'' नीलकमल ब्रदर्स, डूँगरपुर, 1987
11. शीला, सिंह महेन्द्र : ''राजस्थान की देशभक्त आदिम जातियाँ'' अरावली उद्घोष, उदयपुर, 1989
12. हसनैन, नदीम : ''जनजातीय भारत'' जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, 1990
13. तिवारी, राकेश कुमार : ''आदिवासी समाज में आर्थिक परिवर्तन'' नार्दन बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 1990

14. प्रसाद, अनिरूद्ध : ''आरक्षण, सामाजिक न्याय एवं राजनीतिक सन्तुलन'' रावत प्रकाशन, जयपुर, 1991

15. दोषी, एसं. एल. एवं एन. एम. : ''राजस्थान की अनुसूचित जनजातियाँ'' हिमांशू व्यास, पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1992

16. तिवारी, शिवकुमार : ''भारतीय जनजातियाँ'' नार्दन बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 1992

17. मेहता, प्रकाश चन्द्र : ''भारत के आदिवासी'' शिवा पब्लिशर्स, उदयपुर, 1993

18. राठौड, अजयसिंह : ''भील जनजाति : शिक्षा एवं आधुनिकीकरण'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1994

19. यादव, मार्कण्डेय सिंह : ''आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के कुछ पक्ष'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1994

20. गोमांग, गिरधर : ''अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति सम्बन्धी संवैधानिक उपबन्ध'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

21. दोषी, एसं.एल. त्रिवेदी, एम.एसं., उच्चतर समाजशात्रीय सिद्धान्त, रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, 1996

22. नायडू, पी.आर. : ''भारत के आदिवासी विकास की समस्याऐं'' राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1997

23. मीणा, लक्ष्मीनारायण : ''मीणा जनजाति एक परिचय'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1998

24. रावत, हरिकृष्ण : ''समाजशास्त्र विश्वकोश'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1998

25. उप्रेती, डॉ. हरिशचन्द्र : ''भारतीय जनजातियाँ : सरंचना एवं विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000

26. भट्ट, आशीष : ''लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण एवं जनजाति नेतृत्व'' रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, 2002

27. उपाध्याय, विजय शंकर एवं पाण्डेय गया : ''जनजातीय विकास'' मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2002

28. दोषी, एसं.एल. : ''आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002

29. जैन, सोभिता : ''भारत में परिवार, विवाह और नातेदारी'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002

30. मंगल, आर.सी. : ''मीणा जनजाति के उभरते मध्यम वर्ग के प्रतिमान'' क्लासिक पब्लिकेशन, न्यू देहली, 2002

31. मजूमदार, डी.एन. व मदन टी.एन. : ''भारतीय सामाजिक मानवशास्त्र परिचय'' मयूर पेपर बैक्स, नोएड़, उ.प्र., 2002

32. चौहान, डॉ. आई.एसं. : ''भारत में सामाजिक परिवर्तन'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2004

33. नीनामा, गणेशलाल : ''जनजातीय लोक संस्कृति परम्परा के बदलते आयाम'' एम. बी. पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, जयपुर, 2004

34. नरवानी, जी.एसं. : ''भारत में जनजातीय विधि'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2004

35. सिंह, डॉ. मनोज कुमार, शर्मा, डॉ. श्रीनाथउ : ''पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास'' आदित्य पब्लिशर्स वास्ते अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2004

36. शुक्ला, डॉ. महेश व खान मो. शरीफ : ''खैरवार जनजाति–सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन'' अर्जुन पब्लिशिंग नई दिल्ली, 2004

37. स्टेज़र, मेनफ्रेड बी. : ''भूमण्डलीकरण'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2004

38. तिवारी, डॉ. एवं शर्मा : ''भील जनजीवन और संस्कृति'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2004

39. श्रीवास्तव, ए.आर.एन. : ''जनजातीय भारत'' म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2004

40. कुमार, अमर : ''योगेन्द्र सिंह का समाजशास्त्र'' रावत, पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2005

41. सिन्हा, सच्चिदानन्द : ''भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005

42. दुबे, अभय कुमार : ''भारत का भूमण्डलीकरण'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

43. खंडेला, एम.पी. : ''उदारीकरण और आर्थिक विकास'' पोइन्टर पब्लिसर्श, जयपुर, 2006

44. मीणा, शीतल : ''भूमण्डलीकरण के उभरते आयाम (जनजातीय समाज के परिपेक्ष में) ट्राइब, खण्ड–38, अंक 3–4 माणिक्य लाल वर्मा, आदिम जाति शोध एवं शिक्षण संस्थान,'' उदयपुर, 2006

45. सिंह, योगेन्द्र : ''भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2006

46. खंडेला, एम.सी. : ''वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था'' आविष्कार पब्लिसर्श, जयपुर, 2007

47. आहूजा राम : ''भारतीय सामाजिक व्यवस्था'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2007

48. गुप्ता, एस.एल.; शर्मा, डी.डी. : ''सामाजिक अन्वेषण की सर्वेक्षण पद्यतियॉ'' साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2007

49. आहूजा, राम : ''सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2008

50. अरथयिल, मैथ्यू : ''भूमण्डलीकरण के आदिवासियों पर प्रभाव'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2008

51. गुप्ता, डॉ. मंजू : ''जनजातियों का सामाजिक, आर्थिक उत्थान'' अर्जुन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2008

52. मदन, जी. आर. : ''परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र'' विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, नई दिल्ली, 2008

53. मीणा, बद्रीलाल : ''पंचायती राज व्यवस्था का ग्रामीण जनजातीय समाज पर प्रभाव'' (बारां जिले के अटरू ग्राम के विशेष सन्दर्भ में) कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध), 2008

54. शर्मा, सी. एल. : ''समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008

55. शर्मा, डॉ. सी.एल. : ''सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण पद्धतियाँ'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008

56. शर्मा, एस.एल. : ''जनजातीय पहचान उभरते हुए'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2008

57. दोषी, एसं.एल. एवं जैन, पी.सी. ''समाजशास्त्र नई दिशाऐं'' नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2009

58. दोषी, एसं.एल. : ''सामाजिक मानवशास्त्र'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2009

59. कुमार, अरूण : ''उदारीकरण, भूमंडलीकरण एवं दलित'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2009

60. महाजन, डॉ. धर्मवीर, महाजन, डॉ. कमलेश : ''जनजातीय समाज का समाजशास्त्र'' विवेक प्रकाशन, जयपुर, 2009

61. सिंह जे.पी. : ''समाजशास्त्रः अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त,'' पी. एच. आई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, 2009

62. दोषी, एसं.एल. : ''आधुनिक समाजशास्त्रीय विचारक'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010

63. प्रसाद , गिरिजा : ''भारतीय जनजाति'' वाइटल पब्लिकेशन, जयपुर, 2010

64. राजपूत, उदयसिंह : ''आदिवासी विकास एवं गैर–सरकारी संगठन'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010

65. राजोरा, डॉ. सुरेशचंद्र : ''समकालीन भारत की सामाजिक समस्याएँ'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010

66. सिंह, शिवबहाल : ''विकास का समाजशास्त्र'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010

67. सिंह, वी.एन. : ''सिंह जनमेजय, आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण'' रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, 2010

68. शर्मा, के. एल. : ''भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन'' रावत पब्लिकेशन्स, जवाहर नगर, जयपुर, 2010

69. यादव, डॉ. पूरणमल एवं भट्ट : ''दिनेश चन्द्र, वैश्वीकरण – एक समाजशास्त्रीय अवधारणा'' पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 2010

70. अटल, योगेश; सिसोदिया, यतीन्द्र सिंह : ''आदिवासी भारत'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011

71. मल्होत्रा, सुभाष : ''वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था'' रितु पब्लिकेशन जयपुर, 2011

72. सिंघी, नरेन्द्र कुमार : ''समाजशास्त्रीय सिद्धान्तः विवेचन एवं व्याख्या'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
73. मिश्रा, रत्नेश कुमार : ''भारतीय राजनीति में क्षेत्रिय दल'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
74. मीना, शीतल : ''जनजातियों के मानवाधिकार एवं मानव विकास'' पोइंटर पब्लिशर्स, जयपुर, 2012
75. रावत, सारस्वत : ''मीणा इतिहास'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012
76. गुप्ता, मोतीलाल : ''भारतीय समाज'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2013
77. गुप्ता, डॉ. मिथलेश : ''भूमण्डलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन'' गौतम बुक कम्पनी, जयपुर, 2013
78. रावत, हरिकृष्ण : ''सामाजिक शोध की विधियॉ'' प्रेमरावत, रावत पब्लिकेशन्स, जवाहर नगर, जयपुर, 2013
79. सिंह, वी.एन. व सिंह जनमेजय : ''भारत में सामाजिक आन्दोलन'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2013
80. श्रीमाली, चक्रवर्ती, डॉ. नारायण : ''घुमन्तु जनजाति जीवन'' चक्री प्रकाशन, बीकानेर राजस्थान, 2013
81. भार्गव, नरेश : ''वैश्वीकरण – समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2014
82. माथुर, दुर्गा प्रसाद : ''मीणा जाति का सतत् विकास एवं संस्कृति'' साहित्यागार, जयपुर, 2014
83. मीना, डॉ. रामगोपाल व मीना, हर्ष : ''मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज'' राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर
84. मीणा, डॉ. सुनीता : ''जनजातीय महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता'' गौत्तम बुक कम्पनी, जयपुर, 2014
85. जाट, रामफूल : ''जन–सहभागिता एवं ग्रामीण विकास'' आदि पब्लिकेशन, जयपुर, 2015
86. मीना, डॉ. एसं.पी. : ''भारतीय जनजातियॉ एवं मानवाधिकार वैधानिक एवं सामाजिक परिदृश्य'' आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2015
87. नागला, बी.के. : ''भारतीय समाजशास्त्रीय चिन्तन'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2015

88. शर्मा, जी. एल. : ''सामाजिक मुद्दे'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2015

89. गुप्ता, एम.पी. : ''मनरेगा पंचायती राज एवं जनजातीय विकास'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2016

90. सिंह, वी.पी. : ''उत्तर आधुनिकतावाद : राजनीति, समाज एवं संस्कृति'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2016

91. मीना, रिषपाल : ''अनुसूचित जनजातियों में सामाजिक परिवर्तन'' नेशनल पब्लिकेशन्स्, जयपुर, 2016

ENGLISH BOOKS

1. Goode and Hatt : “Method’s in Social Research” Leading Publishing, 1952
2. Adolf, Johnson : “Social Research” Urnold Publication, 1963
3. Ghuriye, G.S. : “The Scheduled Tribes” Popular Prakashan, Bombay, 1963
4. Jahoda & Cook : “Research Method in Social Relationship” Hapres Publishing, 1965
5. Loachan, Rajiv : “Tribal Life And Cultur” Sanchaari Publishers, Kanpur, 1967
6. Sharma, B.D. : “Tribal Development: The Concept and the Frame” Prachi Prakashan, New Delhi, 1980
7. Chaudhary, B.D. : “Tribal Development In India” Inter India Publication,New Delhi., 1982
8. Singh K.S. : “Economics of the Tribe and their Transformatio” Concept publishing co., New Delhi, 1982
9. Patel, M.L. : “Tribal Development In India” Inter India Publication, New Delhi, 1984
10. Das, P.K. : “The Tribal Social Structure, Inter India” Publication, New Delhi, 1988
11. Singh, J.P. And Vyas : “Tribal Development : Past Efforts And N.N. (Ed.) New Challenges” Himanshul Publications, Udaipur, 1989
12. Giddens, Anthony : “The Consequences Of Modernity” Cambridge Polity Press, 1990
13. Bairathi, Shashi : “Tribal Culture Economy and Health” Rawat Publications, Jaipur, 1991
14. Doshi, S.L. : “Tribal Rajasthan : Sunshine on The Aravali” Himanshu Publication, Udaipur, 1992

15. Bhaduri Amit, Nayyar Deepak : “The Intelligent Preson’s” Guideta Liberalization Penguin Book, 1996
16. Kashyap, Anand, and Rawat, Rajesh Kumar : “Tribal Develpoment in Rajasthan- Issues in Strategy and Programme” Publications, New Delhi, 1998
17. Saxena, H.S. : “Perspective on Tribal Development” Rawat Publication, Jaipur, 1999
18. Sisodia, S. Yatindra : “Political Consciousness Among Tribal” Rawat publications, Jaipur, 1999
19. “Waters, Malcom, Globlization Routledsge, London, International Society” Vol. 15, Nov. 1st, 2000
20. Jain, P. C. : “Globlization and Tribal Economy” Rawat Publications, Jaipur, 2001
21. Oommen, M.A. : “Globalization And Powerty:The Indian Case” Malayalam Manorama Year Book, P. 563, 2001
22. Bhagwati Jagdish : “In Defese Of Globalization” Oxfor, New York: Oxford University Press, 2004
23. Sharma, S.L. : “Emerging Tribal Identity” Rawat Publications, Jaipur, 2008
24. Trivedi, Dr. R.N. and Shukla, Dr. D.P. : “Research Methodology” College book Depo. Tripolia Bazar Jaipur, 2008
25. Singh, Manju & Singh : “Aradhana, Globization and Changing political culture” Gautam Book Co., Jaipur, 2009
26. Nagla, B.K. : “Globalization And Its Impact On Culture” Quest: The Journal Of UGC–ASC Nanital, Vol IV, May, Pp. 1–12, 2010
27. Singh, Yogendra : “Culture Change in India Identity Globlization” Rawat Publications, Jaipur, 2012
28. Chaudhary, S. N. : “Globlization, National Development and Tribal Identity” Rawat publications, Jaipur, 2013
29. Chaudhary, S. N. : “Tribal Women – Yesterday, Today and Tomorrow” Rawat Publications, Jaipur, 2015
30. Singh, Sheobahal : “Sociology of Development, Rawat Publication” Jaipur, 2015

पत्र–पत्रिकाएँ

1. अग्रवाल, प्रमोद कुमार : ''राजनीति और प्रशासन में महिलाएँ, योजना'' अंक 9, दिसम्बर, 2000, नई दिल्ली
2. कुमार, राकेश, अंक 3, जून : ''पिछड़ी जातियों में सामाजिक गतिशीलता,'' 2002 योजना, नई दिल्ली
3. जिला दर्शन, बारां : ''अतुलनीय भारत, गौरमयी प्रदेश – असंख्य संभावनायें'' – नया परिवेश, 2014–15
4. भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय, वार्षिक रिर्पोट 2004–05
5. सिंह नरेन्द्र और सीमा देवी : ''कुरूक्षेत्र ग्रामीण विकास मंत्रालय'', नई दिल्ली, सितम्बर, 2004
6. मीणा डॉ. जगन सिंह : ''वर्तमान परिदृश्य में आदिवासी अरावली उद्घोष त्रिमासिक पत्रिका'' दिसम्बर 2011
7. स्मारिका : ''राजस्थान के आदिवासी'' 1966
8. कार्यालय नगर परिषद, बारां, 2012
9. जिला जनगणना पुस्तिका, जिला बारां, 2011
10. कार्यालय जिला सांख्यिकी अधिकारी, बारां जिला– एक दृष्टि में, 2011
11. इंडियन एंटीक्वेरी, (फ्रेंड ऑफ इण्डिया), सितम्बर, 1872
12. ''राजस्थान समाजशास्त्रीय परिषद'', जयपुर 2011 वोल्युम–3 पृ.सं.107–111
13. ''भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद'', नई दिल्ली
14. राजस्थान पत्रिका, कोटा
15. दैनिक भास्कर, कोटा
16. योजना भारत सरकार प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
17. समाज कल्याण पत्रिका, समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
18. हिन्दूस्तान टाईम्स पत्रिका, नई दिल्ली
19. Directorate of Sensus, Department of Rajasthan, District Baran, Tahsil Anta, Sensus, 2011

साक्षात्कार अनुसूची

साक्षात्कार अनुसूची

वैश्वीकरण : जनजातीय समाज में सामाजिक, व्यावसायिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता

(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

उत्तर पर सही/गलत (✓/×) का निशान लगायें।

उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि –

1. .... गांव ....
   तहसील .... जिला ....
2. आयु – ....
3. लिंग– पुरूष/महिला
4. वैवाहिक स्थिति– विवाहित /अविवाहित /विधुर/विधवा/तलाकशुदा
5. शिक्षा का स्तर – साक्षर / निरक्षर /प्राथमिक/ उच्च प्राथमिक/माध्यमिक / `उच्च माध्यमिक / स्नातक / स्नातकोत्तर/ व्यावसायिक शिक्षा
6. मकान का प्रकार – कच्चा / पक्का /मिश्रित मकान/ किराये का मकान
7. आपका खान – पान– सर्वाहारी/शाकाहारी
8. परिवार का स्वरूप – एकांकी / संयुक्त/ अन्य
9. **पारिवारिक सरंचना –**

क्र. सं.	सदस्य का नाम	सम्बन्ध	आयु	शिक्षा	व्यावसायिक स्थिति

10. वार्षिक आय – पारिवारिक .... स्वयं की ....
11. आपका व्यवसाय क्या है ? ....
12. आय के स्रोत क्या–क्या है?

कृषि भूमि/नौकरी/ दुकान/मकान किराया/उद्योग/एक से अधिक आय के स्रोत ....

13. आपने कुल कृषि भूमि का कितना भाग अपने पास रखा है? ....

14. सिंचाई के साधन क्या–क्या है?

कुआ/नहर/नलकूप/तालाब/अन्य ....

15. क्या आप निजी क्षेत्र में आरक्षण के समर्थक है? हाँ/नहीं....................

15. (a) हाँ तो कारण...

16. आपके घर में कौन–कौन सी सुविधाएँ है?

बिजली/पंखा/रेडियो/टेलिविज़न/एल.ई.डीटी.वी./फ्रिज़/मोबाइल/दुपहिया वाहन/चार पहिया वाहन/ प्रेस/इनवेटर/सी.डी./वी. सी. डी./ट्रेक्टर

उत्तरदाताओं की राजनीतिक पृष्ठभूमि

17. आपने किसका चुनाव लड़ा है?

वार्डपंच /सरपंच / पंचायत समिति सदस्य / प्रधान / जिलाप्रमुख /एक से अधिक / चुनाव नहीं लड़ा.................

18. आपके चुनाव प्रचार में किस–किस ने भूमिका निभाई ?

परिवार के सदस्य /मुखिया/ जाति समाज / जनजाति समाज / पार्टी कार्यकर्ता/एक से अधिक/चुनाव नहीं लड़ा.................

19. आपको चुनाव लड़ने में किस–किस ने प्रेरित किया ?

दादा–दादी/माता–पिता/पति–पत्नी/सास–ससुर/ क्षेत्रीय कार्यकर्ता / आरक्षण / स्वप्रेरित / चुनाव नहीं लड़ा............................

20. आपके चुने जाने पर प्रतिष्ठा बढ़ी है?

परिवार में/जातीय समाज में/जनजातीय समाज में/ आर्थिक क्षेत्र में/राजनीतिक क्षेत्र में/एक से अधिक क्षेत्र में/चुनाव नहीं लड़ा...........

21. आप चुनाव से पूर्व या चुनाव के बाद किस पद के रूप में सक्रिय थे ?

जनजाति पंच/पारिवारिक मुखिया/ग्रामीण पदाधिकारी/प्रचारक में/राजनीतिक दल की सदस्यता /एक से अधिक कार्य/चुनाव नहीं लड़ा...........................

22. आपके के अनुसार राजनीति में आरक्षण व्यवस्था कैसी है?

उचित/अनुचित/तटस्थ...

(a) कारण ....

23. आपके अनुसार राजनीति में धन व संख्या बल का क्या महत्त्व है?

....

24. आप किस राजनीतिक दल से जुड़े हुये हैं ?...

25. उत्तरदाताओं का बोध स्तर – नाम – ....

भारत के राष्ट्रपति .... प्रधानमंत्री ....

. भारत का गृहमंत्री .... राज्य का गृहमंत्री ....

....

राजस्थान के राज्यपाल .... मुख्यमंत्री ....

क्षेत्र का सांसद .... क्षेत्र का विधायक ....

जिला प्रमुख .... प्रधान ....

सरपंच ....

वार्ड पंच ....

वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन पर प्रभाव

26. क्या आपने वैश्वीकरण के बारे में सुना है ? – हाँ / नहीं

26. (a) यदि हाँ तो क्या जानते हैं ?

....

27. वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है, आप इस मत से –

पूर्ण सहमत है /सहमत है/असहमत है/इनमें से कोई नहीं

27. (a) कारण – ....

28. वैश्वीकरण ने परिवार की सरंचना को किस तरह से प्रभावित किया है –

....

29. वैश्वीकरण के कारण सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ है – हाँ/नहीं

29. (a) यदि हाँ तो क्या परिवर्तन हुआ है ? –

रक्त सम्बन्धों का महत्व बढ़ा है/रक्त सम्बन्धों का महत्व घटा है/यथावत् है

30. क्या आप इस मत से सहमत हैं कि वैश्वीकरण के कारण द्वितीयक सम्बन्धों को बढ़ावा मिला है ? – हाँ / नहीं

30. (a) कारण – ....

31. वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति में सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है। इस कथन से आप –सहमत है/असहमत है/तटस्थ है..

31. (a) कारण – ....

32. वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के सामाजिक रीति–रिवाज़ों को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

....

33. वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के परम्परागत ख़ान–पान, वेशभूषा, आभूषण को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

....

34. वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के परम्परागत पूजा–पाठ/अंधविश्वास/नाता प्रथा/बहुविवाह/बेमेल विवाह/विधवा विवाह/पुर्नविवाह/अन्तर्जातीय विवाह को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

....

35. विवाह की आयु में क्या परिवर्तन आया ?

पहले – (दादा–दादी/पिता–माता) ....

वर्तमान में – आपकी/भाई–बहन की (अलग–अलग लिखें)

36. वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के लोक गीत/नृत्यों को प्रभावित किया है – हाँ / नहीं

36. (a) यदि हाँ तो किस प्रकार ?

....

37. मीणा जनजाति की वैश्वीकरण के प्रभाव से संस्कृति परिवर्तित हुई है –

हाँ /नहीं

37. (a) कारण – ....

38. वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति के तलाक प्रथा पर प्रभाव पड़ा है – हाँ/नहीं

38. (a) किस प्रकार – ....

39. क्या वैश्वीकरण ने जनजाति के लैंगिक भेदभाव को प्रभावित किया है ?

39. (a) हाँ/नहीं तो किस प्रकार – ....

40. क्या वैश्वीकरण ने जनजाति की सामाजिक सेवाओं को प्रभावित किया है ?

....

....

41. वैश्वीकरण से जनजाति की चिकित्सा सेवाओं पर प्रभाव पड़ा है – हाँ/नहीं

41. (a) यदि हाँ तो किस प्रकार – ....

वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के आर्थिक जीवन पर प्रभाव

42. वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति के परम्परागत व्यवसायों में परिवर्तन हुआ है– हाँ/नहीं

42. (a) यदि हाँ तो किस प्रकार ?

....

43. वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति में व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है – हाँ / नहीं

43. (a) यदि हाँ तो उनके कारण बताइये।

....

44. व्यावसायिक गतिशीलता ने मीणा जनजाति को किस प्रकार प्रभावित किया है – आय में वृद्धि हुई है/आय में कमी हुई है/रोजगार में वृद्धि/कोई प्रभाव नहीं पड़ा

45. शिक्षा का स्तर बढ़ा है .... शिक्षा का माध्यम – अंग्रेजी /हिन्दी

46. वैश्वीकरण के प्रभाव से ग्रामीण प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा है – हाँ / नहीं

46. (a) यदि हाँ तो उसके कारण बताइये –

....

47. वैश्वीकरण के प्रभाव से कृषि की बजाय उद्योगों में काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी है –हाँ / नहीं

47. (a) कारण – ....

48. वैश्वीकरण के कारण कृषि व्यवसाय किस प्रकार प्रभावित हुआ है ?

....

49. वैश्वीकरण के कारण मूल्यहीनता में वृद्धि हुई है – हाँ / नहीं

49. (a) कारण – ....

50. वैश्वीकरण के कारण भौतिकवाद को बढ़ावा मिला है – हाँ / नहीं

50. (a) प्रकार – ....

51. वैश्वीकरण के कारण ग्रामीण लघु एवं कुटीर उद्योग–धन्धें नष्ट हो रहे हैं – हाँ / नहीं

52. वैश्वीकरण के प्रभाव से गरीब एवं निम्न आय वर्ग पर क्या प्रभाव पड़े हैं ?

....

53. वैश्वीकरण ने आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया है। आप इस मत से – सहमत है/असहमत है/तटस्थ है...

53. (a) कारण – ....

54. वैश्वीकरण के प्रभाव से कृषकों की स्थिति दयनीय हुई है – हाँ / नहीं

54. (a) कारण – ....

55. वैश्वीकरण से मीणा जनजाति पर पड़ रहे आर्थिक परिणामों को बताइये।

....

....

वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के राजनीतिक जीवन पर प्रभाव –

56. वैश्वीकरण के कारण परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन आया है – हाँ / नहीं

56. (a) यदि हाँ तो कारण

....

57. वैश्वीकरण के कारण राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है – हाँ / नहीं

57. (a) यदि हाँ तो किस प्रकार / नहीं तो कारण –

....

58. वैश्वीकरण के प्रभाव से युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है – हाँ / नहीं

58. (a) यदि हाँ तो किस प्रकार ?

....

59. वैश्वीकरण से मतदान के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है – हाँ / नहीं

60. मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक / कारण कौन–कौन से हैं ?

....

61. वैश्वीकरण ने जातिगत राजनीति को प्रभावित किया है – हाँ / नहीं

61. (a) यदि हाँ तो किस प्रकार ?

....

61. (b) यदि नहीं तो किस प्रकार ?

....

62. वैश्वीकरण ने राजनीतिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

....

63. वैश्वीकरण के कारण कौन–कौन से परिवर्तन आये हैं ?

....

मीणा महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति पर प्रभाव

64. मीणा समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति कैसी हैं ?
अच्छी है / सामान्य है / खराब है.........................

65. वैश्वीकरण के कारण महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी है– हाँ / नहीं

65. (a) कारण– ....

66. वैश्वीकरण की प्रक्रिया से महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला है– हाँ / नहीं

66. (a) कारण – ....

67. वैश्वीकरण के कारण महिलाओं के पहनावें पर प्रभाव पडा है– हाँ / नहीं

67. (a) हाँ तो किस प्रकार–..

68. वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं की सामाजिक कुरीतियों को प्रभावित किया है– हाँ / नहीं

68. (a) कारण – ....

69. वैश्वीकरण के कारण महिलाओं के विधवा पुनर्विवाह प्रथा पर प्रभाव पडा है– हाँ / नहीं

69. (a) कारण ....

70. महिलाओं के विवाह की आयु में क्या परिवर्तन आया–
प्रथम पीढ़ी (दादी) / द्वितीय पीढ़ी (माता) / स्वयं ....

71. महिला शिक्षा के समाज पर प्रभाव बताइयें ....

72. वैश्वीकरण के कारण महिलाओं की दहेज प्रथा पर प्रभाव पडा है– हाँ / नहीं

72. (a) कारण ....

73. वैश्वीकरण के कारण मीणा महिलाओं की प्रर्दा–प्रथा पर प्रभाव पडा है– हाँ / नहीं

73. (a) कारण ....

74. वैश्वीकरण के कारण महिलाओं की तलाक प्रथा पर प्रभाव पडा है– हाँ / नहीं

74. (a) कारण..

75. वैश्वीकरण के कारण महिलाओं के लैंगिक भेद–भाव पर प्रभाव पडा है– हाँ / नहीं

75. (a) कारण..

76. मीणा महिलाओं के परम्परागत व्यावसाय कौन–कौन से थे?
कृषि / पशुपालन / घरेलू कार्य / कुटीर उद्योग / एक से अधिक.........................

77. मीणा महिलाओं के नवीन व्यवसाय के प्रकार कौन–कौन से हैं?

....

78. वैश्वीकरण के कारण महिलाओं का नौकरी की तरफ रूझान बढ़ा – हाँ / नहीं

78 (a) कारण...

79. क्या महिलाओं को रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण मिलना चाहिए–हाँ / नहीं

79 (a) कारण ....

80. वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजाति की महिलाएँ नवीन व्यावसाय की ओर प्रवृत्त हुई है – हाँ / नहीं

80. (a) कारण...

81. वैश्वीकरण ने महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित किया है– उचित / अनुचित

81 (a) कारण ....

82. वैश्वीकरण के कारण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि में हुई है– हाँ / नहीं

82. (a) हाँ तो किस प्रकार...

83. महिलाओं के लिए राजनीति में आरक्षण से उनकी स्थिति में किस प्रकार परिवर्तन आया – हाँ / नहीं

83. (a) हाँ तो किस प्रकार ....

84. वैश्वीकरण के मीणा जनजाति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव बताइये –

....

....

85 वैश्वीकरण के मीणा जनजाति के विकास पर नकारात्मक प्रभाव बताइये –

....

....

86. अन्य –

....

87 सुझाव –

....

प्रकाशित

शोध पत्र

शोध–पत्र

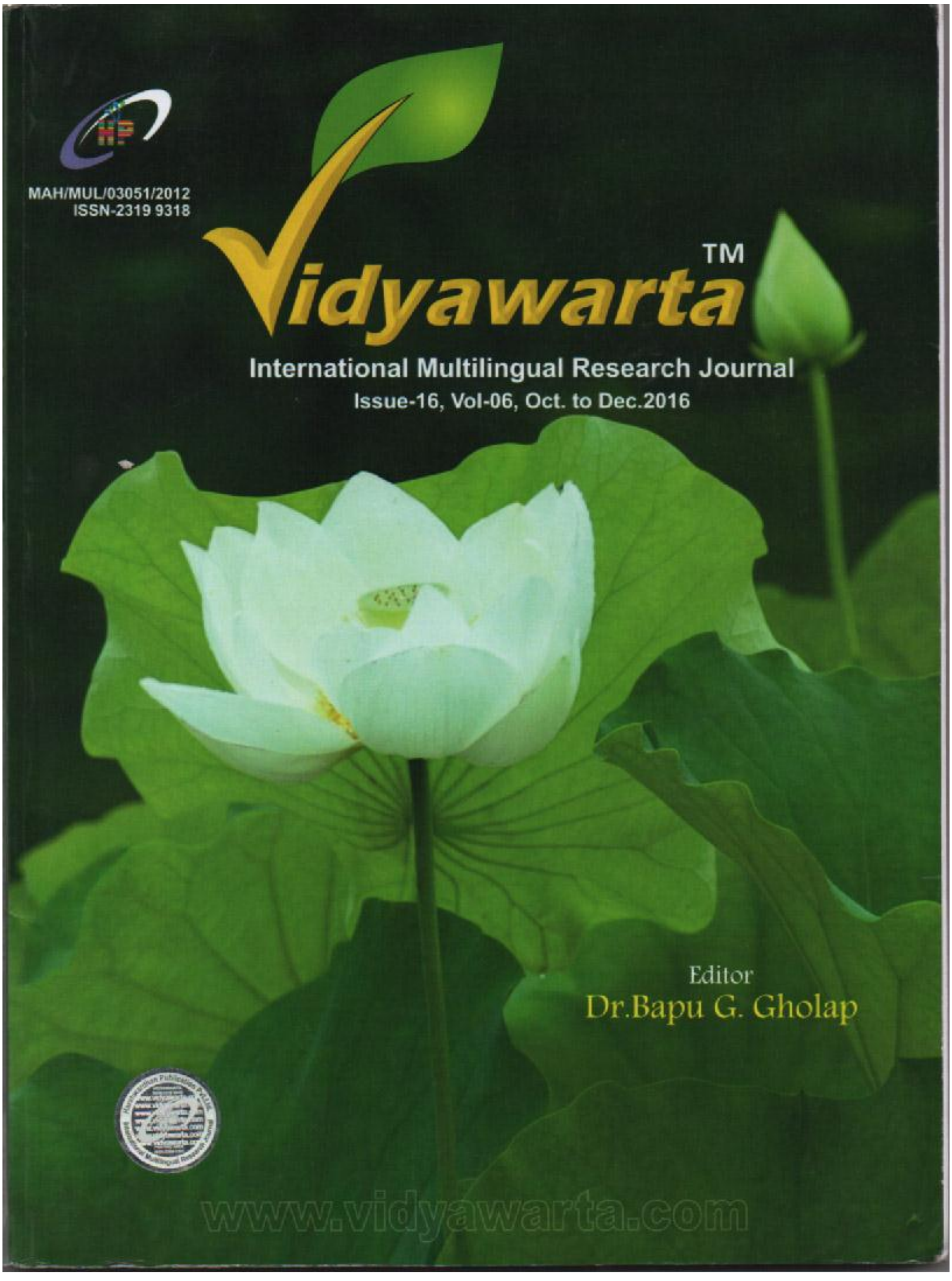
MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318
Vidyawarta™
International Multilingual Research Journal
Issue-16, Vol-06, Oct. to Dec.2016
Editor
Dr.Bapu G. Gholap
www.vidyawarta.com

INDEX

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal _ http://www.vidyawarta.blogspot.com

16) Decision Support System using data mining in Farming
M. D. Acharya || 72

17) Housing Insurance in India An Analysis
Kiran Kumar P.-Dr. Ravindra Kumar B., Karnataka State. || 76

18) ECONOMIC IMAPCT OF TOURISM ON MAHARASHTRA
Dr. Ravikumar Sadashiv Naik, Kolhapur. || 82

19) महाराष्ट्रातील पर्जन्यमान व जल सिंचन महत्त्व आणि समस्यांचा: अभ्यास
डॉ. बी. ए. पाटील, केज || 86

20) साहित्य व शिक्षणप्रेमी यशवंत
सिंधू नामदेवराव राठोड-डॉ. पंढरीनाथ नारायण धोंडगे ||90

21) खाजगीकरण आणि रोजगाराचा सहसंबंध : एक अभ्यास
डॉ. नजीर जब्बार शेख-कनकुटे प्रविण ग्यानोजी || 92

22) मराठी माध्यमिक शाळातील अभ्यासक्रमांतून विद्यार्थ्यांमध्ये जीवन कौशल्यांचा विकास..
डॉ. स्नेहल दोंदे-श्रीमती. काळे जे. आर || 96

23) आर्थिक विकास और बदलते आर्थिक संकेतक व्यापार, विदेशी मुद्रा भण्डार तथा पूंजी....
नरेन्द्र कुमार हनोते, भोपाल, मध्यप्रदेश || 102

24) भारतातील धार्मीक विविधतेचा भौगोलिक अभ्यास
प्रफुल्ल बाबुराव गायकवाड–मनेष गंगाराम खटावे, नांदेड || 106

25) प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना:शिक्षक प्रशिक्षुकों की जागरुकता
तृप्ति अग्रवाल—डा० एस० के० लखेड़ा, श्रीनगर (गढ़वाल) || 111

26) अमेरीका की विदेश नीति व सैनिक औद्योगिक तन्त्र
डॉ० दीर्घपाल सिंह भण्डारी, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड || 117

27) वैश्वीकरण से जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन
बद्रीलाल मीना, कोटा, राजस्थान || 121

28) चंद्रकांन्ता के कथा साहित्य मे धार्मिकता
शिंदे सतीश बन्सी, औरंगाबाद. || 126

29) धुमाकोट विधानसभा उपचुनाव २००७.मतदान व्यवहार का अध्ययन, उत्तराखण्ड के परिपेक्ष्य में
डॉ० प्रकाश चन्द्र, खटीमा जिला ऊ०सिं०नगर उत्तराखण्ड || 127

30) उत्तर प्रदेश के प्रमुख क्रान्तिकारी:एक अवलोकन
डॉ० (श्रीमती) रचना सिंह, इन्दिरानगर देहरादून || 132

27

वैश्वीकरण से जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन

बद्रीलाल मीना
शोधार्थी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान

****

वैश्वीकरण वह वृहत प्रक्रिया है जिसने सम्पूर्ण विश्व के समाजों के मध्य सामाजिक सम्बन्धो एवं उनकी अंतर्निभरता को प्रारम्भ किया। वैश्वीकरण एक नया प्ररिप्रेक्ष्य देता है कि हम दुनिया के अन्य समाजों के साथ कैसे सम्बन्ध रखें। विश्व के किसी भी क्षेत्र की समस्याएं हमारे जीवन को प्रभावित कर सकती है। अतः वैश्वीकरण ऐसे नये विश्व परिदृश्य को स्थापित करता है जिसमें आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि सभी संस्थागत क्षेत्रो में तीव्र बदलाव दिखाई देता है। राष्ट्र—राज्य इकाइयां इस प्रक्रिया में कमजोर पड़ रही है तथा राष्ट्रों की अंतनिर्भरता बढ़ रही है।

लगभग गत तीन दशकों से प्रचलन में आया 'वैष्वीकरण' शब्द आज पूरे विश्व में एक ऐसी आंधी है जिसने आधुनिकता एवं उत्तर—आधुनिकता को भी मात दे दी है। प्रारम्भ में आर्थिक संदर्भ में प्रयुक्त वैश्वीकरण की अवधारणा एल.पी.जी अर्थात् उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण का अंतिम तथा महत्वपूर्ण भाग बनी थी। बाद मे जल्दी ही वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने अपना स्वायत्त रूप ऐसा बनाया कि उसकी दखल ने राजनीति, संस्कृति, समाज, तकनीकी, सूचना—तकीनकी, संचार— मीडिया, धर्म—संसार आदि को प्रभावित किया तथा इन सभी से वैश्वीकरण की प्रक्रिया भी प्रभावित होने लगी। अब तो सर्वत्र विश्व गॉव, विश्व शहर, विश्व दृष्टि, विश्व दिवस, विश्व बाजार आदि अनेक संदर्भ है जिनमें 'विश्व' विश्लेषण लगाने से वैश्वीकरण की प्रक्रिया का परिणाम परिलक्षित होता है। पूरा संसार ही उत्पादक एवं उपभोक्ता बनता

हुआ प्रतीत होता है।

मेलकॉम वाटर्स (१९९८) के अनुसार वैश्वीकरण की परिभाषा भी अधरझूल में है। लोग इसका बड़ा चलता–फिरता अर्थ निकालते है। वस्तुत: वह जो सभी जगह उपलब्ध है, वैश्विक है। अगर दो पहियों वाली साइकिल दुनिया भर में मिलती है तो यह वैश्विक है। अकादमिक क्षेत्र में भी इस अवधारणा ने कई उतार–चढ़ाव देखें हैं। रोबर्टसन (१९९२) ने सबसे पहली बार इस अवधरणा को समाजशास्त्र में स्थापित किया। उन्हें इसका जनक कहा जा सकता है।

वाटर्स (१९९८) का मानना है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया में राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय अन्त: क्रियाओं का पर्याप्त समावेश होता है। इस प्रक्रिया में भौगोलिक राष्ट्रीय सीमाओं का दबाव और बंधन धूमिल हो जाता है।

भारतीय समाज एवं वैश्वीकरण

भारत में वैश्वीकरण का प्रारम्भ १९९१ ई. में हुआ। अमित भादुड़ी और दीपक नैयर (१९९६) ने वैश्वीकरण के भारत में आने के कारणों का सटीक विवरण दिया है। उनका तर्क है कि १९८० से लेकर १९९० तक देश में राजस्व आय की तुलना में खर्च अधिक हो गया और हम विदेशी कर्ज को चुकाने मे असफल रहे। दूसरी ओर इन लेखकों का यह भी कहना है कि यहाँ निर्यात की तुलना में आयात बढ़ गया। तब नरसिम्हा राव भारत के प्रधान मंत्री थे और मनमोहन सिंह वित्त मंत्री। यह नये आर्थिक युग का सूत्रपात था। इसमें राज्यों को यह अधिकार मिल गया कि केन्द्रीय योजना अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत वे अपनी वित्तीय स्थिति परिवर्तन कर सकें। इस व्यवस्था में सुधार या खराबी के लिये राज्य ही उत्तरदायी हैं। यह नई व्यवस्था इस भांति नियन्त्रण अर्थव्यवस्था से संघीय अर्थव्यवस्था में बदल गई जिसके कुछ महत्वपूर्ण आयाम है–

आर्थिक वैश्वीकरण

करोड़ों लोगों का दैनिक जीवन दयनीय हो गया है। अगर इस देश में वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण आये हैं तो इसके पीछे जो आर्थिक सिद्वान्त हैं उन्हें आम आदमी नही जानता। लेकिन वह अवश्य जानता है कि सरकार की राजनीति और अर्थनीति ने उसके सामने गहन संकट पैदा कर दिये हैं। इस पर अर्थशास्त्रियों ने अधिकृत रूप से बहुत कुछ लिखा है। भारत के इस आर्थिक वैश्वीकरण के पीछे कुछ कारक महत्वपूर्ण रहे हैं।

बाहरी कर्ज का संकट

हमने विदेशों से जो कर्ज लिया था, उसका भुगतान समय पर नहीं हो सका। बाकी किश्तों का अम्बार लग गया। वास्तविकता यह थी कि १९८० से हम बराबर घाटे के बजट पर चल रहे थे। केन्द्रीय राजस्व की जो आय होती थी, वह कर्ज की तुलना में बहुत कम थी। परिणामस्वरूप हम विदेशों से लिये गये कर्ज की किश्तों को चुकाने में असफल रहे। इधर देश ने कतिपय आंतरिक संगठनों से भी कर्ज ले रखा था।

कर्ज की रकम का भरपूर उपयोग नहीं

हमने कर्ज लेकर इसका प्रयोग उत्पादन के लिये नही किया। दक्षिण कोरिया का दृष्टान्त हमारे सामने है। इस छोटे से देश ने करोड़ो डालर का कर्ज लिया लेकिन इसने इसका प्रयोग पूर्ण रूप से उत्पादन में किया और परिणामस्वरूप इस देश ने उद्यमिता को बड़ी ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया। हमने ऐसा कुछ नहीं किया। कर्ज के धन को हमने वाह–वाही लूटने के लिये लोकप्रिय कार्यो पर लगा दिया।

अल्पावधि कर्ज

हमने बाहरी देशों से कर्ज लिया उसका प्रयोग सब्सिडी अर्थात आर्थिक सहायता के रूप में किया। यह अल्पावधि कर्ज है। इस कर्ज का प्रयोग हमने पेट्रोल, खाद, खाने के तेल आदि के आयात पर किया। ऐसी अवस्था में हमें अल्पावधि कर्ज विकल्प रूप में नहीं लेने चाहिये थे। १९९१ में वैश्वीकरण लाये जाने के कारण अकस्मात् उत्पन्न नहीं हुए थे। इसकी व्याख्या करते हुए भादुड़ी और नैयर लिखते हैं 'अर्थव्यवस्था की समस्याएं जो १९९१ में संकट की अवस्था में पहुँच गई, किसी दुर्घटना के कारण नहीं थीं। पिछले कई वर्षो से हम

अपनी रणनीति में लापरवाही बरत रहे थे, अपनी सुविधा की अर्थवयवस्था चला रहे थे और तब संकट हमारे सिर पर आ ही गया।'

उधारदाताओं के विश्वास में कमी

भारत ने कर्ज लिये थे, कर्ज भी कई तरह के थे, फिर भी सब कुछ ठीक–ठाक ही चल रहा था। इधर देश का आंतरिक संकट गहरा गया। केवल चार महीने की अवधि में नवम्बर, १९९० से मार्च, १९९१ तक दो बार केन्द्र में सरकारें गिर गई। फरवरी, १९९१ में केन्द्रीय बजट संसद में पेश नही किया जा सका और भी कुछ ऐसी घटनाएं घटी जिनके कारण उधारदाताओ का भरोसा हम से हट गया। हमारी उधारी को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा। अब यह सम्भव नहीं रहा कि हमारे अल्पावधि के कर्ज को आगे बढ़ाया जा सके। हमारी सारी कोषिषें नाकामयाब रहीं, न तो आगे कर्ज लेना हमारे लिये सम्भव रहा और न कर्ज की किश्त चुकाने की अवधि बढ़ाई जा सकी।

ढाँचागत अनुकूलन

हमारे देष में वैश्वीकरण ढाँचागत अनुकूलन के माध्यम से आया। जैसा कि अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोश और विश्व बैंक के काम करने का तरीका है उन्होंने भारत को स्थायीकरण का विकल्प दिया। अर्थशास्त्र में भी स्थायीकरण का वही मतलब होता है जो चिकित्साशास्त्र में। जिस तरह किसी मरीज की संकटपूर्ण अवस्था में चिकित्सक उसके स्वास्थ्य को स्थायी अवस्था में लाने का प्रयास करता है, वैसे ही अर्थशास्त्र में भी अर्थव्यवस्था को स्थायी बनाने की कोशिश की जाती है। यह स्थायीकरण तब किया जाता है जब अर्थव्यवस्था संकट के दौर से गुजर रही होती है। आर्थिक स्थायीकरण के किसी भी कार्यक्रम के दो बुनियादी उसूल होते हैं। एक तो ये भुगतान कि रकम जिसका चुकारा बाकी होता है, उसे डुबने नही दिया जाये और दूसरा यह कि मुद्रास्फीर्ति को रोक दिया जाये इस तरह के स्थायीकरण में कर्ज को चुकाना और मुद्रास्फीर्ति को तो समस्या समझा गया लेकिन इस तथ्य पर कोई ध्यान नहीं दिया गया कि इससे गरीबी बढ़ जायेगी और लाखों लोग बेरोजगारी के शिकार हो जायेंगे।

अब इस नीति के परिणामस्वरूप देश में उदारवाद और निजीकरण आये। सामान्य अर्थो में उदारवाद का मतलब आयात और निर्यात के नियमों में छूट। वैश्वीकरण से पहले हमारे यहाँ आयात पर बहुत बड़ा टैक्स देना पड़ता था। ऐसी कुछ पाबन्दियाँ निर्यात में भी थीं। अब ये सब नियम बहुत उदार बना दिये गये। उदारीकरण की नीति के अन्तर्गत विदेशी निवेश में छूट भी होती है।

भादुड़ी और नैयर (१९९६) ने भारतीय वैश्वीकरण की व्याख्या तीन तत्वों से की है। वे कहते है कि इस प्रक्रिया में सबसे बड़ा तत्व व्यापार का है, दूसरा निवेश का और तीसरा वित्त का। इस प्रक्रिया द्वारा अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोश और विश्व बैंक यह चाहते हैं कि यहाँ नई तकनीकी, सूचनाओं और सेवाओं का विस्तार हो।

वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण ने स्थानीय धन्धो और स्वदेशी उत्पादन को बड़ी ठेस पहुँचाई। हमारे यहाँ उत्तर–आधुनिक समाज का सूचना समाज अभी ठीक से विकसित नहीं हुआ है, तकनीकी तंत्र का ज्ञान भी अभी बहुत पिछड़ा हुआ है। हम दुनिया के विकसित देशों के बाजार में ठीक से प्रतियोगिता नहीं कर सकते। हमारा माल इस बाजार में टक्कर नहीं ले सकता। परिणामस्वरूप हमारे ही स्थानीय बाजार में हम उत्पादन नहीं बेच पाते। हमारे स्थानीय कारखाने एक के बाद एक बन्द होने लगे है। मन्दी जान लेवा हो गई है। बेरोजगारी आसमान को छू गई है। भारतीय सन्दर्भ में आर्थिक वैश्वीकरण का अर्थ उदारीकरण, निजीकरण, व्यापार, निवेश, आयात और निर्यात से लिया जाता है।

हमें अन्तरराष्ट्रीय दबाव में आकर अपने कर्ज को अदा करने के लिये अपनी अर्थव्यवस्था में ढाँचागत परिवर्तन करना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप जो नई अर्थव्यवस्था आई उसे हम अवधारणात्मक रूप में क्या नाम देंगे? इस अर्थव्यवस्था की पहचान क्या है?

वैश्वीकरण का जनजातीय समाज पर प्रभाव

समाज के पिछड़े एवं कमजोर वर्गो, विशेषकर

जनजातीय समाज पर वैश्वीकरण ने सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना को किस प्रकार से प्रभावित किया है, इसका विश्लेषण आवश्यक है। इनके परिणाम दो प्रकार से देखे जा सकते हैं– सकारात्मक एवं नकारात्मक। पहले हम सकारात्मक परिणामों की ओर अपनी व्याख्या को आगे बढ़ाते हैं। ऐसी वैश्विक परिस्थितियाँ उदारीकरण, निजीकरण एवं भूमण्डलीकरण की बनी हैं। कि कमजोर वर्गों को केवल आंशिक आर्थिक लाभ ही मिल पाये हैं। इनके आर्थिक हितों कि तुलना में इनकी सामाजिक एव सांस्कृतिक परिस्थितियों में गुणात्मक सुधार हुआ है। राष्ट्र की मुख्य धारा में सम्मिलित होने तथा सर्व शिक्षा अभियान, खुली प्रतिस्पर्धा व उच्च शिक्षा कि विविध आयामों में आरक्षित लाभ मिलने के कारण इनकी जीवनशैली, सामाजिक परिवेश आदि में बदलाव आया है। राजनीतिक सत्ता मे भागीदारी बढ़ी है। तथा कमजोर वर्गों के लोग आज आरक्षण या संरक्षण कि नीतियों से लाभ लेकर मंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति एवं उच्चाधिकारी के पद तक पहुँचे है। अत: इनमें अपनी सामाजिक स्थिति कि वास्तविकता कि प्रति वर्ग–चेतना तथा अपने मानवाधिकारों के प्रति संघर्ष करने का संकल्प देखने को मिलता है। पूर्व में सभी अनुसूचित जातियां एवं जनजातियां अलग–अलग समूहो/समुदायों मे विभाजित थीं तथा सभी को पृथक्करण, छुआछूत, शोषण उत्पीड़न आदि का शिकार होना पड़ता था। कोई सामान्य मंच उनकी आवाज उठाने के लिए तैयार नहीं था। आज वैश्वीकरण के प्रभाव से विश्व स्तर पर इनके लिए अधिकारों कि मांग करने तथा इनको मनाने के लिए दबाव इस प्रकार बढ़ाया जाता है कि वे सामान्य जाति, संघों, परिषदों आदि के रूप मे संगठित होकर अपनी मांगे मनवाने में भी सफल हो जाते है। विश्व स्तर पर प्रजातीय भेदभाव एवं काले गोरे कि रंग भेद नीति की तर्ज पर ही भारत में जातीय भेदभाव, उत्पीड़न, शोषण, पृथक्करण जैसी समस्याओं के प्रति सभी दलितों को लामबंद होते हुए देखा जा सकता है।

वैश्वीकरण कि जनसंचार क्रान्ति, मोबाइल फोन, सूचना–प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के नये अवसरों ने जनजातीय समाज को अपनी सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को बदलने के नये आधार प्रदान किये है। परिणामस्वरूप इनमें सामाजिक गतिशीलता का ऊर्ध्वमुखी स्वरूप स्पष्ट देखने को मिलता है। अर्थात इनकी सामाजिक परिस्थिति एवं भूमिकाएं जो पहले निम्न स्तर की होती थीं, अब मध्यम एवं उच्च स्तर कि प्रतिष्ठा, शक्ति एवं क्षमता से युक्त हो गई है। जनजातीय समाज के लोग अपने परम्परागत व्यवसायों को छोड़कर नये व्यवसाय एवं नौकरी में सम्मिलित होकर उन्नति के पद पर आगे बढे हैं। जो लोग अभी भी नये अवसरों का लाभ नही ले पाये है, वे सामाजिक आन्दोलनो के माध्यम से अपनी आवाज संगठित करके आगे आने के उपक्रम कर रहे हैं। इसके साथ ही कमजोर वर्गो के सामाजिक स्तर पर विशमताओं में भी कमी आई है। वर्तमान में एक नवमध्यम वर्ग उभरा है जो पहले अस्तित्व में ही नही था। इनमें अखिल भारतीय स्तर पर आने–जाने तथा सम्पर्क–संचार के आसार बढ़ने से सामाजिक संगठन को षक्ति मिली है। वैश्वीकरण की आर्थिक नीतियों ने जनजातीय समाज को प्रभावित किया है, जिनसे उनका जीवन भी सुगम एवं सुविधा भोगी हुआ है। कई इलोक्ट्रोनिक साज–सामान एवं नवीन सेवाये कम दाम पर इन लोगो को उपलब्ध होने लगी है। इनके उत्पादों स्वनिर्मित वस्तुओं एवं कलात्मक उत्पादों को विश्व बाजार मे भी स्थान मिला है। तथा पर्यटन उद्योग के बढ़ने से इनकी बिक्री में भी बढ़ोतरी हुई है।

वैश्वीकरण की आर्थिक नीतियों से भारत में एक ऐसा नव–धनाढ्य वर्ग उभरा है जिसमें सवर्ण जातियां विशेषकर वैश्य जाति के लोग ही सम्मिलित है। इन लोगों ने नई आयात–निर्यात नीति एवं उदारीकरण तथा निजीकरण का लाभ अपने हक में ही अधिक उठाया है। जनजातीय समाज में ऐसा नव धनाढ्य वर्ग नही उभर पाया तथा अधिकांश लोगों का आज भी आर्थिक शोषण हो रहा है। यद्यपि मजदूरी के अवसर बढ़े हैं किन्तु

जनसंख्या वृद्धि के मुकाबले ये अवसर कम है।

साक्षरता एवं प्रारंभिक शिक्षा का स्तर तो जनजातीय समाज में भी बहुत बड़ा है किन्तु उच्च शिक्षा, व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा का आज भी प्रसार बहुत ही कम होने से इन वर्गो को वैश्वीकरण का आर्थिक लाभ पूरा नहीं मिल पा रहा है। आज शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में निजीकरण हो जाने से ये सेवायें महंगी हुई है जो कि कमजोर वर्गो की पहुँच के बाहर है। आरक्षण कि नीतियो का केवल कुछ ही लोग लाभ उठा पाते है नये—नये निजी विश्वविद्यालयों तकनीकी एवं व्यावसायिक महाविद्यालयों का प्रबन्धन एवं संचालन नव—धनाढ्य वर्गो के हाथों में होने से इनका लाभ भी उन्हीं को पहुँचता है तथा कमजोर वर्गो के लोग तो इनकी पहुँच से बाहर ही रह जाते हैं।

जो सांस्कृतिक एवं सामाजिक अवसर जनजातीय समाज के लिये वैश्वीकरण से बढ़े है। वे भी उन्हें केवल सीमान्त स्थिति तक ही पहुँचाते है उनका निर्वाह हो सके उतनी आमदनी नये अवसरों से मिलती है। वास्तविक लाभ तो वे बिचौलिये, व्यापारी या ऐजेन्ट कमा ले जाते है जो प्राय: सवर्ण जातियों के ही होते है। क्योंकि उन्हीं के पास पूंजी निवेश के साधन होते हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृति एवं कर्ज के आधार पर जीवन—शैली चलाने की नई प्रवृति ने जनजातीय समाज में भी असंतोष एवं व्यक्तिवादी स्वार्थ की भावना को बढ़ावा दिया है। उनमें भी सामुदायिक भावना का क्षय हुआ है।

संविदा पद्धति सामाजिक सेवाओं के प्रारंभ हो जाने से जनजातीय समाज को केवल निर्वाह वेतन देकर उनका शोषण किया जाता है। हर समय उनकी नौकरी छिन जाने का खतरा बना रहता है।

विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र की नीतियों को भी वैश्वीकरण की नई आर्थिक दशा माना जाता है। भारत में इनके अपनाये जाने से यद्यपि सभी वर्गो को अधिक रोजगार एवं आर्थिक गतिविधियां तथा सम्पन्नता के नये अवसर मिलने की बात की जाती है किन्तु इसके लाभ भी किसानों, मजदूरों एवं कमजोर वर्गो के लोगों को उस अनुपात में नहीं पहुँचते जिनके वे हकदार होते है।

उपरोक्त विश्लेषण से यह तो स्पष्ट हो ही जाना चाहिये कि वैश्वीकरण पूंजीपतियों, नव—धनाढ्य वर्गो एवं सवर्ण जातियों के लोगो के लिये अधिक लाभकारी एवं सकारात्मक साबित हुआ है। क्योंकि शैक्षिक अवसर, रोजगार, आर्थिक संसाधनों में वृद्धि, सामाजिक कुरीतियाँ एवं सामाजिक असमानता समाप्त हुई, राजनीतिक क्षेत्र में भागीदारी एवं अधिकारो के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

जनजातीय समाज के लोगों को यद्यपि इसके कुछ लाभ अवश्य हुए हैं, किन्तु तुलनात्मक वंचनाओ में अभी भी कमी नहीं हुई है — जैसे परम्परागत मूल्यों का हास एवं भौतिकवादी समाज हो गया। जिससें जनजातीय समाज अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को भूल गया है। कूटीर उद्योग धंधो पर कुठाराघात हुआ है।

References

Bhaduri, Amit and Nayyar, Deepak, (1996). The Intelligent Person's Guide to Libralization. New Delhi: Penguin

Robertson, Ronald,(1992) Globalization: Social Theory and Global Culture. London: Sage.

Waters , Malcolm, (1998) Globalization. London: Routledge.

Yogendra Singh, (2000) Culture Change in India, Rawat, Jaipur.

□□□

ABEER

A Journal of International Research

R.N.I. No. RAJBIL/36886/2011 I.S.S.N. No. 2249-3409 October-December 2016

ABEER

Chief Editor
DR. PRAVESH KUMAR

22.	कृषि में आधुनिकीकरण एवं पर्यावरण प्रबन्धन	सुमित्रा	130-134
23.	दक्षिण-पूर्वी राजस्थान की राजनैतिक चेतना में भीलों का योगदान	डॉ. अलका शुक्ला	135-139
24.	शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैली पर प्रभाव	डॉ. अलका पारीक	140-143
25.	मादक पदार्थों का सेवन करने वाले तथा नहीं करने वाले अभिभावकों के बालकों के (उच्च माध्यमिक स्तर के) आत्म-सम्बोध पर पड़न वाले प्रभावों का अध्ययन	डॉ. विजयलक्ष्मी शर्मा डॉ. सुमन चौधरी	144-151
26.	भाषा माध्यम का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व उनके आत्मविश्वास स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	डॉ. रेखा शर्मा	152-156
27.	जनसंचार, जन-माध्यम और पत्रकारिता	आराधना सक्सेना	157-164
28.	भारत के शैक्षणिक इतिहास में अलगाववादी तत्वों का प्रभाव	डॉ. सीमा सिंह	165-168
29.	भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का महत्व	आशा देवी शर्मा	169-172
30.	भारत में ग्रामीण विकास की दिशा : एक विश्लेषण	विक्रम मीणा	173-179
31.	रामकथा आधारित उपन्यासों का समाजशास्त्रीय विवेचन	ज्ञानप्रकाश मेहरा	180-187
32.	भारतीय संस्कृति में पर्यावरण दर्शन	डॉ. रीतिका जैन	188-190
33.	श्रुतिमण्डल एक परिचय	डॉ. प्रीति माथुर	191-196
34.	राजस्थान में पर्यटन विकास एवं सम्भावनाएँ	डॉ. मान सिंह पीयूष कुमार	197-202
35.	जॉन ड्यूवी के शैक्षिक विचारों की उपादेयता	डॉ. सरोजनी उपाध्याय मोनिका शर्मा	203-205
36.	रचनात्मकता एक परिचय (विशेष संदर्भ जनजाति)	डॉ. निधि मीना	206-208
37.	राजस्थान की पृष्ठभूमि में मीणा जनजाति का विकास	डॉ. मनोज वर्मा	209-211
38.	मार्कण्डेय की कहानियों में सांस्कृतिक जीवन : एक झलक	ममता मीणा	212-217
39.	कृषि उत्पादन की बढ़ोतरी में वैज्ञानिक तकनीकों का योगदान	मनोहर लाल जाट	218-226
40.	वर्तमान युग और गाँधीवादी आर्थिक विचारधारा : एक विवेचन	चन्द्रकला	227-232
41.	जलवायु परिवर्तन का कृषि पर प्रभाव	भंवर लाल	233-241
42.	मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति : वर्तमान संदर्भ में	बद्री लाल मीणा	242-248
43.	वैवाहिक जीवन में अपेक्षाएँ व सन्तोष : हिन्दू धर्म के विशेष संदर्भ में	सुनिता कुमारी	249-254

मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति : वर्तमान संदर्भ में

– बद्री लाल मीणा

जनजातीय समाज का अपना एक संसार रहा है। राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय हलचलों से दूर जंगलों और पहाड़ों पर निवास करने वाले लोग, जिन्हें नगरों, महानगरों, की सभ्यता और संस्कृति एक लम्बे समय तक छू भी नहीं पाई। जनजातीय समाजों में स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति मातृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में ठीक थी, क्योंकि महिला परिवार का सर्वपरि मुखिया होती थी। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था आई तो महिला की स्थिति में परिवर्तन हुआ, जिसके कारण महिला की स्थिति दोयम दर्जे की हो गयी। मुगल काल एवं ब्रिटिश काल में भी जनजातीय महिलाओं की स्थिति पर कोई ध्यान नहीं दिया गया जिसके कारण उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति कमजोर ही रही है। अर्थात् हजारों वर्षों का कालखण्ड जनजातीय महिलाओं के लिये अन्धकारमय युग रहा है।[1]

हिन्दु समाज की जातियों के कुप्रभाव जैसे पर्दा–प्रथा, बाल–विवाह, दहेज–प्रथा, छुआछूत, आदि से जनजातीय समाज की महिलायें प्रभावित हुई है।"[2] इसी सन्दर्भ में मीणा जनजातीय समाज की महिलायें भी बाह्य संस्कृति के सम्पर्क में आने के कारण इनकी समाजिक स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है। क्योंकि मीणा समाज में भी अनेक सामाजिक समस्यायें जैसे गरीबी, बेरोजगारी, ऋणग्रस्थता, साथ ही सामाजिक कुरीतियाँ जैसे सती–प्रथा, बाल–विवाह, दहेज–प्रथा, नाता–प्रथा, छुआछूत आदि व्याप्त थी, जिसके कारण मीणा समाज की महिलायें नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई है। "इस अंधकार में रोशनी का उजाला भारत के स्वतंत्र होने पर आया। देश की बुनियादी ढाँचे में परिवर्तन नियोजित ढंग से किये जाने लगे और पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से पिछड़ी, दलित, शोषित और जनजातीयों के कल्याण के लिए समयबद्ध कार्यक्रम सरकार ने बनाए। इसी प्रकार जनजातीय समाज की स्त्रियों के लिए सरकार ने अनेक प्रकार की योजनाऐं और कार्यक्रम चलायें, जिससे वे उन्नति और प्रगति कर सकें, वे शिक्षित और स्वावलम्बी बन सकें। जनजातीय समाज के बदलाव में नगरीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण की भूमिका का महत्त्वपूर्ण स्थान है।"[3] आज मीणा जनजातीय समाज में शिक्षा के स्तर में वृद्धि होने के कारण समाज में महिलाओं की सोच में बदलाव आया और पुरूषों में भी महिलाओं के प्रति सकारात्मक सोच में वृद्धि हुई। जिससे मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हुआ इसलिए यह कहा जा सकता है की पूर्व में जो स्थिति महिलाओं की थी, वर्तमान में इनकी स्थिति में परिवर्तन हो गया। प्रस्तुत लेख में मीणा महिलाओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति में क्या परिवर्तन आया अर्थात अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं की क्या भागीदारी रही, आदि पक्षों का अध्ययन किया गया है।

तालिका संख्या 1.1

क्र. सं.	महिलाओं की स्थिति	महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1.	अच्छी है	75(50.00)	75(50.00)
2.	सामान्य है	65(43.33)	65(43.33)
3.	खराब है	10(06.67)	10(06.67)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

उपरोक्त तालिका संख्या 5.1 से स्पष्ट होता है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 75 महिला उत्तरदाता मानती है कि परिवार में महिलाओं की स्थिति अच्छी है जिनका प्रतिशत 50.00 है, जो सर्वाधिक संख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं 65 महिला उत्तरदाता मानती है कि मीणा समाज में महिलाओं की स्थिति सामान्य है जिनका प्रतिशत 43.33 है, जबकि 10(6.67) महिला उत्तरदाता मानती है कि समाज में महिलाओं की स्थिति खराब है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि मीणा जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति वर्तमान में अच्छी है। अर्थात ग्रामीण स्तर पर भी महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। लेकिन कुछ महिला उत्तरदाता ऐसी भी है जो महिलाओं की खराब स्थिति का आंकलन करती है।

महिलाओं पर शिक्षा का प्रभाव–

"पहले केवल पुरूष को ही शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था। स्त्री को इस अधिकार से वंचित रखा गया। लेकिन वैश्वीकरण के कारण विचारों में परिवर्तन हुआ, एक समाज के लोगों ने दूसरे स्थान पर जाकर कुछ अपने विचारों से, अपनी संस्कृति से उस स्थान के लोगों को प्रभावित किया तथा कुछ उनसे ग्रहण भी किया। भारतीय समाज में जहाँ स्त्रियों का घर से निकलना बन्द था। वहीं पाश्चात्य देशों की महिलाओं को पुरूष के समान ही शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था। पाश्चात्य महिलाओं को पुरूषों के समान ही स्वतन्त्रता पूर्वक अपने विचारों को प्रकट करने का अधिकार था। इससे प्रभावित होकर भारतीय महिलाओं को भी संविधान द्वारा पुरूष के समान ही अधिकार प्रदान किये गये। आज हर क्षेत्र में भारतीय महिलायें भी पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। आज सभी मान्यतायें बदल गई है जब नारी को पैर की जूती या पद–दलिता समझा जाता था और उसे घर में बंधक बनाकर रखा जाता था।"[4]

विभिन्न कालखण्डों में मीणा स्त्रियों की स्थिति भी अन्य जातियों की महिलाओं के समकक्ष ही बदलती रही है। यही कारण है कि आज की मीणा नारी भी समय एवं शिक्षा दोनों के ही महत्व हो समझने लगी है। अतः मीणा महिलाओं में भी परिवर्तनों को आसानी से देखा जा सकता है। शिक्षा के इस विकसित स्वरूप का ही परिणाम है कि अब सरकार के द्वारा जनजातीय महिलाओं के लिये शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाकर उन्हें शिक्षित किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं वरन् आर्थिक रूप से भी उन्हें विकसित करने हेतु विभिन्न योजनाओं को चलाकर सम्बल प्रदान कर आगे बढ़ने के नवीन अवसर प्रदान किये जाने लगे हैं। जनजातीय महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि करने हेतु विभिन्न पाठ्यक्रम चलाकर छात्रवृत्ति उपलब्ध करवाई जा रही है, जिससे वे भी समाज तथा देश में अपनी अहम् भूमिका

निभा सकें। इस प्रकार से सदैव घर–परिवार में तथा खेती बाड़ी में व्यस्त रहने वाली महिलायें भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगी है। उन्हें आरक्षित वर्ग का लाभ देकर भी आर्थिक रूप से मज़बूत किया जा रहा है। यही कारण है कि मीणा जनजाति की महिलायें उच्च शिक्षित होकर विभिन्न क्षेत्रों में अपना परचम फहरा रही है। इस प्रकार से न सिर्फ वे अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रही है, बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में भी अपनी महती भूमिका निभाने लगी है। प्रस्तुत आलेख में मीणा जनजाति की महिलाओं की स्थिति में क्या परिवर्तन आया जिससे समाज पर क्या प्रभाव पड़ा आदि प्रश्नों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है।

तालिका संख्या 1.2

क्र. सं.	प्रभाव	महिला उत्तरदाताओं की संख्या(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	परम्परागत रूढ़ियों का ख़त्म होना	45(30.00)	45(30.00)
2	पारिवारिक निर्णयों में अहम् भूमिका	31(20.67)	31(20.67)
3	अधिकारों के प्रति जागरूकता में वृद्धि	29(19.33)	29(19.33)
4	जीवन स्तर में सुधार	20(13.33)	20(13.33)
5	आर्थिक स्तर में वृद्धि	25(16.67)	25(16.67)
	कुल	150(100.00)	150(100.00)

उपरोक्त तालिका संख्या 1.2 से स्पष्ट होता है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने माना है कि शिक्षा से मीणा समाज में परम्परागत रूढ़ियाँ खत्म हो गई है, जिनका योग प्रतिशत 45 (30.00) है। 31(20.67) महिला उत्तरदाताओं का विचार है कि शिक्षा से पारिवारिक निर्णयों में अहम् भूमिका बढ़ी है। वहीं 29 महिला उत्तरदाताओं ने माना है कि शिक्षा से अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिनका प्रतिशत 19.33 है। आगे इसी क्रम में शिक्षा का मीणा समाज की महिलाओं पर उनके जीवन स्तर में भी प्रभाव बताया गया है, जिनका योग प्रतिशत 20(13.33) है। मीणा समाज पर शिक्षा से आर्थिक स्तर में भी सुधार आया है, जिनका योग प्रतिशत 25 (16.67) है। अतः तालिका से स्पष्ट होता है कि मीणा समाज में शिक्षा से इनके सभी पक्षों पर प्रभाव पड़ा है। मीणा महिलाओं में शिक्षा के कारण परिवर्तन आ रहा है।

पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता–

सहभागिता का अर्थ है किसी भी कार्य में पूर्ण रूप से रूचि लेना अर्थात मीणा समाज की महिलायें शिक्षित होने के कारण परिवार के निर्णयों में भागीदार होने लगी है। जिस प्रकार पुरूष का दायित्व होता है। उसी प्रकार शिक्षित महिलायें भी परिवार के कार्यों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। प्रस्तुत अध्ययन में मीणा जनजाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

तालिका संख्या 1.3

वैश्वीकरण के कारण महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में हिस्सेदारी/सहभागिता

क्र. सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हां	115(76.67)	115(76.67)
2	नहीं	35(23.33)	35(23.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 1.3 से स्पष्ट होता है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 115 महिलाओं ने हां के पक्ष में मत व्यक्त किया है, जिनका प्रतिशत 76.67 है। वहीं विपक्ष में मत व्यक्त करने वाली महिला उत्तरदाताओं की संख्या 35 है, जिनका प्रतिशत 23.33 हैं। अतः निष्कर्ष निकलता है कि वैश्वीकरण के कारण महिलाओं में जागरूकता आ रही है, जिसके कारण परिवार के निर्णयों में सहभागिता बढ़ी है।

अन्तर्जातीय विवाह पर प्रभाव–

विवाह और जाति भारतीय संस्कृति की मौलिक विशेषताएँ है भारत वर्ष में जाति के अन्दर ही विवाह करने की अनुमति दी गई है। धर्मशास्त्रों के अनुसार प्रत्येक हिन्दू को अपनी ही जाति के अन्दर विवाह करना चाहिए किसी भी जाति का पुरूष व महिला अपनी जाति के बाहर मान्यता प्राप्त विवाह नहीं कर सकता। यदि हम भारतीय इतिहास पर नजर दौड़ाये तो अन्तर्जातीय विवाह भारत वर्ष में प्राचीन समय से चला आ रहा है। भारतीय राजाओं एवं नवाबों के नाम अन्तर्जातीय विवाह के इतिहास में दर्ज है।[5] " मीणा जनजाति में अन्तर्जातीय विवाह भी प्रचलित थे। यवन काल में कई मेव मुस्लिम धर्म को स्वीकार कर चुके थे, उन्हें मेवाती कहा जाने लगा था। वे सभी मीणे ही थे। यहां तक कि तात्कलीन मेवातियों तथा मीणों में वैवाहिक सम्बन्ध भी जायज थे। राजपूतों से भी इनके वैवाहिक सम्बन्धों के उदाहरण मिलते हैं। राणा परिवार के बीका ने 1531 ई. में इस प्रदेश के भील मीणा राजा भामर देव को मार कर उसकी रानी देवलिया से विवाह किया था। देवलिया के नाम पर ही देवलिया नामक विशाल नगर बसाया गया जो कालान्तर में मालवा प्रान्त का एक प्रमुख अंग बन गया। मालवीय सभ्यता तथा संस्कृति का भी यह प्रमुख केन्द्र माना जाने लगा था। कांठल परिवार में देवलिया मीणी की चोटी की पूजा आज भी विजयादशमी पर की जाती है। कोटा राज्य के राजा मुकुन्द सिंह ने भी एक अबली नामक मीणा जाति की सुन्दर बलवान स्त्री से अपने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये थे।"[6]

"मध्यकाल में मुसलमान बने मीणों, मेवों, मेवातियों आदि में आपस में वैवाहिक सम्बन्ध हुआ करते थे। टोडरमल मेव के पुत्र दरिया खाँ का बादाराव की पुत्री शशिवदनी से विवाह हुआ था, जिन्हें bfrgkl d kjksa us eh.kk ghekukg8"[7] परन्तु यह सभी उदाहरण मात्र शासक वर्ग में ही देखने को मिलते हैं, आम मीणा जन–समुदाय में नहीं परन्तु वैश्वीकरण के कारण मीणा महिलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ा है, रोजगार के अवसरों में बढोत्तरी हुई है। जिसके कारण मीणा महिलाओं की आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है। इस प्रकार वैश्वीकरण के कारण अपनी सामाजिक परम्पराओं को त्याग कर मीणा महिलायें अपना एक अलग अस्तित्व स्थापित करने लगी हैं।

प्रस्तुत आलेख में मीणा जनजातीय समाज की महिलाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है और

साथ ही अन्तर्जातीय विवाह के प्रति मीणा महिलाओं का क्या दृष्टिकोण हैं आदि पक्षों को जानने का प्रयास किया गया है और अध्ययन से प्राप्त आकड़ों को तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या 1.4

वैश्वीकरण की प्रक्रिया से महिलाओं में अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला

क्र.सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)	योग(प्रतिशत)
1	हां	112(74.67)	112(74.67)
2	नहीं	38(25.33)	38(25.33)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

उपरोक्त तालिका संख्या 5.4 से स्पष्ट होता है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 112 महिला उत्तरदाता हां के पक्ष में मत प्रकट करती है, जिनका प्रतिशत 74.67 है। वहीं 38 महिला उत्तरदाता नहीं के पक्ष में अपना मत प्रकट करती है, जिनका प्रतिशत 25.33 है। अतः तालिका से निष्कर्ष निकलता है कि हां के पक्ष में मत प्रकट करने वाली महिला उत्तरदाताओं का योग प्रतिशत सर्वाधिक है। अर्थात् अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिला है।

वस्त्राभूषणों पर प्रभाव–

पूर्व में मीणा जनजाति की महिलाये वस्त्र के रूप लूगड़ी, कंचुकी, कुर्ती एवं घाघरा धारण करती थी। वहीं आभूशणों के रूप में सोना–चांदी पीतल या कथीर धातु के आभूषण धारण करती है। इसके अतिरिक्त हसली, करधनी, पैरों में झाझर, कड़े या रमझोल पहनने की प्रथा थी। मीणा महिलायें हाथी दांत की चूडीयां, भुजबन्द, तथा राखडी भी धारण करती थी। इन सब परम्परागत वस्त्राभूषणों में वैश्वीकरण के कारण परिवर्तन आ गया है क्योंकि वैश्वीकरण ने मीणा महिलाओं के शिक्षा के स्तर में वृद्धि की है, सामाजिक बन्धनों में छूट देखी गयी है, महिलाओं के रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है तथा पाश्चात्य सभ्यता का सीधा असर दिखाई देता है।

वर्तमान में आधुनिक वस्त्राभूशणों का प्रचलन जैसे साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, सलवारसूट, जिंस, टॉप, ऊंची एडी के सेन्डील पहनने का प्रचलन बढ़ गया है। वहीं आभूषणों में नई डिजाइन का प्रचलन भी बढा है जैसे टीकला, कड़े, टॉप्स, पायल, हार तथा सस्ते कृत्रिम आभूषणों का प्रचलन बढ़ा है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक मीणा समाज की महिलाओं में वैश्वीकरण के कारण जागरूकता आई है। जिसके कारण इनकी सोच में बदलाव देखा गया है। अतः इन सब कारणों से परम्परागत आभूषणों के स्थान पर नवीन आभूषणों का प्रचलन बढ़ा है।

प्रस्तुत आलेख में मीणा जनजातीय समाज की महिलाओं के वस्त्राभूषणों (पहनावें) पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पडा आदि पक्षों को तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 1.5

मीणा महिलाओं के पहनावें पर वैश्वीकरण का प्रभाव

क्र.सं.	मत	महिला उत्तरदाताओं की संख्या (प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1	हां	117(78.00)	117(78.00)
2	नहीं	33(22.00)	33(22.00)
	योग	150(100.00)	150(100.00)

तालिका संख्या 1.5 से स्पष्ट होता है कि कुल 150 महिला उत्तरदाताओं में से 117 महिला उत्तरदाताओं ने हां पक्ष में मत व्यक्त किया जिनका प्रतिशत 78.00 है। वहीं 33 (22.00) महिला उत्तरदाताओं ने नहीं के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया, जिनका प्रतिशत 22.00 हैं। अतः निष्कर्ष निकलता है कि वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजातीय समाज की महिलाओं के परम्परागत पहनावें पर प्रभाव पडा है।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि महिला शिक्षा से मीणा समाज में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन हुआ है। महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 76.67 प्रतिशत हां के पक्ष में, 23.33 प्रतिशत नहीं के पक्ष में है। अतः वैश्वीकरण के कारण मीणा जनजातीय समाज की महिलाओं में पारिवारिक निर्णयों में अहम भागिदारी रही है। पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता किस प्रकार बढी के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 16.52 प्रतिशत ने अधिकारों के प्रति सजकता, 28.70 प्रतिशत ने परिवार के सम्पूर्ण निर्णयों में अहम् भूमिका, 21.74 प्रतिशत ने आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि, 13.91 प्रतिशत राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता, 19.13 प्रतिशत ने सरकार द्वारा संचालित योजनाओं में भागिदारी। अर्न्तजातिय विवाह को बढ़ावा मिला के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 74.67 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने हां के पक्ष में मत प्रकट किया, 25.33 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने नहीं के पक्ष में मत व्यक्त किया। अतः वैष्वीकरण के कारण अर्न्तजातिय विवाह को बढावा मिला है। वैश्वीकरण का पहनावें पर प्रभाव पड़ा के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 78.00 प्रतिशत ने हां के पक्ष में मत प्रकट किया, 22.00 प्रतिशत ने नहीं के पक्ष में मत प्रकट किया। अतः वैश्वीकरण के कारण मीणा महिलाओं के पहनावें पर प्रभाव पड़ा। पहनावे को किस प्रकार प्रभावित किया के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 29.91 प्रतिशत ने परम्परागत पहनावे से दूरी, 26.49 प्रतिशत ने पाष्चात्य पहनावें की तरफ झुकाव, 23.08 प्रतिशत ने परम्परागत पहनावें को हास्यापद बनना, 20.51 प्रतिशत ने सामाजिक नियमों में लचीलापन। सामजिक कुरीतियों के सम्बन्ध में कुल महिला उत्तरदाताओं में से 76.00 प्रतिशत नें हाँ के पक्ष में मत प्रकट किया, 24.00 प्रतिशत ने नहीं के पक्ष में मत प्रकट किया है। अर्थात् वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा है, क्योंकि हां के पक्ष में योग प्रतिशत की संख्या अधिक है।

विवाह की आयु में परिवर्तन के सम्बन्ध में कुल उत्तरदाताओं में से 6.67 प्रतिशत जिनका विवाह 5–10 वर्ष की आयु में हुआ, जो कि महिला की दादी के विवाह की आयु थी, 10–15 वर्ष की आयु का वर्गान्तराल प्रथम पीढी (दादी) और द्वितीय पीढी (माता) का 34.67 प्रतिशत, 15–20 वर्ष की आयु का वर्गान्तराल द्वितीय पीढ़ी(माता) और स्वयं का है, जिनका प्रतिशत 40.00 है। 20–25 वर्ष की आयु का

वर्गान्तराल द्वितीय पीढ़ी (माता) और स्वयं उत्तरदाता का है जिनका प्रतिशत 18.66 है। अतः मीणा जनजाति की महिलाओं में विवाह की आयु में परिवर्तन हुआ है।

अतः मीणा महिलाओं पर वैश्वीकरण के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सभी क्षेत्रों के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकलाता है कि जहाँ एक ओर सकारात्मक प्रभाव पड़ा वहीं दूसरी ओर नकारात्मक प्रभाव भी देखा गया है। वैष्वीकरण के कारण मीणा महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव में उनके शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई, सामाजिक कुरीतियों में कमी आई, सामाजिक बन्धनों में कमी देखी गई, पहनावें और वेश–भूषा में भी परिवर्तन आया, पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ी तथा पुरूषों के समान अधिकार दिया जाने लगा। इसी प्रकार मीणा महिलाओं में वैश्वीकरण के कारण परम्परागत व्यवसायों ने नया रूप ले लिया है तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है जिससे उनमें आत्मनिर्भरता आई है। इसके साथ–साथ राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता, मतदान में सक्रिय भागीदारी, राजनीतिक निर्णयों एवं कानूनों में सहयोग तथा आरक्षण के माध्यम से सहकारी संगठनो में महिलाओं का हस्तक्षेप बढ़ा है।

संदर्भ

1. मीना, डॉ. एस.पी., भारतीय जनजातियॉं एवं मानवाधिकार वैधानिक एवं सामाजिक परिदृश्य, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2015, पृ.सं.84
2. शुक्ला, डॉ.महेश, खान शरीफ मोहम्मद, खैरवार जनजाति–सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली– 2004 पृ.स.51
3. मीना, डॉ. एस.पी., भारतीय जनजातियां एवं मानवाधिकार वैधानिक एवं सामाजिक परिदृश्य, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2015, पृ.सं.84
4. गुप्ता, डॉ मिथलेश, भूमंडलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन, गौतम बुक कम्पनी, जयपुर, 2013 पृ.स. 240
5. शुक्ला, डॉ. महेश, खान शरीफ मोहम्मद, खैरवार जनजाति–सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2004 पृ.स. 181
6. माथुर, दुर्गा प्रसाद, मीणा जाति का सतत् विकास एवं संस्कृति, साहित्यागार, जयपुर, 2014 पृ.स. 36
7. वही, 2014 पृ.स. 38

++++

शोधार्थी

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

(राजस्थान)